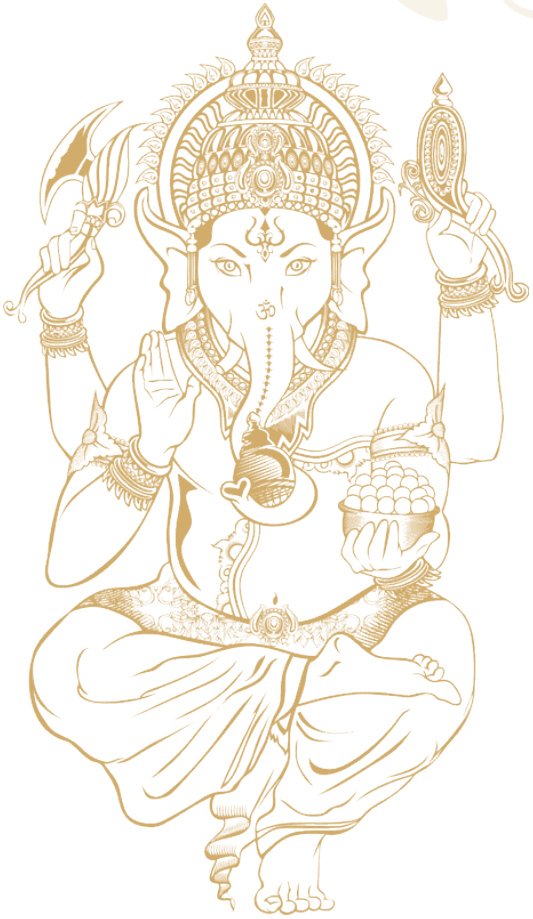

Vikram Bhalerao

09 Jan 1988

12:16 AM

Pune

Model: Web-BhriguPatrika

Order No: 121427401

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	पुल्लिंग
जन्म तिथि	**8-09/01/1988**
दिन	शुक्र-शनिवार
जन्म समय	**00:16:58 घंटे**
इष्ट	42:50:58 घटी
स्थान	**Pune**
राज्य	Maharashtra
देश	India

अक्षांश	18:34:00 उत्तर
रेखांश	73:58:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:34:08 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	23:42:50 घंटे
वेलान्तर	-00:06:22 घंटे
साम्पातिक काल	06:53:01 घंटे
सूर्योदय	07:08:34 घंटे
सूर्यास्त	18:12:35 घंटे
दिनमान	11:04:01 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल)	दक्षिण
ऋतु	शिशिर
सूर्य के अंश	24:00:55 धनु
लग्न के अंश	18:53:58 कन्या

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	कन्या - बुध
राशि-स्वामी	**सिंह - सूर्य**
नक्षत्र-चरण	**पू०फाल्गुनी - 1**
नक्षत्र स्वामी	शुक्र
योग	आयुष्मान
करण	कौलव
गण	मनुष्य
योनि	मूषक
नाड़ी	मध्य
वर्ण	क्षत्रिय
वश्य	वनचर
वर्ग	मूषक
युँजा	मध्य
हंसक	अग्नि
जन्म नामाक्षर	मो-मोहन
पाया(राशि-नक्षत्र)	लौह - रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	मकर

पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1909	पौष	19
पंजाबी	संवत : 2044	पौष	25
बंगाली	सन् : 1394	पौष	24
तमिल	संवत : 2044	मार्गड़ी	25
केरल	कोल्लम : 1163	धनु	25
नेपाली	संवत : 2044	पौष	25
चैत्रादि	संवत : 2044	माघ	कृष्ण 5
कार्तिकादि	संवत : 2044	पौष	कृष्ण 5

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि ____: 4
तिथि समाप्ति काल _____: 17:04:31
जन्म तिथि _____: 5
सूर्योदय कालीन नक्षत्र ____: मघा
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 20:22:46 घंटे
जन्म योग _____: पू०फाल्गुनी
सूर्योदय कालीन योग ____: आयुष्मान
योग समाप्ति काल _____: 25:39:08 घंटे
जन्म योग _____: आयुष्मान
सूर्योदय कालीन करण ____: बालव
करण समाप्ति काल _____: 17:04:31 घंटे
जन्म करण _____: कौलव
भयात _____: 09:45:29
भभोग _____: 67:35:25
भोग्य दशा काल _____: शुक्र 17 वर्ष 1 मा 13 दि

घात चक्र

मास _____: ज्येष्ठ
तिथि _____: 3-8-13
दिन _____: शनिवार
नक्षत्र _____: मूल
योग _____: धृति
करण _____: बव
प्रहर _____: 1
वर्ग _____: मार्जार
लग्न _____: मीन
सूर्य _____: धनु
चन्द्र _____: मकर
मंगल _____: मकर
बुध _____: तुला
गुरु _____: कुम्भ
शुक्र _____: मीन
शनि _____: वृश्चिक
राहु _____: मेष

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

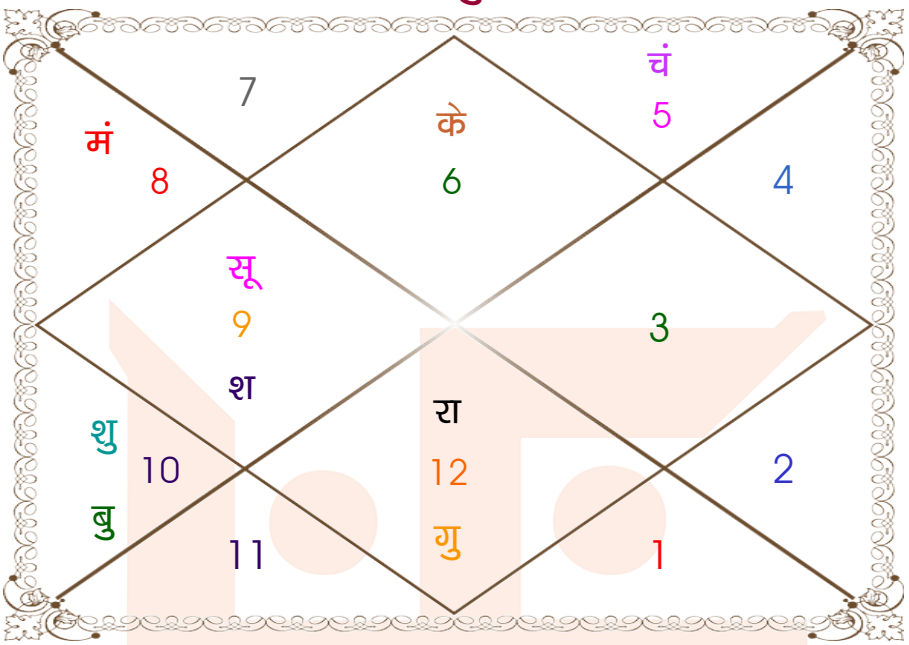

चन्द्र कुंडली

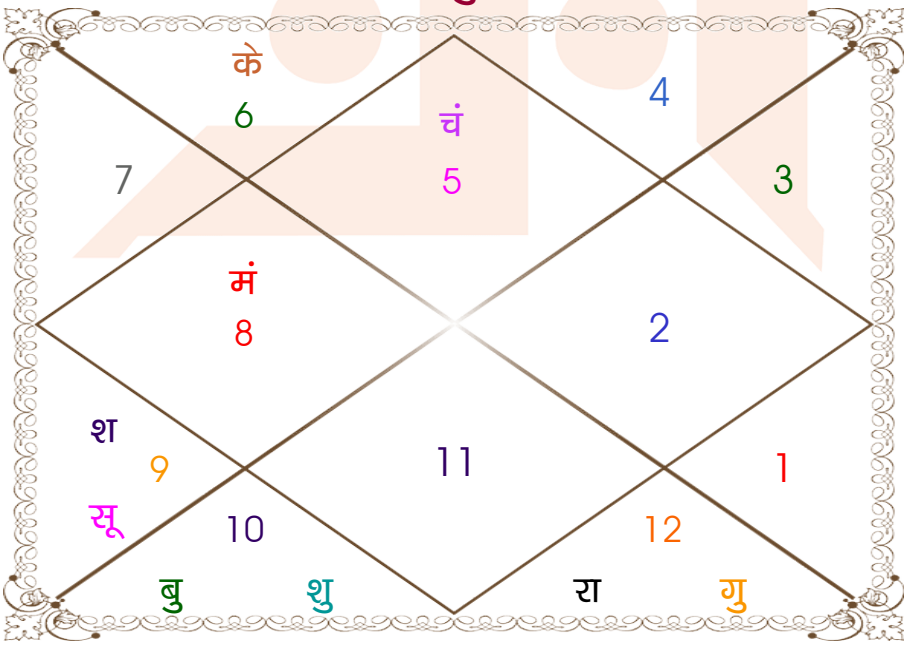

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

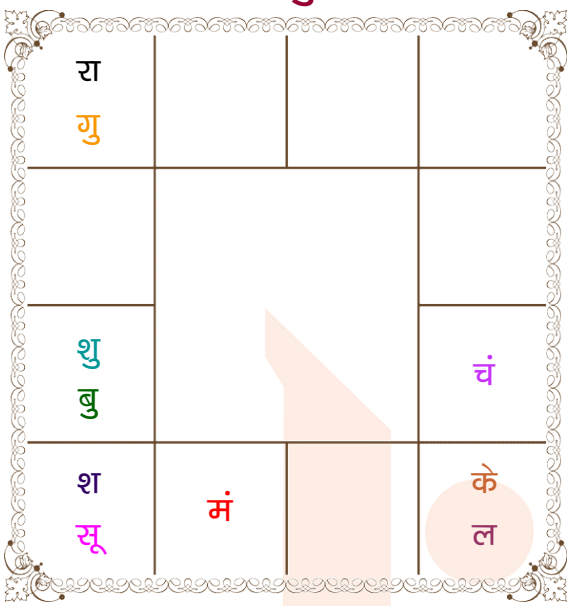

लग्न कुंडली

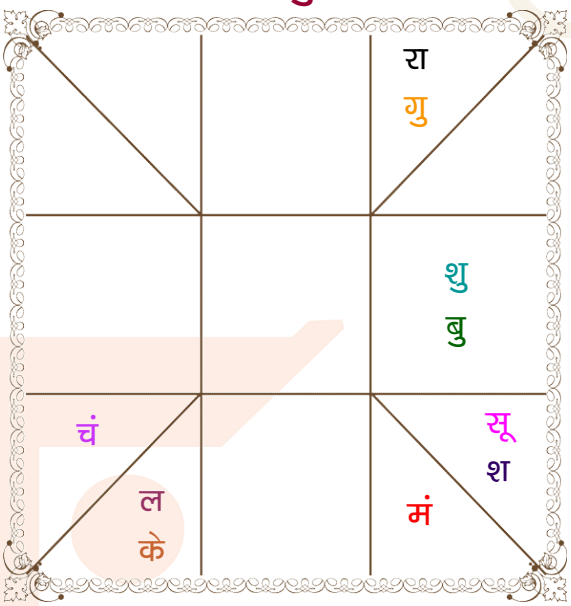

विंशोत्तरी
शुक्र 17वर्ष 1मा 13दि

शुक्र

09/01/1988

22/02/2105

शुक्र	21/02/2005
सूर्य	21/02/2011
चन्द्र	21/02/2021
मंगल	22/02/2028
राहु	21/02/2046
गुरु	21/02/2062
शनि	21/02/2081
बुध	21/02/2098
केतु	22/02/2105

योगिनी
उल्का 5वर्ष 1मा 19दि

उल्का

27/02/2023

27/02/2029

उल्का	27/02/2024
सिद्धा	28/04/2025
संकटा	28/08/2026
मंगला	28/10/2026
पिंगला	27/02/2027
धान्या	29/08/2027
भ्रामरी	28/04/2028
भद्रिका	27/02/2029

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			कन्या	18:53:58	341:40:43	हस्त	3	13	बुध	चंद्र	बुध	---
सूर्य			धनु	24:00:55	01:01:08	पूर्वाषाढ़ा	4	20	गुरु	शुक्र	बुध	मित्र राशि
चंद्र			सिंह	15:15:10	11:48:22	पू०फाल्गुनी	1	11	सूर्य	शुक्र	शुक्र	मित्र राशि
मंगल			वृश्चि	06:24:12	00:39:55	अनुराधा	1	17	मंगल	शनि	बुध	स्वराशि
बुध		अ	मक	03:55:20	01:39:06	उत्तराषाढ़ा	3	21	शनि	सूर्य	शनि	सम राशि
गुरु			मीन	27:04:49	00:04:52	रेवती	4	27	गुरु	बुध	गुरु	स्वराशि
शुक्र			मक	27:53:02	01:13:34	धनिष्ठा	2	23	शनि	मंगल	गुरु	मित्र राशि
शनि			धनु	02:39:58	00:06:47	मूल	1	19	गुरु	केतु	शुक्र	सम राशि
राहु	व		मीन	01:38:47	00:02:31	पू०भाद्रपद	4	25	गुरु	गुरु	राहु	सम राशि
केतु	व		कन्या	01:38:47	00:02:31	उ०फाल्गुनी	2	12	बुध	सूर्य	गुरु	शत्रु राशि
हर्ष			धनु	04:25:51	00:03:29	मूल	2	19	गुरु	केतु	चंद्र	---
नेप			धनु	14:23:22	00:02:15	पूर्वाषाढ़ा	1	20	गुरु	शुक्र	शुक्र	---
प्लूटो			तुला	18:29:28	00:01:17	स्वाति	4	15	शुक्र	राहु	चंद्र	---
दशम भाव			मिथु	18:30:18	--	आर्द्रा	--	6	बुध	राहु	चंद्र	--

व - वक्री स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:41:25

लग्न-चलित

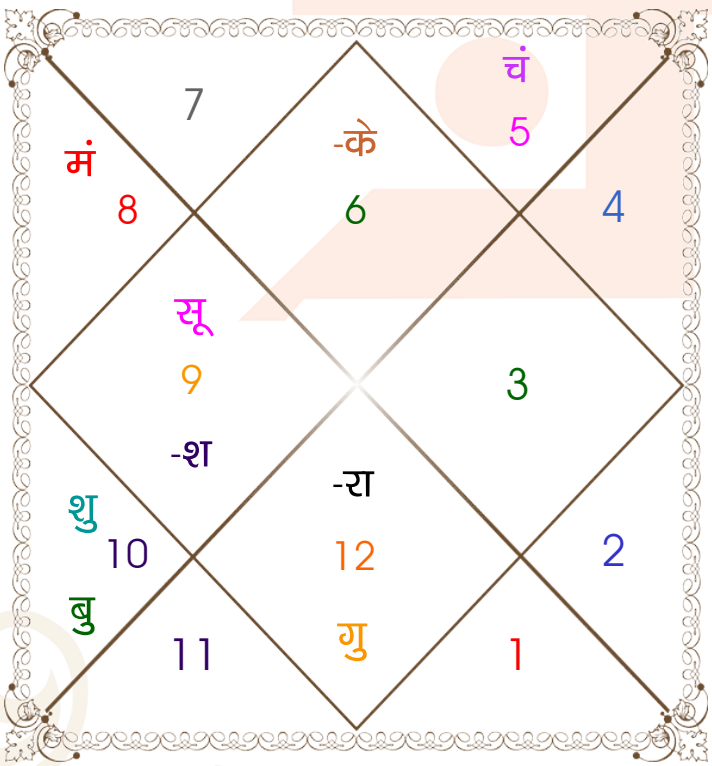

चन्द्र कुंडली

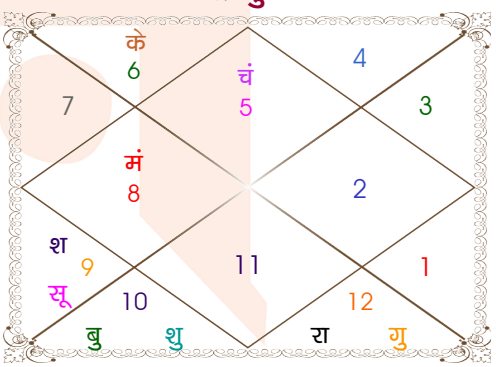

नवमांश कुंडली

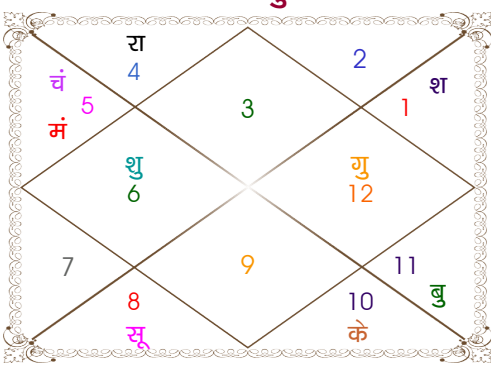

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	कन्या	03:50:01	कन्या	18:53:58
2	तुला	03:50:01	तुला	18:46:05
3	वृश्चिक	03:42:08	वृश्चिक	18:38:11
4	धनु	03:34:14	धनु	18:30:18
5	मकर	03:34:14	मकर	18:38:11
6	कुम्भ	03:42:08	कुम्भ	18:46:05
7	मीन	03:50:01	मीन	18:53:58
8	मेष	03:50:01	मेष	18:46:05
9	वृष	03:42:08	वृष	18:38:11
10	मिथुन	03:34:14	मिथुन	18:30:18
11	कर्क	03:34:14	कर्क	18:38:11
12	सिंह	03:42:08	सिंह	18:46:05

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	कन्या	18:53:58
2	तुला	18:26:55
3	वृश्चिक	18:25:33
4	धनु	18:30:18
5	मकर	19:03:44
6	कुम्भ	19:43:45
7	मीन	18:53:58
8	मेष	18:26:55
9	वृष	18:25:33
10	मिथुन	18:30:18
11	कर्क	19:03:44
12	सिंह	19:43:45

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल
पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी
भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा

चलित कुंडली

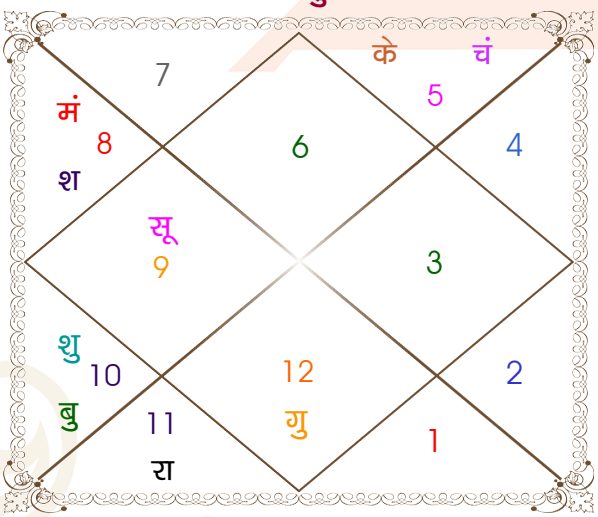

भाव कुंडली

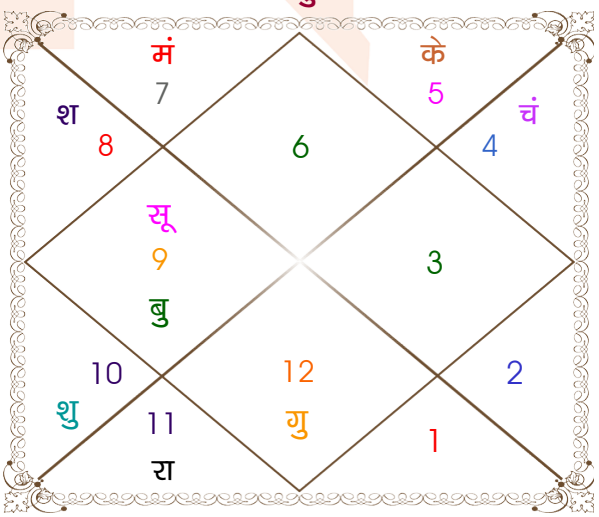

कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	------ कारक ------			------- अवस्था -------			
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	भ्रातृ	पितृ	मृत	मुदित	नेत्रपाणि	5.48	42 %
चंद्र	मातृ	मातृ	युवा	मुदित	शयन	3.89	28 %
मंगल	पुत्र	भ्रातृ	वृद्ध	स्वस्थ	गमन	4.10	63 %
बुध	ज्ञाति	ज्ञाति	मृत	विकल	कौतुक	0.00	67 %
गुरु	अमात्य	धन	बाल	स्वस्थ	उपवेशन	4.79	50 %
शुक्र	आत्मा	कलत्र	बाल	मुदित	गमन	7.16	52 %
शनि	कलत्र	आयु	बाल	शक्त	निद्रा	4.58	37 %
राहु	---	ज्ञान	मृत	शान्त	सभा	0.00	14 %
केतु	---	मोक्ष	मृत	खल	कौतुक	0.00	0 %
कुल						30.00	

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल
पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी
भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा

चलित कुंडली

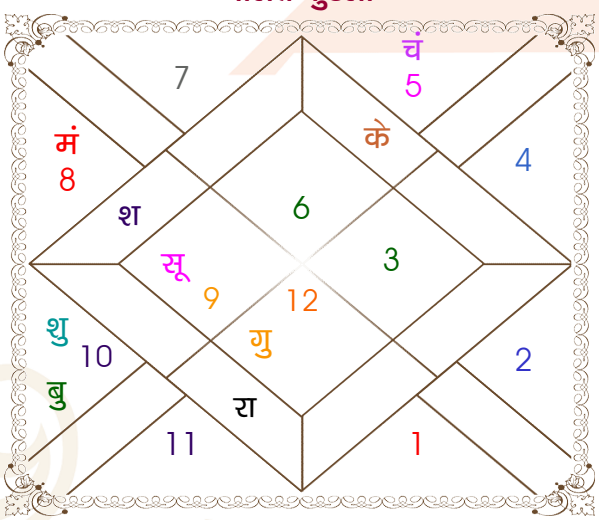

लग्न-चलित

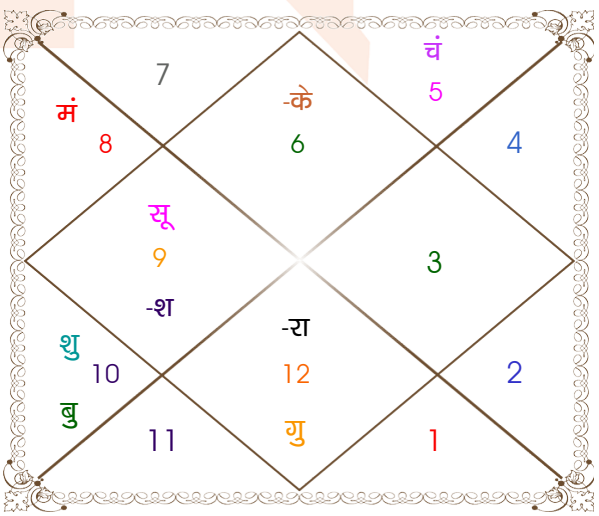

सुदर्शन चक्र

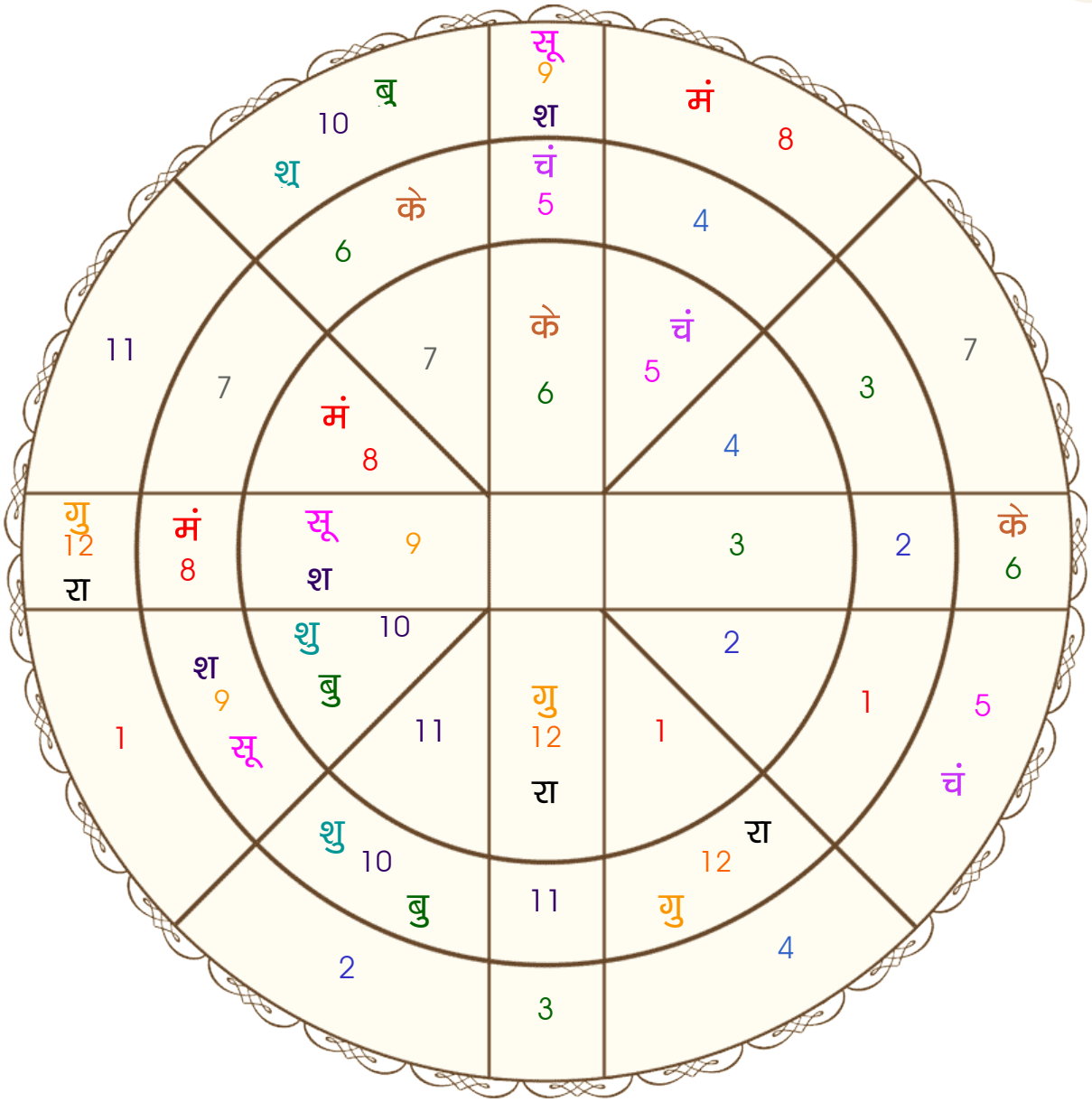

नोटः सुदर्शन चक्र कमानुसार बाहरी वृत से अन्तः वृत तक सूर्य, चन्द्र एवं जन्मांग कुंडलियों में ग्रहों की तुलनात्मक स्थिति दर्शाता है। किसी भाव का विचार करने के लिए उस भाव को प्रकट करने वाली तीनों राशियों का विचार करना चाहिए।

भोग्य दशा काल : शुक्र 16 वर्ष 11 मास 22 दिन

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		धनु	24:06:37	गुरु	शुक्र	बुध	बुध
चंद्र		सिंह	15:20:52	सूर्य	शुक्र	शुक्र	बुध
मंगल		वृश्चि	06:29:54	मंगल	शनि	बुध	मंगल
बुध		मक	04:01:02	शनि	सूर्य	शनि	शुक्र
गुरु		मीन	27:10:30	गुरु	बुध	गुरु	शुक्र
शुक्र		मक	27:58:44	शनि	मंगल	शनि	शनि
शनि		धनु	02:45:40	गुरु	केतु	शुक्र	बुध
राहु	व	मीन	01:44:28	गुरु	गुरु	राहु	गुरु
केतु	व	कन्या	01:44:28	बुध	सूर्य	गुरु	बुध
हर्ष		धनु	04:31:33	गुरु	केतु	चंद्र	केतु
नेप		धनु	14:29:04	गुरु	शुक्र	शुक्र	गुरु
प्लूटो		तुला	18:35:10	शुक्र	राहु	चंद्र	शनि

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	कन्या	18:59:40	बुध	चंद्र	बुध	राहु
2	तुला	18:32:36	शुक्र	राहु	चंद्र	गुरु
3	वृश्चि	18:31:15	मंगल	बुध	बुध	शनि
4	धनु	18:35:59	गुरु	शुक्र	राहु	गुरु
5	मक	19:09:25	शनि	चंद्र	बुध	गुरु
6	कुंभ	19:49:27	शनि	राहु	मंगल	शुक्र
7	मीन	18:59:40	गुरु	बुध	केतु	राहु
8	मेष	18:32:36	मंगल	शुक्र	राहु	गुरु
9	वृष	18:31:15	शुक्र	चंद्र	बुध	सूर्य
10	मिथु	18:35:59	बुध	राहु	चंद्र	शनि
11	कर्क	19:09:25	चंद्र	बुध	केतु	शनि
12	सिंह	19:49:27	सूर्य	शुक्र	राहु	सूर्य

के.पी. अयनांश : 23:35:43

फॉरच्युना : वृष 10:13:55

लग्न कुंडली

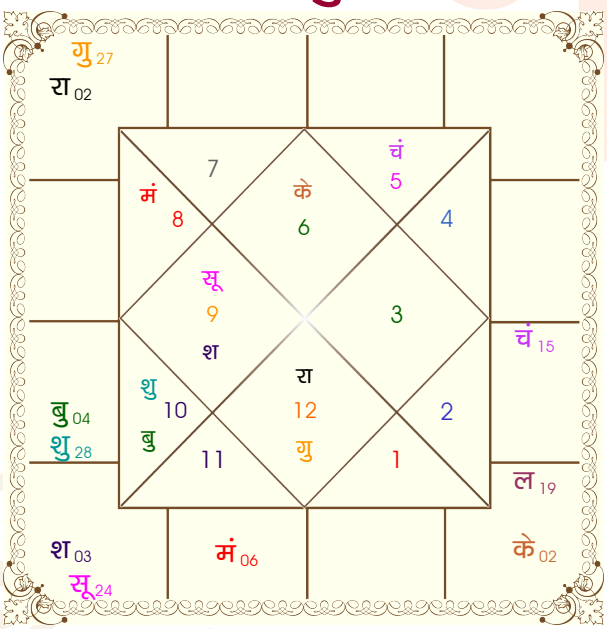

भाव कुंडली

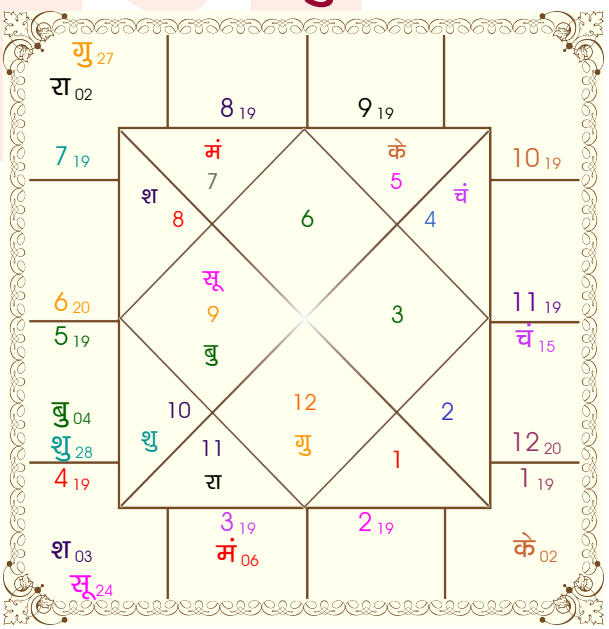

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	बुध- गुरु-
2	सूर्य- चंद्र- मंगल, शुक्र+
3	मंगल+ शुक्र- शनि,
4	सूर्य, बुध+ गुरु+ राहु- केतु,
5	सूर्य, चंद्र, मंगल- शुक्र, शनि-
6	मंगल- शनि- राहु,
7	गुरु, राहु+
8	मंगल- शुक्र-
9	सूर्य- चंद्र- शुक्र-
10	बुध- गुरु-
11	चंद्र,
12	सूर्य- बुध- शनि, केतु+

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	2- 4, 5, 9- 12-
चंद्र	2- 5, 9- 11,
मंगल	2, 3+ 5- 6- 8-
बुध	1- 4+ 10- 12-
गुरु	1- 4+ 7, 10-
शुक्र	2+ 3- 5, 8- 9-
शनि	3, 5- 6- 12,
राहु	4- 6, 7+
केतु	4, 12+

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	चन्द्र
लग्न राशि स्वामी	बुध
राशि नक्षत्र स्वामी	शुक्र
राशि स्वामी	सूर्य
वार स्वामी	शनि
लग्न अन्तर स्वामी	बुध
राशि अन्तर स्वामी	शुक्र

कारकत्व-सारिणी

भाव	स्थित ग्रह के नक्षत्र में	स्थित ग्रह	स्वामी के नक्षत्र में	स्वामी
1	--	--	गु	बु
2	शु	मं	सू चं	शु
3	मं	श	शु	मं
4	बु गु के	सू बु	रा	गु
5	सू चं	शु	मं	श
6	--	रा	मं	श
7	रा	गु	रा	गु
8	--	--	शु	मं
9	--	--	सू चं	शु
10	--	--	गु	बु
11	--	चं	--	चं
12	श	के	बु के	सू

ग्रह कारक सारिणी-1

ग्रह	भावाधिपति	नक्षत्राधिपति	स्थित	भाव
सूर्य	12	---	धनु	4
चंद्र	11	1,5,9	सिंह	11
मंगल	3,8	---	वृश्चिक	2
बुध	1,10	3,7,11	मकर	4
गुरु	4,7	---	मीन	7
शुक्र	2,9	4,8,12	मकर	5
शनि	5,6	---	धनु	3
राहु	---	2,6,10	मीन	6
केतु	---	---	कन्या	12

ग्रह कारक सारिणी-2

ग्रह	भावाधि भाव	नक्षत्राधि भाव	स्थित भाव	स्वामित्व	अन्तर स्वामी	स्थित भाव
सूर्य	2,9	4,8,12	5	1,10	3,7,11	4
चंद्र	2,9	4,8,12	5	2,9	4,8,12	5
मंगल	5,6	---	3	1,10	3,7,11	4
बुध	12	---	4	5,6	---	3
गुरु	1,10	3,7,11	4	4,7	---	7
शुक्र	3,8	---	2	5,6	---	3
शनि	---	---	12	2,9	4,8,12	5
राहु	4,7	---	7	---	2,6,10	6
केतु	12	---	4	4,7	---	7

ग्रह दृष्टि विचार

दृष्य ग्रह

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	हर्ष	नेप	प्लूटो
	264.02	135.25	216.40	273.92	357.08	297.88	242.67	331.65	151.65	244.43	254.39	198.49
सूर्य	--	--	--	युति	चतु	--	--	--	--	--	युति	--
264.02	0.00	0.00	0.00	5.08	2.08	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	5.34	0.00
चंद्र	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	पंच	तृती
135.25	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.92	1.98
मंगल	--	--	--	तृती	--	4था	--	पंच	--	--	--	--
216.40	0.00	0.00	0.00	2.39	0.00	6.28	0.00	0.96	0.00	0.00	0.00	0.00
बुध	युति	--	--	--	--	--	--	तृती	--	--	--	--
273.92	5.08	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.48	0.00	0.00	0.00	0.00
गुरु	--	--	--	--	--	--	9वां	--	--	9वां	--	--
357.08	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	8.34	0.00	0.00	7.18	0.00	0.00
शुक्र	--	--	--	--	तृती	--	--	--	--	--	--	--
297.88	0.00	0.00	0.00	0.00	2.93	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
शनि	--	--	--	--	पंच	3रा	--	चतु	10वा	युति	युति	--
242.67	0.00	0.00	0.00	0.00	0.32	8.77	0.00	2.89	9.94	9.83	3.36	0.00
राहु	--	--	--	--	--	--	--	--	सप्त	--	--	--
331.65	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	10.00	0.00	0.00	0.00
केतु	--	--	तृती	पंच	--	--	चतु	सप्त	--	चतु	--	--
151.65	0.00	0.00	0.96	2.48	0.00	0.00	2.89	10.00	0.00	2.24	0.00	0.00
हर्ष	--	--	--	--	--	--	युति	चतु	--	--	युति	--
244.43	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.83	2.24	0.00	0.00	5.04	0.00
नेप	युति	--	--	--	--	--	युति	--	--	युति	--	--
254.39	5.34	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	3.36	0.00	0.00	5.04	0.00	0.00
प्लूटो	तृती	--	--	--	--	--	अष्ट	--	--	अष्ट	तृती	--
198.49	0.37	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.27	0.00	0.00	0.09	1.43	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

भाव मध्य दृष्टि विचार

दृष्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	168.90	198.77	228.64	258.50	288.64	318.77	348.90	18.77	48.64	78.50	108.64	138.77
सूर्य	--	--	--	युति	--	तृती	चतु	पंच	--	सप्त	--	--
264.02	0.00	0.00	0.00	8.38	0.00	0.59	0.69	0.59	0.00	8.38	0.00	0.00
चंद्र	--	--	चतु	पंच	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति
135.25	0.00	0.00	1.90	1.98	0.00	9.33	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.33
मंगल	--	--	--	--	पंचा	4था	--	--	सप्त	8वां	--	--
216.40	0.00	0.00	0.00	0.00	0.93	2.72	0.00	0.00	2.86	2.99	0.00	0.00
बुध	--	--	--	--	युति	अष्ट	--	--	अष्टां	--	सप्त	--
273.92	0.00	0.00	0.00	0.00	0.30	0.97	0.00	0.00	0.90	0.00	0.30	0.00
गुरु	सप्त	--	9वां	--	--	--	युति	--	--	--	5वां	--
357.08	6.55	0.00	6.34	0.00	0.00	0.00	6.55	0.00	0.00	0.00	6.34	0.00
शुक्र	--	--	--	--	युति	--	--	--	--	--	सप्त	--
297.88	0.00	0.00	0.00	0.00	5.67	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	5.67	0.00
शनि	--	--	युति	--	3रा	--	--	--	सप्त	--	--	10वा
242.67	0.00	0.00	1.01	0.00	1.01	0.00	0.00	0.00	1.01	0.00	0.00	1.15
राहु	--	--	--	--	--	युति	--	--	--	--	--	सप्त
331.65	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.20	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.20
केतु	--	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति
151.65	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.20	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.20
हर्ष	--	--	--	युति	अष्ट	--	--	अष्टां	--	--	--	--
244.43	0.00	0.00	0.00	0.97	0.32	0.00	0.00	0.51	0.00	0.00	0.00	0.00
नेप	--	--	--	युति	--	तृती	चतु	पंच	--	सप्त	--	--
254.39	0.00	0.00	0.00	9.09	0.00	1.24	1.14	1.24	0.00	9.09	0.00	0.00
प्लूटो	--	युति	--	तृती	चतु	पंच	षष्ठ	सप्त	--	--	--	--
198.49	0.00	10.00	0.00	3.00	3.00	2.99	0.80	10.00	0.00	0.00	0.00	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

भाव दृष्टि विचार

दृष्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	168.90	198.45	228.43	258.50	289.06	319.73	348.90	18.45	48.43	78.50	109.06	139.73
सूर्य	--	--	--	युति	--	तृती	चतु	पंच	--	सप्त	--	--
264.02	0.00	0.00	0.00	8.38	0.00	1.30	0.69	0.34	0.00	8.38	0.00	0.00
चंद्र	--	--	चतु	पंच	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति
135.25	0.00	0.00	2.02	1.98	0.00	8.92	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	8.92
मंगल	--	--	--	--	पंचा	4था	--	--	सप्त	8वां	--	--
216.40	0.00	0.00	0.00	0.00	0.51	1.74	0.00	0.00	3.07	2.99	0.00	0.00
बुध	--	--	--	--	--	अष्ट	--	--	अष्टां	--	--	--
273.92	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.30	0.00	0.00	0.71	0.00	0.00	0.00
गुरु	सप्त	--	9वां	--	--	--	युति	--	--	--	5वां	--
357.08	6.55	0.00	6.17	0.00	0.00	0.00	6.55	0.00	0.00	0.00	6.68	0.00
शुक्र	--	--	--	--	युति	--	--	--	--	--	सप्त	--
297.88	0.00	0.00	0.00	0.00	6.03	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	6.03	0.00
शनि	--	--	युति	--	3रा	--	--	अष्टां	सप्त	--	--	10वा
242.67	0.00	0.00	0.79	0.00	1.46	0.00	0.00	0.34	0.79	0.00	0.00	2.14
राहु	--	--	--	--	--	युति	--	--	--	--	--	सप्त
331.65	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	3.17	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	3.17
केतु	--	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति
151.65	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	3.17	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	3.17
हर्ष	--	--	--	युति	अष्ट	--	--	अष्टां	--	--	--	--
244.43	0.00	0.00	0.00	0.97	0.84	0.00	0.00	0.03	0.00	0.00	0.00	0.00
नेप	--	--	--	युति	--	तृती	चतु	पंच	--	सप्त	--	--
254.39	0.00	0.00	0.00	9.09	0.00	0.52	1.14	1.46	0.00	9.09	0.00	0.00
प्लूटो	--	युति	--	तृती	चतु	पंच	षष्ठ	सप्त	--	--	--	--
198.49	0.00	10.00	0.00	3.00	2.97	2.84	0.80	10.00	0.00	0.00	0.00	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न कुंडली का विस्तार होती हैं। प्रत्येक कुंडली का एक विशेष लक्ष्य होता है, जैसा कि निम्न कुंडलियों के साथ वर्णन किया गया है। विस्तृत रूप से यह जानने के लिए कि ये कुंडलियां कौन से विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनका अध्ययन मूल लग्न कुंडली के साथ किया जाना चाहिए। बहरहाल, ये कुंडलियां विशेष सावधानी से देखी जानी चाहिएं, क्योंकि यहां ग्रहों की दृष्टि नहीं होती। सामान्यतः ग्रह का आचरण उस राशि या भाव तक सीमित रहता है जिनमें वे इन वर्गीय कुंडलियों में स्थित हैं।

सूर्य कुंडली

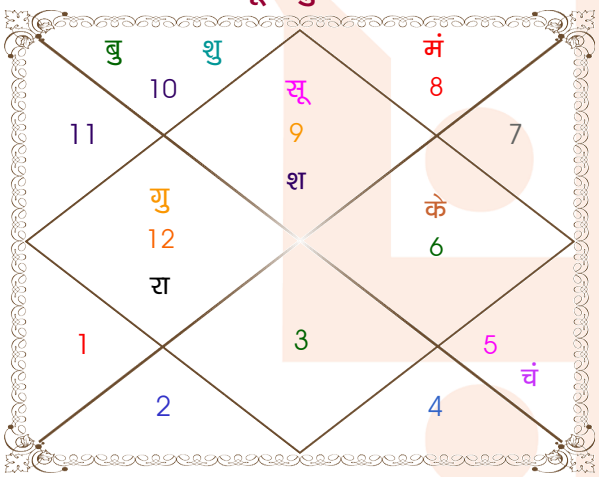

आत्मविचारः

चन्द्र कुंडली

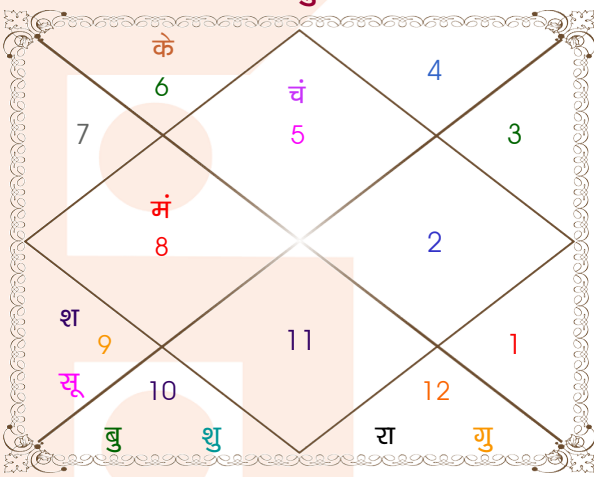

मनोबलविचारः

लग्न कुंडली

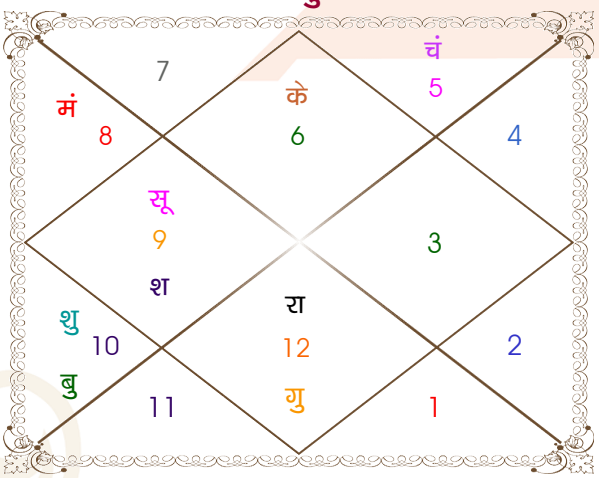

देह विचारः

होरा कुंडली

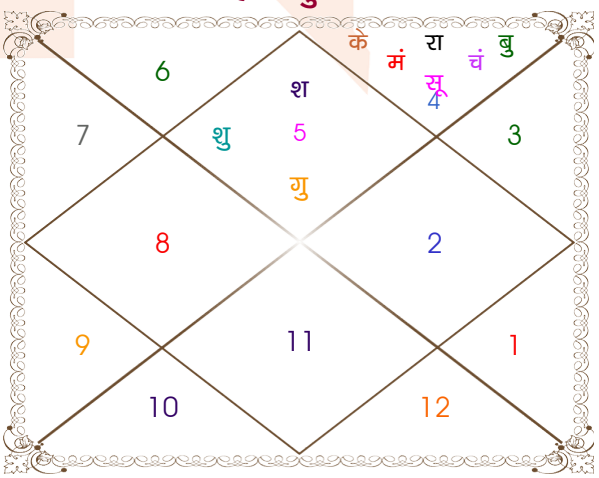

सम्पदाविचारः

षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली

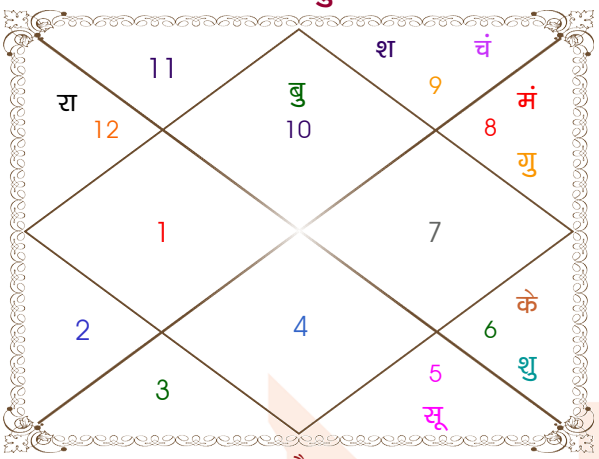

भातृसौख्यम

चतुर्थांश कुंडली

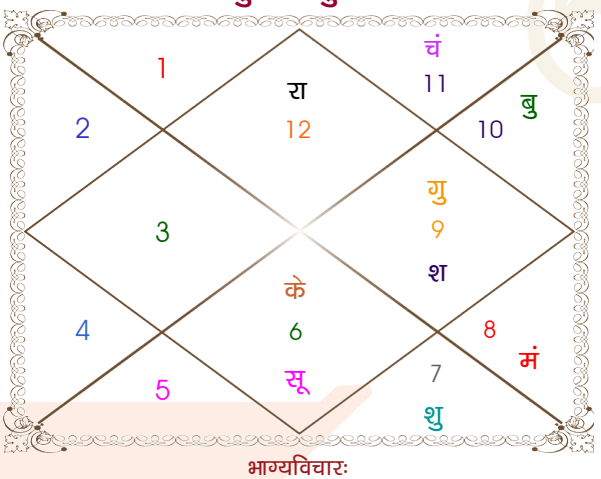

भाग्यविचारः

पंचमांश कुंडली

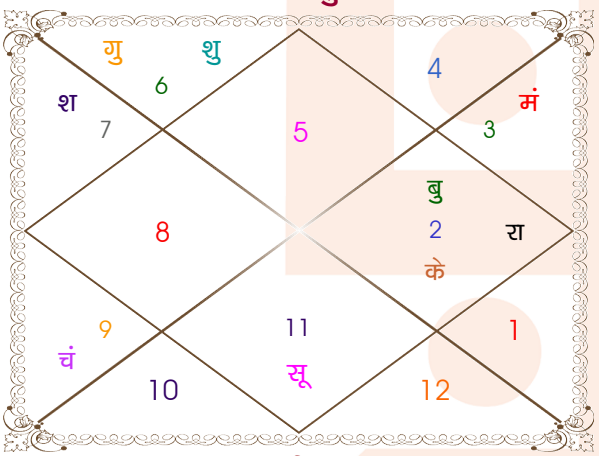

ज्ञानविचारः

षष्ठांश कुंडली

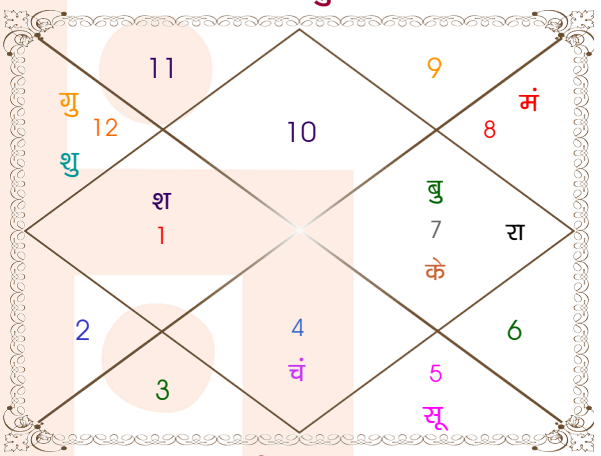

रिपुज्ञानम्

सप्तमांश कुंडली

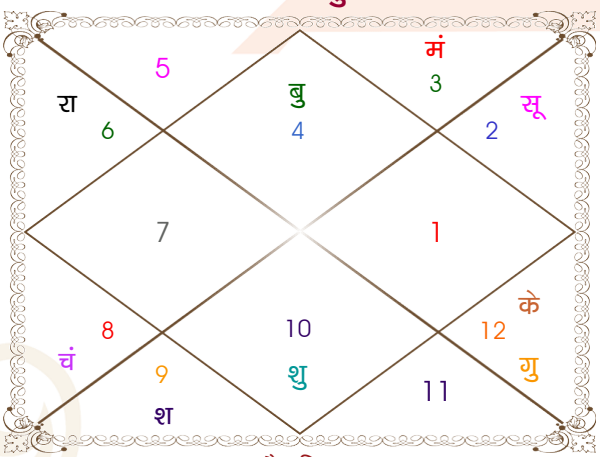

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

अष्टमांश कुंडली

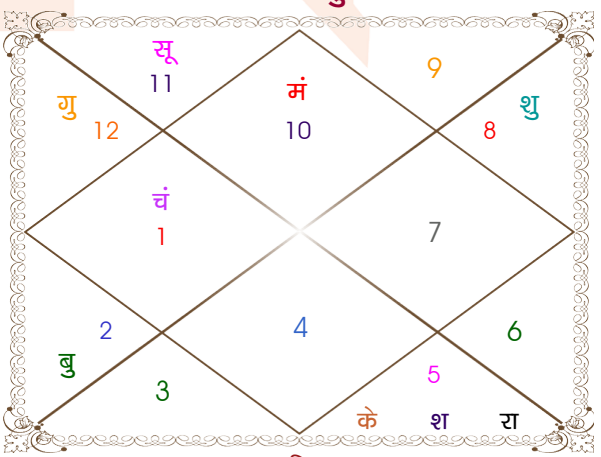

आयुविचारः

षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली

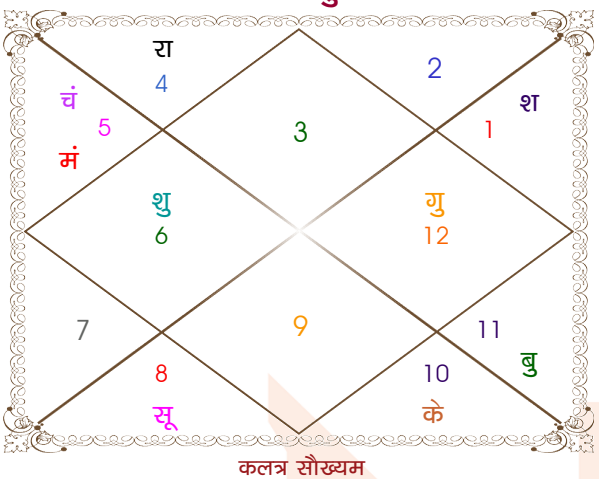

कलत्र सौख्यम

दशमांश कुंडली

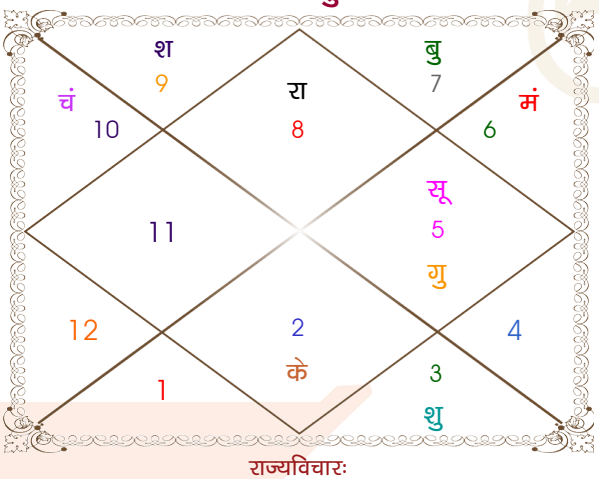

राज्यविचारः

एकादशांश कुंडली

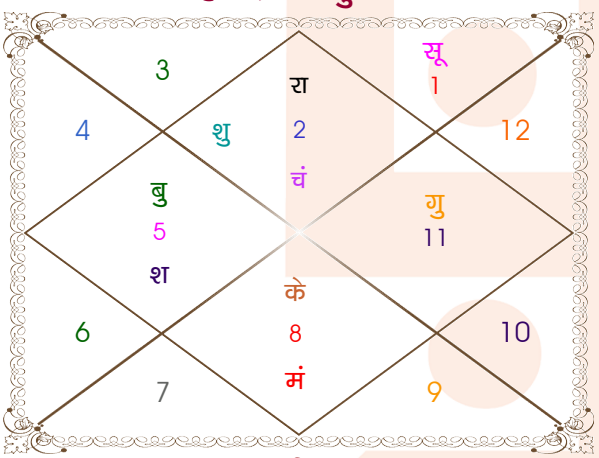

लाभविचारः

द्वादशांश कुंडली

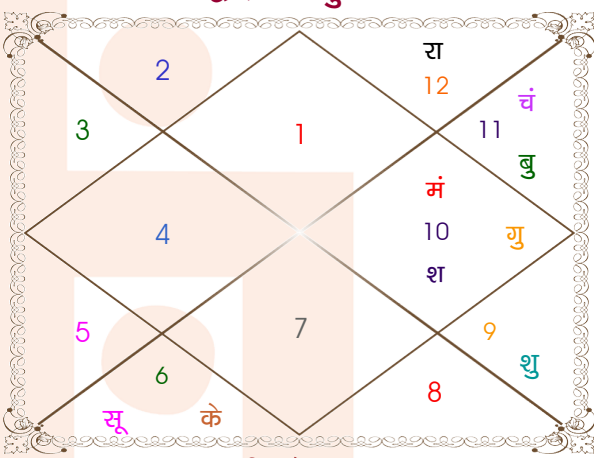

पितृसौख्यम

षोडशांश कुंडली

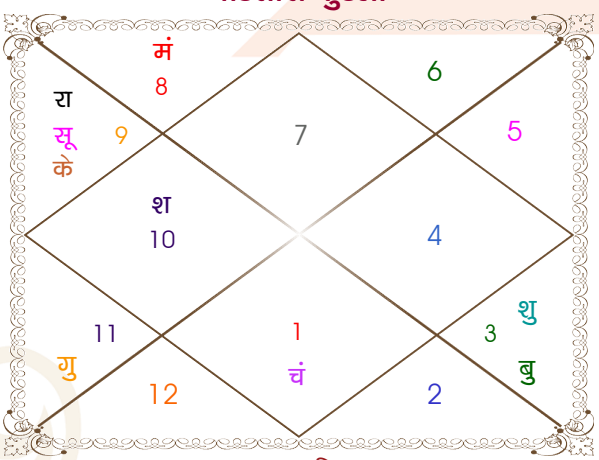

वाहनसुखविचारः

विंशांश कुंडली

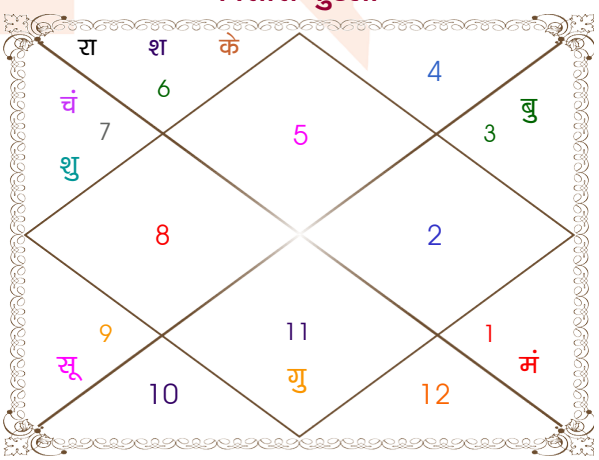

उपासनाज्ञानम्

षोडशवर्ग चक्र

चतुर्विंशांश कुंडली

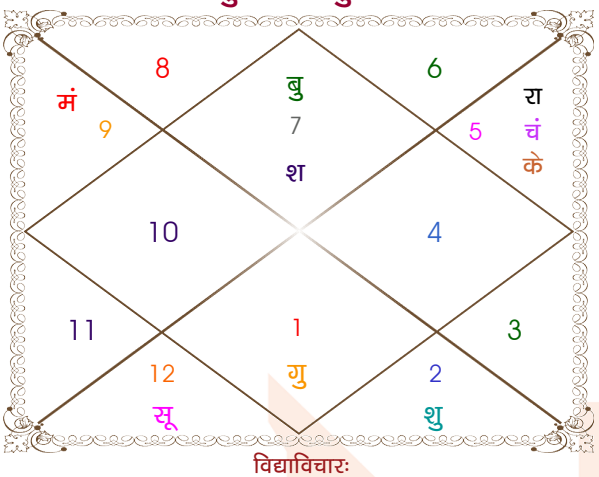

विद्याविचारः

सप्तविंशांश कुंडली

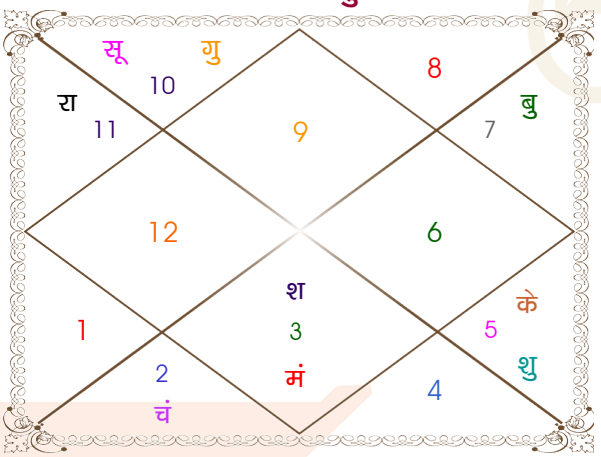

बलाबलज्ञानम्

त्रिंशांश कुंडली

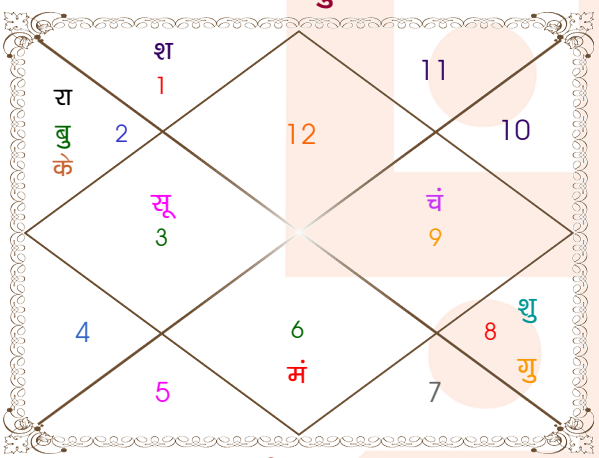

अरिष्टज्ञानम्

खवेदांश कुंडली

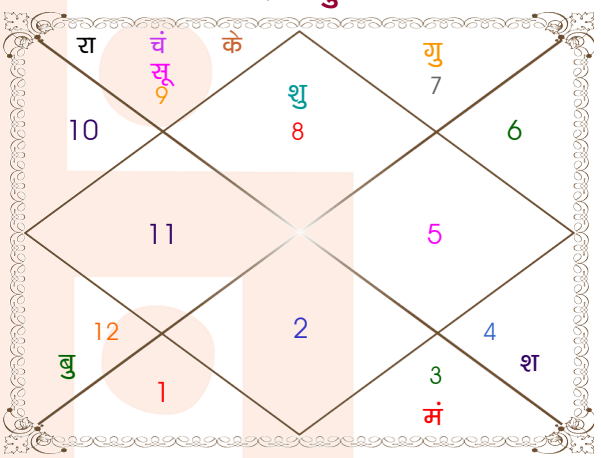

शुभाशुभज्ञानम्

अक्षवेदांश कुंडली

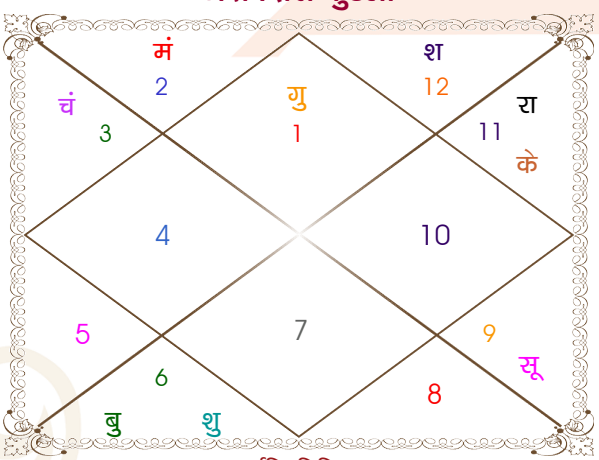

सर्वास्थितिविचारः

षष्ट्यंश कुंडली

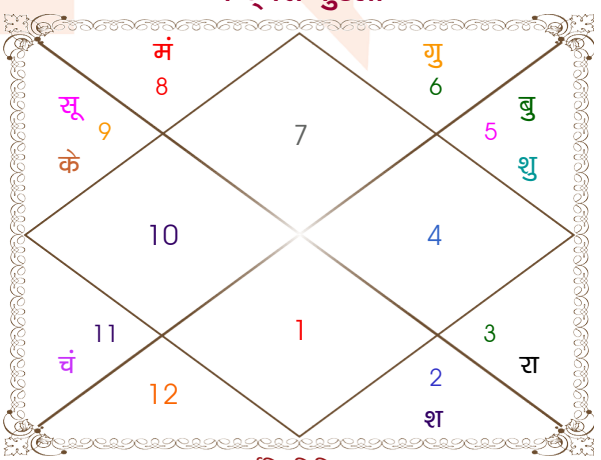

सर्वास्थितिविचारः

षोडशवर्ग सारणियाँ

षोडशवर्ग सारिणी

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	कन्या	धनु	सिंह	वृश्चि	मक	मीन	मक	धनु	मीन	कन्या
होरा	सिंह	कर्क	कर्क	कर्क	कर्क	सिंह	सिंह	सिंह	कर्क	कर्क
द्रेष्काण	मक	सिंह	धनु	वृश्चि	मक	वृश्चि	कन्या	धनु	मीन	कन्या
चतुर्थांश	मीन	कन्या	कुंभ	वृश्चि	मक	धनु	तुला	धनु	मीन	कन्या
सप्तमांश	कर्क	वृष	वृश्चि	मिथु	कर्क	मीन	मक	धनु	कन्या	मीन
नवमांश	मिथु	वृश्चि	सिंह	सिंह	कुंभ	मीन	कन्या	मेष	कर्क	मक
दशमांश	वृश्चि	सिंह	मक	कन्या	तुला	सिंह	मिथु	धनु	वृश्चि	वृष
द्वादशांश	मेष	कन्या	कुंभ	मक	कुंभ	मक	धनु	मक	मीन	कन्या
षोडशांश	तुला	धनु	मेष	वृश्चि	मिथु	कुंभ	मिथु	मक	धनु	धनु
विंशांश	सिंह	धनु	तुला	मेष	मिथु	कुंभ	तुला	कन्या	कन्या	कन्या
चतुर्विंशांश	तुला	मीन	सिंह	धनु	तुला	मेष	वृष	तुला	सिंह	सिंह
सप्तविंशांश	धनु	मक	वृष	मिथु	तुला	मक	सिंह	मिथु	कुंभ	सिंह
त्रिंशांश	मीन	मिथु	धनु	कन्या	वृष	वृश्चि	वृश्चि	मेष	वृष	वृष
खवेदांश	वृश्चि	धनु	धनु	मिथु	मीन	तुला	वृश्चि	कर्क	धनु	धनु
अक्षवेदांश	मेष	धनु	मिथु	वृष	कन्या	मेष	कन्या	मीन	कुंभ	कुंभ
षष्ट्यंश	तुला	धनु	कुंभ	वृश्चि	सिंह	कन्या	सिंह	वृष	मिथु	धनु

वर्ग भेद

	षडवर्ग	सप्तवर्ग	दशवर्ग	षोडशवर्ग
सूर्य	1 ---	1 ---	2 पारिजात	2 भेदक
चन्द्र	1 ---	1 ---	1 ---	2 भेदक
मंगल	3 व्यंजन	3 व्यंजन	5 सिंहान	7 कल्पवृक्ष
बुध	0 ---	0 ---	1 ---	3 कुसुम
गुरु	2 किंसुक	3 व्यंजन	3 उत्तम	4 नागपुष्प
शुक्र	0 ---	0 ---	0 ---	3 कुसुम
शनि	1 ---	1 ---	2 पारिजात	3 कुसुम
राहु	0 ---	1 ---	2 पारिजात	3 कुसुम
केतु	0 ---	1 ---	3 उत्तम	4 नागपुष्प

विंशोपक बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
षडवर्ग	17.15	9.95	18.30	13.75	16.80	13.15	13.00	6.85	8.20
सप्तवर्ग	16.05	10.73	17.10	12.50	17.30	13.75	13.13	7.90	8.13
दशवर्ग	16.65	9.85	17.08	13.88	14.95	12.55	15.00	9.98	7.90
षोडशवर्ग	16.93	9.78	17.60	14.98	15.23	12.85	14.70	9.73	8.05

मैत्री सारिणी

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	---	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	---	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	---	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

तात्कालिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र
चंद्र	शत्रु	---	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र
मंगल	मित्र	मित्र	---	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	मित्र	---	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु
गुरु	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	---	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु
शुक्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	---	मित्र	मित्र	शत्रु
शनि	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	---	मित्र	मित्र
राहु	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	---	शत्रु
केतु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	---

पंचधा मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	सम	अतिमित्र	मित्र	अतिमित्र	सम	अधिशत्रु	सम	सम
चंद्र	सम	---	मित्र	सम	शत्रु	शत्रु	शत्रु	अधिशत्रु	सम
मंगल	अतिमित्र	अतिमित्र	---	सम	सम	मित्र	मित्र	अधिशत्रु	अतिमित्र
बुध	अतिमित्र	अधिशत्रु	मित्र	---	मित्र	सम	मित्र	मित्र	शत्रु
गुरु	अतिमित्र	सम	सम	सम	---	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु
शुक्र	सम	अधिशत्रु	मित्र	सम	मित्र	---	अतिमित्र	अतिमित्र	सम
शनि	अधिशत्रु	अधिशत्रु	सम	अतिमित्र	मित्र	अतिमित्र	---	अतिमित्र	सम
राहु	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु	मित्र	शत्रु	अतिमित्र	अतिमित्र	---	अधिशत्रु
केतु	सम	सम	अतिमित्र	शत्रु	शत्रु	सम	सम	अधिशत्रु	---

षट्बल तथा भावबल सारिणी

षट्बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च बल	25	26	33	24	27	40	46
सप्तवर्गज बल	120	71	135	71	143	98	92
ओजयुग्मक बल	15	0	15	15	0	30	30
केन्द्र बल	60	15	15	30	60	30	60
द्रेष्काण बल	0	0	15	0	0	15	0
कुल स्थान बल	220	112	213	140	230	213	228
कुल दिग्बल	2	19	14	25	3	47	25
नतोन्नत बल	2	58	58	60	2	2	58
पक्ष बल	17	86	17	43	43	43	17
त्रिभाग बल	0	0	0	0	60	60	0
अब्द बल	0	0	15	0	0	0	0
मास बल	0	0	30	0	0	0	0
वार बल	0	0	0	0	0	45	0
होरा बल	0	0	0	0	0	0	60
अयन बल	3	19	4	57	41	11	60
युद्ध बल	0	0	0	0	0	0	0
कुल कालबल	22	163	124	160	146	161	195
कुल चेष्टाबल	0	0	19	22	27	23	8
कुल नैसर्गिक बल	60	51	17	26	34	43	9
कुल दृग्बल	15	16	22	2	2	-6	23
कुल षट्बल	318	362	409	375	441	480	487
रूप षट्बल	5.3	6.0	6.8	6.2	7.4	8.0	8.1
न्यूनतम आवश्यकता	5	6	5	7	7	6	5
अनुपात	1.1	1.0	1.4	0.9	1.1	1.5	1.6
संबंधित पद	5	6	3	7	4	2	1

इष्ट फल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
इष्ट फल	12.07	33.35	25.08	22.96	27.25	30.46	19.23
कष्ट फल	43.72	24.13	33.32	37.03	32.75	26.99	27.18

भाव बल

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भावाधिपति बल	375	480	409	441	487	487	441	409	480	375	362	318
भावदिग्बल	60	50	20	0	50	10	30	40	50	30	10	40
भावदृष्टि बल	58	66	46	54	-3	-14	20	36	15	29	70	72
कुल भाव बल	492	596	475	496	534	484	491	485	546	434	442	431
रूप भाव बल	8.2	9.9	7.9	8.3	8.9	8.1	8.2	8.1	9.1	7.2	7.4	7.2
संबंधित पद	5	1	9	4	3	8	6	7	2	11	10	12

षट्बल ग्राफ

स्थान बल

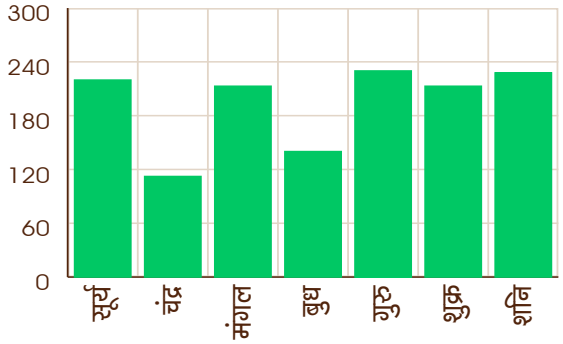

दिग्बल

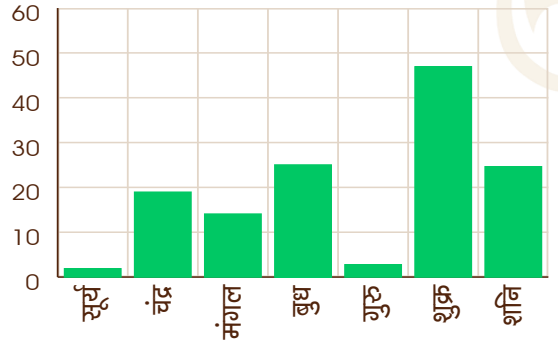

कालबल

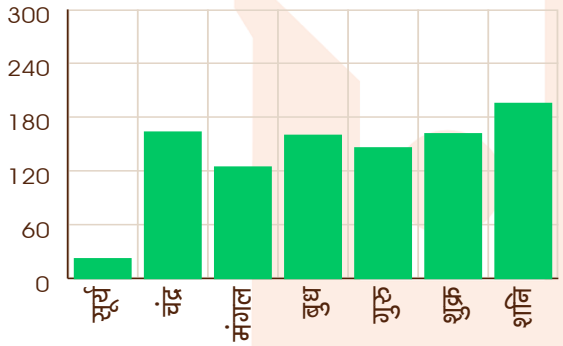

चेष्टाबल

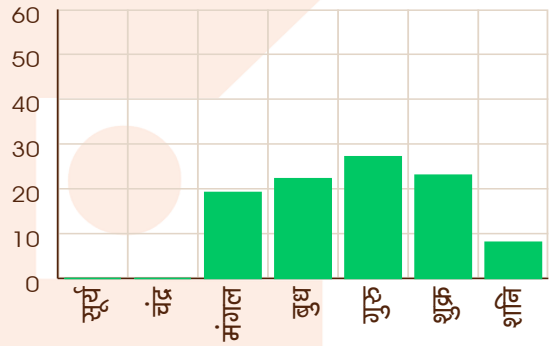

नैसर्गिक बल

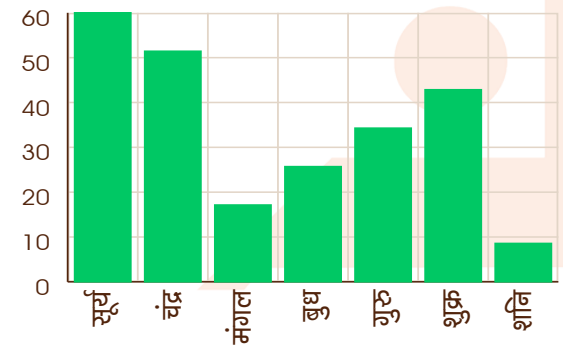

दृग्बल

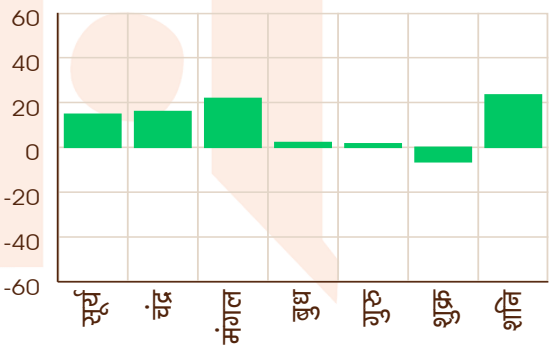

रूप षट्बल

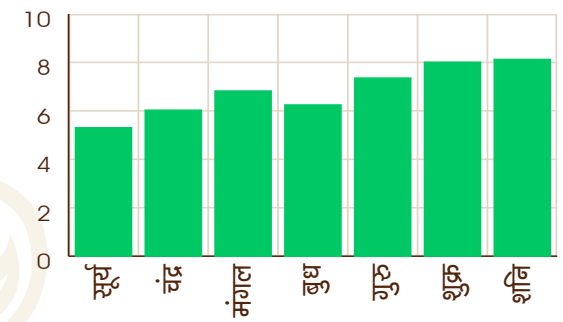

न्यूनतम षट्बल

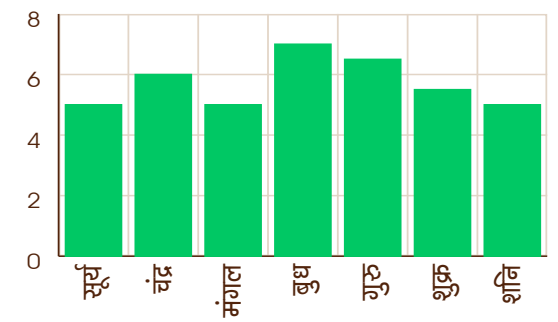

भाव बल ग्राफ

भावाधिपति बल

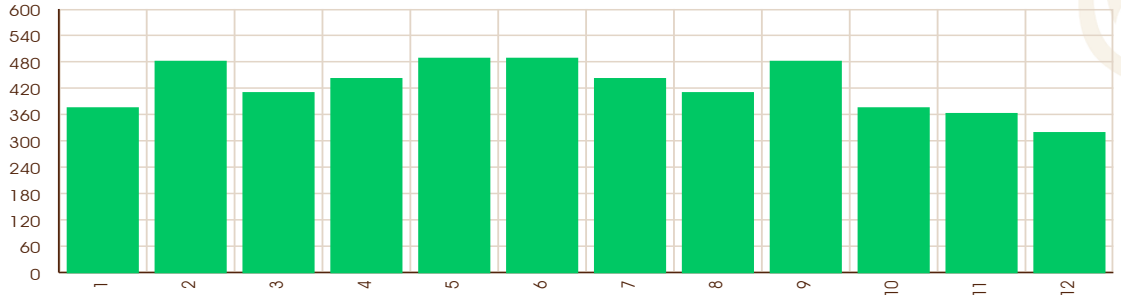

भावदिग्बल

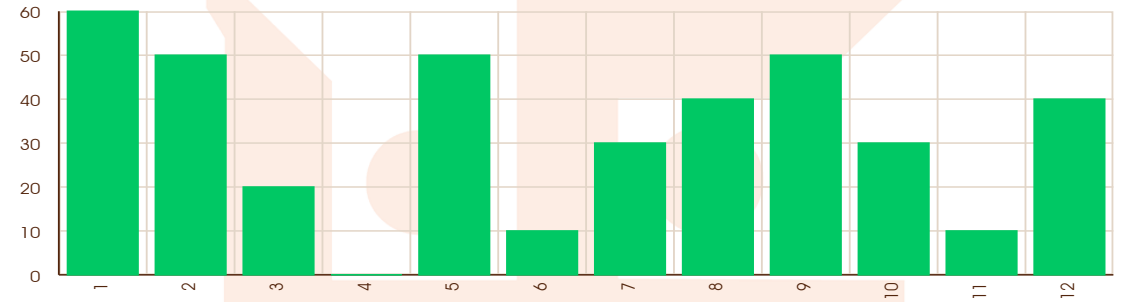

भावदृष्टि बल

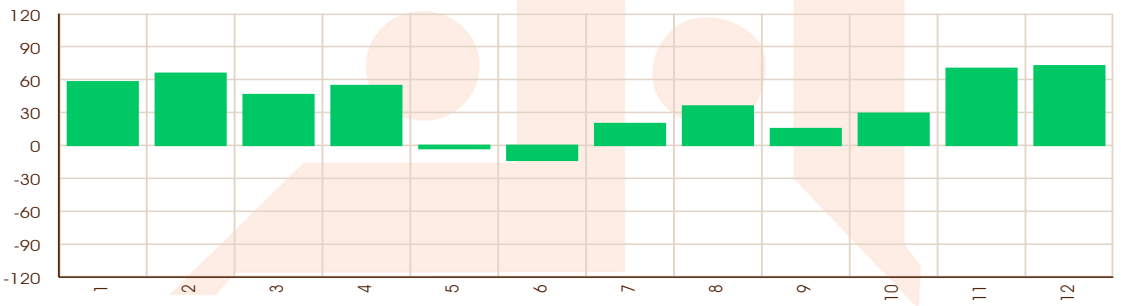

भाव बल

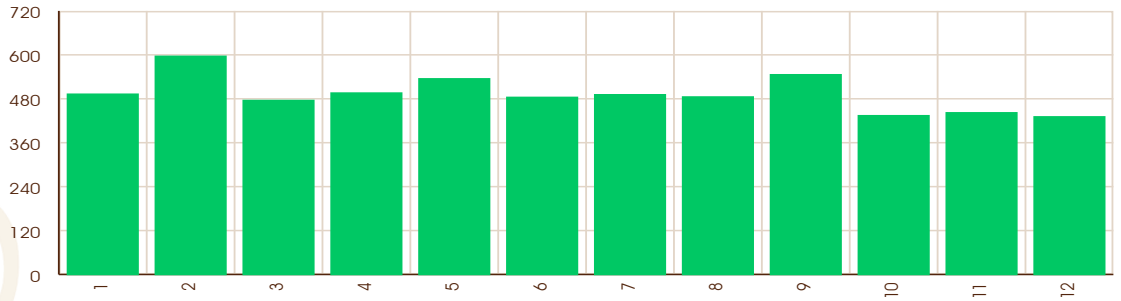

षट्बल तथा भावबल ग्राफ

रूप षट्बल

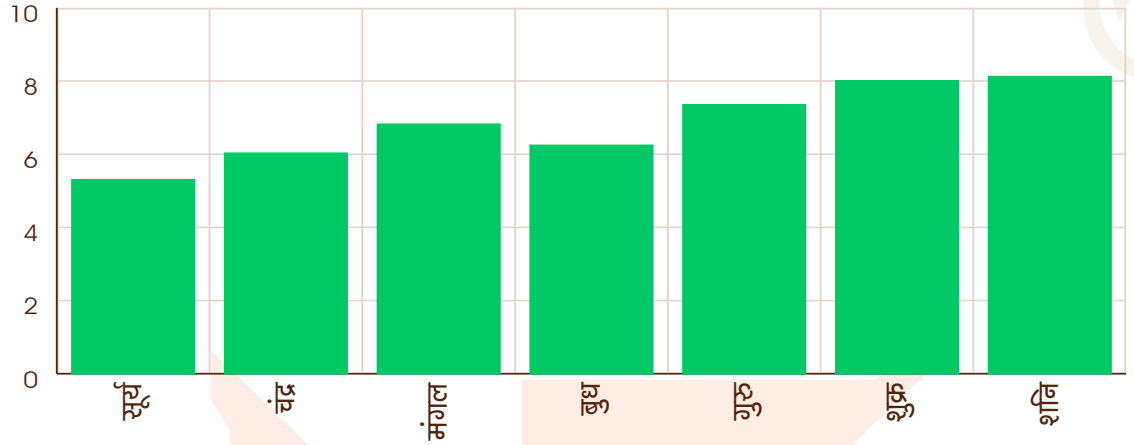

इष्ट - कष्ट फल

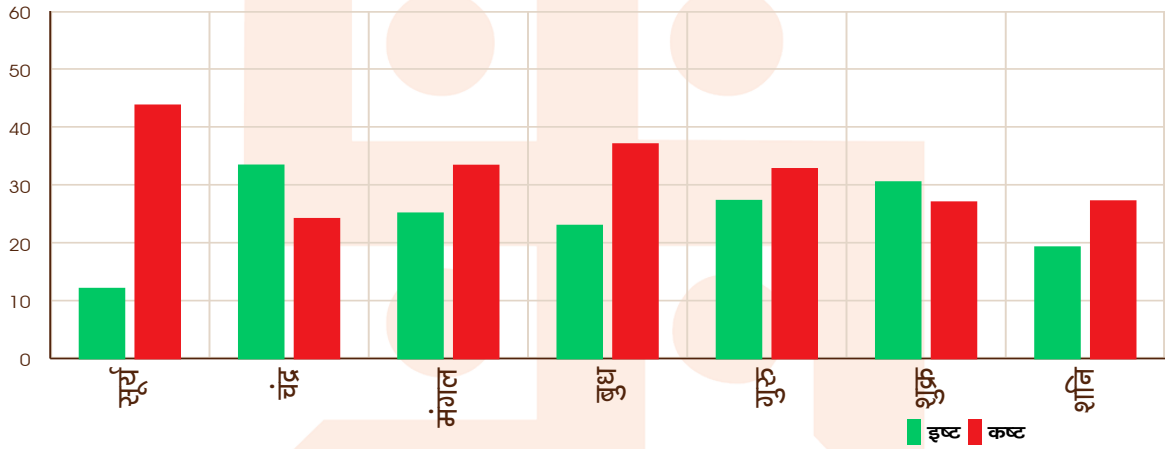

रूप भाव बल

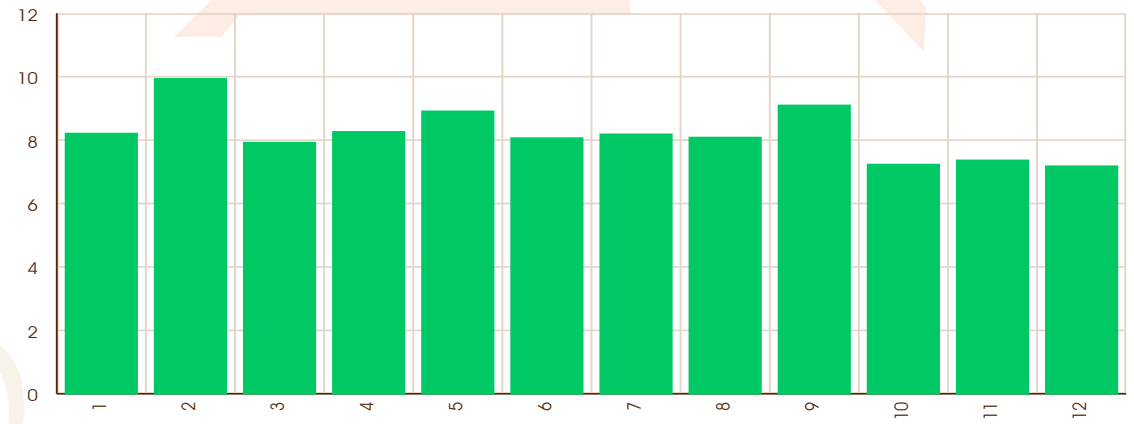

उपग्रह एवं आरूढ़

उपग्रह	संक्षि	राशि	अंश	उच्च	स्थिति	नक्षत्र	पद	नं.
लग्न	ल	कन्या	18:53:58	--	--	हस्त	3	13
गुलिक	गु	कन्या	25:39:13	--	--	चित्रा	1	14
काल	का	तुला	18:10:11	--	--	स्वाति	4	15
मृत्यु	मृ	धनु	01:43:59	--	--	मूल	1	19
यमघंटक	यम	सिंह	09:39:15	--	--	मघा	3	10
अर्द्धप्रहर	अर्द्ध	कर्क	17:22:42	--	--	आश्लेषा	1	9
धूम	धू	वृष	07:20:55	--	--	कृतिका	4	3
व्यतिपात	व्य	कुंभ	22:39:05	--	--	पू०भाद्रपद	1	25
परिवेश	परि	सिंह	22:39:05	--	--	पू०फाल्गुनी	3	11
इन्द्रचाप	इ	वृश्चि	07:20:55	--	--	अनुराधा	2	17
उपकेतु	उप	वृश्चि	24:00:55	--	--	ज्येष्ठा	3	18

प्राणपद	:	सिंह	05:57:52	कारकाँश लग्न	:	कन्या	10:57:18
भाव लग्न	:	मिथु	05:59:49	होरा लग्न	:	कुंभ	23:05:40
घटी लग्न	:	कर्क	19:30:09	वर्णद लग्न	:	सिंह	11:59:38

उपग्रह कुंडली

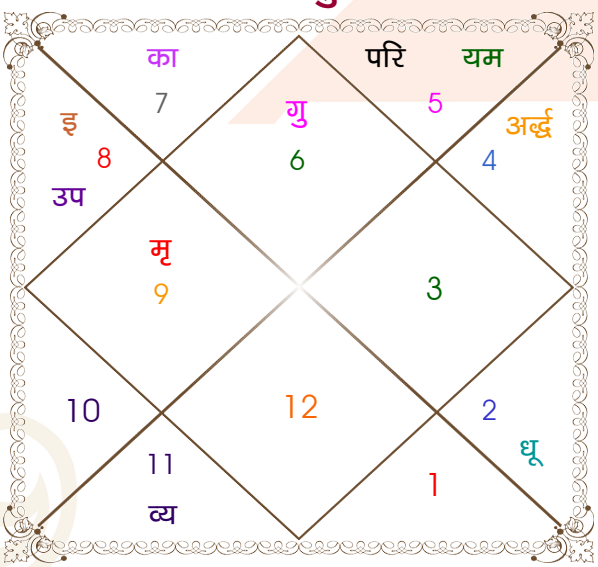

आरूढ़ कुंडली

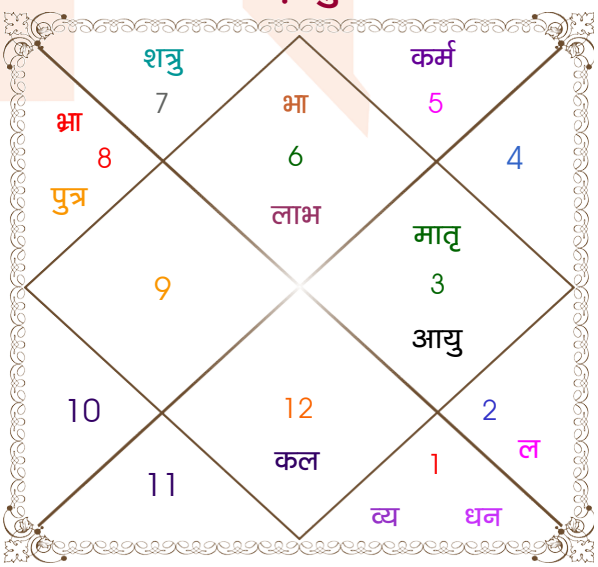

षन्नाडी चक्र

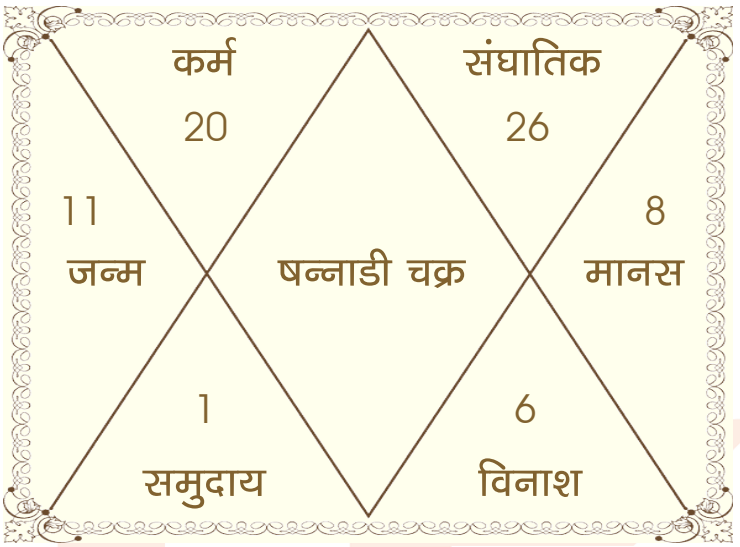

त्रिपाप चक्र

प्रथम चक्र	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
द्वितीय चक्र	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48
तृतीय चक्र	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84
केतु पताकी	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र
केतु कुंडली	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु
गुरु कुंडली	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु
प्रथम चक्र	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
द्वितीय चक्र	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60
तृतीय चक्र	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96
केतु पताकी	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि
केतु कुंडली	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु
गुरु कुंडली	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु
प्रथम चक्र	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36
द्वितीय चक्र	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72
तृतीय चक्र	97	98	99	100	101	102	103	104	105	106	107	108
केतु पताकी	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु
केतु कुंडली	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु
गुरु कुंडली	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु

प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग

	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	वृशि	कुल
शनि	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
गुरु	0	1	0	0	0	0	0	1	1	0	0	1	4
मंगल	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	8
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
शुक्र	1	0	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	3
बुध	1	0	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	7
चंद्र	0	1	0	0	0	1	1	0	0	0	1	0	4
लग्न	1	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	6
कुल	6	4	2	3	0	3	7	6	5	4	4	4	48

चंद्र का अष्टकवर्ग

	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कं	कुल
शनि	0	0	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	4
गुरु	0	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	7
मंगल	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	0	0	6
सूर्य	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	1	1	6
शुक्र	0	1	1	1	0	0	0	1	1	1	0	1	7
बुध	1	0	1	1	0	1	0	1	1	1	0	1	8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	1	0	7
लग्न	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	4
कुल	3	4	6	3	2	4	4	4	6	5	4	4	49

मंगल का अष्टकवर्ग

	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	कुल
शनि	0	1	0	0	1	0	0	1	1	1	1	1	7
गुरु	0	1	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	1	1	5
शुक्र	1	1	0	0	0	0	0	1	0	1	0	0	4
बुध	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	4
चंद्र	0	0	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	3
लग्न	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	5
कुल	4	4	2	4	2	1	3	6	2	4	4	3	39

बुध का अष्टकवर्ग

	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	वृशि	ध	कुल
शनि	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	8
गुरु	1	1	0	0	0	0	0	1	0	1	0	0	4
मंगल	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	8
सूर्य	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	1	0	5
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	8
बुध	1	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	8
चंद्र	1	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	0	6
लग्न	0	1	0	1	0	1	1	0	1	1	0	1	7
कुल	5	4	4	3	5	5	3	5	6	5	5	4	54

गुरु का अष्टकवर्ग

	मी	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	कुल
शनि	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	1	4
गुरु	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	8
मंगल	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	7
सूर्य	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	1	9
शुक्र	0	0	1	1	0	0	1	1	1	0	0	1	6
बुध	0	1	1	1	0	0	1	1	1	0	1	1	8
चंद्र	0	1	0	1	0	0	1	0	0	1	0	1	5
लग्न	1	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	1	9
कुल	3	4	6	7	2	2	7	5	4	5	4	7	56

शुक्र का अष्टकवर्ग

	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	वृशि	ध	कुल
शनि	0	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	0	7
गुरु	1	0	0	0	0	0	1	0	0	1	1	1	5
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	0	1	1	0	0	6
सूर्य	0	0	0	0	0	0	1	0	0	1	1	0	3
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	9
बुध	0	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	0	5
चंद्र	0	0	1	1	0	1	1	1	1	1	1	1	9
लग्न	1	0	0	1	1	0	1	0	1	1	1	1	8
कुल	4	3	4	5	3	2	6	3	6	7	6	3	52

शनि का अष्टकवर्ग

	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	वृशि	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
गुरु	0	1	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0	4
मंगल	0	1	0	1	1	0	0	0	1	1	1	0	6
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
शुक्र	1	0	0	0	0	0	1	0	0	0	0	1	3
बुध	1	0	0	0	0	0	1	0	1	1	1	1	6
चंद्र	0	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	3
लग्न	1	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	6
कुल	4	4	3	2	2	1	5	3	3	4	5	3	39

लग्न का अष्टकवर्ग

	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कं	सि	कुल
शनि	1	1	0	1	0	1	1	0	1	0	0	0	6
गुरु	1	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	1	9
मंगल	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0	0	1	5
सूर्य	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	0	0	6
शुक्र	1	0	0	0	1	1	1	1	1	0	0	1	7
बुध	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	0	1	7
चंद्र	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	1	0	5
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
कुल	5	4	5	2	5	5	4	4	4	4	3	4	49

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	2	1	5	3	3	4	5	3	4	4	3	2	39
गुरु	4	6	7	2	2	7	5	4	5	4	7	3	56
मंगल	1	3	6	2	4	4	3	4	4	2	4	2	39
सूर्य	0	3	7	6	5	4	4	4	6	4	2	3	48
शुक्र	5	3	2	6	3	6	7	6	3	4	3	4	52
बुध	3	5	5	3	5	6	5	5	4	5	4	4	54
चंद्र	6	5	4	4	3	4	6	3	2	4	4	4	49
बिन्दु	21	26	36	26	25	35	35	29	28	27	27	22	337
रेखा	35	30	20	30	31	21	21	27	28	29	29	34	335

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	0	2	1	1	3	2	1	2	3	0	0	15
गुरु	2	2	2	0	0	3	0	2	3	0	2	1	17
मंगल	0	1	3	0	3	2	0	2	3	0	1	0	15
सूर्य	0	0	5	3	5	1	2	1	6	1	0	0	24
शुक्र	2	0	0	2	0	3	5	2	0	1	1	0	16
बुध	0	0	1	0	2	1	1	2	1	0	0	1	9
चंद्र	4	1	0	1	1	0	2	0	0	0	0	1	10
रेखा	8	4	13	7	12	13	12	10	15	5	4	3	106

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	0	2	1	1	1	2	1	2	3	0	0	13
गुरु	0	2	2	0	0	1	0	2	3	0	2	1	13
मंगल	0	1	1	0	3	2	0	2	3	0	1	0	13
सूर्य	0	0	4	3	5	1	2	1	6	1	0	0	23
शुक्र	0	0	0	2	0	3	5	2	0	1	0	0	13
बुध	0	0	0	0	2	0	1	2	1	0	0	1	7
चंद्र	4	1	0	1	1	0	1	0	0	0	0	1	9
रेखा	4	4	9	7	12	8	11	10	15	5	3	3	91

शोध्य पिंड

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	180	71	112	64	118	79	90
ग्रह पिंड	105	15	61	46	56	28	69
शोध्य पिंड	285	86	173	110	174	107	159

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग

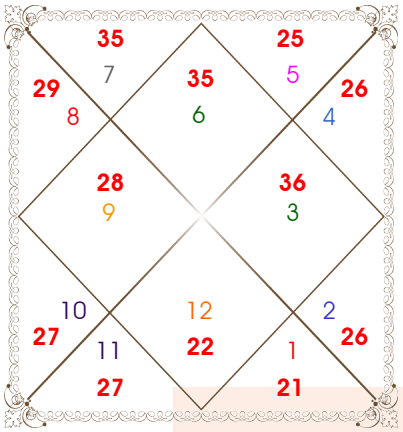

सूर्य का अष्टकवर्ग

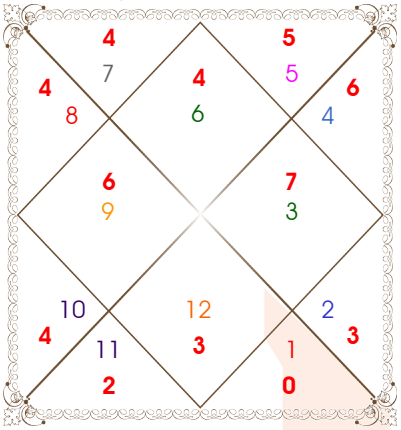

चंद्र का अष्टकवर्ग

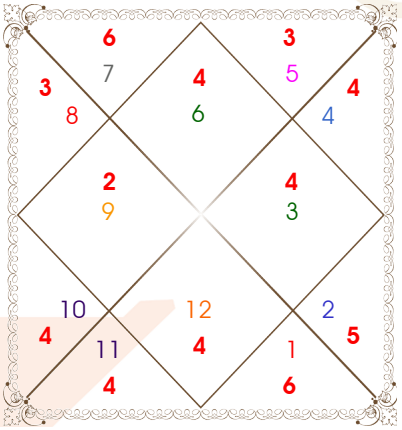

मंगल का अष्टकवर्ग

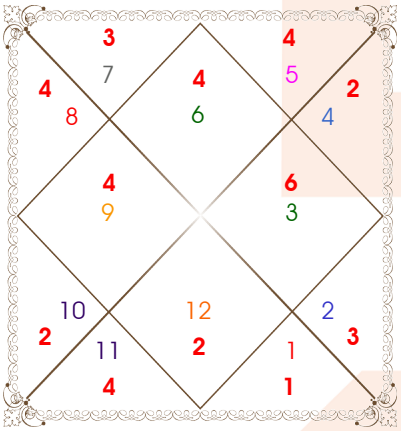

बुध का अष्टकवर्ग

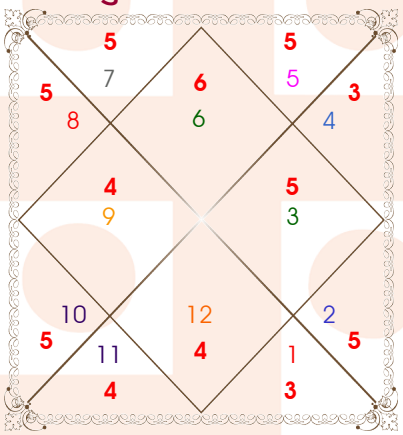

गुरु का अष्टकवर्ग

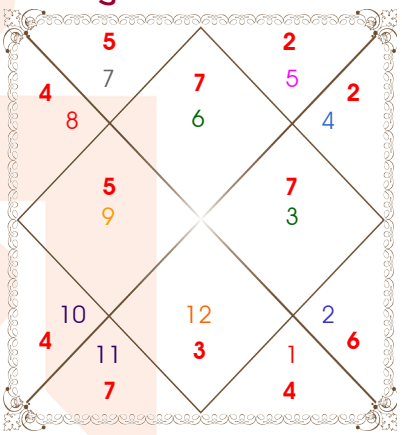

शुक्र का अष्टकवर्ग

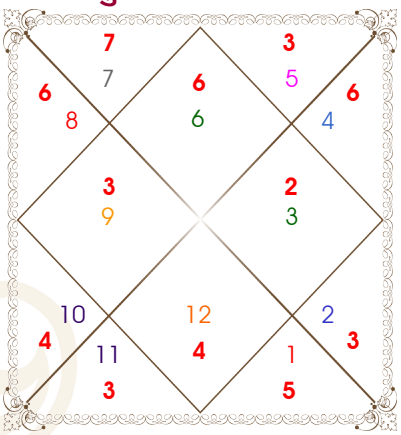

शनि का अष्टकवर्ग

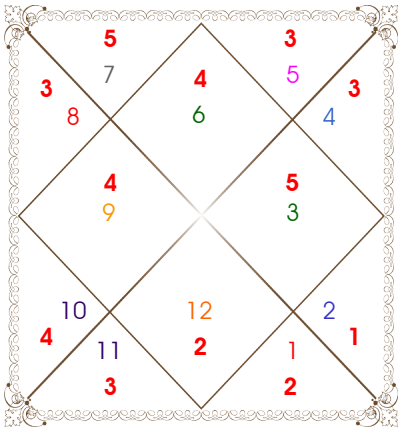

लग्न का अष्टकवर्ग

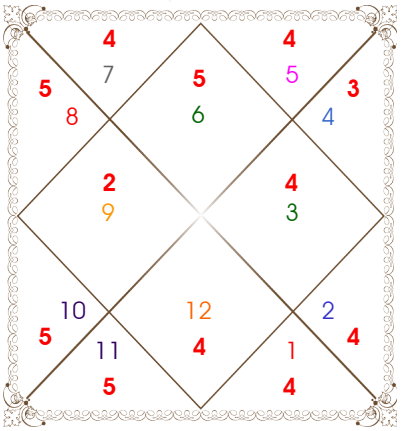

भिन्नाष्टक ग्राफ

सूर्य

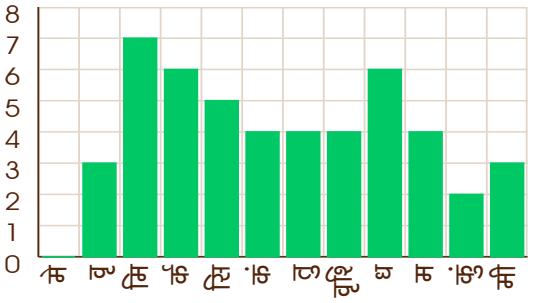

चन्द्र

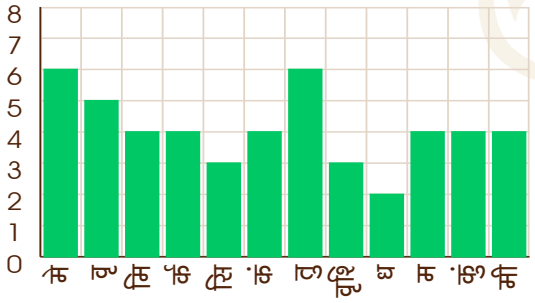

मंगल

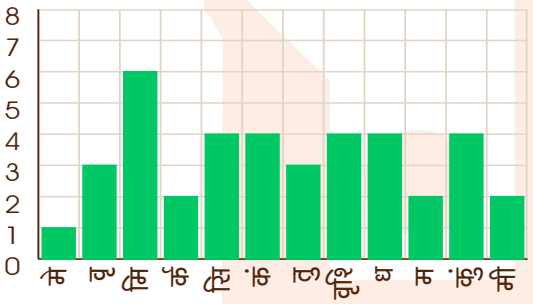

बुध

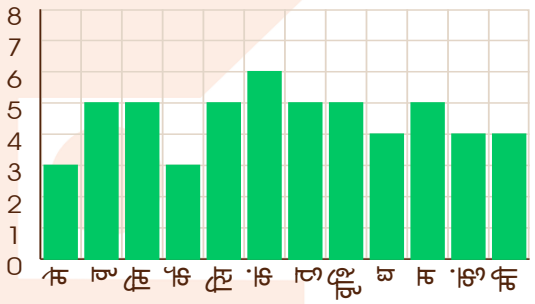

गुरु

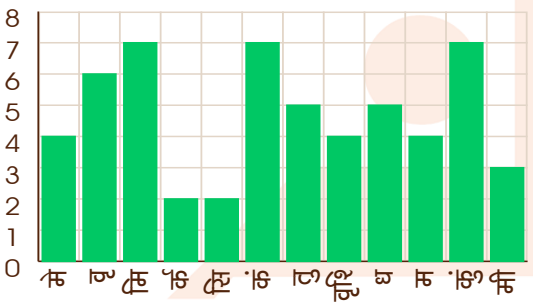

शुक्र

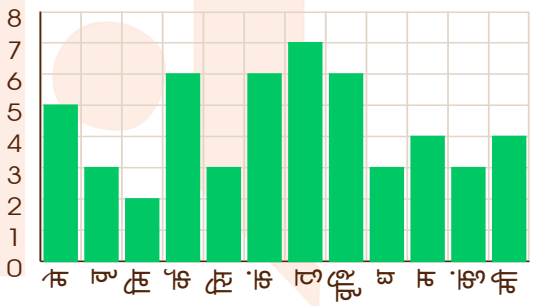

शनि

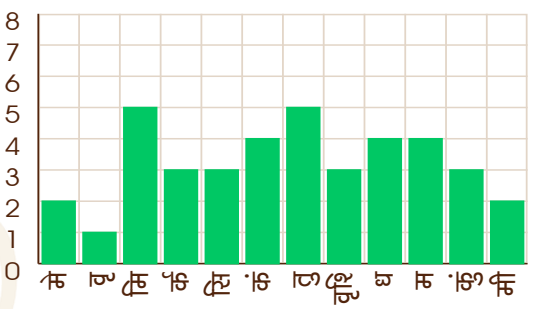

लग्न

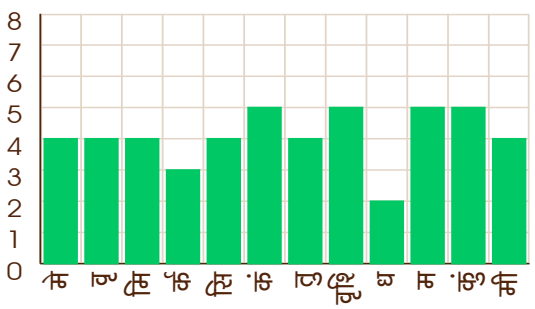

अष्टकवर्ग ग्राफ

सर्वाष्टकवर्ग

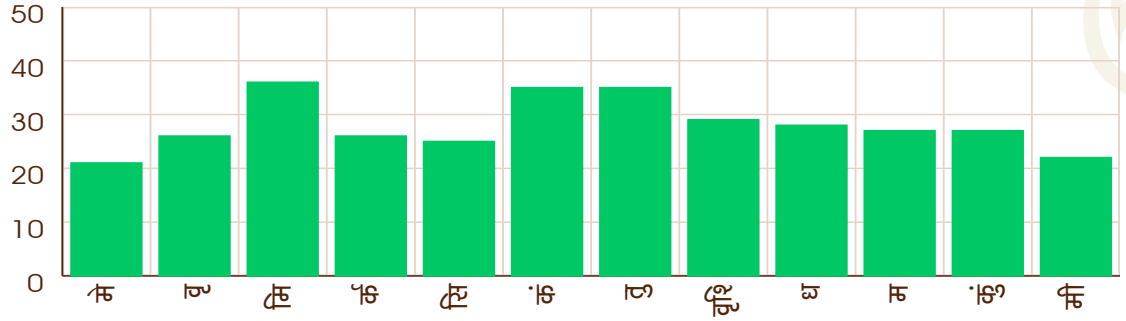

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग

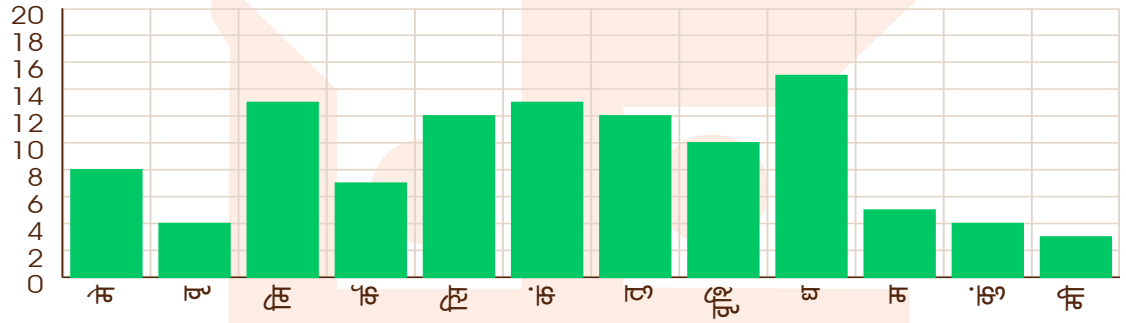

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग

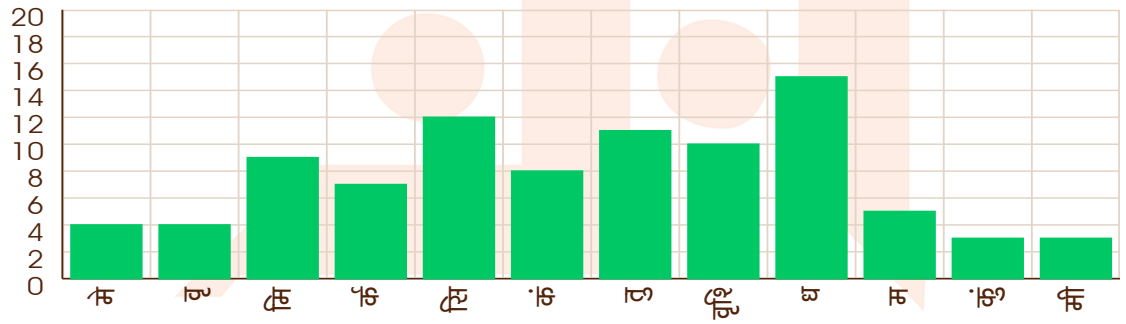

शोध्य पिंड

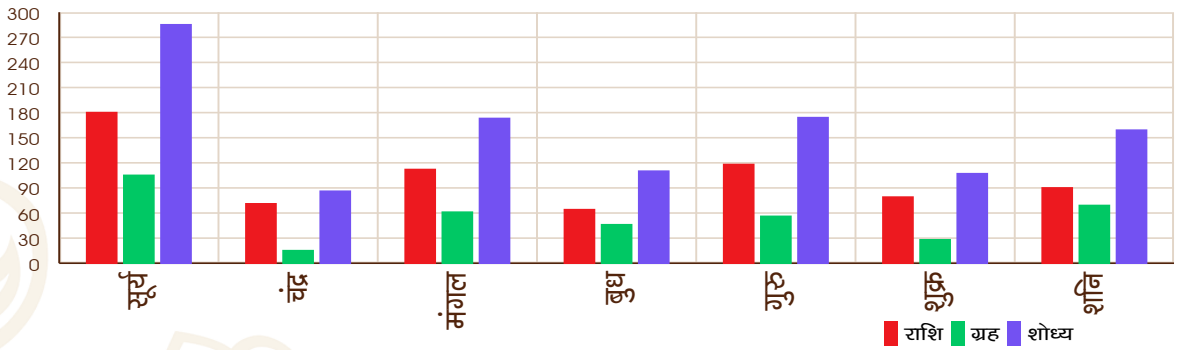

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शुक्र 17 वर्ष 1 मास 13 दिन

शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष	
09/01/1988		21/02/2005		21/02/2011		21/02/2021		22/02/2028	
21/02/2005		21/02/2011		21/02/2021		22/02/2028		21/02/2046	
शुक्र	22/06/1988	सूर्य	10/06/2005	चंद्र	23/12/2011	मंगल	20/07/2021	राहु	04/11/2030
सूर्य	23/06/1989	चंद्र	10/12/2005	मंगल	23/07/2012	राहु	08/08/2022	गुरु	29/03/2033
चंद्र	21/02/1991	मंगल	17/04/2006	राहु	22/01/2014	गुरु	14/07/2023	शनि	03/02/2036
मंगल	23/04/1992	राहु	12/03/2007	गुरु	24/05/2015	शनि	22/08/2024	बुध	23/08/2038
राहु	23/04/1995	गुरु	29/12/2007	शनि	22/12/2016	बुध	19/08/2025	केतु	10/09/2039
गुरु	22/12/1997	शनि	10/12/2008	बुध	23/05/2018	केतु	16/01/2026	शुक्र	10/09/2042
शनि	21/02/2001	बुध	16/10/2009	केतु	23/12/2018	शुक्र	18/03/2027	सूर्य	05/08/2043
बुध	23/12/2003	केतु	21/02/2010	शुक्र	22/08/2020	सूर्य	24/07/2027	चंद्र	03/02/2045
केतु	21/02/2005	शुक्र	21/02/2011	सूर्य	21/02/2021	चंद्र	22/02/2028	मंगल	21/02/2046

गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष	
21/02/2046		21/02/2062		21/02/2081		21/02/2098		22/02/2105	
21/02/2062		21/02/2081		21/02/2098		22/02/2105		00/00/0000	
गुरु	10/04/2048	शनि	24/02/2065	बुध	21/07/2083	केतु	20/07/2098	शुक्र	10/01/2108
शनि	23/10/2050	बुध	04/11/2067	केतु	17/07/2084	शुक्र	19/09/2099		00/00/0000
बुध	28/01/2053	केतु	13/12/2068	शुक्र	18/05/2087	सूर्य	25/01/2100		00/00/0000
केतु	03/01/2054	शुक्र	12/02/2072	सूर्य	23/03/2088	चंद्र	26/08/2100		00/00/0000
शुक्र	03/09/2056	सूर्य	24/01/2073	चंद्र	23/08/2089	मंगल	22/01/2101		00/00/0000
सूर्य	23/06/2057	चंद्र	26/08/2074	मंगल	20/08/2090	राहु	10/02/2102		00/00/0000
चंद्र	23/10/2058	मंगल	05/10/2075	राहु	08/03/2093	गुरु	17/01/2103		00/00/0000
मंगल	29/09/2059	राहु	11/08/2078	गुरु	14/06/2095	शनि	26/02/2104		00/00/0000
राहु	21/02/2062	गुरु	21/02/2081	शनि	21/02/2098	बुध	22/02/2105		00/00/0000

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल शुक्र 17 वर्ष 1 मा 11 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल		शुक्र - राहु	
09/01/1988		22/06/1988		23/06/1989		21/02/1991		23/04/1992	
22/06/1988		23/06/1989		21/02/1991		23/04/1992		23/04/1995	
	00/00/0000	सूर्य	11/07/1988	चंद्र	12/08/1989	मंगल	18/03/1991	राहु	04/10/1992
	00/00/0000	चंद्र	10/08/1988	मंगल	17/09/1989	राहु	21/05/1991	गुरु	27/02/1993
	00/00/0000	मंगल	31/08/1988	राहु	17/12/1989	गुरु	17/07/1991	शनि	19/08/1993
	00/00/0000	राहु	25/10/1988	गुरु	08/03/1990	शनि	22/09/1991	बुध	22/01/1994
	00/00/0000	गुरु	13/12/1988	शनि	13/06/1990	बुध	22/11/1991	केतु	27/03/1994
	00/00/0000	शनि	09/02/1989	बुध	07/09/1990	केतु	17/12/1991	शुक्र	25/09/1994
	09/01/1988	बुध	01/04/1989	केतु	12/10/1990	शुक्र	26/02/1992	सूर्य	19/11/1994
बुध	12/04/1988	केतु	23/04/1989	शुक्र	22/01/1991	सूर्य	18/03/1992	चंद्र	18/02/1995
केतु	22/06/1988	शुक्र	23/06/1989	सूर्य	21/02/1991	चंद्र	23/04/1992	मंगल	23/04/1995

शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि		शुक्र - बुध		शुक्र - केतु		सूर्य - सूर्य	
23/04/1995		22/12/1997		21/02/2001		23/12/2003		21/02/2005	
22/12/1997		21/02/2001		23/12/2003		21/02/2005		10/06/2005	
गुरु	31/08/1995	शनि	23/06/1998	बुध	17/07/2001	केतु	17/01/2004	सूर्य	26/02/2005
शनि	01/02/1996	बुध	04/12/1998	केतु	16/09/2001	शुक्र	28/03/2004	चंद्र	07/03/2005
बुध	18/06/1996	केतु	10/02/1999	शुक्र	07/03/2002	सूर्य	18/04/2004	मंगल	14/03/2005
केतु	14/08/1996	शुक्र	21/08/1999	सूर्य	28/04/2002	चंद्र	23/05/2004	राहु	30/03/2005
शुक्र	23/01/1997	सूर्य	18/10/1999	चंद्र	23/07/2002	मंगल	17/06/2004	गुरु	14/04/2005
सूर्य	13/03/1997	चंद्र	23/01/2000	मंगल	22/09/2002	राहु	20/08/2004	शनि	01/05/2005
चंद्र	02/06/1997	मंगल	30/03/2000	राहु	24/02/2003	गुरु	16/10/2004	बुध	17/05/2005
मंगल	29/07/1997	राहु	20/09/2000	गुरु	12/07/2003	शनि	23/12/2004	केतु	23/05/2005
राहु	22/12/1997	गुरु	21/02/2001	शनि	23/12/2003	बुध	21/02/2005	शुक्र	10/06/2005

सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल		सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि	
10/06/2005		10/12/2005		17/04/2006		12/03/2007		29/12/2007	
10/12/2005		17/04/2006		12/03/2007		29/12/2007		10/12/2008	
चंद्र	26/06/2005	मंगल	18/12/2005	राहु	05/06/2006	गुरु	20/04/2007	शनि	22/02/2008
मंगल	06/07/2005	राहु	06/01/2006	गुरु	19/07/2006	शनि	05/06/2007	बुध	11/04/2008
राहु	03/08/2005	गुरु	23/01/2006	शनि	09/09/2006	बुध	16/07/2007	केतु	01/05/2008
गुरु	27/08/2005	शनि	12/02/2006	बुध	26/10/2006	केतु	02/08/2007	शुक्र	28/06/2008
शनि	25/09/2005	बुध	02/03/2006	केतु	14/11/2006	शुक्र	20/09/2007	सूर्य	15/07/2008
बुध	21/10/2005	केतु	10/03/2006	शुक्र	08/01/2007	सूर्य	05/10/2007	चंद्र	13/08/2008
केतु	01/11/2005	शुक्र	31/03/2006	सूर्य	24/01/2007	चंद्र	29/10/2007	मंगल	03/09/2008
शुक्र	01/12/2005	सूर्य	06/04/2006	चंद्र	20/02/2007	मंगल	15/11/2007	राहु	25/10/2008
सूर्य	10/12/2005	चंद्र	17/04/2006	मंगल	12/03/2007	राहु	29/12/2007	गुरु	10/12/2008

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - बुध		सूर्य - केतु		सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल	
10/12/2008		16/10/2009		21/02/2010		21/02/2011		23/12/2011	
16/10/2009		21/02/2010		21/02/2011		23/12/2011		23/07/2012	
बुध	23/01/2009	केतु	24/10/2009	शुक्र	23/04/2010	चंद्र	19/03/2011	मंगल	04/01/2012
केतु	10/02/2009	शुक्र	14/11/2009	सूर्य	11/05/2010	मंगल	05/04/2011	राहु	05/02/2012
शुक्र	03/04/2009	सूर्य	20/11/2009	चंद्र	11/06/2010	राहु	21/05/2011	गुरु	05/03/2012
सूर्य	18/04/2009	चंद्र	01/12/2009	मंगल	02/07/2010	गुरु	01/07/2011	शनि	07/04/2012
चंद्र	14/05/2009	मंगल	09/12/2009	राहु	26/08/2010	शनि	18/08/2011	बुध	07/05/2012
मंगल	01/06/2009	राहु	28/12/2009	गुरु	13/10/2010	बुध	30/09/2011	केतु	20/05/2012
राहु	18/07/2009	गुरु	14/01/2010	शनि	10/12/2010	केतु	18/10/2011	शुक्र	24/06/2012
गुरु	28/08/2009	शनि	03/02/2010	बुध	31/01/2011	शुक्र	08/12/2011	सूर्य	05/07/2012
शनि	16/10/2009	बुध	21/02/2010	केतु	21/02/2011	सूर्य	23/12/2011	चंद्र	23/07/2012

चंद्र - राहु		चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - बुध		चंद्र - केतु	
23/07/2012		22/01/2014		24/05/2015		22/12/2016		23/05/2018	
22/01/2014		24/05/2015		22/12/2016		23/05/2018		23/12/2018	
राहु	13/10/2012	गुरु	28/03/2014	शनि	23/08/2015	बुध	05/03/2017	केतु	05/06/2018
गुरु	25/12/2012	शनि	13/06/2014	बुध	13/11/2015	केतु	04/04/2017	शुक्र	10/07/2018
शनि	22/03/2013	बुध	21/08/2014	केतु	17/12/2015	शुक्र	30/06/2017	सूर्य	21/07/2018
बुध	07/06/2013	केतु	18/09/2014	शुक्र	22/03/2016	सूर्य	26/07/2017	चंद्र	08/08/2018
केतु	09/07/2013	शुक्र	08/12/2014	सूर्य	20/04/2016	चंद्र	07/09/2017	मंगल	20/08/2018
शुक्र	09/10/2013	सूर्य	02/01/2015	चंद्र	07/06/2016	मंगल	07/10/2017	राहु	21/09/2018
सूर्य	05/11/2013	चंद्र	11/02/2015	मंगल	11/07/2016	राहु	24/12/2017	गुरु	20/10/2018
चंद्र	21/12/2013	मंगल	12/03/2015	राहु	06/10/2016	गुरु	03/03/2018	शनि	22/11/2018
मंगल	22/01/2014	राहु	24/05/2015	गुरु	22/12/2016	शनि	23/05/2018	बुध	23/12/2018

चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल		मंगल - राहु		मंगल - गुरु	
23/12/2018		22/08/2020		21/02/2021		20/07/2021		08/08/2022	
22/08/2020		21/02/2021		20/07/2021		08/08/2022		14/07/2023	
शुक्र	03/04/2019	सूर्य	31/08/2020	मंगल	02/03/2021	राहु	16/09/2021	गुरु	22/09/2022
सूर्य	03/05/2019	चंद्र	16/09/2020	राहु	24/03/2021	गुरु	06/11/2021	शनि	15/11/2022
चंद्र	23/06/2019	मंगल	26/09/2020	गुरु	13/04/2021	शनि	05/01/2022	बुध	02/01/2023
मंगल	29/07/2019	राहु	24/10/2020	शनि	06/05/2021	बुध	01/03/2022	केतु	22/01/2023
राहु	28/10/2019	गुरु	17/11/2020	बुध	28/05/2021	केतु	23/03/2022	शुक्र	20/03/2023
गुरु	17/01/2020	शनि	16/12/2020	केतु	05/06/2021	शुक्र	26/05/2022	सूर्य	06/04/2023
शनि	23/04/2020	बुध	11/01/2021	शुक्र	30/06/2021	सूर्य	14/06/2022	चंद्र	04/05/2023
बुध	18/07/2020	केतु	21/01/2021	सूर्य	08/07/2021	चंद्र	16/07/2022	मंगल	24/05/2023
केतु	22/08/2020	शुक्र	21/02/2021	चंद्र	20/07/2021	मंगल	08/08/2022	राहु	14/07/2023

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - शनि		मंगल - बुध		मंगल - केतु		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य	
14/07/2023		22/08/2024		19/08/2025		16/01/2026		18/03/2027	
22/08/2024		19/08/2025		16/01/2026		18/03/2027		24/07/2027	
शनि	17/09/2023	बुध	13/10/2024	केतु	28/08/2025	शुक्र	28/03/2026	सूर्य	24/03/2027
बुध	13/11/2023	केतु	03/11/2024	शुक्र	22/09/2025	सूर्य	18/04/2026	चंद्र	04/04/2027
केतु	06/12/2023	शुक्र	02/01/2025	सूर्य	29/09/2025	चंद्र	23/05/2026	मंगल	11/04/2027
शुक्र	12/02/2024	सूर्य	20/01/2025	चंद्र	12/10/2025	मंगल	17/06/2026	राहु	30/04/2027
सूर्य	03/03/2024	चंद्र	19/02/2025	मंगल	21/10/2025	राहु	20/08/2026	गुरु	17/05/2027
चंद्र	06/04/2024	मंगल	12/03/2025	राहु	12/11/2025	गुरु	16/10/2026	शनि	07/06/2027
मंगल	30/04/2024	राहु	06/05/2025	गुरु	02/12/2025	शनि	23/12/2026	बुध	25/06/2027
राहु	29/06/2024	गुरु	23/06/2025	शनि	25/12/2025	बुध	21/02/2027	केतु	02/07/2027
गुरु	22/08/2024	शनि	19/08/2025	बुध	16/01/2026	केतु	18/03/2027	शुक्र	24/07/2027

मंगल - चंद्र		राहु - राहु		राहु - गुरु		राहु - शनि		राहु - बुध	
24/07/2027		22/02/2028		04/11/2030		29/03/2033		03/02/2036	
22/02/2028		04/11/2030		29/03/2033		03/02/2036		23/08/2038	
चंद्र	10/08/2027	राहु	19/07/2028	गुरु	01/03/2031	शनि	10/09/2033	बुध	14/06/2036
मंगल	23/08/2027	गुरु	27/11/2028	शनि	17/07/2031	बुध	05/02/2034	केतु	08/08/2036
राहु	24/09/2027	शनि	02/05/2029	बुध	19/11/2031	केतु	06/04/2034	शुक्र	10/01/2037
गुरु	22/10/2027	बुध	19/09/2029	केतु	09/01/2032	शुक्र	27/09/2034	सूर्य	25/02/2037
शनि	25/11/2027	केतु	15/11/2029	शुक्र	03/06/2032	सूर्य	18/11/2034	चंद्र	14/05/2037
बुध	25/12/2027	शुक्र	29/04/2030	सूर्य	17/07/2032	चंद्र	13/02/2035	मंगल	07/07/2037
केतु	06/01/2028	सूर्य	17/06/2030	चंद्र	28/09/2032	मंगल	14/04/2035	राहु	24/11/2037
शुक्र	11/02/2028	चंद्र	07/09/2030	मंगल	18/11/2032	राहु	18/09/2035	गुरु	28/03/2038
सूर्य	22/02/2028	मंगल	04/11/2030	राहु	29/03/2033	गुरु	03/02/2036	शनि	23/08/2038

राहु - केतु		राहु - शुक्र		राहु - सूर्य		राहु - चंद्र		राहु - मंगल	
23/08/2038		10/09/2039		10/09/2042		05/08/2043		03/02/2045	
10/09/2039		10/09/2042		05/08/2043		03/02/2045		21/02/2046	
केतु	14/09/2038	शुक्र	11/03/2040	सूर्य	26/09/2042	चंद्र	19/09/2043	मंगल	25/02/2045
शुक्र	17/11/2038	सूर्य	05/05/2040	चंद्र	24/10/2042	मंगल	21/10/2043	राहु	24/04/2045
सूर्य	06/12/2038	चंद्र	04/08/2040	मंगल	12/11/2042	राहु	12/01/2044	गुरु	14/06/2045
चंद्र	07/01/2039	मंगल	07/10/2040	राहु	31/12/2042	गुरु	25/03/2044	शनि	13/08/2045
मंगल	30/01/2039	राहु	20/03/2041	गुरु	13/02/2043	शनि	19/06/2044	बुध	07/10/2045
राहु	28/03/2039	गुरु	13/08/2041	शनि	06/04/2043	बुध	05/09/2044	केतु	29/10/2045
गुरु	18/05/2039	शनि	03/02/2042	बुध	23/05/2043	केतु	07/10/2044	शुक्र	01/01/2046
शनि	18/07/2039	बुध	08/07/2042	केतु	11/06/2043	शुक्र	06/01/2045	सूर्य	20/01/2046
बुध	10/09/2039	केतु	10/09/2042	शुक्र	05/08/2043	सूर्य	03/02/2045	चंद्र	21/02/2046

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - बुध		गुरु - केतु		गुरु - शुक्र	
21/02/2046		10/04/2048		23/10/2050		28/01/2053		03/01/2054	
10/04/2048		23/10/2050		28/01/2053		03/01/2054		03/09/2056	
गुरु	05/06/2046	शनि	04/09/2048	बुध	17/02/2051	केतु	16/02/2053	शुक्र	15/06/2054
शनि	06/10/2046	बुध	13/01/2049	केतु	06/04/2051	शुक्र	14/04/2053	सूर्य	02/08/2054
बुध	25/01/2047	केतु	08/03/2049	शुक्र	22/08/2051	सूर्य	01/05/2053	चंद्र	23/10/2054
केतु	11/03/2047	शुक्र	09/08/2049	सूर्य	03/10/2051	चंद्र	30/05/2053	मंगल	18/12/2054
शुक्र	19/07/2047	सूर्य	24/09/2049	चंद्र	11/12/2051	मंगल	19/06/2053	राहु	14/05/2055
सूर्य	27/08/2047	चंद्र	10/12/2049	मंगल	28/01/2052	राहु	09/08/2053	गुरु	20/09/2055
चंद्र	31/10/2047	मंगल	02/02/2050	राहु	31/05/2052	गुरु	23/09/2053	शनि	22/02/2056
मंगल	15/12/2047	राहु	21/06/2050	गुरु	18/09/2052	शनि	16/11/2053	बुध	09/07/2056
राहु	10/04/2048	गुरु	23/10/2050	शनि	28/01/2053	बुध	03/01/2054	केतु	03/09/2056

गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल		गुरु - राहु		शनि - शनि	
03/09/2056		23/06/2057		23/10/2058		29/09/2059		21/02/2062	
23/06/2057		23/10/2058		29/09/2059		21/02/2062		24/02/2065	
सूर्य	18/09/2056	चंद्र	02/08/2057	मंगल	12/11/2058	राहु	07/02/2060	शनि	14/08/2062
चंद्र	12/10/2056	मंगल	31/08/2057	राहु	02/01/2059	गुरु	03/06/2060	बुध	17/01/2063
मंगल	29/10/2056	राहु	12/11/2057	गुरु	16/02/2059	शनि	20/10/2060	केतु	22/03/2063
राहु	12/12/2056	गुरु	16/01/2058	शनि	11/04/2059	बुध	21/02/2061	शुक्र	21/09/2063
गुरु	20/01/2057	शनि	03/04/2058	बुध	29/05/2059	केतु	13/04/2061	सूर्य	15/11/2063
शनि	07/03/2057	बुध	11/06/2058	केतु	18/06/2059	शुक्र	06/09/2061	चंद्र	15/02/2064
बुध	18/04/2057	केतु	09/07/2058	शुक्र	14/08/2059	सूर्य	20/10/2061	मंगल	19/04/2064
केतु	05/05/2057	शुक्र	28/09/2058	सूर्य	31/08/2059	चंद्र	01/01/2062	राहु	30/09/2064
शुक्र	23/06/2057	सूर्य	23/10/2058	चंद्र	29/09/2059	मंगल	21/02/2062	गुरु	24/02/2065

शनि - बुध		शनि - केतु		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र	
24/02/2065		04/11/2067		13/12/2068		12/02/2072		24/01/2073	
04/11/2067		13/12/2068		12/02/2072		24/01/2073		26/08/2074	
बुध	13/07/2065	केतु	28/11/2067	शुक्र	24/06/2069	सूर्य	01/03/2072	चंद्र	14/03/2073
केतु	09/09/2065	शुक्र	03/02/2068	सूर्य	20/08/2069	चंद्र	30/03/2072	मंगल	16/04/2073
शुक्र	19/02/2066	सूर्य	23/02/2068	चंद्र	25/11/2069	मंगल	19/04/2072	राहु	12/07/2073
सूर्य	10/04/2066	चंद्र	28/03/2068	मंगल	31/01/2070	राहु	10/06/2072	गुरु	27/09/2073
चंद्र	30/06/2066	मंगल	21/04/2068	राहु	24/07/2070	गुरु	26/07/2072	शनि	28/12/2073
मंगल	27/08/2066	राहु	20/06/2068	गुरु	25/12/2070	शनि	19/09/2072	बुध	20/03/2074
राहु	21/01/2067	गुरु	13/08/2068	शनि	26/06/2071	बुध	07/11/2072	केतु	22/04/2074
गुरु	01/06/2067	शनि	17/10/2068	बुध	07/12/2071	केतु	28/11/2072	शुक्र	28/07/2074
शनि	04/11/2067	बुध	13/12/2068	केतु	12/02/2072	शुक्र	24/01/2073	सूर्य	26/08/2074

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - मंगल		शनि - राहु		शनि - गुरु		बुध - बुध		बुध - केतु	
26/08/2074		05/10/2075		11/08/2078		21/02/2081		21/07/2083	
05/10/2075		11/08/2078		21/02/2081		21/07/2083		17/07/2084	
मंगल	18/09/2074	राहु	09/03/2076	गुरु	12/12/2078	बुध	25/06/2081	केतु	11/08/2083
राहु	18/11/2074	गुरु	26/07/2076	शनि	07/05/2079	केतु	16/08/2081	शुक्र	10/10/2083
गुरु	11/01/2075	शनि	06/01/2077	बुध	16/09/2079	शुक्र	09/01/2082	सूर्य	28/10/2083
शनि	16/03/2075	बुध	03/06/2077	केतु	09/11/2079	सूर्य	22/02/2082	चंद्र	27/11/2083
बुध	13/05/2075	केतु	03/08/2077	शुक्र	11/04/2080	चंद्र	07/05/2082	मंगल	18/12/2083
केतु	05/06/2075	शुक्र	23/01/2078	सूर्य	27/05/2080	मंगल	27/06/2082	राहु	11/02/2084
शुक्र	12/08/2075	सूर्य	16/03/2078	चंद्र	12/08/2080	राहु	06/11/2082	गुरु	30/03/2084
सूर्य	01/09/2075	चंद्र	11/06/2078	मंगल	05/10/2080	गुरु	03/03/2083	शनि	26/05/2084
चंद्र	05/10/2075	मंगल	11/08/2078	राहु	21/02/2081	शनि	21/07/2083	बुध	17/07/2084

बुध - शुक्र		बुध - सूर्य		बुध - चंद्र		बुध - मंगल		बुध - राहु	
17/07/2084		18/05/2087		23/03/2088		23/08/2089		20/08/2090	
18/05/2087		23/03/2088		23/08/2089		20/08/2090		08/03/2093	
शुक्र	05/01/2085	सूर्य	02/06/2087	चंद्र	05/05/2088	मंगल	13/09/2089	राहु	06/01/2091
सूर्य	26/02/2085	चंद्र	28/06/2087	मंगल	04/06/2088	राहु	06/11/2089	गुरु	11/05/2091
चंद्र	23/05/2085	मंगल	16/07/2087	राहु	21/08/2088	गुरु	24/12/2089	शनि	05/10/2091
मंगल	23/07/2085	राहु	01/09/2087	गुरु	29/10/2088	शनि	20/02/2090	बुध	14/02/2092
राहु	25/12/2085	गुरु	12/10/2087	शनि	19/01/2089	बुध	12/04/2090	केतु	08/04/2092
गुरु	12/05/2086	शनि	30/11/2087	बुध	02/04/2089	केतु	03/05/2090	शुक्र	11/09/2092
शनि	23/10/2086	बुध	13/01/2088	केतु	02/05/2089	शुक्र	02/07/2090	सूर्य	27/10/2092
बुध	18/03/2087	केतु	31/01/2088	शुक्र	28/07/2089	सूर्य	21/07/2090	चंद्र	13/01/2093
केतु	18/05/2087	शुक्र	23/03/2088	सूर्य	23/08/2089	चंद्र	20/08/2090	मंगल	08/03/2093

बुध - गुरु		बुध - शनि		केतु - केतु		केतु - शुक्र		केतु - सूर्य	
08/03/2093		14/06/2095		21/02/2098		20/07/2098		19/09/2099	
14/06/2095		21/02/2098		20/07/2098		19/09/2099		25/01/2100	
गुरु	26/06/2093	शनि	17/11/2095	केतु	02/03/2098	शुक्र	29/09/2098	सूर्य	26/09/2099
शनि	05/11/2093	बुध	04/04/2096	शुक्र	27/03/2098	सूर्य	21/10/2098	चंद्र	06/10/2099
बुध	02/03/2094	केतु	31/05/2096	सूर्य	03/04/2098	चंद्र	25/11/2098	मंगल	14/10/2099
केतु	19/04/2094	शुक्र	11/11/2096	चंद्र	16/04/2098	मंगल	20/12/2098	राहु	02/11/2099
शुक्र	04/09/2094	सूर्य	30/12/2096	मंगल	24/04/2098	राहु	22/02/2099	गुरु	19/11/2099
सूर्य	16/10/2094	चंद्र	22/03/2097	राहु	17/05/2098	गुरु	20/04/2099	शनि	09/12/2099
चंद्र	24/12/2094	मंगल	19/05/2097	गुरु	06/06/2098	शनि	26/06/2099	बुध	27/12/2099
मंगल	10/02/2095	राहु	13/10/2097	शनि	29/06/2098	बुध	26/08/2099	केतु	04/01/2100
राहु	14/06/2095	गुरु	21/02/2098	बुध	20/07/2098	केतु	19/09/2099	शुक्र	25/01/2100

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

मंगल - शुक्र - शुक्र	
16/01/2026 02:30	
28/03/2026 03:00	
शुक्र	27/01/2026 22:35
सूर्य	31/01/2026 11:49
चंद्र	06/02/2026 09:51
मंगल	10/02/2026 13:17
राहु	21/02/2026 04:58
गुरु	02/03/2026 16:14
शनि	13/03/2026 22:06
बुध	23/03/2026 23:35
केतु	28/03/2026 03:00

मंगल - शुक्र - सूर्य	
28/03/2026 03:00	
18/04/2026 10:21	
सूर्य	29/03/2026 04:34
चंद्र	30/03/2026 23:11
मंगल	01/04/2026 05:01
राहु	04/04/2026 09:43
गुरु	07/04/2026 05:54
शनि	10/04/2026 14:52
बुध	13/04/2026 15:18
केतु	14/04/2026 21:08
शुक्र	18/04/2026 10:21

मंगल - शुक्र - चंद्र	
18/04/2026 10:21	
23/05/2026 22:36	
चंद्र	21/04/2026 09:23
मंगल	23/04/2026 11:06
राहु	28/04/2026 18:56
गुरु	03/05/2026 12:34
शनि	09/05/2026 03:30
बुध	14/05/2026 04:14
केतु	16/05/2026 05:57
शुक्र	22/05/2026 04:00
सूर्य	23/05/2026 22:36

मंगल - शुक्र - मंगल	
23/05/2026 22:36	
17/06/2026 19:11	
मंगल	25/05/2026 09:24
राहु	29/05/2026 02:54
गुरु	01/06/2026 10:26
शनि	05/06/2026 08:54
बुध	08/06/2026 21:25
केतु	10/06/2026 08:13
शुक्र	14/06/2026 11:38
सूर्य	15/06/2026 17:28
चंद्र	17/06/2026 19:11

मंगल - शुक्र - राहु	
17/06/2026 19:11	
20/08/2026 17:14	
राहु	27/06/2026 09:17
गुरु	05/07/2026 21:50
शनि	16/07/2026 00:43
बुध	25/07/2026 02:03
केतु	28/07/2026 19:32
शुक्र	08/08/2026 11:12
सूर्य	11/08/2026 15:55
चंद्र	16/08/2026 23:45
मंगल	20/08/2026 17:14

मंगल - शुक्र - गुरु	
20/08/2026 17:14	
16/10/2026 12:50	
गुरु	28/08/2026 07:03
शनि	06/09/2026 06:57
बुध	14/09/2026 08:08
केतु	17/09/2026 15:40
शुक्र	27/09/2026 02:56
सूर्य	29/09/2026 23:07
चंद्र	04/10/2026 16:45
मंगल	08/10/2026 00:18
राहु	16/10/2026 12:50

मंगल - शुक्र - शनि	
16/10/2026 12:50	
23/12/2026 00:06	
शनि	27/10/2026 05:13
बुध	05/11/2026 18:37
केतु	09/11/2026 17:04
शुक्र	20/11/2026 22:57
सूर्य	24/11/2026 07:55
चंद्र	29/11/2026 22:51
मंगल	03/12/2026 21:19
राहु	14/12/2026 00:12
गुरु	23/12/2026 00:06

मंगल - शुक्र - बुध	
23/12/2026 00:06	
21/02/2027 08:56	
बुध	31/12/2026 13:21
केतु	04/01/2027 01:52
शुक्र	14/01/2027 03:21
सूर्य	17/01/2027 03:47
चंद्र	22/01/2027 04:31
मंगल	25/01/2027 17:02
राहु	03/02/2027 18:21
गुरु	11/02/2027 19:32
शनि	21/02/2027 08:56

मंगल - शुक्र - केतु	
21/02/2027 08:56	
18/03/2027 05:30	
केतु	22/02/2027 19:44
शुक्र	26/02/2027 23:10
सूर्य	28/02/2027 04:59
चंद्र	02/03/2027 06:42
मंगल	03/03/2027 17:30
राहु	07/03/2027 10:59
गुरु	10/03/2027 18:32
शनि	14/03/2027 17:00
बुध	18/03/2027 05:30

मंगल - सूर्य - सूर्य	
18/03/2027 05:30	
24/03/2027 14:55	
सूर्य	18/03/2027 13:11
चंद्र	19/03/2027 01:58
मंगल	19/03/2027 10:55
राहु	20/03/2027 09:55
गुरु	21/03/2027 06:22
शनि	22/03/2027 06:40
बुध	23/03/2027 04:24
केतु	23/03/2027 13:21
शुक्र	24/03/2027 14:55

मंगल - सूर्य - चंद्र	
24/03/2027 14:55	
04/04/2027 06:35	
चंद्र	25/03/2027 12:13
मंगल	26/03/2027 03:08
राहु	27/03/2027 17:29
गुरु	29/03/2027 03:34
शनि	30/03/2027 20:03
बुध	01/04/2027 08:17
केतु	01/04/2027 23:11
शुक्र	03/04/2027 17:48
सूर्य	04/04/2027 06:35

मंगल - सूर्य - मंगल	
04/04/2027 06:35	
11/04/2027 17:34	
मंगल	04/04/2027 17:02
राहु	05/04/2027 19:52
गुरु	06/04/2027 19:44
शनि	08/04/2027 00:04
बुध	09/04/2027 01:26
केतु	09/04/2027 11:52
शुक्र	10/04/2027 17:42
सूर्य	11/04/2027 02:39
चंद्र	11/04/2027 17:34

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

मंगल - सूर्य - राहु	
11/04/2027 17:34	
30/04/2027 21:46	
राहु	14/04/2027 14:36
गुरु	17/04/2027 03:57
शनि	20/04/2027 04:49
बुध	22/04/2027 22:01
केतु	24/04/2027 00:52
शुक्र	27/04/2027 05:34
सूर्य	28/04/2027 04:35
चंद्र	29/04/2027 18:56
मंगल	30/04/2027 21:46

मंगल - सूर्य - गुरु	
30/04/2027 21:46	
17/05/2027 22:51	
गुरु	03/05/2027 04:19
शनि	05/05/2027 21:05
बुध	08/05/2027 07:03
केतु	09/05/2027 06:54
शुक्र	12/05/2027 03:05
सूर्य	12/05/2027 23:32
चंद्र	14/05/2027 09:38
मंगल	15/05/2027 09:30
राहु	17/05/2027 22:51

मंगल - सूर्य - शनि	
17/05/2027 22:51	
07/06/2027 04:38	
शनि	21/05/2027 03:46
बुध	24/05/2027 00:35
केतु	25/05/2027 04:56
शुक्र	28/05/2027 13:53
सूर्य	29/05/2027 14:11
चंद्र	31/05/2027 06:40
मंगल	01/06/2027 11:00
राहु	04/06/2027 11:52
गुरु	07/06/2027 04:38

मंगल - सूर्य - बुध	
07/06/2027 04:38	
25/06/2027 07:17	
बुध	09/06/2027 18:13
केतु	10/06/2027 19:34
शुक्र	13/06/2027 20:00
सूर्य	14/06/2027 17:44
चंद्र	16/06/2027 05:58
मंगल	17/06/2027 07:19
राहु	20/06/2027 00:31
गुरु	22/06/2027 10:28
शनि	25/06/2027 07:17

मंगल - सूर्य - केतु	
25/06/2027 07:17	
02/07/2027 18:15	
केतु	25/06/2027 17:43
शुक्र	26/06/2027 23:33
सूर्य	27/06/2027 08:30
चंद्र	27/06/2027 23:25
मंगल	28/06/2027 09:51
राहु	29/06/2027 12:42
गुरु	30/06/2027 12:34
शनि	01/07/2027 16:54
बुध	02/07/2027 18:15

मंगल - सूर्य - शुक्र	
02/07/2027 18:15	
24/07/2027 01:36	
शुक्र	06/07/2027 07:29
सूर्य	07/07/2027 09:03
चंद्र	09/07/2027 03:40
मंगल	10/07/2027 09:29
राहु	13/07/2027 14:12
गुरु	16/07/2027 10:22
शनि	19/07/2027 19:20
बुध	22/07/2027 19:47
केतु	24/07/2027 01:36

मंगल - चंद्र - चंद्र	
24/07/2027 01:36	
10/08/2027 19:44	
चंद्र	25/07/2027 13:07
मंगल	26/07/2027 13:58
राहु	29/07/2027 05:54
गुरु	31/07/2027 14:43
शनि	03/08/2027 10:11
बुध	05/08/2027 22:33
केतु	06/08/2027 23:24
शुक्र	09/08/2027 22:26
सूर्य	10/08/2027 19:44

मंगल - चंद्र - मंगल	
10/08/2027 19:44	
23/08/2027 06:01	
मंगल	11/08/2027 13:08
राहु	13/08/2027 09:53
गुरु	15/08/2027 01:39
शनि	17/08/2027 00:53
बुध	18/08/2027 19:08
केतु	19/08/2027 12:32
शुक्र	21/08/2027 14:15
सूर्य	22/08/2027 05:10
चंद्र	23/08/2027 06:01

मंगल - चंद्र - राहु	
23/08/2027 06:01	
24/09/2027 05:03	
राहु	28/08/2027 01:04
गुरु	01/09/2027 07:21
शनि	06/09/2027 08:47
बुध	10/09/2027 21:27
केतु	12/09/2027 18:12
शुक्र	18/09/2027 02:02
सूर्य	19/09/2027 16:23
चंद्र	22/09/2027 08:18
मंगल	24/09/2027 05:03

मंगल - चंद्र - गुरु	
24/09/2027 05:03	
22/10/2027 14:51	
गुरु	27/09/2027 23:57
शनि	02/10/2027 11:54
बुध	06/10/2027 12:29
केतु	08/10/2027 04:16
शुक्र	12/10/2027 21:54
सूर्य	14/10/2027 07:59
चंद्र	16/10/2027 16:48
मंगल	18/10/2027 08:34
राहु	22/10/2027 14:51

मंगल - चंद्र - शनि	
22/10/2027 14:51	
25/11/2027 08:29	
शनि	27/10/2027 23:02
बुध	01/11/2027 17:44
केतु	03/11/2027 16:58
शुक्र	09/11/2027 07:54
सूर्य	11/11/2027 00:23
चंद्र	13/11/2027 19:51
मंगल	15/11/2027 19:05
राहु	20/11/2027 20:32
गुरु	25/11/2027 08:29

मंगल - चंद्र - बुध	
25/11/2027 08:29	
25/12/2027 12:54	
बुध	29/11/2027 15:06
केतु	01/12/2027 09:22
शुक्र	06/12/2027 10:06
सूर्य	07/12/2027 22:19
चंद्र	10/12/2027 10:41
मंगल	12/12/2027 04:57
राहु	16/12/2027 17:36
गुरु	20/12/2027 18:12
शनि	25/12/2027 12:54

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

मंगल - चंद्र - केतु	
25/12/2027 12:54	
06/01/2028 23:11	
केतु	26/12/2027 06:18
शुक्र	28/12/2027 08:01
सूर्य	28/12/2027 22:55
चंद्र	29/12/2027 23:47
मंगल	30/12/2027 17:11
राहु	01/01/2028 13:55
गुरु	03/01/2028 05:42
शनि	05/01/2028 04:55
बुध	06/01/2028 23:11

मंगल - चंद्र - शुक्र	
06/01/2028 23:11	
11/02/2028 11:26	
शुक्र	12/01/2028 21:13
सूर्य	14/01/2028 15:50
चंद्र	17/01/2028 14:51
मंगल	19/01/2028 16:34
राहु	25/01/2028 00:25
गुरु	29/01/2028 18:03
शनि	04/02/2028 08:59
बुध	09/02/2028 09:43
केतु	11/02/2028 11:26

मंगल - चंद्र - सूर्य	
11/02/2028 11:26	
22/02/2028 03:06	
सूर्य	12/02/2028 00:13
चंद्र	12/02/2028 21:31
मंगल	13/02/2028 12:26
राहु	15/02/2028 02:47
गुरु	16/02/2028 12:53
शनि	18/02/2028 05:22
बुध	19/02/2028 17:35
केतु	20/02/2028 08:30
शुक्र	22/02/2028 03:06

राहु - राहु - राहु	
22/02/2028 03:06	
19/07/2028 01:20	
राहु	15/03/2028 07:39
गुरु	04/04/2028 01:00
शनि	27/04/2028 11:08
बुध	18/05/2028 10:04
केतु	27/05/2028 01:10
शुक्र	20/06/2028 16:53
सूर्य	28/06/2028 02:23
चंद्र	10/07/2028 10:14
मंगल	19/07/2028 01:20

राहु - राहु - गुरु	
19/07/2028 01:20	
27/11/2028 13:06	
गुरु	05/08/2028 14:06
शनि	26/08/2028 09:46
बुध	14/09/2028 00:50
केतु	21/09/2028 16:55
शुक्र	13/10/2028 14:53
सूर्य	20/10/2028 04:40
चंद्र	31/10/2028 03:39
मंगल	07/11/2028 19:44
राहु	27/11/2028 13:06

राहु - राहु - शनि	
27/11/2028 13:06	
02/05/2029 16:34	
शनि	22/12/2028 06:27
बुध	13/01/2029 09:20
केतु	22/01/2029 11:56
शुक्र	17/02/2029 12:31
सूर्य	25/02/2029 07:53
चंद्र	10/03/2029 08:11
मंगल	19/03/2029 10:47
राहु	11/04/2029 20:54
गुरु	02/05/2029 16:34

राहु - राहु - बुध	
02/05/2029 16:34	
19/09/2029 09:33	
बुध	22/05/2029 11:34
केतु	30/05/2029 15:10
शुक्र	22/06/2029 22:00
सूर्य	29/06/2029 21:39
चंद्र	11/07/2029 13:04
मंगल	19/07/2029 16:39
राहु	09/08/2029 15:36
गुरु	28/08/2029 06:40
शनि	19/09/2029 09:33

राहु - राहु - केतु	
19/09/2029 09:33	
15/11/2029 22:12	
केतु	22/09/2029 18:06
शुक्र	02/10/2029 08:12
सूर्य	05/10/2029 05:14
चंद्र	10/10/2029 00:17
मंगल	13/10/2029 08:50
राहु	21/10/2029 23:55
गुरु	29/10/2029 16:01
शनि	07/11/2029 18:37
बुध	15/11/2029 22:12

राहु - राहु - शुक्र	
15/11/2029 22:12	
29/04/2030 06:54	
शुक्र	13/12/2029 07:39
सूर्य	21/12/2029 12:53
चंद्र	04/01/2030 05:37
मंगल	13/01/2030 19:43
राहु	07/02/2030 11:25
गुरु	01/03/2030 09:23
शनि	27/03/2030 09:58
बुध	19/04/2030 16:48
केतु	29/04/2030 06:54

राहु - राहु - सूर्य	
29/04/2030 06:54	
17/06/2030 14:19	
सूर्य	01/05/2030 18:04
चंद्र	05/05/2030 20:41
मंगल	08/05/2030 17:43
राहु	16/05/2030 03:14
गुरु	22/05/2030 17:01
शनि	30/05/2030 12:24
बुध	06/06/2030 12:03
केतु	09/06/2030 09:05
शुक्र	17/06/2030 14:19

राहु - राहु - चंद्र	
17/06/2030 14:19	
07/09/2030 18:40	
चंद्र	24/06/2030 10:40
मंगल	29/06/2030 05:44
राहु	11/07/2030 13:35
गुरु	22/07/2030 12:34
शनि	04/08/2030 12:51
बुध	16/08/2030 04:16
केतु	20/08/2030 23:19
शुक्र	03/09/2030 16:03
सूर्य	07/09/2030 18:40

राहु - राहु - मंगल	
07/09/2030 18:40	
04/11/2030 07:18	
मंगल	11/09/2030 03:12
राहु	19/09/2030 18:18
गुरु	27/09/2030 10:23
शनि	06/10/2030 12:59
बुध	14/10/2030 16:35
केतु	18/10/2030 01:07
शुक्र	27/10/2030 15:13
सूर्य	30/10/2030 12:15
चंद्र	04/11/2030 07:18

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

राहु - गुरु - गुरु	
04/11/2030 07:18	
01/03/2031 04:26	
गुरु	19/11/2030 21:19
शनि	08/12/2030 09:28
बुध	24/12/2030 22:52
केतु	31/12/2030 18:29
शुक्र	20/01/2031 06:01
सूर्य	26/01/2031 02:16
चंद्र	04/02/2031 20:02
मंगल	11/02/2031 15:40
राहु	01/03/2031 04:26

राहु - गुरु - शनि	
01/03/2031 04:26	
17/07/2031 23:30	
शनि	23/03/2031 03:51
बुध	11/04/2031 19:45
केतु	19/04/2031 22:04
शुक्र	13/05/2031 01:15
सूर्य	19/05/2031 23:48
चंद्र	31/05/2031 13:23
मंगल	08/06/2031 15:42
राहु	29/06/2031 11:22
गुरु	17/07/2031 23:30

राहु - गुरु - बुध	
17/07/2031 23:30	
19/11/2031 03:57	
बुध	04/08/2031 13:44
केतु	11/08/2031 19:36
शुक्र	01/09/2031 12:20
सूर्य	07/09/2031 17:21
चंद्र	18/09/2031 01:44
मंगल	25/09/2031 07:35
राहु	13/10/2031 22:39
गुरु	30/10/2031 12:03
शनि	19/11/2031 03:57

राहु - गुरु - केतु	
19/11/2031 03:57	
09/01/2032 07:11	
केतु	22/11/2031 03:32
शुक्र	30/11/2031 16:05
सूर्य	03/12/2031 05:26
चंद्र	07/12/2031 11:42
मंगल	10/12/2031 11:18
राहु	18/12/2031 03:23
गुरु	24/12/2031 23:01
शनि	02/01/2032 01:20
बुध	09/01/2032 07:11

राहु - गुरु - शुक्र	
09/01/2032 07:11	
03/06/2032 09:35	
शुक्र	02/02/2032 15:35
सूर्य	09/02/2032 22:54
चंद्र	22/02/2032 03:06
मंगल	01/03/2032 15:39
राहु	23/03/2032 13:36
गुरु	12/04/2032 01:08
शनि	05/05/2032 04:18
बुध	25/05/2032 21:03
केतु	03/06/2032 09:35

राहु - गुरु - सूर्य	
03/06/2032 09:35	
17/07/2032 05:30	
सूर्य	05/06/2032 14:11
चंद्र	09/06/2032 05:51
मंगल	11/06/2032 19:12
राहु	18/06/2032 09:00
गुरु	24/06/2032 05:15
शनि	01/07/2032 03:48
बुध	07/07/2032 08:50
केतु	09/07/2032 22:11
शुक्र	17/07/2032 05:30

राहु - गुरु - चंद्र	
17/07/2032 05:30	
28/09/2032 06:42	
चंद्र	23/07/2032 07:36
मंगल	27/07/2032 13:53
राहु	07/08/2032 12:51
गुरु	17/08/2032 06:37
शनि	28/08/2032 20:12
बुध	08/09/2032 04:35
केतु	12/09/2032 10:51
शुक्र	24/09/2032 15:03
सूर्य	28/09/2032 06:42

राहु - गुरु - मंगल	
28/09/2032 06:42	
18/11/2032 09:57	
मंगल	01/10/2032 06:18
राहु	08/10/2032 22:23
गुरु	15/10/2032 18:01
शनि	23/10/2032 20:20
बुध	31/10/2032 02:11
केतु	03/11/2032 01:47
शुक्र	11/11/2032 14:19
सूर्य	14/11/2032 03:41
चंद्र	18/11/2032 09:57

राहु - गुरु - राहु	
18/11/2032 09:57	
29/03/2033 21:42	
राहु	08/12/2032 03:19
गुरु	25/12/2032 16:05
शनि	15/01/2033 11:44
बुध	03/02/2033 02:48
केतु	10/02/2033 18:54
शुक्र	04/03/2033 16:51
सूर्य	11/03/2033 06:38
चंद्र	22/03/2033 05:37
मंगल	29/03/2033 21:42

राहु - शनि - शनि	
29/03/2033 21:42	
10/09/2033 17:22	
शनि	25/04/2033 00:01
बुध	18/05/2033 08:24
केतु	27/05/2033 23:09
शुक्र	24/06/2033 10:26
सूर्य	02/07/2033 16:13
चंद्र	16/07/2033 09:51
मंगल	26/07/2033 00:36
राहु	19/08/2033 17:57
गुरु	10/09/2033 17:22

राहु - शनि - बुध	
10/09/2033 17:22	
05/02/2034 04:38	
बुध	01/10/2033 14:46
केतु	10/10/2033 05:13
शुक्र	03/11/2033 19:06
सूर्य	11/11/2033 04:04
चंद्र	23/11/2033 11:00
मंगल	02/12/2033 01:28
राहु	24/12/2033 04:21
गुरु	12/01/2034 20:15
शनि	05/02/2034 04:38

राहु - शनि - केतु	
05/02/2034 04:38	
06/04/2034 21:59	
केतु	08/02/2034 17:39
शुक्र	18/02/2034 20:32
सूर्य	21/02/2034 21:24
चंद्र	26/02/2034 22:51
मंगल	02/03/2034 11:52
राहु	11/03/2034 14:28
गुरु	19/03/2034 16:47
शनि	29/03/2034 07:32
बुध	06/04/2034 21:59

विंशोत्तरी दशा - प्राण

मंगल - शुक्र - शुक्र - गुरु	
21/02/2026 04:58	
02/03/2026 16:14	
गुरु	22/02/2026 11:16
शनि	23/02/2026 23:15
बुध	25/02/2026 07:27
केतु	25/02/2026 20:42
शुक्र	27/02/2026 10:35
सूर्य	27/02/2026 21:57
चंद्र	28/02/2026 16:53
मंगल	01/03/2026 06:08
राहु	02/03/2026 16:14

मंगल - शुक्र - शुक्र - शनि	
02/03/2026 16:14	
13/03/2026 22:06	
शनि	04/03/2026 10:58
बुध	06/03/2026 01:12
केतु	06/03/2026 16:56
शुक्र	08/03/2026 13:55
सूर्य	09/03/2026 03:25
चंद्र	10/03/2026 01:54
मंगल	10/03/2026 17:38
राहु	12/03/2026 10:07
गुरु	13/03/2026 22:06

मंगल - शुक्र - शुक्र - बुध	
13/03/2026 22:06	
23/03/2026 23:35	
बुध	15/03/2026 08:19
केतु	15/03/2026 22:24
शुक्र	17/03/2026 14:39
सूर्य	18/03/2026 02:43
चंद्र	18/03/2026 22:51
मंगल	19/03/2026 12:56
राहु	21/03/2026 01:09
गुरु	22/03/2026 09:21
शनि	23/03/2026 23:35

मंगल - शुक्र - शुक्र - केतु	
23/03/2026 23:35	
28/03/2026 03:00	
केतु	24/03/2026 05:23
शुक्र	24/03/2026 21:57
सूर्य	25/03/2026 02:55
चंद्र	25/03/2026 11:12
मंगल	25/03/2026 17:00
राहु	26/03/2026 07:55
गुरु	26/03/2026 21:11
शनि	27/03/2026 12:55
बुध	28/03/2026 03:00

मंगल - शुक्र - सूर्य - सूर्य	
28/03/2026 03:00	
29/03/2026 04:34	
सूर्य	28/03/2026 04:17
चंद्र	28/03/2026 06:25
मंगल	28/03/2026 07:54
राहु	28/03/2026 11:45
गुरु	28/03/2026 15:09
शनि	28/03/2026 19:12
बुध	28/03/2026 22:49
केतु	29/03/2026 00:19
शुक्र	29/03/2026 04:34

मंगल - शुक्र - सूर्य - चंद्र	
29/03/2026 04:34	
30/03/2026 23:11	
चंद्र	29/03/2026 08:08
मंगल	29/03/2026 10:37
राहु	29/03/2026 17:00
गुरु	29/03/2026 22:41
शनि	30/03/2026 05:26
बुध	30/03/2026 11:28
केतु	30/03/2026 13:57
शुक्र	30/03/2026 21:03
सूर्य	30/03/2026 23:11

मंगल - शुक्र - सूर्य - मंगल	
30/03/2026 23:11	
01/04/2026 05:01	
मंगल	31/03/2026 00:56
राहु	31/03/2026 05:24
गुरु	31/03/2026 09:23
शनि	31/03/2026 14:06
बुध	31/03/2026 18:20
केतु	31/03/2026 20:04
शुक्र	01/04/2026 01:02
सूर्य	01/04/2026 02:32
चंद्र	01/04/2026 05:01

मंगल - शुक्र - सूर्य - राहु	
01/04/2026 05:01	
04/04/2026 09:43	
राहु	01/04/2026 16:31
गुरु	02/04/2026 02:45
शनि	02/04/2026 14:54
बुध	03/04/2026 01:46
केतु	03/04/2026 06:14
शुक्र	03/04/2026 19:01
सूर्य	03/04/2026 22:51
चंद्र	04/04/2026 05:15
मंगल	04/04/2026 09:43

मंगल - शुक्र - सूर्य - गुरु	
04/04/2026 09:43	
07/04/2026 05:54	
गुरु	04/04/2026 18:49
शनि	05/04/2026 05:36
बुध	05/04/2026 15:16
केतु	05/04/2026 19:14
शुक्र	06/04/2026 06:36
सूर्य	06/04/2026 10:01
चंद्र	06/04/2026 15:42
मंगल	06/04/2026 19:40
राहु	07/04/2026 05:54

मंगल - शुक्र - सूर्य - शनि	
07/04/2026 05:54	
10/04/2026 14:52	
शनि	07/04/2026 18:43
बुध	08/04/2026 06:11
केतु	08/04/2026 10:55
शुक्र	09/04/2026 00:24
सूर्य	09/04/2026 04:27
चंद्र	09/04/2026 11:12
मंगल	09/04/2026 15:55
राहु	10/04/2026 04:04
गुरु	10/04/2026 14:52

मंगल - शुक्र - सूर्य - बुध	
10/04/2026 14:52	
13/04/2026 15:18	
बुध	11/04/2026 01:07
केतु	11/04/2026 05:21
शुक्र	11/04/2026 17:25
सूर्य	11/04/2026 21:03
चंद्र	12/04/2026 03:05
मंगल	12/04/2026 07:19
राहु	12/04/2026 18:10
गुरु	13/04/2026 03:50
शनि	13/04/2026 15:18

मंगल - शुक्र - सूर्य - केतु	
13/04/2026 15:18	
14/04/2026 21:08	
केतु	13/04/2026 17:03
शुक्र	13/04/2026 22:01
सूर्य	13/04/2026 23:30
चंद्र	14/04/2026 02:00
मंगल	14/04/2026 03:44
राहु	14/04/2026 08:12
गुरु	14/04/2026 12:11
शनि	14/04/2026 16:54
बुध	14/04/2026 21:08

विंशोत्तरी दशा - प्राण

मंगल - शुक्र - सूर्य - शुक्र	
14/04/2026 21:08	
18/04/2026 10:21	
शुक्र	15/04/2026 11:20
सूर्य	15/04/2026 15:36
चंद्र	15/04/2026 22:42
मंगल	16/04/2026 03:40
राहु	16/04/2026 16:27
गुरु	17/04/2026 03:49
शनि	17/04/2026 17:19
बुध	18/04/2026 05:23
केतु	18/04/2026 10:21

मंगल - शुक्र - चंद्र - चंद्र	
18/04/2026 10:21	
21/04/2026 09:23	
चंद्र	18/04/2026 16:17
मंगल	18/04/2026 20:25
राहु	19/04/2026 07:04
गुरु	19/04/2026 16:32
शनि	20/04/2026 03:47
बुध	20/04/2026 13:51
केतु	20/04/2026 17:59
शुक्र	21/04/2026 05:50
सूर्य	21/04/2026 09:23

मंगल - शुक्र - चंद्र - मंगल	
21/04/2026 09:23	
23/04/2026 11:06	
मंगल	21/04/2026 12:17
राहु	21/04/2026 19:44
गुरु	22/04/2026 02:22
शनि	22/04/2026 10:14
बुध	22/04/2026 17:17
केतु	22/04/2026 20:11
शुक्र	23/04/2026 04:28
सूर्य	23/04/2026 06:57
चंद्र	23/04/2026 11:06

मंगल - शुक्र - चंद्र - राहु	
23/04/2026 11:06	
28/04/2026 18:56	
राहु	24/04/2026 06:16
गुरु	24/04/2026 23:19
शनि	25/04/2026 19:33
बुध	26/04/2026 13:40
केतु	26/04/2026 21:07
शुक्र	27/04/2026 18:26
सूर्य	28/04/2026 00:49
चंद्र	28/04/2026 11:28
मंगल	28/04/2026 18:56

मंगल - शुक्र - चंद्र - गुरु	
28/04/2026 18:56	
03/05/2026 12:34	
गुरु	29/04/2026 10:05
शनि	30/04/2026 04:04
बुध	30/04/2026 20:10
केतु	01/05/2026 02:48
शुक्र	01/05/2026 21:44
सूर्य	02/05/2026 03:25
चंद्र	02/05/2026 12:53
मंगल	02/05/2026 19:31
राहु	03/05/2026 12:34

मंगल - शुक्र - चंद्र - शनि	
03/05/2026 12:34	
09/05/2026 03:30	
शनि	04/05/2026 09:56
बुध	05/05/2026 05:03
केतु	05/05/2026 12:55
शुक्र	06/05/2026 11:24
सूर्य	06/05/2026 18:09
चंद्र	07/05/2026 05:24
मंगल	07/05/2026 13:16
राहु	08/05/2026 09:31
गुरु	09/05/2026 03:30

मंगल - शुक्र - चंद्र - बुध	
09/05/2026 03:30	
14/05/2026 04:14	
बुध	09/05/2026 20:36
केतु	10/05/2026 03:39
शुक्र	10/05/2026 23:46
सूर्य	11/05/2026 05:49
चंद्र	11/05/2026 15:52
मंगल	11/05/2026 22:55
राहु	12/05/2026 17:01
गुरु	13/05/2026 09:07
शनि	14/05/2026 04:14

मंगल - शुक्र - चंद्र - केतु	
14/05/2026 04:14	
16/05/2026 05:57	
केतु	14/05/2026 07:08
शुक्र	14/05/2026 15:25
सूर्य	14/05/2026 17:55
चंद्र	14/05/2026 22:03
मंगल	15/05/2026 00:57
राहु	15/05/2026 08:25
गुरु	15/05/2026 15:02
शनि	15/05/2026 22:55
बुध	16/05/2026 05:57

मंगल - शुक्र - चंद्र - शुक्र	
16/05/2026 05:57	
22/05/2026 04:00	
शुक्र	17/05/2026 05:38
सूर्य	17/05/2026 12:44
चंद्र	18/05/2026 00:34
मंगल	18/05/2026 08:51
राहु	19/05/2026 06:09
गुरु	20/05/2026 01:06
शनि	20/05/2026 23:35
बुध	21/05/2026 19:43
केतु	22/05/2026 04:00

मंगल - शुक्र - चंद्र - सूर्य	
22/05/2026 04:00	
23/05/2026 22:36	
सूर्य	22/05/2026 06:08
चंद्र	22/05/2026 09:41
मंगल	22/05/2026 12:10
राहु	22/05/2026 18:33
गुरु	23/05/2026 00:14
शनि	23/05/2026 06:59
बुध	23/05/2026 13:01
केतु	23/05/2026 15:30
शुक्र	23/05/2026 22:36

मंगल - शुक्र - मंगल - मंगल	
23/05/2026 22:36	
25/05/2026 09:24	
मंगल	24/05/2026 00:38
राहु	24/05/2026 05:51
गुरु	24/05/2026 10:30
शनि	24/05/2026 16:00
बुध	24/05/2026 20:56
केतु	24/05/2026 22:58
शुक्र	25/05/2026 04:46
सूर्य	25/05/2026 06:30
चंद्र	25/05/2026 09:24

मंगल - शुक्र - मंगल - राहु	
25/05/2026 09:24	
29/05/2026 02:54	
राहु	25/05/2026 22:50
गुरु	26/05/2026 10:46
शनि	27/05/2026 00:56
बुध	27/05/2026 13:36
केतु	27/05/2026 18:50
शुक्र	28/05/2026 09:45
सूर्य	28/05/2026 14:13
चंद्र	28/05/2026 21:40
मंगल	29/05/2026 02:54

षोडशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शनि 11 वर्ष 11 मास 24 दिन

शनि 14 वर्ष		केतु 15 वर्ष		चंद्र 16 वर्ष		बुध 17 वर्ष		शुक्र 18 वर्ष	
09/01/1988		03/01/2000		03/01/2015		03/01/2031		03/01/2048	
03/01/2000		03/01/2015		03/01/2031		03/01/2048		02/01/2066	
	09/01/1988	केतु	11/12/2001	चंद्र	19/03/2017	बुध	01/07/2033	शुक्र	19/10/2050
केतु	04/07/1989	चंद्र	06/01/2004	बुध	23/07/2019	शुक्र	19/02/2036	सूर्य	03/07/2052
चंद्र	09/06/1991	बुध	19/03/2006	शुक्र	15/01/2022	सूर्य	30/09/2037	मंगल	15/05/2054
बुध	27/06/1993	शुक्र	16/07/2008	सूर्य	23/07/2023	मंगल	04/07/2039	गुरु	20/05/2056
शुक्र	30/08/1995	सूर्य	18/12/2009	मंगल	19/03/2025	गुरु	30/05/2041	शनि	23/07/2058
सूर्य	27/12/1996	मंगल	07/07/2011	गुरु	03/01/2027	शनि	19/06/2043	केतु	19/11/2060
मंगल	09/06/1998	गुरु	12/03/2013	शनि	08/12/2028	केतु	29/08/2045	चंद्र	15/05/2063
गुरु	03/01/2000	शनि	03/01/2015	केतु	03/01/2031	चंद्र	03/01/2048	बुध	02/01/2066

सूर्य 11 वर्ष		मंगल 12 वर्ष		गुरु 13 वर्ष		शनि 14 वर्ष	
02/01/2066		02/01/2077		02/01/2089		03/01/2102	
02/01/2077		02/01/2089		03/01/2102		00/00/0000	
सूर्य	18/01/2067	मंगल	01/04/2078	गुरु	18/06/2090	शनि	13/09/2103
मंगल	09/03/2068	गुरु	05/08/2079	शनि	12/01/2092	केतु	10/01/2104
गुरु	02/06/2069	शनि	15/01/2081	केतु	17/09/2093		00/00/0000
शनि	30/09/2070	केतु	04/08/2082	चंद्र	04/07/2095		00/00/0000
केतु	03/03/2072	चंद्र	31/03/2084	बुध	30/05/2097		00/00/0000
चंद्र	08/09/2073	बुध	02/01/2086	शुक्र	06/06/2099		00/00/0000
बुध	20/04/2075	शुक्र	13/11/2087	सूर्य	30/08/2100		00/00/0000
शुक्र	02/01/2077	सूर्य	02/01/2089	मंगल	03/01/2102		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
षोडशोत्तरी दशा पूरे 116 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - केतु		शनि - चंद्र		शनि - बुध		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य	
09/01/1988		04/07/1989		09/06/1991		27/06/1993		30/08/1995	
04/07/1989		09/06/1991		27/06/1993		30/08/1995		27/12/1996	
	09/01/1988	चंद्र	09/10/1989	बुध	27/09/1991	शुक्र	29/10/1993	सूर्य	15/10/1995
चंद्र	06/03/1988	बुध	20/01/1990	शुक्र	21/01/1992	सूर्य	12/01/1994	मंगल	04/12/1995
बुध	11/06/1988	शुक्र	10/05/1990	सूर्य	01/04/1992	मंगल	04/04/1994	गुरु	27/01/1996
शुक्र	22/09/1988	सूर्य	16/07/1990	मंगल	18/06/1992	गुरु	02/07/1994	शनि	26/03/1996
सूर्य	23/11/1988	मंगल	27/09/1990	गुरु	10/09/1992	शनि	06/10/1994	केतु	28/05/1996
मंगल	31/01/1989	गुरु	15/12/1990	शनि	09/12/1992	केतु	16/01/1995	चंद्र	03/08/1996
गुरु	15/04/1989	शनि	10/03/1991	केतु	16/03/1993	चंद्र	06/05/1995	बुध	13/10/1996
शनि	04/07/1989	केतु	09/06/1991	चंद्र	27/06/1993	बुध	30/08/1995	शुक्र	27/12/1996

शनि - मंगल		शनि - गुरु		केतु - केतु		केतु - चंद्र		केतु - बुध	
27/12/1996		09/06/1998		03/01/2000		11/12/2001		06/01/2004	
09/06/1998		03/01/2000		11/12/2001		06/01/2004		19/03/2006	
मंगल	20/02/1997	गुरु	12/08/1998	केतु	03/04/2000	चंद्र	26/03/2002	बुध	03/05/2004
गुरु	20/04/1997	शनि	20/10/1998	चंद्र	10/07/2000	बुध	14/07/2002	शुक्र	04/09/2004
शनि	23/06/1997	केतु	02/01/1999	बुध	22/10/2000	शुक्र	09/11/2002	सूर्य	19/11/2004
केतु	30/08/1997	चंद्र	22/03/1999	शुक्र	09/02/2001	सूर्य	19/01/2003	मंगल	10/02/2005
चंद्र	11/11/1997	बुध	14/06/1999	सूर्य	17/04/2001	मंगल	07/04/2003	गुरु	11/05/2005
बुध	28/01/1998	शुक्र	11/09/1999	मंगल	29/06/2001	गुरु	01/07/2003	शनि	16/08/2005
शुक्र	20/04/1998	सूर्य	05/11/1999	गुरु	17/09/2001	शनि	30/09/2003	केतु	28/11/2005
सूर्य	09/06/1998	मंगल	03/01/2000	शनि	11/12/2001	केतु	06/01/2004	चंद्र	19/03/2006

केतु - शुक्र		केतु - सूर्य		केतु - मंगल		केतु - गुरु		केतु - शनि	
19/03/2006		16/07/2008		18/12/2009		07/07/2011		12/03/2013	
16/07/2008		18/12/2009		07/07/2011		12/03/2013		03/01/2015	
शुक्र	29/07/2006	सूर्य	03/09/2008	मंगल	14/02/2010	गुरु	14/09/2011	शनि	31/05/2013
सूर्य	17/10/2006	मंगल	27/10/2008	गुरु	19/04/2010	शनि	27/11/2011	केतु	25/08/2013
मंगल	13/01/2007	गुरु	24/12/2008	शनि	26/06/2010	केतु	15/02/2012	चंद्र	24/11/2013
गुरु	19/04/2007	शनि	25/02/2009	केतु	07/09/2010	चंद्र	09/05/2012	बुध	01/03/2014
शनि	30/07/2007	केतु	03/05/2009	चंद्र	25/11/2010	बुध	07/08/2012	शुक्र	11/06/2014
केतु	17/11/2007	चंद्र	14/07/2009	बुध	16/02/2011	शुक्र	11/11/2012	सूर्य	13/08/2014
चंद्र	13/03/2008	बुध	28/09/2009	शुक्र	15/05/2011	सूर्य	08/01/2013	मंगल	21/10/2014
बुध	16/07/2008	शुक्र	18/12/2009	सूर्य	07/07/2011	मंगल	12/03/2013	गुरु	03/01/2015

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - चंद्र		चंद्र - बुध		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		चंद्र - मंगल	
03/01/2015		19/03/2017		23/07/2019		15/01/2022		23/07/2023	
19/03/2017		23/07/2019		15/01/2022		23/07/2023		19/03/2025	
चंद्र	24/04/2015	बुध	22/07/2017	शुक्र	11/12/2019	सूर्य	09/03/2022	मंगल	24/09/2023
बुध	20/08/2015	शुक्र	02/12/2017	सूर्य	06/03/2020	मंगल	05/05/2022	गुरु	30/11/2023
शुक्र	23/12/2015	सूर्य	21/02/2018	मंगल	08/06/2020	गुरु	06/07/2022	शनि	11/02/2024
सूर्य	08/03/2016	मंगल	21/05/2018	गुरु	17/09/2020	शनि	11/09/2022	केतु	30/04/2024
मंगल	31/05/2016	गुरु	25/08/2018	शनि	05/01/2021	केतु	21/11/2022	चंद्र	22/07/2024
गुरु	29/08/2016	शनि	06/12/2018	केतु	02/05/2021	चंद्र	06/02/2023	बुध	19/10/2024
शनि	04/12/2016	केतु	27/03/2019	चंद्र	04/09/2021	बुध	28/04/2023	शुक्र	20/01/2025
केतु	19/03/2017	चंद्र	23/07/2019	बुध	15/01/2022	शुक्र	23/07/2023	सूर्य	19/03/2025

चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - केतु		बुध - बुध		बुध - शुक्र	
19/03/2025		03/01/2027		08/12/2028		03/01/2031		01/07/2033	
03/01/2027		08/12/2028		03/01/2031		01/07/2033		19/02/2036	
गुरु	31/05/2025	शनि	29/03/2027	केतु	16/03/2029	बुध	16/05/2031	शुक्र	27/11/2033
शनि	18/08/2025	केतु	28/06/2027	चंद्र	28/06/2029	शुक्र	04/10/2031	सूर्य	26/02/2034
केतु	11/11/2025	चंद्र	03/10/2027	बुध	17/10/2029	सूर्य	29/12/2031	मंगल	06/06/2034
चंद्र	09/02/2026	बुध	15/01/2028	शुक्र	11/02/2030	मंगल	02/04/2032	गुरु	22/09/2034
बुध	16/05/2026	शुक्र	03/05/2028	सूर्य	24/04/2030	गुरु	13/07/2032	शनि	16/01/2035
शुक्र	26/08/2026	सूर्य	09/07/2028	मंगल	11/07/2030	शनि	30/10/2032	केतु	21/05/2035
सूर्य	27/10/2026	मंगल	20/09/2028	गुरु	03/10/2030	केतु	25/02/2033	चंद्र	01/10/2035
मंगल	03/01/2027	गुरु	08/12/2028	शनि	03/01/2031	चंद्र	01/07/2033	बुध	19/02/2036

बुध - सूर्य		बुध - मंगल		बुध - गुरु		बुध - शनि		बुध - केतु	
19/02/2036		30/09/2037		04/07/2039		30/05/2041		19/06/2043	
30/09/2037		04/07/2039		30/05/2041		19/06/2043		29/08/2045	
सूर्य	15/04/2036	मंगल	05/12/2037	गुरु	20/09/2039	शनि	29/08/2041	केतु	30/09/2043
मंगल	15/06/2036	गुरु	15/02/2038	शनि	13/12/2039	केतु	03/12/2041	चंद्र	19/01/2044
गुरु	20/08/2036	शनि	04/05/2038	केतु	12/03/2040	चंद्र	17/03/2042	बुध	16/05/2044
शनि	30/10/2036	केतु	26/07/2038	चंद्र	16/06/2040	बुध	05/07/2042	शुक्र	17/09/2044
केतु	14/01/2037	चंद्र	23/10/2038	बुध	26/09/2040	शुक्र	29/10/2042	सूर्य	02/12/2044
चंद्र	05/04/2037	बुध	25/01/2039	शुक्र	12/01/2041	सूर्य	08/01/2043	मंगल	24/02/2045
बुध	01/07/2037	शुक्र	04/05/2039	सूर्य	19/03/2041	मंगल	27/03/2043	गुरु	25/05/2045
शुक्र	30/09/2037	सूर्य	04/07/2039	मंगल	30/05/2041	गुरु	19/06/2043	शनि	29/08/2045

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - चंद्र		शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - मंगल		शुक्र - गुरु	
29/08/2045		03/01/2048		19/10/2050		03/07/2052		15/05/2054	
03/01/2048		19/10/2050		03/07/2052		15/05/2054		20/05/2056	
चंद्र	26/12/2045	शुक्र	09/06/2048	सूर्य	17/12/2050	मंगल	12/09/2052	गुरु	05/08/2054
बुध	30/04/2046	सूर्य	14/09/2048	मंगल	20/02/2051	गुरु	27/11/2052	शनि	02/11/2054
शुक्र	10/09/2046	मंगल	28/12/2048	गुरु	01/05/2051	शनि	17/02/2053	केतु	05/02/2055
सूर्य	30/11/2046	गुरु	22/04/2049	शनि	15/07/2051	केतु	16/05/2053	चंद्र	18/05/2055
मंगल	27/02/2047	शनि	23/08/2049	केतु	03/10/2051	चंद्र	18/08/2053	बुध	03/09/2055
गुरु	03/06/2047	केतु	02/01/2050	चंद्र	28/12/2051	बुध	26/11/2053	शुक्र	26/12/2055
शनि	14/09/2047	चंद्र	23/05/2050	बुध	29/03/2052	शुक्र	11/03/2054	सूर्य	05/03/2056
केतु	03/01/2048	बुध	19/10/2050	शुक्र	03/07/2052	सूर्य	15/05/2054	मंगल	20/05/2056

शुक्र - शनि		शुक्र - केतु		शुक्र - चंद्र		शुक्र - बुध		सूर्य - सूर्य	
20/05/2056		23/07/2058		19/11/2060		15/05/2063		02/01/2066	
23/07/2058		19/11/2060		15/05/2063		02/01/2066		18/01/2067	
शनि	24/08/2056	केतु	10/11/2058	चंद्र	24/03/2061	बुध	03/10/2063	सूर्य	07/02/2066
केतु	05/12/2056	चंद्र	07/03/2059	बुध	04/08/2061	शुक्र	01/03/2064	मंगल	19/03/2066
चंद्र	24/03/2057	बुध	10/07/2059	शुक्र	23/12/2061	सूर्य	31/05/2064	गुरु	01/05/2066
बुध	19/07/2057	शुक्र	19/11/2059	सूर्य	19/03/2062	मंगल	08/09/2064	शनि	16/06/2066
शुक्र	19/11/2057	सूर्य	07/02/2060	मंगल	21/06/2062	गुरु	25/12/2064	केतु	04/08/2066
सूर्य	02/02/2058	मंगल	05/05/2060	गुरु	30/09/2062	शनि	20/04/2065	चंद्र	25/09/2066
मंगल	25/04/2058	गुरु	08/08/2060	शनि	18/01/2063	केतु	22/08/2065	बुध	20/11/2066
गुरु	23/07/2058	शनि	19/11/2060	केतु	15/05/2063	चंद्र	02/01/2066	शुक्र	18/01/2067

सूर्य - मंगल		सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि		सूर्य - केतु		सूर्य - चंद्र	
18/01/2067		09/03/2068		02/06/2069		30/09/2070		03/03/2072	
09/03/2068		02/06/2069		30/09/2070		03/03/2072		08/09/2073	
मंगल	02/03/2067	गुरु	28/04/2068	शनि	31/07/2069	केतु	06/12/2070	चंद्र	18/05/2072
गुरु	18/04/2067	शनि	22/06/2068	केतु	01/10/2069	चंद्र	16/02/2071	बुध	07/08/2072
शनि	07/06/2067	केतु	19/08/2068	चंद्र	07/12/2069	बुध	03/05/2071	शुक्र	01/11/2072
केतु	31/07/2067	चंद्र	20/10/2068	बुध	16/02/2070	शुक्र	23/07/2071	सूर्य	24/12/2072
चंद्र	26/09/2067	बुध	25/12/2068	शुक्र	03/05/2070	सूर्य	10/09/2071	मंगल	19/02/2073
बुध	26/11/2067	शुक्र	05/03/2069	सूर्य	18/06/2070	मंगल	03/11/2071	गुरु	22/04/2073
शुक्र	30/01/2068	सूर्य	17/04/2069	मंगल	07/08/2070	गुरु	31/12/2071	शनि	28/06/2073
सूर्य	09/03/2068	मंगल	02/06/2069	गुरु	30/09/2070	शनि	03/03/2072	केतु	08/09/2073

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - बुध		सूर्य - शुक्र		मंगल - मंगल		मंगल - गुरु		मंगल - शनि	
08/09/2073		20/04/2075		02/01/2077		01/04/2078		05/08/2079	
20/04/2075		02/01/2077		01/04/2078		05/08/2079		15/01/2081	
बुध	03/12/2073	शुक्र	25/07/2075	मंगल	18/02/2077	गुरु	26/05/2078	शनि	08/10/2079
शुक्र	05/03/2074	सूर्य	23/09/2075	गुरु	10/04/2077	शनि	24/07/2078	केतु	15/12/2079
सूर्य	29/04/2074	मंगल	26/11/2075	शनि	04/06/2077	केतु	25/09/2078	चंद्र	26/02/2080
मंगल	29/06/2074	गुरु	04/02/2076	केतु	01/08/2077	चंद्र	02/12/2078	बुध	13/05/2080
गुरु	03/09/2074	शनि	19/04/2076	चंद्र	03/10/2077	बुध	12/02/2079	शुक्र	04/08/2080
शनि	13/11/2074	केतु	09/07/2076	बुध	08/12/2077	शुक्र	29/04/2079	सूर्य	23/09/2080
केतु	28/01/2075	चंद्र	03/10/2076	शुक्र	17/02/2078	सूर्य	15/06/2079	मंगल	16/11/2080
चंद्र	20/04/2075	बुध	02/01/2077	सूर्य	01/04/2078	मंगल	05/08/2079	गुरु	15/01/2081

मंगल - केतु		मंगल - चंद्र		मंगल - बुध		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य	
15/01/2081		04/08/2082		31/03/2084		02/01/2086		13/11/2087	
04/08/2082		31/03/2084		02/01/2086		13/11/2087		02/01/2089	
केतु	29/03/2081	चंद्र	27/10/2082	बुध	03/07/2084	शुक्र	18/04/2086	सूर्य	23/12/2087
चंद्र	15/06/2081	बुध	23/01/2083	शुक्र	11/10/2084	सूर्य	21/06/2086	मंगल	04/02/2088
बुध	06/09/2081	शुक्र	27/04/2083	सूर्य	11/12/2084	मंगल	31/08/2086	गुरु	21/03/2088
शुक्र	03/12/2081	सूर्य	24/06/2083	मंगल	15/02/2085	गुरु	15/11/2086	शनि	11/05/2088
सूर्य	26/01/2082	मंगल	25/08/2083	गुरु	28/04/2085	शनि	05/02/2087	केतु	03/07/2088
मंगल	26/03/2082	गुरु	01/11/2083	शनि	15/07/2085	केतु	04/05/2087	चंद्र	30/08/2088
गुरु	28/05/2082	शनि	13/01/2084	केतु	06/10/2085	चंद्र	06/08/2087	बुध	30/10/2088
शनि	04/08/2082	केतु	31/03/2084	चंद्र	02/01/2086	बुध	13/11/2087	शुक्र	02/01/2089

गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - केतु		गुरु - चंद्र		गुरु - बुध	
02/01/2089		18/06/2090		12/01/2092		17/09/2093		04/07/2095	
18/06/2090		12/01/2092		17/09/2093		04/07/2095		30/05/2097	
गुरु	03/03/2089	शनि	26/08/2090	केतु	01/04/2092	चंद्र	17/12/2093	बुध	14/10/2095
शनि	06/05/2089	केतु	09/11/2090	चंद्र	24/06/2092	बुध	23/03/2094	शुक्र	30/01/2096
केतु	14/07/2089	चंद्र	27/01/2091	बुध	22/09/2092	शुक्र	02/07/2094	सूर्य	05/04/2096
चंद्र	25/09/2089	बुध	21/04/2091	शुक्र	27/12/2092	सूर्य	02/09/2094	मंगल	16/06/2096
बुध	12/12/2089	शुक्र	18/07/2091	सूर्य	23/02/2093	मंगल	09/11/2094	गुरु	02/09/2096
शुक्र	05/03/2090	सूर्य	11/09/2091	मंगल	27/04/2093	गुरु	22/01/2095	शनि	25/11/2096
सूर्य	24/04/2090	मंगल	09/11/2091	गुरु	05/07/2093	शनि	11/04/2095	केतु	23/02/2097
मंगल	18/06/2090	गुरु	12/01/2092	शनि	17/09/2093	केतु	04/07/2095	चंद्र	30/05/2097

त्रिभगी दशा

भोग्य दशा काल : शुक्र 11 वर्ष 4 मास 29 दिन

शुक्र 13 वर्ष		सूर्य 4 वर्ष		चंद्र 7 वर्ष		मंगल 5 वर्ष		राहु 12 वर्ष	
09/01/1988		08/06/1999		08/06/2003		06/02/2010		08/10/2014	
08/06/1999		08/06/2003		06/02/2010		08/10/2014		08/10/2026	
शुक्र	28/04/1988	सूर्य	20/08/1999	चंद्र	28/12/2003	मंगल	17/05/2010	राहु	26/07/2016
सूर्य	28/12/1988	चंद्र	20/12/1999	मंगल	18/05/2004	राहु	28/01/2011	गुरु	03/03/2018
चंद्र	06/02/1990	मंगल	14/03/2000	राहु	19/05/2005	गुरु	12/09/2011	शनि	26/01/2020
मंगल	18/11/1990	राहु	20/10/2000	गुरु	08/04/2006	शनि	08/06/2012	बुध	08/10/2021
राहु	17/11/1992	गुरु	02/05/2001	शनि	29/04/2007	बुध	04/02/2013	केतु	20/06/2022
गुरु	28/08/1994	शनि	20/12/2001	बुध	08/04/2008	केतु	15/05/2013	शुक्र	20/06/2024
शनि	07/10/1996	बुध	15/07/2002	केतु	28/08/2008	शुक्र	23/02/2014	सूर्य	25/01/2025
बुध	28/08/1998	केतु	08/10/2002	शुक्र	08/10/2009	सूर्य	19/05/2014	चंद्र	25/01/2026
केतु	08/06/1999	शुक्र	08/06/2003	सूर्य	06/02/2010	चंद्र	08/10/2014	मंगल	08/10/2026

गुरु 11 वर्ष		शनि 13 वर्ष		बुध 11 वर्ष		केतु 5 वर्ष		शुक्र 13 वर्ष	
08/10/2026		08/06/2037		06/02/2050		08/06/2061		06/02/2066	
08/06/2037		06/02/2050		08/06/2061		06/02/2066		00/00/0000	
गुरु	10/03/2028	शनि	10/06/2039	बुध	16/09/2051	केतु	15/09/2061	शुक्र	09/01/2068
शनि	17/11/2029	बुध	27/03/2041	केतु	14/05/2052	शुक्र	26/06/2062		00/00/0000
बुध	23/05/2031	केतु	22/12/2041	शुक्र	04/04/2054	सूर्य	20/09/2062		00/00/0000
केतु	05/01/2032	शुक्र	01/02/2044	सूर्य	28/10/2054	चंद्र	09/02/2063		00/00/0000
शुक्र	16/10/2033	सूर्य	19/09/2044	चंद्र	08/10/2055	मंगल	19/05/2063		00/00/0000
सूर्य	29/04/2034	चंद्र	10/10/2045	मंगल	06/06/2056	राहु	30/01/2064		00/00/0000
चंद्र	19/03/2035	मंगल	07/07/2046	राहु	17/02/2058	गुरु	13/09/2064		00/00/0000
मंगल	02/11/2035	राहु	31/05/2048	गुरु	23/08/2059	शनि	10/06/2065		00/00/0000
राहु	08/06/2037	गुरु	06/02/2050	शनि	08/06/2061	बुध	06/02/2066		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
त्रिभगी दशा पूरे 80 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल		शुक्र - राहु	
09/01/1988		28/04/1988		28/12/1988		06/02/1990		18/11/1990	
28/04/1988		28/12/1988		06/02/1990		18/11/1990		17/11/1992	
	00/00/0000	सूर्य	10/05/1988	चंद्र	30/01/1989	मंगल	23/02/1990	राहु	07/03/1991
	00/00/0000	चंद्र	31/05/1988	मंगल	23/02/1989	राहु	07/04/1990	गुरु	12/06/1991
	00/00/0000	मंगल	14/06/1988	राहु	25/04/1989	गुरु	14/05/1990	शनि	06/10/1991
	00/00/0000	राहु	20/07/1988	गुरु	18/06/1989	शनि	28/06/1990	बुध	18/01/1992
	00/00/0000	गुरु	22/08/1988	शनि	21/08/1989	बुध	08/08/1990	केतु	29/02/1992
	00/00/0000	शनि	29/09/1988	बुध	18/10/1989	केतु	24/08/1990	शुक्र	30/06/1992
	09/01/1988	बुध	03/11/1988	केतु	10/11/1989	शुक्र	11/10/1990	सूर्य	06/08/1992
बुध	12/03/1988	केतु	17/11/1988	शुक्र	17/01/1990	सूर्य	25/10/1990	चंद्र	05/10/1992
केतु	28/04/1988	शुक्र	28/12/1988	सूर्य	06/02/1990	चंद्र	18/11/1990	मंगल	17/11/1992

शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि		शुक्र - बुध		शुक्र - केतु		सूर्य - सूर्य	
17/11/1992		28/08/1994		07/10/1996		28/08/1998		08/06/1999	
28/08/1994		07/10/1996		28/08/1998		08/06/1999		20/08/1999	
गुरु	12/02/1993	शनि	28/12/1994	बुध	13/01/1997	केतु	14/09/1998	सूर्य	12/06/1999
शनि	25/05/1993	बुध	17/04/1995	केतु	22/02/1997	शुक्र	31/10/1998	चंद्र	18/06/1999
बुध	25/08/1993	केतु	01/06/1995	शुक्र	17/06/1997	सूर्य	14/11/1998	मंगल	22/06/1999
केतु	02/10/1993	शुक्र	07/10/1995	सूर्य	22/07/1997	चंद्र	08/12/1998	राहु	03/07/1999
शुक्र	18/01/1994	सूर्य	15/11/1995	चंद्र	17/09/1997	मंगल	25/12/1998	गुरु	13/07/1999
सूर्य	20/02/1994	चंद्र	18/01/1996	मंगल	28/10/1997	राहु	05/02/1999	शनि	25/07/1999
चंद्र	15/04/1994	मंगल	03/03/1996	राहु	08/02/1998	गुरु	15/03/1999	बुध	04/08/1999
मंगल	23/05/1994	राहु	27/06/1996	गुरु	11/05/1998	शनि	29/04/1999	केतु	08/08/1999
राहु	28/08/1994	गुरु	07/10/1996	शनि	28/08/1998	बुध	08/06/1999	शुक्र	20/08/1999

सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल		सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि	
20/08/1999		20/12/1999		14/03/2000		20/10/2000		02/05/2001	
20/12/1999		14/03/2000		20/10/2000		02/05/2001		20/12/2001	
चंद्र	31/08/1999	मंगल	25/12/1999	राहु	16/04/2000	गुरु	15/11/2000	शनि	08/06/2001
मंगल	07/09/1999	राहु	07/01/2000	गुरु	16/05/2000	शनि	15/12/2000	बुध	11/07/2001
राहु	25/09/1999	गुरु	18/01/2000	शनि	19/06/2000	बुध	12/01/2001	केतु	24/07/2001
गुरु	11/10/1999	शनि	01/02/2000	बुध	20/07/2000	केतु	23/01/2001	शुक्र	01/09/2001
शनि	30/10/1999	बुध	13/02/2000	केतु	02/08/2000	शुक्र	25/02/2001	सूर्य	12/09/2001
बुध	17/11/1999	केतु	18/02/2000	शुक्र	08/09/2000	सूर्य	07/03/2001	चंद्र	02/10/2001
केतु	24/11/1999	शुक्र	03/03/2000	सूर्य	19/09/2000	चंद्र	23/03/2001	मंगल	15/10/2001
शुक्र	14/12/1999	सूर्य	07/03/2000	चंद्र	07/10/2000	मंगल	03/04/2001	राहु	19/11/2001
सूर्य	20/12/1999	चंद्र	14/03/2000	मंगल	20/10/2000	राहु	02/05/2001	गुरु	20/12/2001

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - बुध		सूर्य - केतु		सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल	
20/12/2001		15/07/2002		08/10/2002		08/06/2003		28/12/2003	
15/07/2002		08/10/2002		08/06/2003		28/12/2003		18/05/2004	
बुध	18/01/2002	केतु	20/07/2002	शुक्र	18/11/2002	चंद्र	25/06/2003	मंगल	06/01/2004
केतु	30/01/2002	शुक्र	03/08/2002	सूर्य	30/11/2002	मंगल	07/07/2003	राहु	27/01/2004
शुक्र	06/03/2002	सूर्य	07/08/2002	चंद्र	20/12/2002	राहु	07/08/2003	गुरु	15/02/2004
सूर्य	16/03/2002	चंद्र	14/08/2002	मंगल	03/01/2003	गुरु	03/09/2003	शनि	08/03/2004
चंद्र	02/04/2002	मंगल	19/08/2002	राहु	09/02/2003	शनि	05/10/2003	बुध	28/03/2004
मंगल	14/04/2002	राहु	01/09/2002	गुरु	13/03/2003	बुध	03/11/2003	केतु	06/04/2004
राहु	15/05/2002	गुरु	12/09/2002	शनि	21/04/2003	केतु	14/11/2003	शुक्र	29/04/2004
गुरु	12/06/2002	शनि	26/09/2002	बुध	25/05/2003	शुक्र	18/12/2003	सूर्य	07/05/2004
शनि	15/07/2002	बुध	08/10/2002	केतु	08/06/2003	सूर्य	28/12/2003	चंद्र	18/05/2004

चंद्र - राहु		चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - बुध		चंद्र - केतु	
18/05/2004		19/05/2005		08/04/2006		29/04/2007		08/04/2008	
19/05/2005		08/04/2006		29/04/2007		08/04/2008		28/08/2008	
राहु	12/07/2004	गुरु	01/07/2005	शनि	08/06/2006	बुध	17/06/2007	केतु	16/04/2008
गुरु	30/08/2004	शनि	21/08/2005	बुध	02/08/2006	केतु	07/07/2007	शुक्र	10/05/2008
शनि	27/10/2004	बुध	06/10/2005	केतु	24/08/2006	शुक्र	02/09/2007	सूर्य	17/05/2008
बुध	17/12/2004	केतु	25/10/2005	शुक्र	28/10/2006	सूर्य	20/09/2007	चंद्र	29/05/2008
केतु	08/01/2005	शुक्र	18/12/2005	सूर्य	16/11/2006	चंद्र	18/10/2007	मंगल	06/06/2008
शुक्र	10/03/2005	सूर्य	04/01/2006	चंद्र	18/12/2006	मंगल	07/11/2007	राहु	27/06/2008
सूर्य	28/03/2005	चंद्र	31/01/2006	मंगल	10/01/2007	राहु	29/12/2007	गुरु	16/07/2008
चंद्र	27/04/2005	मंगल	19/02/2006	राहु	08/03/2007	गुरु	13/02/2008	शनि	08/08/2008
मंगल	19/05/2005	राहु	08/04/2006	गुरु	29/04/2007	शनि	08/04/2008	बुध	28/08/2008

चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल		मंगल - राहु		मंगल - गुरु	
28/08/2008		08/10/2009		06/02/2010		17/05/2010		28/01/2011	
08/10/2009		06/02/2010		17/05/2010		28/01/2011		12/09/2011	
शुक्र	03/11/2008	सूर्य	14/10/2009	मंगल	12/02/2010	राहु	24/06/2010	गुरु	27/02/2011
सूर्य	24/11/2008	चंद्र	24/10/2009	राहु	27/02/2010	गुरु	28/07/2010	शनि	04/04/2011
चंद्र	28/12/2008	मंगल	31/10/2009	गुरु	12/03/2010	शनि	07/09/2010	बुध	06/05/2011
मंगल	20/01/2009	राहु	18/11/2009	शनि	28/03/2010	बुध	13/10/2010	केतु	19/05/2011
राहु	22/03/2009	गुरु	05/12/2009	बुध	11/04/2010	केतु	28/10/2010	शुक्र	26/06/2011
गुरु	15/05/2009	शनि	24/12/2009	केतु	17/04/2010	शुक्र	10/12/2010	सूर्य	08/07/2011
शनि	19/07/2009	बुध	10/01/2010	शुक्र	04/05/2010	सूर्य	22/12/2010	चंद्र	26/07/2011
बुध	14/09/2009	केतु	17/01/2010	सूर्य	09/05/2010	चंद्र	13/01/2011	मंगल	09/08/2011
केतु	08/10/2009	शुक्र	06/02/2010	चंद्र	17/05/2010	मंगल	28/01/2011	राहु	12/09/2011

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - शनि		मंगल - बुध		मंगल - केतु		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य	
12/09/2011		08/06/2012		04/02/2013		15/05/2013		23/02/2014	
08/06/2012		04/02/2013		15/05/2013		23/02/2014		19/05/2014	
शनि	25/10/2011	बुध	12/07/2012	केतु	10/02/2013	शुक्र	01/07/2013	सूर्य	27/02/2014
बुध	02/12/2011	केतु	26/07/2012	शुक्र	27/02/2013	सूर्य	15/07/2013	चंद्र	06/03/2014
केतु	18/12/2011	शुक्र	04/09/2012	सूर्य	03/03/2013	चंद्र	08/08/2013	मंगल	11/03/2014
शुक्र	31/01/2012	सूर्य	16/09/2012	चंद्र	12/03/2013	मंगल	24/08/2013	राहु	24/03/2014
सूर्य	14/02/2012	चंद्र	06/10/2012	मंगल	18/03/2013	राहु	06/10/2013	गुरु	04/04/2014
चंद्र	07/03/2012	मंगल	20/10/2012	राहु	01/04/2013	गुरु	13/11/2013	शनि	18/04/2014
मंगल	23/03/2012	राहु	26/11/2012	गुरु	15/04/2013	शनि	28/12/2013	बुध	30/04/2014
राहु	03/05/2012	गुरु	28/12/2012	शनि	30/04/2013	बुध	06/02/2014	केतु	05/05/2014
गुरु	08/06/2012	शनि	04/02/2013	बुध	15/05/2013	केतु	23/02/2014	शुक्र	19/05/2014

मंगल - चंद्र		राहु - राहु		राहु - गुरु		राहु - शनि		राहु - बुध	
19/05/2014		08/10/2014		26/07/2016		03/03/2018		26/01/2020	
08/10/2014		26/07/2016		03/03/2018		26/01/2020		08/10/2021	
चंद्र	31/05/2014	राहु	15/01/2015	गुरु	12/10/2016	शनि	21/06/2018	बुध	23/04/2020
मंगल	08/06/2014	गुरु	12/04/2015	शनि	13/01/2017	बुध	27/09/2018	केतु	29/05/2020
राहु	29/06/2014	शनि	25/07/2015	बुध	06/04/2017	केतु	06/11/2018	शुक्र	09/09/2020
गुरु	18/07/2014	बुध	26/10/2015	केतु	10/05/2017	शुक्र	02/03/2019	सूर्य	10/10/2020
शनि	10/08/2014	केतु	04/12/2015	शुक्र	15/08/2017	सूर्य	06/04/2019	चंद्र	01/12/2020
बुध	30/08/2014	शुक्र	22/03/2016	सूर्य	13/09/2017	चंद्र	03/06/2019	मंगल	06/01/2021
केतु	07/09/2014	सूर्य	24/04/2016	चंद्र	01/11/2017	मंगल	13/07/2019	राहु	10/04/2021
शुक्र	01/10/2014	चंद्र	18/06/2016	मंगल	05/12/2017	राहु	25/10/2019	गुरु	01/07/2021
सूर्य	08/10/2014	मंगल	26/07/2016	राहु	03/03/2018	गुरु	26/01/2020	शनि	08/10/2021

राहु - केतु		राहु - शुक्र		राहु - सूर्य		राहु - चंद्र		राहु - मंगल	
08/10/2021		20/06/2022		20/06/2024		25/01/2025		25/01/2026	
20/06/2022		20/06/2024		25/01/2025		25/01/2026		08/10/2026	
केतु	23/10/2021	शुक्र	20/10/2022	सूर्य	01/07/2024	चंद्र	24/02/2025	मंगल	09/02/2026
शुक्र	04/12/2021	सूर्य	26/11/2022	चंद्र	19/07/2024	मंगल	18/03/2025	राहु	20/03/2026
सूर्य	17/12/2021	चंद्र	25/01/2023	मंगल	01/08/2024	राहु	12/05/2025	गुरु	23/04/2026
चंद्र	07/01/2022	मंगल	09/03/2023	राहु	03/09/2024	गुरु	29/06/2025	शनि	02/06/2026
मंगल	22/01/2022	राहु	27/06/2023	गुरु	02/10/2024	शनि	26/08/2025	बुध	08/07/2026
राहु	02/03/2022	गुरु	02/10/2023	शनि	06/11/2024	बुध	17/10/2025	केतु	23/07/2026
गुरु	05/04/2022	शनि	26/01/2024	बुध	07/12/2024	केतु	07/11/2025	शुक्र	04/09/2026
शनि	15/05/2022	बुध	08/05/2024	केतु	19/12/2024	शुक्र	07/01/2026	सूर्य	17/09/2026
बुध	20/06/2022	केतु	20/06/2024	शुक्र	25/01/2025	सूर्य	25/01/2026	चंद्र	08/10/2026

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - बुध		गुरु - केतु		गुरु - शुक्र	
08/10/2026		10/03/2028		17/11/2029		23/05/2031		05/01/2032	
10/03/2028		17/11/2029		23/05/2031		05/01/2032		16/10/2033	
गुरु	16/12/2026	शनि	16/06/2028	बुध	03/02/2030	केतु	05/06/2031	शुक्र	23/04/2032
शनि	08/03/2027	बुध	11/09/2028	केतु	08/03/2030	शुक्र	13/07/2031	सूर्य	25/05/2032
बुध	21/05/2027	केतु	17/10/2028	शुक्र	08/06/2030	सूर्य	25/07/2031	चंद्र	18/07/2032
केतु	20/06/2027	शुक्र	28/01/2029	सूर्य	05/07/2030	चंद्र	13/08/2031	मंगल	25/08/2032
शुक्र	15/09/2027	सूर्य	28/02/2029	चंद्र	20/08/2030	मंगल	26/08/2031	राहु	01/12/2032
सूर्य	11/10/2027	चंद्र	20/04/2029	मंगल	21/09/2030	राहु	29/09/2031	गुरु	25/02/2033
चंद्र	23/11/2027	मंगल	26/05/2029	राहु	13/12/2030	गुरु	29/10/2031	शनि	08/06/2033
मंगल	23/12/2027	राहु	27/08/2029	गुरु	25/02/2031	शनि	04/12/2031	बुध	08/09/2033
राहु	10/03/2028	गुरु	17/11/2029	शनि	23/05/2031	बुध	05/01/2032	केतु	16/10/2033

गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल		गुरु - राहु		शनि - शनि	
16/10/2033		29/04/2034		19/03/2035		02/11/2035		08/06/2037	
29/04/2034		19/03/2035		02/11/2035		08/06/2037		10/06/2039	
सूर्य	26/10/2033	चंद्र	26/05/2034	मंगल	02/04/2035	राहु	28/01/2036	शनि	02/10/2037
चंद्र	11/11/2033	मंगल	14/06/2034	राहु	06/05/2035	गुरु	15/04/2036	बुध	14/01/2038
मंगल	22/11/2033	राहु	01/08/2034	गुरु	05/06/2035	शनि	17/07/2036	केतु	25/02/2038
राहु	21/12/2033	गुरु	14/09/2034	शनि	11/07/2035	बुध	07/10/2036	शुक्र	28/06/2038
गुरु	16/01/2034	शनि	04/11/2034	बुध	12/08/2035	केतु	11/11/2036	सूर्य	03/08/2038
शनि	16/02/2034	बुध	20/12/2034	केतु	25/08/2035	शुक्र	16/02/2037	चंद्र	03/10/2038
बुध	16/03/2034	केतु	08/01/2035	शुक्र	02/10/2035	सूर्य	17/03/2037	मंगल	15/11/2038
केतु	27/03/2034	शुक्र	03/03/2035	सूर्य	14/10/2035	चंद्र	05/05/2037	राहु	05/03/2039
शुक्र	29/04/2034	सूर्य	19/03/2035	चंद्र	02/11/2035	मंगल	08/06/2037	गुरु	10/06/2039

शनि - बुध		शनि - केतु		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र	
10/06/2039		27/03/2041		22/12/2041		01/02/2044		19/09/2044	
27/03/2041		22/12/2041		01/02/2044		19/09/2044		10/10/2045	
बुध	11/09/2039	केतु	12/04/2041	शुक्र	29/04/2042	सूर्य	12/02/2044	चंद्र	21/10/2044
केतु	20/10/2039	शुक्र	27/05/2041	सूर्य	07/06/2042	चंद्र	03/03/2044	मंगल	13/11/2044
शुक्र	06/02/2040	सूर्य	09/06/2041	चंद्र	10/08/2042	मंगल	16/03/2044	राहु	10/01/2045
सूर्य	10/03/2040	चंद्र	02/07/2041	मंगल	24/09/2042	राहु	20/04/2044	गुरु	02/03/2045
चंद्र	03/05/2040	मंगल	17/07/2041	राहु	18/01/2043	गुरु	21/05/2044	शनि	02/05/2045
मंगल	10/06/2040	राहु	27/08/2041	गुरु	01/05/2043	शनि	26/06/2044	बुध	26/06/2045
राहु	17/09/2040	गुरु	02/10/2041	शनि	31/08/2043	बुध	29/07/2044	केतु	18/07/2045
गुरु	13/12/2040	शनि	14/11/2041	बुध	18/12/2043	केतु	12/08/2044	शुक्र	20/09/2045
शनि	27/03/2041	बुध	22/12/2041	केतु	01/02/2044	शुक्र	19/09/2044	सूर्य	10/10/2045

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - मंगल		शनि - राहु		शनि - गुरु		बुध - बुध		बुध - केतु	
10/10/2045		07/07/2046		31/05/2048		06/02/2050		16/09/2051	
07/07/2046		31/05/2048		06/02/2050		16/09/2051		14/05/2052	
मंगल	25/10/2045	राहु	19/10/2046	गुरु	21/08/2048	बुध	01/05/2050	केतु	30/09/2051
राहु	05/12/2045	गुरु	19/01/2047	शनि	26/11/2048	केतु	04/06/2050	शुक्र	09/11/2051
गुरु	10/01/2046	शनि	09/05/2047	बुध	22/02/2049	शुक्र	09/09/2050	सूर्य	21/11/2051
शनि	22/02/2046	बुध	15/08/2047	केतु	30/03/2049	सूर्य	09/10/2050	चंद्र	11/12/2051
बुध	01/04/2046	केतु	25/09/2047	शुक्र	11/07/2049	चंद्र	27/11/2050	मंगल	25/12/2051
केतु	17/04/2046	शुक्र	19/01/2048	सूर्य	11/08/2049	मंगल	31/12/2050	राहु	31/01/2052
शुक्र	01/06/2046	सूर्य	22/02/2048	चंद्र	01/10/2049	राहु	29/03/2051	गुरु	03/03/2052
सूर्य	14/06/2046	चंद्र	20/04/2048	मंगल	06/11/2049	गुरु	15/06/2051	शनि	10/04/2052
चंद्र	07/07/2046	मंगल	31/05/2048	राहु	06/02/2050	शनि	16/09/2051	बुध	14/05/2052

बुध - शुक्र		बुध - सूर्य		बुध - चंद्र		बुध - मंगल		बुध - राहु	
14/05/2052		04/04/2054		28/10/2054		08/10/2055		06/06/2056	
04/04/2054		28/10/2054		08/10/2055		06/06/2056		17/02/2058	
शुक्र	06/09/2052	सूर्य	15/04/2054	चंद्र	26/11/2054	मंगल	22/10/2055	राहु	07/09/2056
सूर्य	11/10/2052	चंद्र	02/05/2054	मंगल	16/12/2054	राहु	27/11/2055	गुरु	29/11/2056
चंद्र	07/12/2052	मंगल	14/05/2054	राहु	06/02/2055	गुरु	30/12/2055	शनि	07/03/2057
मंगल	17/01/2053	राहु	14/06/2054	गुरु	24/03/2055	शनि	06/02/2056	बुध	03/06/2057
राहु	30/04/2053	गुरु	12/07/2054	शनि	17/05/2055	बुध	11/03/2056	केतु	09/07/2057
गुरु	31/07/2053	शनि	13/08/2054	बुध	05/07/2055	केतु	25/03/2056	शुक्र	21/10/2057
शनि	17/11/2053	बुध	12/09/2054	केतु	25/07/2055	शुक्र	04/05/2056	सूर्य	21/11/2057
बुध	23/02/2054	केतु	24/09/2054	शुक्र	21/09/2055	सूर्य	17/05/2056	चंद्र	11/01/2058
केतु	04/04/2054	शुक्र	28/10/2054	सूर्य	08/10/2055	चंद्र	06/06/2056	मंगल	17/02/2058

बुध - गुरु		बुध - शनि		केतु - केतु		केतु - शुक्र		केतु - सूर्य	
17/02/2058		23/08/2059		08/06/2061		15/09/2061		26/06/2062	
23/08/2059		08/06/2061		15/09/2061		26/06/2062		20/09/2062	
गुरु	01/05/2058	शनि	04/12/2059	केतु	14/06/2061	शुक्र	02/11/2061	सूर्य	01/07/2062
शनि	28/07/2058	बुध	06/03/2060	शुक्र	30/06/2061	सूर्य	16/11/2061	चंद्र	08/07/2062
बुध	14/10/2058	केतु	13/04/2060	सूर्य	05/07/2061	चंद्र	10/12/2061	मंगल	13/07/2062
केतु	15/11/2058	शुक्र	01/08/2060	चंद्र	14/07/2061	मंगल	26/12/2061	राहु	26/07/2062
शुक्र	15/02/2059	सूर्य	02/09/2060	मंगल	19/07/2061	राहु	07/02/2062	गुरु	06/08/2062
सूर्य	15/03/2059	चंद्र	27/10/2060	राहु	03/08/2061	गुरु	17/03/2062	शनि	19/08/2062
चंद्र	30/04/2059	मंगल	04/12/2060	गुरु	17/08/2061	शनि	01/05/2062	बुध	31/08/2062
मंगल	01/06/2059	राहु	13/03/2061	शनि	01/09/2061	बुध	10/06/2062	केतु	05/09/2062
राहु	23/08/2059	गुरु	08/06/2061	बुध	15/09/2061	केतु	26/06/2062	शुक्र	20/09/2062

अष्टोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : चन्द्र 6 वर्ष 11 मास 15 दिन

चंद्र 15 वर्ष		मंगल 8 वर्ष		बुध 17 वर्ष		शनि 10 वर्ष		गुरु 19 वर्ष	
09/01/1988		25/12/1994		25/12/2002		25/12/2019		24/12/2029	
25/12/1994		25/12/2002		25/12/2019		24/12/2029		24/12/2048	
	00/00/0000	मंगल	29/07/1995	बुध	28/08/2005	शनि	27/11/2020	गुरु	28/04/2033
	00/00/0000	बुध	31/10/1996	शनि	26/03/2007	गुरु	01/09/2022	राहु	08/06/2035
	00/00/0000	शनि	29/07/1997	गुरु	22/03/2010	राहु	12/10/2023	शुक्र	17/02/2039
	09/01/1988	गुरु	25/12/1998	राहु	10/02/2012	शुक्र	21/09/2025	सूर्य	08/03/2040
गुरु	25/07/1989	राहु	14/11/1999	शुक्र	02/06/2015	सूर्य	12/04/2026	चंद्र	28/10/2042
राहु	26/03/1991	शुक्र	05/06/2001	सूर्य	12/05/2016	चंद्र	01/09/2027	मंगल	25/03/2044
शुक्र	23/02/1994	सूर्य	14/11/2001	चंद्र	21/09/2018	मंगल	29/05/2028	बुध	23/03/2047
सूर्य	25/12/1994	चंद्र	25/12/2002	मंगल	25/12/2019	बुध	24/12/2029	शनि	24/12/2048

राहु 12 वर्ष		शुक्र 21 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 15 वर्ष	
24/12/2048		24/12/2060		24/12/2081		25/12/2087	
24/12/2060		24/12/2081		25/12/2087		00/00/0000	
राहु	25/04/2050	शुक्र	24/01/2065	सूर्य	25/04/2082	चंद्र	24/01/2090
शुक्र	24/08/2052	सूर्य	26/03/2066	चंद्र	24/02/2083	मंगल	06/03/2091
सूर्य	25/04/2053	चंद्र	23/02/2069	मंगल	05/08/2083	बुध	15/07/2093
चंद्र	25/12/2054	मंगल	14/09/2070	बुध	15/07/2084	शनि	04/12/2094
मंगल	14/11/2055	बुध	04/01/2074	शनि	03/02/2085	गुरु	09/01/2096
बुध	04/10/2057	शनि	15/12/2075	गुरु	23/02/2086		00/00/0000
शनि	14/11/2058	गुरु	25/08/2079	राहु	25/10/2086		00/00/0000
गुरु	24/12/2060	राहु	24/12/2081	शुक्र	25/12/2087		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
अष्टोत्तरी दशा पूरे 108 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - गुरु		चंद्र - राहु		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल	
09/01/1988		25/07/1989		26/03/1991		23/02/1994		25/12/1994	
25/07/1989		26/03/1991		23/02/1994		25/12/1994		29/07/1995	
	00/00/0000	राहु	01/10/1989	शुक्र	19/10/1991	सूर्य	12/03/1994	मंगल	10/01/1995
	09/01/1988	शुक्र	27/01/1990	सूर्य	17/12/1991	चंद्र	24/04/1994	बुध	13/02/1995
शुक्र	12/03/1988	सूर्य	02/03/1990	चंद्र	13/05/1992	मंगल	16/05/1994	शनि	05/03/1995
सूर्य	05/05/1988	चंद्र	26/05/1990	मंगल	31/07/1992	बुध	03/07/1994	गुरु	12/04/1995
चंद्र	16/09/1988	मंगल	10/07/1990	बुध	15/01/1993	शनि	31/07/1994	राहु	06/05/1995
मंगल	26/11/1988	बुध	14/10/1990	शनि	24/04/1993	गुरु	23/09/1994	शुक्र	17/06/1995
बुध	27/04/1989	शनि	09/12/1990	गुरु	28/10/1993	राहु	27/10/1994	सूर्य	29/06/1995
शनि	25/07/1989	गुरु	26/03/1991	राहु	23/02/1994	शुक्र	25/12/1994	चंद्र	29/07/1995

मंगल - बुध		मंगल - शनि		मंगल - गुरु		मंगल - राहु		मंगल - शुक्र	
29/07/1995		31/10/1996		29/07/1997		25/12/1998		14/11/1999	
31/10/1996		29/07/1997		25/12/1998		14/11/1999		05/06/2001	
बुध	10/10/1995	शनि	25/11/1996	गुरु	27/10/1997	राहु	30/01/1999	शुक्र	04/03/2000
शनि	21/11/1995	गुरु	12/01/1997	राहु	23/12/1997	शुक्र	03/04/1999	सूर्य	04/04/2000
गुरु	10/02/1996	राहु	11/02/1997	शुक्र	02/04/1998	सूर्य	21/04/1999	चंद्र	22/06/2000
राहु	01/04/1996	शुक्र	04/04/1997	सूर्य	01/05/1998	चंद्र	05/06/1999	मंगल	03/08/2000
शुक्र	30/06/1996	सूर्य	19/04/1997	चंद्र	11/07/1998	मंगल	29/06/1999	बुध	01/11/2000
सूर्य	25/07/1996	चंद्र	27/05/1997	मंगल	18/08/1998	बुध	19/08/1999	शनि	23/12/2000
चंद्र	27/09/1996	मंगल	16/06/1997	बुध	07/11/1998	शनि	18/09/1999	गुरु	02/04/2001
मंगल	31/10/1996	बुध	29/07/1997	शनि	25/12/1998	गुरु	14/11/1999	राहु	05/06/2001

मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र		बुध - बुध		बुध - शनि		बुध - गुरु	
05/06/2001		14/11/2001		25/12/2002		28/08/2005		26/03/2007	
14/11/2001		25/12/2002		28/08/2005		26/03/2007		22/03/2010	
सूर्य	14/06/2001	चंद्र	09/01/2002	बुध	28/05/2003	शनि	20/10/2005	गुरु	04/10/2007
चंद्र	06/07/2001	मंगल	08/02/2002	शनि	26/08/2003	गुरु	29/01/2006	राहु	03/02/2008
मंगल	18/07/2001	बुध	13/04/2002	गुरु	14/02/2004	राहु	03/04/2006	शुक्र	02/09/2008
बुध	13/08/2001	शनि	21/05/2002	राहु	02/06/2004	शुक्र	24/07/2006	सूर्य	02/11/2008
शनि	28/08/2001	गुरु	31/07/2002	शुक्र	09/12/2004	सूर्य	25/08/2006	चंद्र	02/04/2009
गुरु	25/09/2001	राहु	14/09/2002	सूर्य	01/02/2005	चंद्र	13/11/2006	मंगल	22/06/2009
राहु	13/10/2001	शुक्र	02/12/2002	चंद्र	17/06/2005	मंगल	26/12/2006	बुध	11/12/2009
शुक्र	14/11/2001	सूर्य	25/12/2002	मंगल	28/08/2005	बुध	26/03/2007	शनि	22/03/2010

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - राहु		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य		बुध - चंद्र		बुध - मंगल	
22/03/2010		10/02/2012		02/06/2015		12/05/2016		21/09/2018	
10/02/2012		02/06/2015		12/05/2016		21/09/2018		25/12/2019	
राहु	07/06/2010	शुक्र	02/10/2012	सूर्य	21/06/2015	चंद्र	08/09/2016	मंगल	25/10/2018
शुक्र	19/10/2010	सूर्य	08/12/2012	चंद्र	08/08/2015	मंगल	11/11/2016	बुध	05/01/2019
सूर्य	27/11/2010	चंद्र	25/05/2013	मंगल	02/09/2015	बुध	27/03/2017	शनि	17/02/2019
चंद्र	02/03/2011	मंगल	22/08/2013	बुध	27/10/2015	शनि	15/06/2017	गुरु	09/05/2019
मंगल	22/04/2011	बुध	28/02/2014	शनि	28/11/2015	गुरु	14/11/2017	राहु	29/06/2019
बुध	09/08/2011	शनि	20/06/2014	गुरु	27/01/2016	राहु	17/02/2018	शुक्र	27/09/2019
शनि	12/10/2011	गुरु	19/01/2015	राहु	06/03/2016	शुक्र	04/08/2018	सूर्य	22/10/2019
गुरु	10/02/2012	राहु	02/06/2015	शुक्र	12/05/2016	सूर्य	21/09/2018	चंद्र	25/12/2019

शनि - शनि		शनि - गुरु		शनि - राहु		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य	
25/12/2019		27/11/2020		01/09/2022		12/10/2023		21/09/2025	
27/11/2020		01/09/2022		12/10/2023		21/09/2025		12/04/2026	
शनि	25/01/2020	गुरु	20/03/2021	राहु	16/10/2022	शुक्र	27/02/2024	सूर्य	02/10/2025
गुरु	25/03/2020	राहु	31/05/2021	शुक्र	03/01/2023	सूर्य	06/04/2024	चंद्र	30/10/2025
राहु	01/05/2020	शुक्र	03/10/2021	सूर्य	25/01/2023	चंद्र	14/07/2024	मंगल	14/11/2025
शुक्र	06/07/2020	सूर्य	07/11/2021	चंद्र	23/03/2023	मंगल	04/09/2024	बुध	16/12/2025
सूर्य	25/07/2020	चंद्र	04/02/2022	मंगल	22/04/2023	बुध	25/12/2024	शनि	04/01/2026
चंद्र	10/09/2020	मंगल	24/03/2022	बुध	25/06/2023	शनि	01/03/2025	गुरु	09/02/2026
मंगल	05/10/2020	बुध	03/07/2022	शनि	01/08/2023	गुरु	04/07/2025	राहु	03/03/2026
बुध	27/11/2020	शनि	01/09/2022	गुरु	12/10/2023	राहु	21/09/2025	शुक्र	12/04/2026

शनि - चंद्र		शनि - मंगल		शनि - बुध		गुरु - गुरु		गुरु - राहु	
12/04/2026		01/09/2027		29/05/2028		24/12/2029		28/04/2033	
01/09/2027		29/05/2028		24/12/2029		28/04/2033		08/06/2035	
चंद्र	21/06/2026	मंगल	21/09/2027	बुध	27/08/2028	गुरु	27/07/2030	राहु	23/07/2033
मंगल	29/07/2026	बुध	03/11/2027	शनि	19/10/2028	राहु	10/12/2030	शुक्र	20/12/2033
बुध	17/10/2026	शनि	28/11/2027	गुरु	28/01/2029	शुक्र	04/08/2031	सूर्य	01/02/2034
शनि	03/12/2026	गुरु	14/01/2028	राहु	02/04/2029	सूर्य	11/10/2031	चंद्र	19/05/2034
गुरु	02/03/2027	राहु	13/02/2028	शुक्र	23/07/2029	चंद्र	29/03/2032	मंगल	15/07/2034
राहु	27/04/2027	शुक्र	06/04/2028	सूर्य	24/08/2029	मंगल	27/06/2032	बुध	13/11/2034
शुक्र	04/08/2027	सूर्य	21/04/2028	चंद्र	12/11/2029	बुध	05/01/2033	शनि	24/01/2035
सूर्य	01/09/2027	चंद्र	29/05/2028	मंगल	24/12/2029	शनि	28/04/2033	गुरु	08/06/2035

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल		गुरु - बुध	
08/06/2035		17/02/2039		08/03/2040		28/10/2042		25/03/2044	
17/02/2039		08/03/2040		28/10/2042		25/03/2044		23/03/2047	
शुक्र	26/02/2036	सूर्य	10/03/2039	चंद्र	20/07/2040	मंगल	05/12/2042	बुध	13/09/2044
सूर्य	11/05/2036	चंद्र	03/05/2039	मंगल	30/09/2040	बुध	24/02/2043	शनि	23/12/2044
चंद्र	14/11/2036	मंगल	31/05/2039	बुध	28/02/2041	शनि	13/04/2043	गुरु	04/07/2045
मंगल	22/02/2037	बुध	31/07/2039	शनि	29/05/2041	गुरु	12/07/2043	राहु	02/11/2045
बुध	23/09/2037	शनि	05/09/2039	गुरु	14/11/2041	राहु	07/09/2043	शुक्र	02/06/2046
शनि	25/01/2038	गुरु	12/11/2039	राहु	01/03/2042	शुक्र	16/12/2043	सूर्य	02/08/2046
गुरु	20/09/2038	राहु	24/12/2039	शुक्र	05/09/2042	सूर्य	14/01/2044	चंद्र	01/01/2047
राहु	17/02/2039	शुक्र	08/03/2040	सूर्य	28/10/2042	चंद्र	25/03/2044	मंगल	23/03/2047

गुरु - शनि		राहु - राहु		राहु - शुक्र		राहु - सूर्य		राहु - चंद्र	
23/03/2047		24/12/2048		25/04/2050		24/08/2052		25/04/2053	
24/12/2048		25/04/2050		24/08/2052		25/04/2053		25/12/2054	
शनि	21/05/2047	राहु	16/02/2049	शुक्र	08/10/2050	सूर्य	07/09/2052	चंद्र	19/07/2053
गुरु	11/09/2047	शुक्र	22/05/2049	सूर्य	24/11/2050	चंद्र	11/10/2052	मंगल	02/09/2053
राहु	22/11/2047	सूर्य	18/06/2049	चंद्र	23/03/2051	मंगल	29/10/2052	बुध	06/12/2053
शुक्र	26/03/2048	चंद्र	25/08/2049	मंगल	25/05/2051	बुध	06/12/2052	शनि	01/02/2054
सूर्य	30/04/2048	मंगल	30/09/2049	बुध	06/10/2051	शनि	29/12/2052	गुरु	19/05/2054
चंद्र	28/07/2048	बुध	15/12/2049	शनि	24/12/2051	गुरु	10/02/2053	राहु	26/07/2054
मंगल	14/09/2048	शनि	30/01/2050	गुरु	22/05/2052	राहु	09/03/2053	शुक्र	21/11/2054
बुध	24/12/2048	गुरु	25/04/2050	राहु	24/08/2052	शुक्र	25/04/2053	सूर्य	25/12/2054

राहु - मंगल		राहु - बुध		राहु - शनि		राहु - गुरु		शुक्र - शुक्र	
25/12/2054		14/11/2055		04/10/2057		14/11/2058		24/12/2060	
14/11/2055		04/10/2057		14/11/2058		24/12/2060		24/01/2065	
मंगल	18/01/2055	बुध	02/03/2056	शनि	11/11/2057	गुरु	30/03/2059	शुक्र	10/10/2061
बुध	10/03/2055	शनि	05/05/2056	गुरु	21/01/2058	राहु	23/06/2059	सूर्य	01/01/2062
शनि	09/04/2055	गुरु	03/09/2056	राहु	07/03/2058	शुक्र	20/11/2059	चंद्र	27/07/2062
गुरु	05/06/2055	राहु	19/11/2056	शुक्र	25/05/2058	सूर्य	02/01/2060	मंगल	15/11/2062
राहु	11/07/2055	शुक्र	02/04/2057	सूर्य	17/06/2058	चंद्र	18/04/2060	बुध	07/07/2063
शुक्र	12/09/2055	सूर्य	10/05/2057	चंद्र	12/08/2058	मंगल	14/06/2060	शनि	23/11/2063
सूर्य	30/09/2055	चंद्र	14/08/2057	मंगल	11/09/2058	बुध	14/10/2060	गुरु	11/08/2064
चंद्र	14/11/2055	मंगल	04/10/2057	बुध	14/11/2058	शनि	24/12/2060	राहु	24/01/2065

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - सूर्य	
24/01/2065	
26/03/2066	
सूर्य	16/02/2065
चंद्र	17/04/2065
मंगल	18/05/2065
बुध	24/07/2065
शनि	02/09/2065
गुरु	16/11/2065
राहु	02/01/2066
शुक्र	26/03/2066

शुक्र - चंद्र	
26/03/2066	
23/02/2069	
चंद्र	21/08/2066
मंगल	08/11/2066
बुध	24/04/2067
शनि	01/08/2067
गुरु	04/02/2068
राहु	02/06/2068
शुक्र	26/12/2068
सूर्य	23/02/2069

शुक्र - मंगल	
23/02/2069	
14/09/2070	
मंगल	06/04/2069
बुध	05/07/2069
शनि	26/08/2069
गुरु	04/12/2069
राहु	05/02/2070
शुक्र	27/05/2070
सूर्य	27/06/2070
चंद्र	14/09/2070

शुक्र - बुध	
14/09/2070	
04/01/2074	
बुध	23/03/2071
शनि	13/07/2071
गुरु	10/02/2072
राहु	24/06/2072
शुक्र	13/02/2073
सूर्य	21/04/2073
चंद्र	06/10/2073
मंगल	04/01/2074

शुक्र - शनि	
04/01/2074	
15/12/2075	
शनि	10/03/2074
गुरु	13/07/2074
राहु	30/09/2074
शुक्र	15/02/2075
सूर्य	27/03/2075
चंद्र	03/07/2075
मंगल	25/08/2075
बुध	15/12/2075

शुक्र - गुरु	
15/12/2075	
25/08/2079	
गुरु	08/08/2076
राहु	05/01/2077
शुक्र	25/09/2077
सूर्य	08/12/2077
चंद्र	14/06/2078
मंगल	22/09/2078
बुध	22/04/2079
शनि	25/08/2079

शुक्र - राहु	
25/08/2079	
24/12/2081	
राहु	28/11/2079
शुक्र	12/05/2080
सूर्य	28/06/2080
चंद्र	24/10/2080
मंगल	26/12/2080
बुध	10/05/2081
शनि	28/07/2081
गुरु	24/12/2081

सूर्य - सूर्य	
24/12/2081	
25/04/2082	
सूर्य	31/12/2081
चंद्र	17/01/2082
मंगल	26/01/2082
बुध	14/02/2082
शनि	26/02/2082
गुरु	19/03/2082
राहु	02/04/2082
शुक्र	25/04/2082

सूर्य - चंद्र	
25/04/2082	
24/02/2083	
चंद्र	06/06/2082
मंगल	29/06/2082
बुध	16/08/2082
शनि	13/09/2082
गुरु	06/11/2082
राहु	09/12/2082
शुक्र	07/02/2083
सूर्य	24/02/2083

सूर्य - मंगल	
24/02/2083	
05/08/2083	
मंगल	08/03/2083
बुध	02/04/2083
शनि	17/04/2083
गुरु	16/05/2083
राहु	03/06/2083
शुक्र	04/07/2083
सूर्य	13/07/2083
चंद्र	05/08/2083

सूर्य - बुध	
05/08/2083	
15/07/2084	
बुध	28/09/2083
शनि	30/10/2083
गुरु	30/12/2083
राहु	06/02/2084
शुक्र	13/04/2084
सूर्य	02/05/2084
चंद्र	19/06/2084
मंगल	15/07/2084

सूर्य - शनि	
15/07/2084	
03/02/2085	
शनि	03/08/2084
गुरु	07/09/2084
राहु	30/09/2084
शुक्र	08/11/2084
सूर्य	20/11/2084
चंद्र	18/12/2084
मंगल	02/01/2085
बुध	03/02/2085

सूर्य - गुरु	
03/02/2085	
23/02/2086	
गुरु	12/04/2085
राहु	24/05/2085
शुक्र	07/08/2085
सूर्य	29/08/2085
चंद्र	21/10/2085
मंगल	19/11/2085
बुध	19/01/2086
शनि	23/02/2086

सूर्य - राहु	
23/02/2086	
25/10/2086	
राहु	22/03/2086
शुक्र	09/05/2086
सूर्य	22/05/2086
चंद्र	25/06/2086
मंगल	13/07/2086
बुध	20/08/2086
शनि	12/09/2086
गुरु	25/10/2086

सूर्य - शुक्र	
25/10/2086	
25/12/2087	
शुक्र	16/01/2087
सूर्य	08/02/2087
चंद्र	09/04/2087
मंगल	10/05/2087
बुध	16/07/2087
शनि	25/08/2087
गुरु	08/11/2087
राहु	25/12/2087

योगिनी दशा

भोग्य दशा काल : उल्का 5 वर्ष 1 मास 19 दिन

उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष	
09/01/1988		27/02/1993		27/02/2000		27/02/2008		27/02/2009	
27/02/1993		27/02/2000		27/02/2008		27/02/2009		27/02/2011	
उल्क	27/02/1988	सिद्ध	09/07/1994	संक	08/12/2001	मंग	08/03/2008	पिंग	08/04/2009
सिद्ध	28/04/1989	संक	28/01/1996	मंग	27/02/2002	पिंग	29/03/2008	धांय	08/06/2009
संक	28/08/1990	मंग	08/04/1996	पिंग	08/08/2002	धांय	28/04/2008	भ्राम	28/08/2009
मंग	28/10/1990	पिंग	28/08/1996	धांय	09/04/2003	भ्राम	08/06/2008	भद्रि	08/12/2009
पिंग	27/02/1991	धांय	29/03/1997	भ्राम	27/02/2004	भद्रि	28/07/2008	उल्क	08/04/2010
धांय	29/08/1991	भ्राम	07/01/1998	भद्रि	08/04/2005	उल्क	27/09/2008	सिद्ध	28/08/2010
भ्राम	28/04/1992	भद्रि	28/12/1998	उल्क	08/08/2006	सिद्ध	07/12/2008	संक	07/02/2011
भद्रि	27/02/1993	उल्क	27/02/2000	सिद्ध	27/02/2008	संक	27/02/2009	मंग	27/02/2011

धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष	
27/02/2011		27/02/2014		27/02/2018		27/02/2023		27/02/2029	
27/02/2014		27/02/2018		27/02/2023		27/02/2029		27/02/2036	
धांय	29/05/2011	भ्राम	08/08/2014	भद्रि	07/11/2018	उल्क	27/02/2024	सिद्ध	09/07/2030
भ्राम	28/09/2011	भद्रि	27/02/2015	उल्क	08/09/2019	सिद्ध	28/04/2025	संक	28/01/2032
भद्रि	27/02/2012	उल्क	29/10/2015	सिद्ध	28/08/2020	संक	28/08/2026	मंग	08/04/2032
उल्क	28/08/2012	सिद्ध	08/08/2016	संक	08/10/2021	मंग	28/10/2026	पिंग	28/08/2032
सिद्ध	29/03/2013	संक	28/06/2017	मंग	27/11/2021	पिंग	27/02/2027	धांय	29/03/2033
संक	27/11/2013	मंग	08/08/2017	पिंग	09/03/2022	धांय	29/08/2027	भ्राम	07/01/2034
मंग	28/12/2013	पिंग	28/10/2017	धांय	08/08/2022	भ्राम	28/04/2028	भद्रि	28/12/2034
पिंग	27/02/2014	धांय	27/02/2018	भ्राम	27/02/2023	भद्रि	27/02/2029	उल्क	27/02/2036

नोट :- योगनियों के स्वामी नीचे दिए गए हैं :-

मंगला	: चन्द्र	पिंगला	: सूर्य	धान्या	: गुरु	भ्रामरी	: मंगल
भद्रिका	: बुध	उल्का	: शनि	सिद्धा	: शुक्र	संकटा	: राहु/केतु

उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
योगिनी दशा 36 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

योगिनी दशा

संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष	
27/02/2036		27/02/2044		27/02/2045		27/02/2047		27/02/2050	
27/02/2044		27/02/2045		27/02/2047		27/02/2050		27/02/2054	
संक	08/12/2037	मंग	08/03/2044	पिंग	08/04/2045	धांय	29/05/2047	भ्राम	08/08/2050
मंग	27/02/2038	पिंग	29/03/2044	धांय	08/06/2045	भ्राम	28/09/2047	भद्रि	27/02/2051
पिंग	08/08/2038	धांय	28/04/2044	भ्राम	28/08/2045	भद्रि	27/02/2048	उल्क	29/10/2051
धांय	09/04/2039	भ्राम	08/06/2044	भद्रि	08/12/2045	उल्क	28/08/2048	सिद्ध	08/08/2052
भ्राम	27/02/2040	भद्रि	28/07/2044	उल्क	08/04/2046	सिद्ध	29/03/2049	संक	28/06/2053
भद्रि	08/04/2041	उल्क	27/09/2044	सिद्ध	28/08/2046	संक	27/11/2049	मंग	08/08/2053
उल्क	08/08/2042	सिद्ध	07/12/2044	संक	07/02/2047	मंग	28/12/2049	पिंग	28/10/2053
सिद्ध	27/02/2044	संक	27/02/2045	मंग	27/02/2047	पिंग	27/02/2050	धांय	27/02/2054

भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष	
27/02/2054		27/02/2059		27/02/2065		27/02/2072		27/02/2080	
27/02/2059		27/02/2065		27/02/2072		27/02/2080		27/02/2081	
भद्रि	07/11/2054	उल्क	27/02/2060	सिद्ध	09/07/2066	संक	08/12/2073	मंग	08/03/2080
उल्क	08/09/2055	सिद्ध	28/04/2061	संक	28/01/2068	मंग	27/02/2074	पिंग	29/03/2080
सिद्ध	28/08/2056	संक	28/08/2062	मंग	08/04/2068	पिंग	08/08/2074	धांय	28/04/2080
संक	08/10/2057	मंग	28/10/2062	पिंग	28/08/2068	धांय	09/04/2075	भ्राम	08/06/2080
मंग	27/11/2057	पिंग	27/02/2063	धांय	29/03/2069	भ्राम	27/02/2076	भद्रि	28/07/2080
पिंग	09/03/2058	धांय	29/08/2063	भ्राम	07/01/2070	भद्रि	08/04/2077	उल्क	27/09/2080
धांय	08/08/2058	भ्राम	28/04/2064	भद्रि	28/12/2070	उल्क	08/08/2078	सिद्ध	07/12/2080
भ्राम	27/02/2059	भद्रि	27/02/2065	उल्क	27/02/2072	सिद्ध	27/02/2080	संक	27/02/2081

पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष	
27/02/2081		27/02/2083		27/02/2086		27/02/2090		27/02/2095	
27/02/2083		27/02/2086		27/02/2090		27/02/2095		00/00/0000	
पिंग	08/04/2081	धांय	29/05/2083	भ्राम	08/08/2086	भद्रि	07/11/2090	उल्क	09/01/2096
धांय	08/06/2081	भ्राम	28/09/2083	भद्रि	27/02/2087	उल्क	08/09/2091		00/00/0000
भ्राम	28/08/2081	भद्रि	27/02/2084	उल्क	29/10/2087	सिद्ध	28/08/2092		00/00/0000
भद्रि	08/12/2081	उल्क	28/08/2084	सिद्ध	08/08/2088	संक	08/10/2093		00/00/0000
उल्क	08/04/2082	सिद्ध	29/03/2085	संक	28/06/2089	मंग	27/11/2093		00/00/0000
सिद्ध	28/08/2082	संक	27/11/2085	मंग	08/08/2089	पिंग	09/03/2094		00/00/0000
संक	07/02/2083	मंग	28/12/2085	पिंग	28/10/2089	धांय	08/08/2094		00/00/0000
मंग	27/02/2083	पिंग	27/02/2086	धांय	27/02/2090	भ्राम	27/02/2095		00/00/0000

योगिनी दशा - प्रत्यन्तर

उल्क - संक		उल्क - मंग		उल्क - पिंग		उल्क - धांय		उल्क - भ्राम	
28/04/2025		28/08/2026		28/10/2026		27/02/2027		29/08/2027	
28/08/2026		28/10/2026		27/02/2027		29/08/2027		28/04/2028	
संक	15/08/2025	मंग	30/08/2026	पिंग	04/11/2026	धांय	14/03/2027	भ्राम	25/09/2027
मंग	28/08/2025	पिंग	02/09/2026	धांय	14/11/2026	भ्राम	04/04/2027	भद्रि	29/10/2027
पिंग	24/09/2025	धांय	08/09/2026	भ्राम	28/11/2026	भद्रि	29/04/2027	उल्क	08/12/2027
धांय	04/11/2025	भ्राम	14/09/2026	भद्रि	15/12/2026	उल्क	29/05/2027	सिद्ध	24/01/2028
भ्राम	28/12/2025	भद्रि	23/09/2026	उल्क	04/01/2027	सिद्ध	04/07/2027	संक	19/03/2028
भद्रि	06/03/2026	उल्क	03/10/2026	सिद्ध	28/01/2027	संक	13/08/2027	मंग	25/03/2028
उल्क	26/05/2026	सिद्ध	15/10/2026	संक	24/02/2027	मंग	19/08/2027	पिंग	08/04/2028
सिद्ध	28/08/2026	संक	28/10/2026	मंग	27/02/2027	पिंग	29/08/2027	धांय	28/04/2028

उल्क - भद्रि		सिद्ध - सिद्ध		सिद्ध - संक		सिद्ध - मंग		सिद्ध - पिंग	
28/04/2028		27/02/2029		09/07/2030		28/01/2032		08/04/2032	
27/02/2029		09/07/2030		28/01/2032		08/04/2032		28/08/2032	
भद्रि	09/06/2028	सिद्ध	03/06/2029	संक	12/11/2030	मंग	30/01/2032	पिंग	16/04/2032
उल्क	30/07/2028	संक	22/09/2029	मंग	28/11/2030	पिंग	03/02/2032	धांय	28/04/2032
सिद्ध	27/09/2028	मंग	05/10/2029	पिंग	29/12/2030	धांय	09/02/2032	भ्राम	13/05/2032
संक	04/12/2028	पिंग	02/11/2029	धांय	15/02/2031	भ्राम	17/02/2032	भद्रि	02/06/2032
मंग	12/12/2028	धांय	14/12/2029	भ्राम	19/04/2031	भद्रि	26/02/2032	उल्क	26/06/2032
पिंग	29/12/2028	भ्राम	07/02/2030	भद्रि	07/07/2031	उल्क	09/03/2032	सिद्ध	23/07/2032
धांय	24/01/2029	भद्रि	17/04/2030	उल्क	09/10/2031	सिद्ध	23/03/2032	संक	24/08/2032
भ्राम	27/02/2029	उल्क	09/07/2030	सिद्ध	28/01/2032	संक	08/04/2032	मंग	28/08/2032

सिद्ध - धांय		सिद्ध - भ्राम		सिद्ध - भद्रि		सिद्ध - उल्क		संक - संक	
28/08/2032		29/03/2033		07/01/2034		28/12/2034		27/02/2036	
29/03/2033		07/01/2034		28/12/2034		27/02/2036		08/12/2037	
धांय	15/09/2032	भ्राम	30/04/2033	भद्रि	25/02/2034	उल्क	09/03/2035	संक	21/07/2036
भ्राम	08/10/2032	भद्रि	08/06/2033	उल्क	26/04/2034	सिद्ध	31/05/2035	मंग	08/08/2036
भद्रि	07/11/2032	उल्क	25/07/2033	सिद्ध	04/07/2034	संक	03/09/2035	पिंग	13/09/2036
उल्क	12/12/2032	सिद्ध	19/09/2033	संक	21/09/2034	मंग	15/09/2035	धांय	06/11/2036
सिद्ध	23/01/2033	संक	21/11/2033	मंग	30/09/2034	पिंग	08/10/2035	भ्राम	17/01/2037
संक	11/03/2033	मंग	29/11/2033	पिंग	20/10/2034	धांय	13/11/2035	भद्रि	17/04/2037
मंग	17/03/2033	पिंग	14/12/2033	धांय	19/11/2034	भ्राम	30/12/2035	उल्क	03/08/2037
पिंग	29/03/2033	धांय	07/01/2034	भ्राम	28/12/2034	भद्रि	27/02/2036	सिद्ध	08/12/2037

योगिनी दशा - प्रत्यन्तर

संक - मंग		संक - पिंग		संक - धांय		संक - भ्राम		संक - भद्रि	
08/12/2037		27/02/2038		08/08/2038		09/04/2039		27/02/2040	
27/02/2038		08/08/2038		09/04/2039		27/02/2040		08/04/2041	
मंग	10/12/2037	पिंग	08/03/2038	धांय	28/08/2038	भ्राम	15/05/2039	भद्रि	24/04/2040
पिंग	14/12/2037	धांय	21/03/2038	भ्राम	24/09/2038	भद्रि	29/06/2039	उल्क	30/06/2040
धांय	21/12/2037	भ्राम	08/04/2038	भद्रि	28/10/2038	उल्क	22/08/2039	सिद्ध	17/09/2040
भ्राम	30/12/2037	भद्रि	01/05/2038	उल्क	08/12/2038	सिद्ध	24/10/2039	संक	16/12/2040
भद्रि	10/01/2038	उल्क	28/05/2038	सिद्ध	24/01/2039	संक	04/01/2040	मंग	28/12/2040
उल्क	24/01/2038	सिद्ध	29/06/2038	संक	19/03/2039	मंग	13/01/2040	पिंग	19/01/2041
सिद्ध	09/02/2038	संक	04/08/2038	मंग	26/03/2039	पिंग	31/01/2040	धांय	22/02/2041
संक	27/02/2038	मंग	08/08/2038	पिंग	09/04/2039	धांय	27/02/2040	भ्राम	08/04/2041

संक - उल्क		संक - सिद्ध		मंग - मंग		मंग - पिंग		मंग - धांय	
08/04/2041		08/08/2042		27/02/2044		08/03/2044		29/03/2044	
08/08/2042		27/02/2044		08/03/2044		29/03/2044		28/04/2044	
उल्क	28/06/2041	सिद्ध	27/11/2042	मंग	28/02/2044	पिंग	10/03/2044	धांय	31/03/2044
सिद्ध	01/10/2041	संक	02/04/2043	पिंग	28/02/2044	धांय	11/03/2044	भ्राम	04/04/2044
संक	17/01/2042	मंग	18/04/2043	धांय	29/02/2044	भ्राम	13/03/2044	भद्रि	08/04/2044
मंग	31/01/2042	पिंग	19/05/2043	भ्राम	01/03/2044	भद्रि	16/03/2044	उल्क	13/04/2044
पिंग	27/02/2042	धांय	06/07/2043	भद्रि	02/03/2044	उल्क	20/03/2044	सिद्ध	19/04/2044
धांय	08/04/2042	भ्राम	07/09/2043	उल्क	04/03/2044	सिद्ध	24/03/2044	संक	26/04/2044
भ्राम	01/06/2042	भद्रि	25/11/2043	सिद्ध	06/03/2044	संक	28/03/2044	मंग	26/04/2044
भद्रि	08/08/2042	उल्क	27/02/2044	संक	08/03/2044	मंग	29/03/2044	पिंग	28/04/2044

मंग - भ्राम		मंग - भद्रि		मंग - उल्क		मंग - सिद्ध		मंग - संक	
28/04/2044		08/06/2044		28/07/2044		27/09/2044		07/12/2044	
08/06/2044		28/07/2044		27/09/2044		07/12/2044		27/02/2045	
भ्राम	03/05/2044	भद्रि	15/06/2044	उल्क	08/08/2044	सिद्ध	11/10/2044	संक	25/12/2044
भद्रि	08/05/2044	उल्क	23/06/2044	सिद्ध	19/08/2044	संक	27/10/2044	मंग	28/12/2044
उल्क	15/05/2044	सिद्ध	03/07/2044	संक	02/09/2044	मंग	29/10/2044	पिंग	01/01/2045
सिद्ध	23/05/2044	संक	14/07/2044	मंग	04/09/2044	पिंग	02/11/2044	धांय	08/01/2045
संक	01/06/2044	मंग	16/07/2044	पिंग	07/09/2044	धांय	08/11/2044	भ्राम	17/01/2045
मंग	02/06/2044	पिंग	19/07/2044	धांय	12/09/2044	भ्राम	16/11/2044	भद्रि	28/01/2045
पिंग	04/06/2044	धांय	23/07/2044	भ्राम	19/09/2044	भद्रि	26/11/2044	उल्क	11/02/2045
धांय	08/06/2044	भ्राम	28/07/2044	भद्रि	27/09/2044	उल्क	07/12/2044	सिद्ध	27/02/2045

कालचक्र दशा

भोग्य दशा काल : तुला 1 वर्ष 5 मास 22 दिन
कुल दशाकाल : 86 वर्ष
तिथि : पू०फाल्गुनी - 1 अपसव्य
देह : कर्क जीव : धनु

तुला 16 वर्ष		कन्या 9 वर्ष		सिंह 5 वर्ष		कर्क 21 वर्ष		मीन 10 वर्ष	
09/01/1988		01/07/1989		01/07/1998		02/07/2003		01/07/2024	
01/07/1989		01/07/1998		02/07/2003		01/07/2024		01/07/2034	
	00/00/0000	कन्या	10/06/1990	सिंह	16/10/1998	कर्क	17/08/2008	मीन	30/08/2025
	00/00/0000	सिंह	18/12/1990	कर्क	05/01/2000	मीन	26/01/2011	कुंभ	16/02/2026
	00/00/0000	कर्क	28/02/1993	मीन	04/08/2000	कुंभ	17/01/2012	मक	04/08/2026
	00/00/0000	मीन	17/03/1994	कुंभ	28/10/2000	मक	08/01/2013	धनु	03/10/2027
	00/00/0000	कुंभ	17/08/1994	मक	21/01/2001	धनु	19/06/2015	वृश्चि	26/07/2028
	00/00/0000	मक	17/01/1995	धनु	21/08/2001	वृश्चि	04/03/2017	तुला	06/06/2030
	09/01/1988	धनु	03/02/1996	वृश्चि	17/01/2002	तुला	29/01/2021	कन्या	23/06/2031
धनु	13/03/1988	वृश्चि	28/10/1996	तुला	23/12/2002	कन्या	12/04/2023	सिंह	22/01/2032
वृश्चि	01/07/1989	तुला	01/07/1998	कन्या	02/07/2003	सिंह	01/07/2024	कर्क	01/07/2034

कुम्भ 4 वर्ष		मकर 4 वर्ष		धनु 10 वर्ष		वृश्चिक 7 वर्ष		तुला 16 वर्ष	
01/07/2034		01/07/2038		01/07/2042		01/07/2052		02/07/2059	
01/07/2038		01/07/2042		01/07/2052		02/07/2059		00/00/0000	
कुंभ	07/09/2034	मक	07/09/2038	धनु	30/08/2043	वृश्चि	25/01/2053	तुला	23/06/2062
मक	14/11/2034	धनु	24/02/2039	वृश्चि	22/06/2044	तुला	16/05/2054	कन्या	25/02/2064
धनु	03/05/2035	वृश्चि	23/06/2039	तुला	03/05/2046	कन्या	07/02/2055	सिंह	29/01/2065
वृश्चि	30/08/2035	तुला	21/03/2040	कन्या	20/05/2047	सिंह	06/07/2055	कर्क	26/12/2068
तुला	28/05/2036	कन्या	21/08/2040	सिंह	19/12/2047	कर्क	21/03/2057	मीन	06/11/2070
कन्या	28/10/2036	सिंह	14/11/2040	कर्क	28/05/2050	मीन	13/01/2058	कुंभ	05/08/2071
सिंह	21/01/2037	कर्क	06/11/2041	मीन	27/07/2051	कुंभ	11/05/2058	मक	02/05/2072
कर्क	13/01/2038	मीन	24/04/2042	कुंभ	13/01/2052	मक	07/09/2058	धनु	08/01/2074
मीन	01/07/2038	कुंभ	01/07/2042	मक	01/07/2052	धनु	02/07/2059		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

मीन - मक		मीन - धनु		मीन - वृश्चि		मीन - तुला		मीन - कन्या	
16/02/2026		04/08/2026		03/10/2027		26/07/2028		06/06/2030	
04/08/2026		03/10/2027		26/07/2028		06/06/2030		23/06/2031	
मक	23/02/2026	धनु	23/09/2026	वृश्चि	27/10/2027	तुला	30/11/2028	कन्या	16/07/2030
धनु	15/03/2026	वृश्चि	27/10/2026	तुला	22/12/2027	कन्या	09/02/2029	सिंह	07/08/2030
वृश्चि	29/03/2026	तुला	14/01/2027	कन्या	22/01/2028	सिंह	20/03/2029	कर्क	09/11/2030
तुला	30/04/2026	कन्या	28/02/2027	सिंह	08/02/2028	कर्क	02/09/2029	मीन	23/12/2030
कन्या	17/05/2026	सिंह	25/03/2027	कर्क	21/04/2028	मीन	20/11/2029	कुंभ	10/01/2031
सिंह	27/05/2026	कर्क	06/07/2027	मीन	25/05/2028	कुंभ	22/12/2029	मक	28/01/2031
कर्क	08/07/2026	मीन	25/08/2027	कुंभ	08/06/2028	मक	23/01/2030	धनु	13/03/2031
मीन	28/07/2026	कुंभ	13/09/2027	मक	22/06/2028	धनु	12/04/2030	वृश्चि	13/04/2031
कुंभ	04/08/2026	मक	03/10/2027	धनु	26/07/2028	वृश्चि	06/06/2030	तुला	23/06/2031

मीन - सिंह		मीन - कर्क		कुंभ - कुंभ		कुंभ - मक		कुंभ - धनु	
23/06/2031		22/01/2032		01/07/2034		07/09/2034		14/11/2034	
22/01/2032		01/07/2034		07/09/2034		14/11/2034		03/05/2035	
सिंह	06/07/2031	कर्क	26/08/2032	कुंभ	05/07/2034	मक	11/09/2034	धनु	04/12/2034
कर्क	26/08/2031	मीन	08/12/2032	मक	08/07/2034	धनु	18/09/2034	वृश्चि	18/12/2034
मीन	20/09/2031	कुंभ	19/01/2033	धनु	16/07/2034	वृश्चि	24/09/2034	तुला	19/01/2035
कुंभ	30/09/2031	मक	01/03/2033	वृश्चि	21/07/2034	तुला	07/10/2034	कन्या	05/02/2035
मक	10/10/2031	धनु	13/06/2033	तुला	03/08/2034	कन्या	14/10/2034	सिंह	15/02/2035
धनु	04/11/2031	वृश्चि	24/08/2033	कन्या	10/08/2034	सिंह	18/10/2034	कर्क	29/03/2035
वृश्चि	21/11/2031	तुला	06/02/2034	सिंह	14/08/2034	कर्क	03/11/2034	मीन	17/04/2035
तुला	30/12/2031	कन्या	11/05/2034	कर्क	30/08/2034	मीन	11/11/2034	कुंभ	25/04/2035
कन्या	22/01/2032	सिंह	01/07/2034	मीन	07/09/2034	कुंभ	14/11/2034	मक	03/05/2035

कुंभ - वृश्चि		कुंभ - तुला		कुंभ - कन्या		कुंभ - सिंह		कुंभ - कर्क	
03/05/2035		30/08/2035		28/05/2036		28/10/2036		21/01/2037	
30/08/2035		28/05/2036		28/10/2036		21/01/2037		13/01/2038	
वृश्चि	13/05/2035	तुला	20/10/2035	कन्या	13/06/2036	सिंह	02/11/2036	कर्क	18/04/2037
तुला	04/06/2035	कन्या	17/11/2035	सिंह	22/06/2036	कर्क	23/11/2036	मीन	29/05/2037
कन्या	16/06/2035	सिंह	03/12/2035	कर्क	29/07/2036	मीन	02/12/2036	कुंभ	15/06/2037
सिंह	23/06/2035	कर्क	07/02/2036	मीन	16/08/2036	कुंभ	06/12/2036	मक	02/07/2037
कर्क	22/07/2035	मीन	10/03/2036	कुंभ	23/08/2036	मक	10/12/2036	धनु	12/08/2037
मीन	05/08/2035	कुंभ	23/03/2036	मक	30/08/2036	धनु	20/12/2036	वृश्चि	10/09/2037
कुंभ	11/08/2035	मक	04/04/2036	धनु	17/09/2036	वृश्चि	27/12/2036	तुला	15/11/2037
मक	16/08/2035	धनु	06/05/2036	वृश्चि	29/09/2036	तुला	12/01/2037	कन्या	23/12/2037
धनु	30/08/2035	वृश्चि	28/05/2036	तुला	28/10/2036	कन्या	21/01/2037	सिंह	13/01/2038

कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

कुंभ - मीन		मक - मक		मक - धनु		मक - वृश्चि		मक - तुला	
13/01/2038		01/07/2038		07/09/2038		24/02/2039		23/06/2039	
01/07/2038		07/09/2038		24/02/2039		23/06/2039		21/03/2040	
मीन	01/02/2038	मक	05/07/2038	धनु	27/09/2038	वृश्चि	06/03/2039	तुला	13/08/2039
कुंभ	09/02/2038	धनु	12/07/2038	वृश्चि	11/10/2038	तुला	28/03/2039	कन्या	10/09/2039
मक	17/02/2038	वृश्चि	18/07/2038	तुला	12/11/2038	कन्या	10/04/2039	सिंह	26/09/2039
धनु	09/03/2038	तुला	31/07/2038	कन्या	29/11/2038	सिंह	16/04/2039	कर्क	01/12/2039
वृश्चि	23/03/2038	कन्या	07/08/2038	सिंह	09/12/2038	कर्क	15/05/2039	मीन	02/01/2040
तुला	23/04/2038	सिंह	11/08/2038	कर्क	20/01/2039	मीन	29/05/2039	कुंभ	15/01/2040
कन्या	11/05/2038	कर्क	27/08/2038	मीन	08/02/2039	कुंभ	04/06/2039	मक	27/01/2040
सिंह	21/05/2038	मीन	04/09/2038	कुंभ	16/02/2039	मक	09/06/2039	धनु	28/02/2040
कर्क	01/07/2038	कुंभ	07/09/2038	मक	24/02/2039	धनु	23/06/2039	वृश्चि	21/03/2040

मक - कन्या		मक - सिंह		मक - कर्क		मक - मीन		मक - कुंभ	
21/03/2040		21/08/2040		14/11/2040		06/11/2041		24/04/2042	
21/08/2040		14/11/2040		06/11/2041		24/04/2042		01/07/2042	
कन्या	06/04/2040	सिंह	26/08/2040	कर्क	09/02/2041	मीन	25/11/2041	कुंभ	28/04/2042
सिंह	15/04/2040	कर्क	16/09/2040	मीन	22/03/2041	कुंभ	03/12/2041	मक	01/05/2042
कर्क	22/05/2040	मीन	25/09/2040	कुंभ	08/04/2041	मक	11/12/2041	धनु	09/05/2042
मीन	09/06/2040	कुंभ	29/09/2040	मक	25/04/2041	धनु	31/12/2041	वृश्चि	14/05/2042
कुंभ	16/06/2040	मक	03/10/2040	धनु	05/06/2041	वृश्चि	14/01/2042	तुला	27/05/2042
मक	23/06/2040	धनु	13/10/2040	वृश्चि	04/07/2041	तुला	14/02/2042	कन्या	03/06/2042
धनु	11/07/2040	वृश्चि	20/10/2040	तुला	09/09/2041	कन्या	04/03/2042	सिंह	07/06/2042
वृश्चि	23/07/2040	तुला	05/11/2040	कन्या	16/10/2041	सिंह	14/03/2042	कर्क	24/06/2042
तुला	21/08/2040	कन्या	14/11/2040	सिंह	06/11/2041	कर्क	24/04/2042	मीन	01/07/2042

धनु - धनु		धनु - वृश्चि		धनु - तुला		धनु - कन्या		धनु - सिंह	
01/07/2042		30/08/2043		22/06/2044		03/05/2046		20/05/2047	
30/08/2043		22/06/2044		03/05/2046		20/05/2047		19/12/2047	
धनु	20/08/2042	वृश्चि	23/09/2043	तुला	27/10/2044	कन्या	12/06/2046	सिंह	02/06/2047
वृश्चि	23/09/2042	तुला	18/11/2043	कन्या	06/01/2045	सिंह	04/07/2046	कर्क	23/07/2047
तुला	11/12/2042	कन्या	19/12/2043	सिंह	14/02/2045	कर्क	06/10/2046	मीन	17/08/2047
कन्या	25/01/2043	सिंह	05/01/2044	कर्क	30/07/2045	मीन	19/11/2046	कुंभ	27/08/2047
सिंह	19/02/2043	कर्क	18/03/2044	मीन	17/10/2045	कुंभ	07/12/2046	मक	06/09/2047
कर्क	02/06/2043	मीन	21/04/2044	कुंभ	18/11/2045	मक	25/12/2046	धनु	01/10/2047
मीन	22/07/2043	कुंभ	05/05/2044	मक	20/12/2045	धनु	07/02/2047	वृश्चि	18/10/2047
कुंभ	10/08/2043	मक	19/05/2044	धनु	09/03/2046	वृश्चि	10/03/2047	तुला	26/11/2047
मक	30/08/2043	धनु	22/06/2044	वृश्चि	03/05/2046	तुला	20/05/2047	कन्या	19/12/2047

चर दशा

भोग्य दशा काल : कन्या 8 वर्ष 0 मास 0 दिन

कन्या 8 वर्ष	
09/01/1988	
09/01/1996	
तुला	08/09/1988
वृश्चि	10/05/1989
धनु	08/01/1990
मक	09/09/1990
कुंभ	10/05/1991
मीन	09/01/1992
मेष	08/09/1992
वृष	10/05/1993
मिथु	08/01/1994
कर्क	09/09/1994
सिंह	10/05/1995
कन्या	09/01/1996

तुला 3 वर्ष	
09/01/1996	
08/01/1999	
वृश्चि	09/04/1996
धनु	09/07/1996
मक	08/10/1996
कुंभ	08/01/1997
मीन	09/04/1997
मेष	09/07/1997
वृष	09/10/1997
मिथु	08/01/1998
कर्क	09/04/1998
सिंह	10/07/1998
कन्या	09/10/1998
तुला	08/01/1999

वृश्चिक 10 वर्ष	
08/01/1999	
08/01/2009	
तुला	09/11/1999
कन्या	08/09/2000
सिंह	09/07/2001
कर्क	10/05/2002
मिथु	10/03/2003
वृष	09/01/2004
मेष	08/11/2004
मीन	08/09/2005
कुंभ	10/07/2006
मक	10/05/2007
धनु	09/03/2008
वृश्चि	08/01/2009

धनु 3 वर्ष	
08/01/2009	
09/01/2012	
वृश्चि	09/04/2009
तुला	09/07/2009
कन्या	09/10/2009
सिंह	08/01/2010
कर्क	09/04/2010
मिथु	10/07/2010
वृष	09/10/2010
मेष	08/01/2011
मीन	10/04/2011
कुंभ	10/07/2011
मक	09/10/2011
धनु	09/01/2012

मकर 1 वर्ष	
09/01/2012	
08/01/2013	
धनु	08/02/2012
वृश्चि	09/03/2012
तुला	09/04/2012
कन्या	09/05/2012
सिंह	09/06/2012
कर्क	09/07/2012
मिथु	09/08/2012
वृष	08/09/2012
मेष	08/10/2012
मीन	08/11/2012
कुंभ	08/12/2012
मक	08/01/2013

कुम्भ 2 वर्ष	
08/01/2013	
08/01/2015	
मीन	10/03/2013
मेष	10/05/2013
वृष	09/07/2013
मिथु	08/09/2013
कर्क	08/11/2013
सिंह	08/01/2014
कन्या	10/03/2014
तुला	10/05/2014
वृश्चि	10/07/2014
धनु	09/09/2014
मक	08/11/2014
कुंभ	08/01/2015

मीन 12 वर्ष	
08/01/2015	
08/01/2027	
मेष	09/01/2016
वृष	08/01/2017
मिथु	08/01/2018
कर्क	08/01/2019
सिंह	09/01/2020
कन्या	08/01/2021
तुला	08/01/2022
वृश्चि	08/01/2023
धनु	09/01/2024
मक	08/01/2025
कुंभ	08/01/2026
मीन	08/01/2027

मेष 7 वर्ष	
08/01/2027	
08/01/2034	
वृष	09/08/2027
मिथु	09/03/2028
कर्क	08/10/2028
सिंह	10/05/2029
कन्या	09/12/2029
तुला	10/07/2030
वृश्चि	08/02/2031
धनु	09/09/2031
मक	09/04/2032
कुंभ	08/11/2032
मीन	09/06/2033
मेष	08/01/2034

वृष 8 वर्ष	
08/01/2034	
08/01/2042	
मेष	09/09/2034
मीन	10/05/2035
कुंभ	09/01/2036
मक	08/09/2036
धनु	10/05/2037
वृश्चि	08/01/2038
तुला	09/09/2038
कन्या	10/05/2039
सिंह	09/01/2040
कर्क	08/09/2040
मिथु	10/05/2041
वृष	08/01/2042

मिथुन 7 वर्ष	
08/01/2042	
08/01/2049	
वृष	09/08/2042
मेष	10/03/2043
मीन	09/10/2043
कुंभ	09/05/2044
मक	08/12/2044
धनु	09/07/2045
वृश्चि	07/02/2046
तुला	09/09/2046
कन्या	10/04/2047
सिंह	09/11/2047
कर्क	09/06/2048
मिथु	08/01/2049

कर्क 11 वर्ष	
08/01/2049	
09/01/2060	
मिथु	09/12/2049
वृष	08/11/2050
मेष	09/10/2051
मीन	08/09/2052
कुंभ	09/08/2053
मक	10/07/2054
धनु	09/06/2055
वृश्चि	09/05/2056
तुला	09/04/2057
कन्या	10/03/2058
सिंह	08/02/2059
कर्क	09/01/2060

सिंह 8 वर्ष	
09/01/2060	
09/01/2068	
कन्या	08/09/2060
तुला	10/05/2061
वृश्चि	08/01/2062
धनु	09/09/2062
मक	10/05/2063
कुंभ	09/01/2064
मीन	08/09/2064
मेष	10/05/2065
वृष	08/01/2066
मिथु	09/09/2066
कर्क	10/05/2067
सिंह	09/01/2068

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

चर दशा - प्रत्यन्तर

मीन - मीन		मेष - वृष		मेष - मिथु		मेष - कर्क		मेष - सिंह	
08/01/2026		08/01/2027		09/08/2027		09/03/2028		08/10/2028	
08/01/2027		09/08/2027		09/03/2028		08/10/2028		10/05/2029	
मेष	07/02/2026	मेष	26/01/2027	वृष	27/08/2027	मिथु	27/03/2028	कन्या	26/10/2028
वृष	10/03/2026	मीन	13/02/2027	मेष	14/09/2027	वृष	14/04/2028	तुला	13/11/2028
मिथु	09/04/2026	कुंभ	03/03/2027	मीन	02/10/2027	मेष	02/05/2028	वृश्चि	01/12/2028
कर्क	10/05/2026	मक	20/03/2027	कुंभ	19/10/2027	मीन	19/05/2028	धनु	18/12/2028
सिंह	09/06/2026	धनु	07/04/2027	मक	06/11/2027	कुंभ	06/06/2028	मक	05/01/2029
कन्या	10/07/2026	वृश्चि	25/04/2027	धनु	24/11/2027	मक	24/06/2028	कुंभ	23/01/2029
तुला	09/08/2026	तुला	13/05/2027	वृश्चि	12/12/2027	धनु	12/07/2028	मीन	10/02/2029
वृश्चि	09/09/2026	कन्या	30/05/2027	तुला	29/12/2027	वृश्चि	29/07/2028	मेष	27/02/2029
धनु	09/10/2026	सिंह	17/06/2027	कन्या	16/01/2028	तुला	16/08/2028	वृष	17/03/2029
मक	08/11/2026	कर्क	05/07/2027	सिंह	03/02/2028	कन्या	03/09/2028	मिथु	04/04/2029
कुंभ	09/12/2026	मिथु	23/07/2027	कर्क	21/02/2028	सिंह	21/09/2028	कर्क	22/04/2029
मीन	08/01/2027	वृष	09/08/2027	मिथु	09/03/2028	कर्क	08/10/2028	सिंह	10/05/2029

मेष - कन्या		मेष - तुला		मेष - वृश्चि		मेष - धनु		मेष - मक	
10/05/2029		09/12/2029		10/07/2030		08/02/2031		09/09/2031	
09/12/2029		10/07/2030		08/02/2031		09/09/2031		09/04/2032	
तुला	27/05/2029	वृश्चि	26/12/2029	तुला	27/07/2030	वृश्चि	25/02/2031	धनु	27/09/2031
वृश्चि	14/06/2029	धनु	13/01/2030	कन्या	14/08/2030	तुला	15/03/2031	वृश्चि	14/10/2031
धनु	02/07/2029	मक	31/01/2030	सिंह	01/09/2030	कन्या	02/04/2031	तुला	01/11/2031
मक	20/07/2029	कुंभ	18/02/2030	कर्क	19/09/2030	सिंह	20/04/2031	कन्या	19/11/2031
कुंभ	06/08/2029	मीन	07/03/2030	मिथु	06/10/2030	कर्क	07/05/2031	सिंह	07/12/2031
मीन	24/08/2029	मेष	25/03/2030	वृष	24/10/2030	मिथु	25/05/2031	कर्क	24/12/2031
मेष	11/09/2029	वृष	12/04/2030	मेष	11/11/2030	वृष	12/06/2031	मिथु	11/01/2032
वृष	29/09/2029	मिथु	30/04/2030	मीन	29/11/2030	मेष	30/06/2031	वृष	29/01/2032
मिथु	16/10/2029	कर्क	17/05/2030	कुंभ	16/12/2030	मीन	17/07/2031	मेष	16/02/2032
कर्क	03/11/2029	सिंह	04/06/2030	मक	03/01/2031	कुंभ	04/08/2031	मीन	04/03/2032
सिंह	21/11/2029	कन्या	22/06/2030	धनु	21/01/2031	मक	22/08/2031	कुंभ	22/03/2032
कन्या	09/12/2029	तुला	10/07/2030	वृश्चि	08/02/2031	धनु	09/09/2031	मक	09/04/2032

मेष - कुंभ		मेष - मीन		मेष - मेष		वृष - मेष		वृष - मीन	
09/04/2032		08/11/2032		09/06/2033		08/01/2034		09/09/2034	
08/11/2032		09/06/2033		08/01/2034		09/09/2034		10/05/2035	
मीन	27/04/2032	मेष	26/11/2032	वृष	27/06/2033	वृष	28/01/2034	मेष	29/09/2034
मेष	14/05/2032	वृष	13/12/2032	मिथु	14/07/2033	मिथु	18/02/2034	वृष	19/10/2034
वृष	01/06/2032	मिथु	31/12/2032	कर्क	01/08/2033	कर्क	10/03/2034	मिथु	08/11/2034
मिथु	19/06/2032	कर्क	18/01/2033	सिंह	19/08/2033	सिंह	30/03/2034	कर्क	29/11/2034
कर्क	07/07/2032	सिंह	05/02/2033	कन्या	06/09/2033	कन्या	19/04/2034	सिंह	19/12/2034
सिंह	24/07/2032	कन्या	22/02/2033	तुला	23/09/2033	तुला	10/05/2034	कन्या	08/01/2035
कन्या	11/08/2032	तुला	12/03/2033	वृश्चि	11/10/2033	वृश्चि	30/05/2034	तुला	29/01/2035
तुला	29/08/2032	वृश्चि	30/03/2033	धनु	29/10/2033	धनु	19/06/2034	वृश्चि	18/02/2035
वृश्चि	16/09/2032	धनु	17/04/2033	मक	16/11/2033	मक	10/07/2034	धनु	10/03/2035
धनु	03/10/2032	मक	04/05/2033	कुंभ	04/12/2033	कुंभ	30/07/2034	मक	30/03/2035
मक	21/10/2032	कुंभ	22/05/2033	मीन	21/12/2033	मीन	19/08/2034	कुंभ	20/04/2035
कुंभ	08/11/2032	मीन	09/06/2033	मेष	08/01/2034	मेष	09/09/2034	मीन	10/05/2035

चर दशा - प्रत्यन्तर

वृष - कुंभ		वृष - मक		वृष - धनु		वृष - वृश्चि		वृष - तुला	
10/05/2035		09/01/2036		08/09/2036		10/05/2037		08/01/2038	
09/01/2036		08/09/2036		10/05/2037		08/01/2038		09/09/2038	
मीन	30/05/2035	धनु	29/01/2036	वृश्चि	28/09/2036	तुला	30/05/2037	वृश्चि	28/01/2038
मेष	20/06/2035	वृश्चि	18/02/2036	तुला	19/10/2036	कन्या	19/06/2037	धनु	18/02/2038
वृष	10/07/2035	तुला	09/03/2036	कन्या	08/11/2036	सिंह	09/07/2037	मक	10/03/2038
मिथु	30/07/2035	कन्या	30/03/2036	सिंह	28/11/2036	कर्क	30/07/2037	कुंभ	30/03/2038
कर्क	19/08/2035	सिंह	19/04/2036	कर्क	18/12/2036	मिथु	19/08/2037	मीन	19/04/2038
सिंह	09/09/2035	कर्क	09/05/2036	मिथु	08/01/2037	वृष	08/09/2037	मेष	10/05/2038
कन्या	29/09/2035	मिथु	30/05/2036	वृष	28/01/2037	मेष	29/09/2037	वृष	30/05/2038
तुला	19/10/2035	वृष	19/06/2036	मेष	17/02/2037	मीन	19/10/2037	मिथु	19/06/2038
वृश्चि	09/11/2035	मेष	09/07/2036	मीन	10/03/2037	कुंभ	08/11/2037	कर्क	10/07/2038
धनु	29/11/2035	मीन	29/07/2036	कुंभ	30/03/2037	मक	28/11/2037	सिंह	30/07/2038
मक	19/12/2035	कुंभ	19/08/2036	मक	19/04/2037	धनु	19/12/2037	कन्या	19/08/2038
कुंभ	09/01/2036	मक	08/09/2036	धनु	10/05/2037	वृश्चि	08/01/2038	तुला	09/09/2038

वृष - कन्या		वृष - सिंह		वृष - कर्क		वृष - मिथु		वृष - वृष	
09/09/2038		10/05/2039		09/01/2040		08/09/2040		10/05/2041	
10/05/2039		09/01/2040		08/09/2040		10/05/2041		08/01/2042	
तुला	29/09/2038	कन्या	30/05/2039	मिथु	29/01/2040	वृष	28/09/2040	मेष	30/05/2041
वृश्चि	19/10/2038	तुला	20/06/2039	वृष	18/02/2040	मेष	19/10/2040	मीन	19/06/2041
धनु	08/11/2038	वृश्चि	10/07/2039	मेष	09/03/2040	मीन	08/11/2040	कुंभ	09/07/2041
मक	29/11/2038	धनु	30/07/2039	मीन	30/03/2040	कुंभ	28/11/2040	मक	30/07/2041
कुंभ	19/12/2038	मक	19/08/2039	कुंभ	19/04/2040	मक	18/12/2040	धनु	19/08/2041
मीन	08/01/2039	कुंभ	09/09/2039	मक	09/05/2040	धनु	08/01/2041	वृश्चि	08/09/2041
मेष	29/01/2039	मीन	29/09/2039	धनु	30/05/2040	वृश्चि	28/01/2041	तुला	29/09/2041
वृष	18/02/2039	मेष	19/10/2039	वृश्चि	19/06/2040	तुला	17/02/2041	कन्या	19/10/2041
मिथु	10/03/2039	वृष	09/11/2039	तुला	09/07/2040	कन्या	10/03/2041	सिंह	08/11/2041
कर्क	30/03/2039	मिथु	29/11/2039	कन्या	29/07/2040	सिंह	30/03/2041	कर्क	28/11/2041
सिंह	20/04/2039	कर्क	19/12/2039	सिंह	19/08/2040	कर्क	19/04/2041	मिथु	19/12/2041
कन्या	10/05/2039	सिंह	09/01/2040	कर्क	08/09/2040	मिथु	10/05/2041	वृष	08/01/2042

मिथु - वृष		मिथु - मेष		मिथु - मीन		मिथु - कुंभ		मिथु - मक	
08/01/2042		09/08/2042		10/03/2043		09/10/2043		09/05/2044	
09/08/2042		10/03/2043		09/10/2043		09/05/2044		08/12/2044	
मेष	26/01/2042	वृष	27/08/2042	मेष	28/03/2043	मीन	27/10/2043	धनु	27/05/2044
मीन	13/02/2042	मिथु	14/09/2042	वृष	15/04/2043	मेष	14/11/2043	वृश्चि	14/06/2044
कुंभ	02/03/2042	कर्क	01/10/2042	मिथु	02/05/2043	वृष	01/12/2043	तुला	02/07/2044
मक	20/03/2042	सिंह	19/10/2042	कर्क	20/05/2043	मिथु	19/12/2043	कन्या	19/07/2044
धनु	07/04/2042	कन्या	06/11/2042	सिंह	07/06/2043	कर्क	06/01/2044	सिंह	06/08/2044
वृश्चि	25/04/2042	तुला	24/11/2042	कन्या	25/06/2043	सिंह	24/01/2044	कर्क	24/08/2044
तुला	12/05/2042	वृश्चि	11/12/2042	तुला	12/07/2043	कन्या	10/02/2044	मिथु	11/09/2044
कन्या	30/05/2042	धनु	29/12/2042	वृश्चि	30/07/2043	तुला	28/02/2044	वृष	28/09/2044
सिंह	17/06/2042	मक	16/01/2043	धनु	17/08/2043	वृश्चि	17/03/2044	मेष	16/10/2044
कर्क	05/07/2042	कुंभ	03/02/2043	मक	04/09/2043	धनु	04/04/2044	मीन	03/11/2044
मिथु	22/07/2042	मीन	20/02/2043	कुंभ	21/09/2043	मक	22/04/2044	कुंभ	21/11/2044
वृष	09/08/2042	मेष	10/03/2043	मीन	09/10/2043	कुंभ	09/05/2044	मक	08/12/2044

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	9
भाग्यांक	9
मित्र अंक	1, 3, 6, 9
शत्रु अंक	4, 5, 8
शुभ वर्ष	27,36,45,54,63
शुभ दिन	बुध, शुक्र
शुभ ग्रह	बुध, शुक्र
मित्र राशि	वृश्चिक, मेष
मित्र लग्न	धनु, वृष, कर्क
अनुकूल देवता	सूर्य
शुभ रत्न	पन्ना
शुभ उपरत्न	संगपन्ना, मरगज
भाग्य रत्न	हीरा
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	हरित
शुभ दिशा	उत्तर
शुभ समय	सूर्योदय के बाद
दान पदार्थ	हाथी दाँत, कपूर, फल
दान अन्न	मूँग
दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पन्ना	बुध	100%	सन्तति सुख, व्यावसायिक उन्नति, स्वास्थ्य
हीरा	शुक्र	100%	सन्तति सुख, भाग्योदय, धन
लहसुनिया	केतु	81%	स्वास्थ्य, सन्तति सुख
नीलम	शनि	72%	सुख, सन्तति सुख, शत्रु व रोग मुक्ति
गोमेद	राहु	56%	दम्पति
पुखराज	गुरु	54%	दम्पति, सुख
मोती	चंद्र	41%	व्यय, हानि
माणिक्य	सूर्य	22%	ग्रह कलेश, व्यय
मूंगा	मंगल	0%	पराक्रम हानि, दुर्घटना

रत्न की शुभता

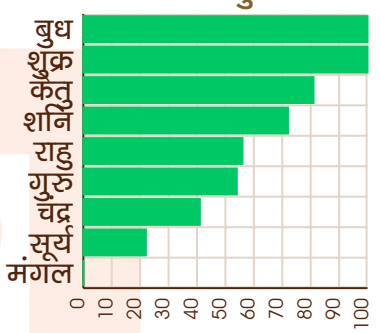

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
शुक्र	21/02/2005	0%	16%	0%	100%	54%	100%	78%	62%	88%
सूर्य	21/02/2011	47%	52%	2%	100%	61%	89%	59%	38%	69%
चंद्र	21/02/2021	34%	58%	0%	100%	54%	100%	72%	38%	69%
मंगल	22/02/2028	34%	52%	15%	100%	61%	100%	72%	38%	88%
राहु	21/02/2046	0%	16%	0%	100%	54%	100%	78%	69%	69%
गुरु	21/02/2062	34%	52%	2%	100%	67%	89%	72%	56%	81%
शनि	21/02/2081	0%	16%	0%	100%	54%	100%	84%	62%	69%
बुध	21/02/2098	34%	16%	0%	100%	54%	100%	72%	56%	81%
केतु	22/02/2105	0%	16%	2%	100%	54%	100%	59%	38%	94%

विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत ।।

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते है। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते है। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ है तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते है अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते है।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते है। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुडंली और रत्न

आपके लिए पन्ना, हीरा व लहसुनिया रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है। इन्हें आप सर्वदा धारण करेंगे तो आपके जीवन का चहुंमुखी विकास होगा। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

पन्ना आपका जीवन रत्न है इसको धारण करने से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी।

हीरा आपका भाग्य रत्न है। इस रत्न को धारण करने से आपके भाग्य की वृद्धि होगी। रुके हुए कार्य सुगमता पूर्वक बनेंगे। मान-सम्मान बढ़ेगा। शुभ यात्राएं होंगी। मानसिक विकार दूर होंगे। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

लहसुनिया आपका कारक रत्न है। कारक रत्न के धारण करने से व्यावसायिक उन्नति प्राप्त होती है। धन लाभ होता है। सुख सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। जीवन में नयी ऊर्जा का प्रवाह होता है।

अतः उपरोक्त रत्न आप अवश्य धारण करें। सभी रत्न जीवन पर्यन्त धारण करने से ग्रहों की विशेष शुभता प्राप्त होगी और जीवन सुखमय होकर गतिमान होगा। उपरोक्त रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के धारण कर सकते हैं क्योंकि सभी रत्न अति शुभफलदायी हैं।

आपके लिए नीलम, गोमेद एवं पुखराज रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम है। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

मोती रत्न आपके लिए नेष्ट है। अतः इसे न पहनना ही बेहतर है। इसे धारण करने से आपको मानसिक परेशानी एवं स्वास्थ्य हानि हो सकती है। अतः यदि इसे धारण करना हो तो इसकी अनुकूलता का परीक्षण अवश्य कर लें और विभिन्न दशाओं में इसकी अनुकूलता का परिक्षण करते रहें, क्योंकि यह रत्न आपके लिए किसी दशा या गोचर में विशेष कष्टकारी भी हो सकता है।

माणिक्य व मूंगा रत्न पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। क्योंकि इनके स्वामी ग्रह आपकी कुंडली में बिल्कुल भी शुभ फलदायक नहीं हैं। अतः इन रत्नों का आप सर्वदा त्याग ही करें। इनके पहनने से आपको सामाजिक, आर्थिक और स्वास्थ्य के पक्ष से

विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं। मान-सम्मान में कमी, धन-धान्य का अभाव तथा उन्नति बाधित हो सकती है। इन रत्नों का आप जीवन पर्यन्त ही त्याग करें क्योंकि ये रत्न किसी भी दशा या गोचर में शुभफलदायी नहीं हो सकते।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

पन्ना

आपकी कुंडली में बुध पंचम भाव में स्थित है। आपको बुध रत्न पन्ना धारण करना चाहिए। पन्ना रत्न आपको प्रसन्नचित्त, कुशाग्रबुद्धि और बुद्धिमान व्यक्ति बनेंगे। रत्न की शुभता से वाद विवाद में कुशल, तर्ककुशल और मधुरभाषी बनेंगे। यह रत्न आपको सदाचारी, धैर्यशील, चरित्रवान और संतोषी बनाएगा। रत्न धारण करने के बाद आप अपनी बुद्धि से धनार्जन करेंगे। यह रत्न आपको अपनी व्यवसायिक बुद्धि और विद्या के कारण एक सुखद जीवन व्यतीत करने में सहयोग करेगा। रत्न प्रभाव आपको लोभ भावना से बचायेगा।

आपकी कन्या लग्न की कुंडली में बुध लग्नेश एवं दशमेश है। लग्नेश बुध की शुभता प्राप्ति के लिए आप पन्ना रत्न धारण कर सकते है। पन्ना रत्न आपको बौद्धिक क्षेत्रों से संबंधित कार्यक्षेत्र दे सकता है। रत्न शुभता से आपको आजीविका क्षेत्र में सुख-सम्मान की प्राप्ति हो सकती है। लग्नेश बुध रत्न आपकी विवेक योग्यता को बढ़ाएगा। पन्ने की शुभता से आप में व्यापारिक बुद्धि, लेखन योग्यता का विकास कर सकता है। पन्ना रत्न लग्नेश का रत्न होने के कारण अपनी शुभता से आपको स्वास्थ्य सुख भी प्रदान करेगा। जीवन को आरोग्य रखने में भी पन्ना रत्न आपके लिए शुभ फलदायी रत्न है। पन्ना रत्न आपको गणितीय कौशल भी देगा।

पन्ना रत्न कनिष्ठिका अंगूली में धारण करना चाहिए। इस रत्न को सोना धातु में जड़वाकर आप प्रातःकाल में स्नानादि नित्यक्रियाओं से निवृत होने के बाद रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर धूप, दीप और फूल दिखाकर धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करते समय बुध मंत्र ऊँ बुं बुधाय नमः का १ माला या ५ माला जाप करना चाहिए। तदुपरांत बुध ग्रह की वस्तुएं जैसे - मूंग, कस्तूरी, कांसा, हरित वस्त्र आदि का यथाशक्ति दान करना चाहिए। रत्न इस प्रकार धारण करें कि वह शरीर को स्पर्श करें। पन्ना रत्न 3 रत्ती का कम से कम, अन्यथा 6 रत्ती का होना चाहिए।

इस रत्न को आप लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या विपरीत हाथ में भी धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करने में आप असमर्थ हो तो आप इसके स्थान पर मरगज, हरा हकीक, पेरिडोट एवं ४ मुखी रुद्राक्ष धारण कर सकते है।

हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र पंचम भाव में स्थित है। शुक्र रत्न हीरा आपके लिए शुभ फलदायी रहेगा। आपको शुक्र रत्न हीरा धारण करना चाहिए। हीरा रत्न आपको कविताओं, ललितकलाओं और लेखन में गहरी रुचि देगा। संगत, कला और सौंदर्य सम्पन्न और सद्गुणी

बनाएगा। आप आस्तिक और उदार व्यक्ति बनेंगे। हीरे रत्न प्रभाव से आप विद्वान, प्रतिभाशाली और अच्छे वक्ता सिद्ध होंगे। इस रत्न की शुभता से आप राजनीतिज्ञ मंत्री या न्यायाधीस भी हो सकते हैं। साथ ही यह रत्न वाहनों का सुख, उत्तम व विश्वसनीय मित्र देगा। संतान सुख के पक्ष से भी यह रत्न शुभदायक रहेगा।

आपकी कन्या लग्न की कुंडली में शुक्र द्वितीय और नवम भाव के स्वामी है। लग्नेश बुध के मित्र व त्रिकोण भाव के स्वामी होने के कारण आपके लिए विशेष शुभ हो गए है। शुक्र की शुभता में बढ़ोतरी करने के लिए आप शुक्र रत्न हीरा धारण कर सकते है। हीरा रत्न आपके लिए धन-धान्य, कुटुंब सुख, संचित धन एवं यश प्रदायक सिद्ध हो सकता है। भाग्य, धर्म व दूर स्थानों की यात्रा के लिए भी आप शुक्र रत्न हीरा अवश्य धारण करें। यह रत्न आपका भाग्योदय करेगा। हीरा रत्न धारण से आपकी उन्नति सहज हो सकती है।

हीरा रत्न सोने धातु की अंगूठी में जड़वाकर, शुक्रवार के दिन सूर्य उदय के पश्चात स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर रत्न को रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से मिलकर बने पंचामृत में डूबोकर शुद्ध कर, अपने देव स्थान पर रखकर शुक्रदेव और रत्न को धूप, दीप एवं फूल दिखाकर अनामिका अंगूली में धारण करें। हीरा रत्न धारण करते समय शुक्र मंत्र ऊँ शं शुक्राय नमः का १०८ बार मंत्र जाप करना चाहिए। मंत्र जाप करने के बाद शुक्र ग्रह की वस्तुएं जैसे- चावल, चांदी, घी, श्वेत वस्त्र आदि वस्तुओं का दान करें। हीरा 1 रत्ती से अधिक बजन का धारण करना चाहिए। यह छोटे टुकड़ों में भी पहना जा सकता है।

हीरा रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा एवं पुखराज रत्न धारण करना सर्वदा वर्जित है। अंगूठी रूप रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में इसे लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। हीरा रत्न के स्थान पर इस रत्न के उपरत्न ओपल, जर्कन, स्फटिक एवं ६ मुखी रुद्राक्ष धारण किया जा सकता है।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु लग्न भाव में स्थित है। इसलिए आपको केतु रत्न लहसूनिया धारण करना चाहिए। यह रत्न धारण करने से आप परिश्रमी और कर्मठ बनेंगे। लहसुनिया रत्न आपकी मेहनत एवं लगन योग्यता को बढ़ायेगा। लग्न भाव में बैठकर केतु सप्तम भाव से संबंध बना रहे है इसके प्रभाव से केतु रत्न लहसुनिया आपके ग्रहस्थ जीवन को सुख-सौहार्द पूर्ण बनायेंगा। लहसुनिया रत्न आपके साहस भाव में बढ़ोतरी करेगा।

केतु कन्या राशि में स्थित है व इसका स्वामी बुध पंचम भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न धारण करने से आपको शिक्षा क्षेत्र में विशेष सम्मान, पद और सफलता प्राप्त होगी। रत्न शुभता आपको अधिकार शक्ति प्रदान करेगी। आप शिक्षा क्षेत्र या मनोरंजन क्षेत्र में अपनी विशेष योग्यता दिखा पाएंगे। इस रत्न को धारण करने से आप धन-संपत्ति का संचय करने में सफल होंगे। अध्ययन कार्यों में आपका आत्मविश्वास बढ़ा-चढ़ा रहेगा। एवं यह रत्न आपके संतान सुख को बढ़ाएगा। आपको कम परिश्रम करने पर भी अधिक लाभ देगा। विद्याध्ययन में आपकी रुचि जागृत होगी तथा धार्मिक क्रिया-कलापों में आपको सुख का अनुभव होगा।

लहसुनिया रत्न को चांदी धातु में जड़वाकर गुरुवार के दिन सूर्यास्त काल में धारण किया जा सकता है। लहसुनिया रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, इसका धूप, दीप और फूलों से पूजन करने के बाद अनामिका अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात केतु रत्न मंत्र ऊँ के केतवे नमः का ९ माला जाप करें। मंत्र जाप के बाद केतु ग्रह की वस्तुओं का दान किसी योग्य व्यक्ति को करना शुभ रहता है। केतु वस्तुएं इस प्रकार है- सप्तधान्य, नारियल, धूम्र वस्त्र। लहसुनिया रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए। अंगूठी रूप में रत्न धारण करने में किसी प्रकार की असमर्थता होने पर इसे लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है।

लहसुनिया रत्न धारण करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि इस रत्न के साथ माणिक्य एवं गोमेद रत्न धारण करना प्रतिकूल फल प्रदान कर सकता है।

नीलम

आपकी कुंडली में शनि चतुर्थ भाव में स्थित है। आपको शनि रत्न नीलम धारण करना चाहिए। नीलम रत्न आपको धैर्य संपन्न और लोभरहित रखेगा। इस रत्न के प्रभाव से आप व्यसनहीन, न्यायप्रिय और अतिथियों का सत्कार करने वाले व्यक्ति बनेंगे। आपको प्रचुर मात्रा में धन की प्राप्ति होगी। नीलम रत्न शीघ्र फल देने वाला रत्न है। रत्न के फलस्वरूप आपके पास विभिन्न प्रकार के वाहन होंगे। जन्मस्थान से दूर रहकर आपको तरक्की की प्राप्ति होगी। नौकरी, विवाह, संतान आदि के लिए भी यह रत्न आपके अनुकूल सिद्ध होगा।

आपकी कन्या लग्न की कुंडली में शनि पंचमेश और षष्ठेश है। शनि त्रिकोण भाव के स्वामी है और लग्नेश बुध के मित्र भी है। अतः नीलम रत्न आपके लिए अनुकूल और शुभ रत्न सिद्ध हो सकता है। नीलम रत्न धारण करने से आपकी संतान का स्वास्थ्य अनुकूल रहेगा। यह रत्न संतान सुख भी प्रदान कर सकता है। नीलम रत्न धारण से आपको विद्या ग्रहण या शैक्षिक क्षेत्र में शुभता प्राप्त हो सकती है। भूमि व संपति से लाभ पाने के लिए भी आप नीलम रत्न धारण कर सकते है। यह रत्न शत्रुओं पर विजय पाने में सहयोगी रत्न सिद्ध हो सकता है।

नीलम रत्न शनिवार के दिन पंचधातु से निर्मित अंगूठी में जड़वाकर, संध्या काल में स्नानादि कर शुद्ध होकर अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, धूप, दीप एवं फूल से पूजन करने के बाद इस अंगूठी को मध्यमा अंगूठी में धारण करें। तत्पश्चात शनि मंत्र ऊँ शं शनैश्चराय नमः का जाप एक माला करें। मंत्र जप के बाद इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- उड़द, काले तिल, तेल, काले वस्त्र आदि का दान किसी योग्य व्यक्ति को करें। नीलम रत्न कम से कम 3 रत्ती, अन्यथा 5-6 रत्ती का होना चाहिए।

नीलम रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा, पुखराज धारण करने से बचना चाहिए। विशेष स्थितियों में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है। किसी कारणवश यदि इस रत्न को धारण न कर पाएं तो इसके उपरत्न फिरोजा, नीली, एमेथिस्ट एवं ७ मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते है।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहु सप्तम भाव में स्थित है। आपको राहु रत्न गोमेद धारण करना चाहिए। गोमेद रत्न आपको स्वतंत्र व्यापार करने की ओर प्रेरित कर रहा है। रत्न शुभता से आपका कार्य कौशल चतुराई से परिपूर्ण रहेगा। आपका विवाह अपेक्षाकृत शीघ्र या विलम्ब से हो सकता है। गोमेद रत्न के प्रभाव से आपका अपने जीवनसाथी के मध्य प्रेम संबंध अनुकूल रहेगा। नौकरी के क्षेत्र में सफलता पाने के लिए आपको गोमेद रत्न धारण करना चाहिए। यह रत्न आपके स्वभाव की उग्रता को नियंत्रित रखेगा।

राहु मीन राशि में स्थित है व इसका स्वामी गुरु सप्तम भाव में स्थित है। अतः गोमेद रत्न धारण करने से आपके वात रोगों में कमी होगी। यह रत्न आपके दाम्पत्य जीवन को सुखमय बनाएगा। इस रत्न की शुभता से आपके अपने जीवनसाथी से स्नेह और सौहार्द के संबंध प्रगाढ़ होंगे। आपके स्वभाव में मधुरता आएगी। आप बंधुप्रिय, मधुर भाषी और स्वतंत्र व्यवसाय कार्य में सफल होंगे। इस रत्न से आपका अपने साझेदार और साथी पर विश्वास भाव मजबूत होगा। विदेश स्थानों से धन लाभ प्राप्त करना आपके लिए सहज होगा। एवं यह रत्न आपको विदेश में सम्मान दिलाएगा। आपको विदेश भ्रमण के अवसर प्राप्त होंगे।

गोमेद रत्न अष्टधातु से निर्मित अंगूठी को शनिवार के दिन सूर्यास्त काल में सभी प्रकार से स्वयं शुद्ध होकर रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से स्नान करायें। इसके बाद रत्न का धूप, दीप और फूल से पूजन कर मध्यमा अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात राहु मंत्र ऊँ रां राहवे नमः का १०८ बार जाप करें और फिर इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- तिल, तेल, कंबल, नीले वस्त्र आदि का दान करें। गोमेद रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए।

गोमेद रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ माणिक्य, मोती एवं मूंगा रत्न धारण करने से बचना चाहिए। अंगूठी रूप में इस रत्न को धारण न कर पाने की स्थिति में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी पहना जा सकता है। विशेष परिस्थितियों में रत्न के स्थान पर इसके उपरत्न गोमेद या ८ मुखी रुद्राक्ष को भी धारण करना श्रेष्ठकर रहता है।

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु सप्तम भाव में स्थित है। आपको गुरु रत्न पुखराज धारण करना चाहिए। पुखराज शुभ रत्न धारण कर आप गुरु की पूर्ण शुभता प्राप्त कर सकते है। पुखराज रत्न धारण करने के बाद लोग आपसे मिलकर प्रसन्न होंगे। रत्न की शुभता से आप मिलनसार व्यक्ति बनेंगे। आपका जीवनसाथी आपके लिए भाग्यशाली सिद्ध होगा। यह रत्न आपको काव्य साहित्य, कला प्रेमी और शास्त्र प्रेमी बनाएगा। रत्न प्रभाव से आपको धन, सुख, श्रेष्ठ पद और मान्यता मिलेगी। पुखराज रत्न से आपको सरकारी कामों, कचहरी के काम, मंत्रणा देने का काम, सलाहकार का काम, चित्रकला आदि के द्वारा लाभ मिल सकते है।

आपकी कन्या लग्न की कुंडली में गुरु चतुर्थेश और सप्तमेश है। गुरु चतुर्थेश का पुखराज रत्न धारण करने से आपको सुख-सौभाग्य की प्राप्ति हो सकती है। पुखराज रत्न

आपको धार्मिक और संस्कारी जीवन साथी दे सकता है। यह रत्न चतुर्थ भाव के स्वामी का रत्न होने के कारण आपको संपत्ति व माता सुख, विद्या, बुद्धि व संतान पक्ष को सुखी रखने में लाभकारी सिद्ध हो सकता है। गुरु रत्न पुखराज आपको धनी, भाग्य व धर्म के क्षेत्र में सम्मान दिला सकता है। आप पुखराज रत्न धारण कर गुरु ग्रह की शुभता प्राप्त कर सकते है।

इस रत्न को स्वर्ण धातु में जड़वाकर, गुरुवार के दिन प्रातःकाल में सभी प्रकार से शुद्ध होने के बाद रत्न को धूप, दीप दिखाकर तर्जनी अंगूली में धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न धारण करने के बाद ऊँ बृं बृहस्पतये नमः का एक माला जाप ५ मुखी रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। जप पूर्ण करने के बाद किसी जरुरतमंद को गुरु ग्रह से संबंधित पदार्थो का दान अपने सामर्थ्यशक्ति के अनुसार करना चाहिए। गुरु ग्रह की वस्तुएं इस प्रकार है- चने की दाल, हल्दी, पीला वस्त्र। यह रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर 8 रत्ती का धारण किया जा सकता है।

पुखराज रत्न के साथ हीरा और गोमेद रत्न धारण करना अनुकूल फलदायक नहीं रहता है। विशेष आवश्यकता होने पर आप इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। किसी कारणवश यदि पुखराज रत्न आप धारण न कर पाएं तो आप इसके उपरत्न सुनहला, पीला हकीक, पीताम्बरी रत्न एवं ५ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्रमा बारहवें भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः चंद्र रत्न मोती धारण करने पर आपकी आयु में कमी हो सकती है। धन और स्वास्थ्य दोनों के पक्ष से यह रत्न आपको सहयोग नहीं कर रहा है। मोती रत्न आपकी मानसिक चिंताओं को बढ़ा सकता है। सृजनात्मक कार्यो में आय प्राप्ति के प्रयास आपकी दिक्कतें बढ़ा सकते है। कला से जुड़े क्षेत्रों में भी आय प्राप्ति के प्रयास असफल हो सकते है। मोती रत्न आपको अत्यधिक संवेदनशील बना सकता है। इसके प्रभाव से आपकी मानसिक स्वास्थ्यता में कमी हो सकती है। इस रत्न के प्रभाव से आपके पिता का आर्थिक स्तर आंशिक रूप से कुछ कमजोर हो सकता है। पिता से मिले धन और सुख का आप लाभ नहीं उठा पाएंगे। संतान संबंधी चिंताएं बढ़ सकती है। मोती रत्न आपके व्ययों में अस्थिरता का भाव दे सकता है।

आपकी कन्या लग्न की कुंडली में चंद्र एकादशेश भाव के स्वामी है। चंद्र का रत्न मोती धारण करने पर आपको धनार्जन एवं धन संचय करने में कष्ट की स्थिति आ सकती है। मोती रत्न आपकी सामाजिक एवं राजनैतिक क्षेत्र में उन्नति को बाधित कर सकता है। यह रत्न आपकी व्यापारी कुशलता में भी कमी कर सकता है। रत्न प्रभाव आपके वैवाहिक जीवन को दुःखद कर सकता है। मोती रत्न धारण से आय में अस्थिरता की स्थिति बन सकती है। शिक्षा और समाज से आपकी द्वेष भाव की स्थिति बन सकती है। मोती रत्न आपको प्रवास और गुप्त चिंताएं दे सकता है। जीवन लक्ष्य प्राप्ति के लिए आपमें संकल्प शक्ति की कमी हो सकती है।

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य चतुर्थ भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः सूर्य रत्न माणिक्य आपको आर्थिक रूप से कमजोर कर

आपके आजीविका क्षेत्र में दिक्कतें दे सकता है। रत्न प्रभाव से आपके भाईयों की उन्नति बाधित हो सकती है। इस रत्न से घर सुख की कमी का अनुभव आपको जीवन भर हो सकता है। घर-परिवार से दूरी के योग बन सकते है। सूर्य रत्न माणिक्य आपकी चिंताओं को बढ़ाएगा। यह रत्न माता-पिता की सेवा से आपको वंचित कर सकता है। साथ ही माणिक्य रत्न प्रभाव से आपका माता-पिता से मनमुटाव भी हो सकता है। सोने, चांदी का व्यापार करना आपके लिए हानिकारक सिद्ध हो सकता है। तथा आपको आंखों से संम्बंधित परेशानियां हो सकती हैं।

आपकी कन्या लग्न की कुंडली में सूर्य द्वादश भाव के स्वामी है। सूर्य रत्न माणिक्य धारण करने पर आपको स्वास्थ्य सुख की कमी हो सकती है। यह रत्न आपके धन संचय में कमी करेगा। माणिक्य रत्न धारण से आपके व्ययों में वृद्धि होगी। यह रत्न आपको बन्धु विरोधी बना सकता है। रत्न प्रभाव से आप व्यापार क्षेत्र में विफल हो सकते है। माणिक्य रत्न धारण से आपमें धर्म कार्यो में श्रद्धा से अधिक पाखंड भाव हो सकता है। यह रत्न विदेश में भाग्योदय में विलम्ब देगा। इस रत्न से आपकी दृष्टि मंद हो सकती है। यह रत्न आपके पिता का स्वास्थ्य पीड़ित कर पिता सुख में कमी करेगा। आप पिता के विरोधी हो सकते है। माणिक्य रत्न आपको विदेशगमन में धन का व्यय करा सकता है।

मूंगा

आपकी कुंड़ली में मंगल तीसरे भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः मंगल रत्न मूंगा धारण करने पर रेल यात्राओं के दौरान आपका कर्मचारियों से लड़ाई झगड़ा हो सकता है। यह रत्न आपको असंतोष एवं तनाव दे सकता है। मूंगा रत्न प्रभाव से आपके पिता का स्वभाव क्रोधी एवं रुखा हो सकता है। आपको धनहानि और अलगाव का सामना करना पड़ सकता है। आपके पिता को मुकद्दमेबाजी और शत्रुओं से हानि के योग बन सकते है। यह रत्न आपके भाग्य में कुछ कमी कर सकता है। मूंगा रत्न आपको कानों या बाजुओं से संबंधित तकलीफें दे सकता है। अत्यधिक क्रोध के चलते आपके अपने मित्रों से संबंध खराब हो सकते है।

आपकी कन्या लग्न की कुंडली में मंगल तृतीयेश एवं अष्टमेश है। मंगल रत्न मूंगा धारण करने पर पराक्रम भाव आपके काम नहीं आ पाएगा। साहस और जोखिम से काम लेना आपके लिए लाभदायक नहीं रहेगा। मूंगा रत्न आपको शत्रुओं से पराजित करा सकता है। रत्न प्रभाव से आपमें स्वार्थ भावना प्रवेश कर सकती है। मूंगा रत्न आपको पैतृक सम्पति से वंचित कर सकता है। रत्न प्रभाव से आपको घर का सुख प्राप्त नहीं हो पाएगा। इस रत्न को धारण करने पर आपको कठिनता से धन प्राप्त होगा। स्पष्ट वक्ता होने के कारण आपको मित्रों में उचित सम्मान नहीं मिल पाएगा। यह रत्न आपको तार्किक बुद्धि देगा। रत्न प्रभाव से आप आलोचनात्मक लेखन की ओर आप अग्रसित हो सकते है। यह रत्न आपको नौकरी में शीघ्र बदलाव दे सकता है।

दशानुसार रत्न विचार

मंगल
(21/02/2021 - 22/02/2028)

मंगल की दशा में आपका पन्ना, हीरा व लहसुनिया रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

नीलम, पुखराज व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

गोमेद व माणिक्य रत्न नेष्ट हैं और मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

राहु
(22/02/2028 - 21/02/2046)

राहु की दशा में आपका पन्ना, हीरा व नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

गोमेद, लहसुनिया व पुखराज रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती, माणिक्य व मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

गुरु
(21/02/2046 - 21/02/2062)

गुरु की दशा में आपका पन्ना, हीरा व लहसुनिया रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

नीलम, पुखराज, गोमेद व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

माणिक्य रत्न नेष्ट हैं और मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शनि
(21/02/2062 - 21/02/2081)

शनि की दशा में आपका पन्ना, हीरा व नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

लहसुनिया, गोमेद व पुखराज रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु

इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती, माणिक्य व मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

बुध
(21/02/2081 - 21/02/2098)

बुध की दशा में आपका पन्ना, हीरा व लहसुनिया रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

नीलम, गोमेद व पुखराज रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

माणिक्य रत्न नेष्ट हैं और मोती व मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

केतु
(21/02/2098 - 22/02/2105)

केतु की दशा में आपका पन्ना, हीरा व लहसुनिया रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

नीलम व पुखराज रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

गोमेद रत्न नेष्ट हैं और मोती, मूंगा व माणिक्य रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

दशा ग्राफ

शुक्र - 21/02/2005

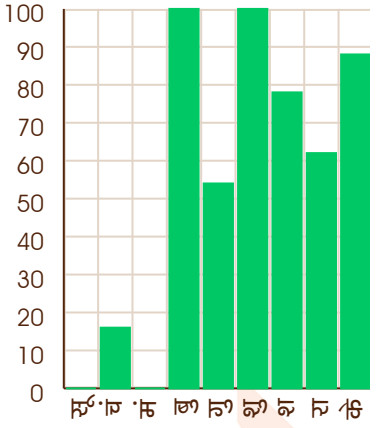

सूर्य - 21/02/2011

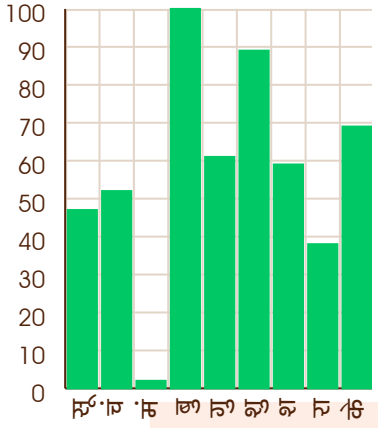

चन्द्र - 21/02/2021

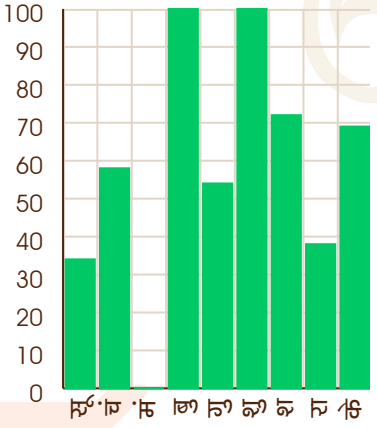

मंगल - 22/02/2028

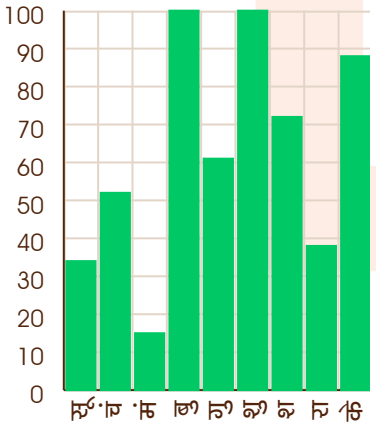

राहु - 21/02/2046

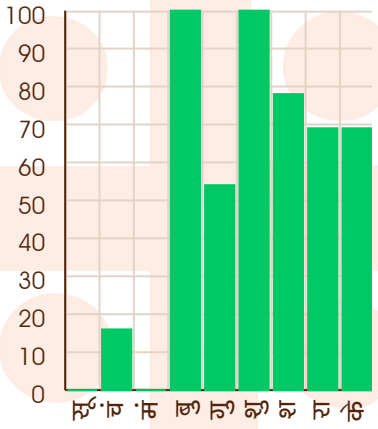

गुरु - 21/02/2062

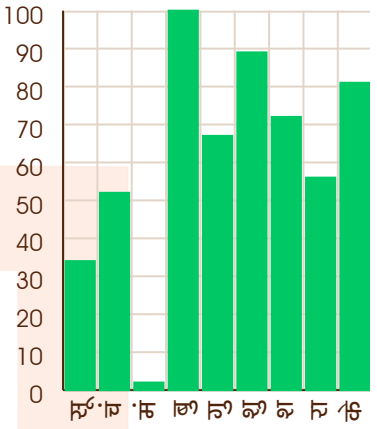

शनि - 21/02/2081

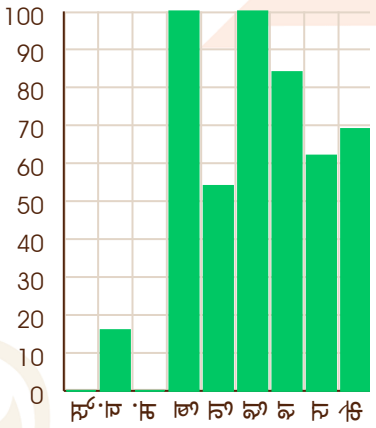

बुध - 21/02/2098

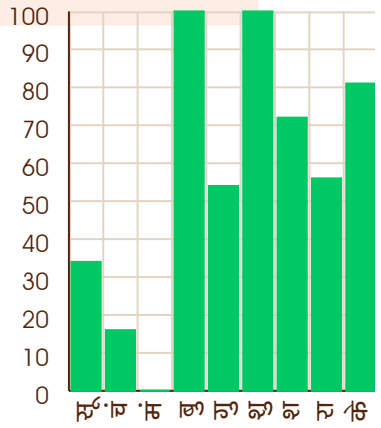

केतु - 22/02/2105

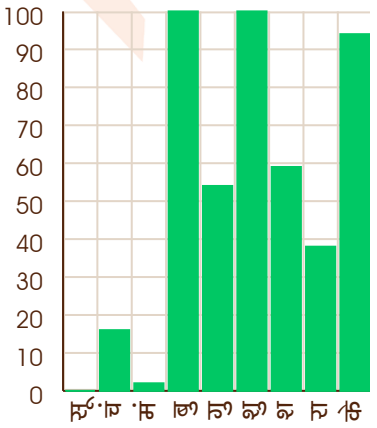

शुभ रत्न

आपका शुभ रत्न - गोमेद

आपका जन्म कन्या राशि के लग्न में हुआ है। जिसका स्वामी ग्रह बुध होता है। गोमेद रत्न राहु ग्रह के लिये धारण किया जाता है जो शनि के समान होता है और शनि कन्या राशि के लग्न के जातकों के लिये कारक रत्न होता है। क्योंकि शनि की मकर राशि कन्या लग्न से पंचम भाव में स्थित होती है। किसी भी जातक के लिये पंचमेश का प्रबल होना बहुत अधिक महत्वपूर्ण होता है क्योंकि विद्या प्राप्ति के लिए किये गये प्रयास या कार्य के लिये पंचमेश का रत्न धारण करना श्रेष्ठ होता है साथ ही यह प्रेम संबंधों का भाव भी होता है। बुद्धि, बल का आकलन पंचम भाव से देखते हैं। संतान सुख से वंचित जातकों के लिए या संतान होने में देरी होने वाले जातकों के लिये पंचमेश का रत्न संतान सुख में वृद्धि करता है।

अतः कन्या राशि के लग्न वाले जातकों को गोमेद रत्न धारण करके राहु या शनि को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक को संतान, बुद्धि, प्रेम संबंध व विद्या से संबंधित सभी लाभ मिलेंगे और जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। वैसे भी राहु या शनि न्याय व आध्यात्म का प्रतिनिधि ग्रह है जिससे जातक को आत्मिक बल की प्राप्ति तथा अपने अधीनस्थ कर्मचारी व सेवकों का सहयोग व उनसे सम्मान प्राप्त होता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को सेवकों की शुभ कामनाऐं भी प्राप्त होती हैं। राहु ग्रह मन की असमंजस स्थिति से दूर करता है। यह दादा-दादी का प्रतिनिधि ग्रह है। उनका आशीर्वाद प्राप्त होता है। जिसको त्वचा संबंधी रोग या कोढ़ जैसी बीमारी भी हो गयी हो तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है तथा संशय की स्थिति में संशय से मुक्ति दिलाता है।

गोमेद को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि मध्यमा अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में शनि की अंगुली मानी जाती है तथा राहु ग्रह शनि के समान माना जाता है। गोमेद राहु का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात शनिवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय सांयकाल शनि की होरा में श्रेष्ठ होता है। गोमेद को यदि शनिवार के साथ-साथ राहु के नक्षत्र अर्थात् आर्द्रा, स्वाती और शतभिषा में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है।

गोमेद को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पटरे पर काले रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, राहु के 108 मंत्रों का जाप करके इसे ऊर्जावान बनाकर माथे से लगाकर सीधे हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करना चाहिए।

राहु का मंत्र - ऊँ रां राहुवे नमः

इसको धारण करने के पश्चात यदि राहु से संबंधित पदार्थ जैसे काले तिल, सरसों का तेल, सवा मीटर नीले कपड़े का दान करें तो गोमेद की अंगूठी धारण करना और भी अधिक फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी प्रतिदिन राहु का 108 बार स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें और सरस्वती जी की आराधना करें तो यह गोमेद की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रतिदिन प्रातःकाल कबूतरों को दाना, चीरियों को आटा व मछलियों को आटे की गोली खिलायें तो और अधिक शुभकारी होगा।

कन्या लग्न वाले जातक यदि गोमेद की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन भाग्यशाली व्यक्ति के रूप में सुखी, समृद्धिशाली एवं संतान सुख से परिपूर्ण जीवन प्राप्त करते हैं।

रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के ह्रदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते है। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते है, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापो का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है ।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरू ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यो में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुडंली और रूद्राक्ष

आपकी कुंडली कन्या लग्न की है। कन्या लग्न पर बुध का प्रभाव होने से आप अत्यंत बुद्धिमान होते हैं। आपका व्यक्तित्व ऐसा होता है कि कोई भी सहजता से आपकी ओर आकर्षित हो जाता है। आपका मस्तिष्क अत्यंत रचनात्मक होता है। पृथ्वी तत्त्व होने से जिस प्रकार पृथ्वी सभी को धारण करती है उसी प्रकार आपके अन्दर भी सहनशीलता कूट-कूट कर भरी होती है। वायु प्रकृति होने से आप स्वयं को हर परिस्थिति में ढाल लेते हैं। सभी को माफ करने का स्वभाव, विपरीत परिस्थितियों में धैर्य रखना एवं समस्याओं का समाधान निकालना की क्षमता आपको विशिष्ठ व्यक्तित्व बनाता है। लग्नेश बुध के कारण भाषा पर अच्छी पकड़ एवं वाणी की कुशलता तथा किसी भी बात का तर्कपूर्ण तथ्य आप चाहते हैं।

कुंडली का 6, 8 व 12 वां भाव त्रिक भाव होने के कारण विशेष अशुभता लिए होते हैं। आपकी कुंडली में पंचमेश व षष्टेश शनि है, अष्टमेश व तृतीयेश मंगल तथा द्वादशेश सूर्य हैं। इन भावों की अशुभता आपके जीवन में रोग, ऋण, शत्रु, आयु, बाधाएं, शोक, स्वास्थ्य हानि, अस्पताल, कोर्ट-कचहरी, जेल, व्यय और हानियों का विश्लेषण किया जाता है। त्रिक भाव के स्वामी जिस भाव में जाते हैं, उसके शुभ फलों का कुछ न कुछ नाश अवश्य करते है। जिसके फलस्वरूप आपको मानसिक, सामाजिक, आर्थिक या पारिवारिक कष्टों का सामना करना पड़ता हैं। 6, 8 व 12 भावों में से 8 वां भाव सबसे अधिक दुष्ट/अशुभ होता हैं।

आपकी कुंडली में पंचमेश व षष्टेश शनि है, पंचमेश- षष्ठेश शनि आपको विद्या, बुद्धि, विवेक, वाणी, संतान, भय, ऋण, रोग, पाप कर्म, संघर्ष, कष्ट, परिश्रम, धैर्य, मामा व ननिहाल पक्ष के लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता हैं।

अष्टमेश व तृतीयेश मंगल आपके पराक्रम, पुरुषार्थ में कमी करता हैं, साथ ही बाहुबल, भाई-बहन के सुखों में कमी, अस्पताल, पुलिस-कोर्ट कचहरी के मामले परेशानियों का कारण बन सकते हैं।

द्वादशेश सूर्य, द्वादश भाव का स्वामी सूर्य नेत्र रोग, व्यय, हानि, सरकारी दंड, कारागार, सम्बन्ध विच्छेद का कारक बन सकता हैं।

चन्द्र द्वादश भाव में आपको बचपन में रोगी, कष्टों को सहने वाला, शत्रुओ की अधिकता, धन-हानि, असत्य वक्ता बना सकता है। स्वास्थ्य के पक्ष से भी चन्द्र की यह स्थिति शुभ फलदायी नहीं है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 1, 2, 3, 7 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पडता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पडता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	02/06/1995-10/08/1995	16/02/1996-17/04/1998	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	06/09/2004-13/01/2005	26/05/2005-01/11/2006	10/01/2007-16/07/2007
साढेसाती द्वितीय ढैया	01/11/2006-10/01/2007	16/07/2007-10/09/2009	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	10/09/2009-15/11/2011	16/05/2012-04/08/2012	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	02/11/2014-26/01/2017	21/06/2017-26/10/2017	----------

द्वितीय चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	29/03/2025-03/06/2027	20/10/2027-23/02/2028	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	13/07/2034-27/08/2036	----------	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	27/08/2036-22/10/2038	05/04/2039-13/07/2039	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	22/10/2038-05/04/2039	13/07/2039-28/01/2041	06/02/2041-26/09/2041
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	11/12/2043-23/06/2044	30/08/2044-08/12/2046	----------

तृतीय चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	14/05/2054-02/09/2054	05/02/2055-07/04/2057	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	24/08/2063-06/02/2064	09/05/2064-13/10/2065	03/02/2066-03/07/2066
साढेसाती द्वितीय ढैया	13/10/2065-03/02/2066	03/07/2066-30/08/2068	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	30/08/2068-04/11/2070	----------	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	05/02/2073-31/03/2073	23/10/2073-16/01/2076	11/07/2076-11/10/2076

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	दम्पति
साढेसाती प्रथम ढैया	सम	अल्प बचत
साढेसाती द्वितीय ढैया	अशुभ	व्यय
साढेसाती तृतीय ढैया	सम	स्वास्थ्य
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	सम	पराक्रम हानि

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति चन्द्र कुंडली से चतुर्थ भाव में है अतः आप एक मांगलिक पुरुष है। लेकिन शास्त्रानुसार आपका मांगलिक दोष भंग हो जाता है इसलिए यह मंगल आपको अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फल ही अधिक मात्रा में प्रदान करेगा इसके शुभ प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा साथ ही जीवन में अधिकांश रूप से सुखोपभोग की सामग्री से आप सुसम्पन्न रहेंगे तथा आनन्द पूर्वक इसका उपभोग कर सकेंगे। आपकी पत्नी का स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा जिससे आपका दाम्पत्य जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा।

ऐसे मंगल के प्रभाव से आपके विवाह में थोड़ा विलम्ब अवश्य हो सकता है परन्तु इससे किसी भी प्रकार की हानि नहीं होगी तथा विवाह सुखद वातावरण में सम्पन्न हो जाएगा। विवाहोपरान्त अपनी पत्नी से आपके मधुर संबंध रहेंगे। साथ ही आपकी पत्नी का शारीरिक स्वास्थ्य भी सामान्यतया अच्छा ही रहेगा जिससे कोई अनावश्यक व्यवधान या समस्या दाम्पत्य जीवन में उत्पन्न नहीं होगी।

चन्द्र कुंडली में चतुर्थ भाव में स्थित मंगल के प्रभाव से आप आवश्यक सुख संसाधनों से युक्त होकर उनका उपभोग करेंगे। साथ ही आप सम्पत्ति या जायदाद को भी प्राप्त करेंगे। सप्तम भाव पर मंगल की दृष्टि से पत्नी का स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु स्वभाव में यदा कदा उग्रता का भाव रहेगा। दशम भाव पर मंगल की दृष्टि से आप अपने कार्य में पूर्ण उन्नति करने में सफल रहेंगे। समाज में मान सम्मान, प्रतिष्ठा तथा यश भी अर्जित करेंगे। साथ ही एकादश भाव पर भी मंगल की दृष्टि आपकी आय साधनों में नित्य उन्नति दायक रहेगी। जिसके प्रभाव से आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी तथा जीवन में कभी भी धनाभाव नहीं रहेगा। अतः सभी प्रकार से सुख सम्पन्न रहकर आप का जीवन प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक सुखमय बनाने के लिए आपको किसी गैरमांगलिक या किसी ऐसी कन्या से विवाह करना चाहिए जिसका मांगलिक दोष नियमानुसार भंग हो रहा हो। इस प्रकार यदि आप अपने दाम्पत्य जीवन का प्रारम्भ करेंगे तो आप जीवन में भाग्यशाली पुरुष होकर समस्त भौतिक सुख संसाधनों धन वैभव तथा मान सम्मान एवं कीर्ति प्राप्त करने में सफल रहेंगे। साथ ही आपके परस्पर संबंधों मे भी प्रगाढ़ता रहेगी जिससे दाम्पत्य जीवन सुखमय रहेगा तथा किसी भी प्रकार अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न नहीं होगी जिससे सुखी दाम्पत्य जीवन प्रभावित होता है।

इसके अतिरिक्त इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि कन्या की चन्द्र कुंडली में मंगल चतुर्थ भाव में ही न हो क्योंकि समान भावों में मंगल स्थित होने से आप सुख संसाधनों को प्राप्त करने में कठिनाई का अनुभव करेंगे जिससे मानसिक तनाव उत्पन्न होगा फलतः इससे आपका सुखी दाम्पत्य जीवन प्रभावित होगा। अन्य भावों में मंगल रहने से उसका प्रभाव शुभ रहेगा जिससे जीवन में अनावश्यक कष्ट तथा परेशानी नहीं उठानी पड़ेगी। इससे आपका दाम्पत्य जीवन शान्त तथा सुखी रहेगा एवं प्रसन्नता पूर्वक आप अपना सांसारिक, सामाजिक तथा परिवारिक जीवन व्यतीत करने में सफल रहेंगे। अतः सोच विचार कर एवं सावधानी पूर्वक निर्णय करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में तक्षक नामक कालसर्प योग विद्यमान है। लेकिन यह केवल आंशिक रूप में विद्यमान है। फलस्वरूप साझेदारी के कामों में जातक को थोड़ा बहुत नुकसान उठाना पड़ता है। बनते कार्यों में आंशिक रूप से रूकावटें आती हैं। पर कालान्तर में अपने आप व्यवधान हट जाता है। बड़े पद मिलने में भी थोड़ा बहुत कठिनाई आती है, पर जातक कुछ समय बाद अपने बौद्धिक बल से उस व्यवधान को समाप्त करने में सक्षम हो जाता है।

इस योग के प्रभाव से जातक का वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए भी कभी आंशिक रूप में कष्टमय हो जाता है। प्रेम प्रसंग में जातक को सफलता प्राप्त करने में आंशिक व्यवधान आ जाता है और गुप्त प्रसंग से धोखा होने की संभावना रहती है। घर में सुख शान्ति का अभाव रहता है।

इस योग के कारण जातक शत्रुओं से घिरा रहता है। शत्रु लोग जातक के ऊपर षड्यन्त्र रचते रहते हैं पर उस षड्यन्त्र में कोई विशेष सफलता उनको नहीं मिलती है। जातक समय-समय पर गुप्त रोग से परेशान रहता है और रोग व्याधि में थोड़ा बहुत अधिक खर्च हो जाने के कारण आर्थिक स्थिति असामान्य हो जाती है। पैतृक धन सम्पत्ति का मनोभिलाषित फल प्रायः जातक को नहीं मिलता है। जातक अपनी पैतृक सम्पत्ति को या तो दान कर देता है या नष्ट हो जाती है। यदि जातक किसी दूसरे को थोड़ा बहुत धन देता है तो वह धन प्रायः वापस नहीं आता। जिस कारण जातक को मानसिक परेशानी व चिन्ता थोड़ा बहुत घेरे रहती है।

इस योग के प्रभाव से जातक को सन्तान सुख का प्रायः अभाव रहता है। जातक को अपने जीवन साथी के साथ सदैव समझौते का रुख अपनाना चाहिये तभी गृहस्थ जीवन विशेष रूप से सुखी रह सकता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. ऊँ नमः शिवाय' का प्रतिदिन 108 बार जप करें। कुल जप संख्या- 21000।
3. ताम्बे के लोटे में नाग के जोड़े बहते पानी में एक बार प्रवाहित करें।
4. नवनाग स्तोत्र का एक वर्ष तक प्रतिदिन पाठ करें।
5. राहु के महादशा, अन्तर्दशा आने पर राहु मन्त्र के जाप कम से कम प्रतिदिन 108 बार करें। जप संख्या अट्ठारह हजार (18000) है।
6. शुभ मुहूर्त्त में अभिमन्त्रित गोमेद धारण करें।

7. श्रावणमास में 30 दिन तक महादेव का अभिषेक करें।
8. सरस्वती जी की एक वर्ष विधिवत उपासना करें।
9. राहु कवच एवं स्तोत्र का पाठ करें।
10. प्रत्येक सोमवार को दही से भगवान शंकर पर - ऊँ हर हर महादेव कहते हुए अभिषेक करें। यह केवल 16 सोमवार तक करें।
11. रसोईघर में बैठकर भोजन करें।
12. शुभ मुहूर्त्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।
13. गोमेद, सुवर्ण, तिल, सरसों, नीलवस्त्र, खड्ग, कम्बल, आदि समय-समय पर दान करें।
14. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वस्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।
15. हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगेरे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं –

ऊँ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

आपकी कुडली में किसी भी प्रकार का पितृदोष विद्यमान नहीं है, अतः आपको जीवन में पितृदोष के कारण कष्ट या परेशानी नहीं होगी।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

अंक ज्योतिष फल

आपका जन्म दिनांक नौ होने से आपका मूलांक नौ होता है। मूलांक नौ का स्वामी मंगल है। मंगल को ग्रहों का सेनापति माना गया है। अतः आपके अन्दर भी सेनापति, नायक, मुखिया इत्यादि बनने की चाह सामाजिक क्षेत्रों में बनी रहेगी। रोजगार व्यवसाय मे एकाधिकार की प्रवृत्ति आपमें पाई जायेगी। आपके अन्दर साहस अधिक होने से आप अपने कार्यों को अदम्य साहस से करते हुये कठिनाईयों को आसानी से पार कर लेंगे। स्वभाव में आपके तेजी रहेगी। फुर्ती एवं जल्दबाजी रहेगी। आपकी सदैव यही कोशिश रहेगी कि आप जो भी कार्य हाथ में लें वह शीघ्र समाप्त हो जाये।

आपके स्वभाव में साहसीपन होने से आपको दुःसाहस के कार्यों से सदैव दूर रहना हितकर रहेगा। आप अनुशासन प्रिय रहेंगे एवं दूसरों से अनुशासन रखने की अपेक्षा करेंगे। खुशामद एवं चापलूसी से आप प्रभावित होकर कभी-कभी नुकसान भी उठायेंगे। अतः खुशामदी एवं चापलूस व्यक्तियों से सदैव बचें। मंगल ग्रह के प्रभाव से क्रोध की मात्रा भी आपमें रहेगी। इससे आपके विरोधी उत्पन्न होंगे। शत्रुओं की संख्या कम रहेगी एवं आप में शत्रुओं को दमन करने का बल हमेशा बना रहेगा।

मंगल के मूलांक के प्रभाववश आप अग्नितत्व प्रधान रोगों के शिकार होंगे। अतः आपको सौम्यता का व्यवहार रखना भाग्य में वृद्धि कारक रहेगा।

भाग्यांक नो का स्वामी मंगल ग्रह को माना गया है। यह ग्रह मण्डल का सेनापति है। रक्त वर्ण का क्षत्रियोचित गुणों का है। इसके प्रभाव से आप स्वतंत्ररूप से रोजगार- व्यापार के क्षेत्र में तरक्की करेंगे। साहस भरे कार्यों से आपका भाग्योदय होगा। आप ऐसे क्षेत्र में अपना रोजगार प्राप्त करेंगे, जहाँ आपकी हूकूमत चलती रहे। मुखिया, नायक, अगुआ के रूप में कार्य करना आपको हमेशा अच्छा लगेगा।

रोजगार के क्षेत्र में आप अपनी स्वतंत्र विचारधारा के द्वारा महत्वपूर्ण उन्नति को प्राप्त करेंगे। यांत्रिक कार्यों में आपकी रुचि रहेगी। एकाधिकार पूर्ण कार्य क्षेत्र आपकी प्रथम पसन्द रहेंगे और आपकी कोशिश रहेगी कि आपने जो कार्यक्षेत्र अपने जीवन यापन हेतु चुना है उसमें किसी का भी हस्तक्षेप न हो । विरोध, बिना वजह का हस्तक्षेप आप बर्दास्त नहीं कर पायेंगे। यांत्रिकी कार्य, चिकित्सा, सेना, संगठन, सामाजिक क्रिया कलापों में आप गहरी रुचि प्रदर्शित करेंगे।

आपका मूलांक 9 है तथा यही आपका भाग्यांक भी है। मूलांक एवं भाग्यांक दोनों का स्वामी मंगल ग्रह है। इसके प्रभाववश मूलांक और भाग्यांक के फल आपको द्विगुणित मात्रा में प्राप्त होंगे। रोजगार-व्यापार के क्षेत्र में आप युवावस्था से ही एक कर्मठ व्यक्ति की तरह धनार्जन करेंगे। मंगल से प्रभावित होने के कारण आपका रुझान साहसिक एवं जोखिम भरे कार्यों की ओर रहेगा। आप जो भी रोजगार-व्यापार करेंगे, उसमें निडरता के साथ स्वतंत्र विचारधारा पर चलते हुए कार्यों को परिपूर्ण करने में सफल सिद्ध होंगे। आपकी आर्थिक स्थिति मध्य अवस्था से काफी उच्च श्रेणी की बनती चली जाएगी, जो अंतिम अवस्था तक यथावत

रहेगी। ज्ञान-विज्ञान, तकनकी क्षेत्रों में आपका विशेष रुझान बना रहेगा तथा इनसे आपको वांछित लाभ प्राप्त होंगे। भौतिक सुख-संपदा की वस्तुएं जीवन पर्यंत आपको समुचित मात्रा में प्राप्त होती रहेंगी। आपकी सामाजिक स्थिति शौर्य एवं वीरता लिए हुए रहेगी तथा आप समाज में सम्मान के साथ जीएंगे।

आपका भाग्योदय 27 वर्ष की अवस्था से प्रारंभ होगा तथा 36 वर्ष की अवस्था से आपको विशेष उन्नति प्राप्त होगी एवं 45 वर्ष की अवस्था पर आपका पूर्ण भाग्योदय होगा।

आपके मूलांक 9 की मित्रता 3 एवं 6 से है तथा भाग्यांक 9 की 3 एवं 6 से मित्रता है। अतः आपके जीवन में 3, 6, 9 के अंक विशेष महत्वपूर्ण रहेंगे। आपके जीवन में इनसे प्रमुख घटनाएं घटित होंगी।

आपका मूलांक-भाग्यांक एक ही होने से मूलांक-भाग्यांक के फलों में द्विगुणित वृद्धि होगी। आपके जीवन की प्रमुख घटनाएं इन्हीं अंकों की तारीखों, मास, ईस्वी सन्, या आयु के वर्षों में घटित होंगी। जब कभी इन्हीं अंकों की तारीख, मास, वर्ष के साथ आपके लिए निर्धारित शुभवार का भी मेल होता हो, तो ऐसा दिन आपके लिए विशेष फलदायी तथा किसी भी कार्य को प्रारंभ करने, पत्र लेखन, या उच्च अधिकारी/व्यक्ति से मिलने हेतु अधिक उपयुक्त रहेगा। आप अपने विगत जीवन में घटित घटनाओं का अवलोकन करेंगे, तो पाएंगे कि काफी घटनाएं इन्हीं अंकों के मास, वर्ष या दिन को घटित हुई होंगी।

अपने विगत जीवन में उपर्युक्त सभी अंकों का विश्लेषण करने के बाद जो अंक आपके अधिक अनुकूल जा रहे हों, उन्हीं अंकों के आधार पर भावी योजनाएं बनाना अधिक लाभप्रद रहेगा।

आपके लिए मार्च, जून, सितंबर के माह विशेष महत्वपूर्ण रहेंगे तथा आप कोई भी नया कार्य ऐसे दिन, तारीख तथा मास में प्रारंभ करें जब आपके मूलांक तथा भाग्यांक के बीच मेल स्थापित हो तथा एक ही समय पर सभी शुभ हों।

मूलांक 9 एवं भाग्यांक 9 के प्रभाववश ईस्वी सन् जिन वर्षों का योग 3, 6, 9 होता है, आपके लिए विशेष घटनाक्रम वाले रहेंगे।

इसी प्रकार आपकी अवस्था के ऐसे वर्ष, जिनका योग 3, 6, 9 होता है, आपके लिए शुभ फलदायक रहेंगे।

3 . 12, 21, 30, 39, 48, 57, 66, 75
6 . 15, 24, 33, 42, 51, 60, 69
9 . 18, 27, 36, 45, 54, 63, 72

उपर्युक्त वर्ष आपके लिए परिवर्तनकारी रहेंगे। इन वर्षों में कुछ विशेष घटनाएं घटित होंगी, जो आपके जीवन की दशा बदलेंगी तथा कुछ घटनाएं यादगार बनेंगी।

अंक ज्योतिष उपाय विचार

अनुकूल समय

मंगल दिनांक 23 मार्च से 20 अप्रैल तक एवं 24 अक्तूबर से 21 नवंबर तक पाश्चात्य मत से, सूर्य मेष तथा वृश्चिक राशि में रहता है। भारतीय मत से यह समय 13 अप्रैल से 12 मई एवं 14 नवंबर से 14 दिसंबर होता है। मेष एवं वृश्चिक मंगल की अपनी राशियां हैं। दिनांक 14 जनवरी से 13 फरवरी तक सूर्य मकर राशि में रहता है, जो मंगल कि उच्च राशि है अतः उपर्युक्त समय मूलांक 9 के लिए कोई भी नया या महत्वपूर्ण कार्य करने के लिए अधिक उपयुक्त रहता है।

अनुकूल दिवस

मंगलवार, शुक्रवार एवं गुरुवार आपके लिए ठीक दिन रहेंगे। आप यदि किसी भी कार्य को करते हैं तो इन्ही दिवसों में प्रारंभ करें और यदि इन दिवसों में अनुकूल तारीखें भी आ जाएं तो श्रेष्ठ फलदायक रहेगा।

शुभ तारीखें

आपके लिए किसी भी अंग्रेजी मास की 3, 6, 9, 12, 15, 18, 21, 24, 29 एवं 30 तारीखें अधिक अनुकूल रहेंगी। इन तारीखों में महत्वपूर्ण कार्य, रोजगार-व्यापार के कार्य, अधिकारी या विशिष्ट व्यक्तियों से संबंधित कार्य अथवा पत्र इत्यादि लिखना आपके लिए अधिक उपयुक्त तथा सफलतादायक होंगे।

अशुभ तारीखें

आपके लिए किसी भी अंग्रेजी माह की 1, 7, 10, 16, 19, 20, 25 एवं 28 तारीखें ठीक नहीं हैं। आपके लिए पत्र इत्यादि लिखना या दस्तावेज लिखने हेतु अथवा विशिष्ट अधिकारी से मिलने हेतु या कोई भी नया कार्य प्रारंभ करना हो तो इन तारीखों में प्रारंभ न करें।

मित्रता या साझेदारी

जिन व्यक्तियों का जन्म 3, 6, 9, 12, 15, 18, 21, 24, 27 एवं 30 तारीखों को अथवा 13 अप्रैल से 12 मई एवं 14 नवंबर से 14 दिसंबर तथा 14 जनवरी से 13 फरवरी के मध्य हुआ हो, ऐसे व्यक्तियों से आपकी मित्रता अच्छी रहेगी तथा रोजगार, व्यापार के क्षेत्र में भी आप उच्चता के शिखर पर पहुंचेगें। ऐसे व्यक्ति आपके लिए विशेष फलदायी रहेंगे।

प्रेम संबंध एवं विवाह

मूलांक 3, 6, 9 वाली महिलाएं तथा जिनका जन्म 3, 6, 9, 12, 15, 18, 21, 24, 27 एवं 30 दिनांकों में हुआ हो पर वे आपके लिए विश्वसनीय सिद्ध होंगी। ऐसी स्त्रियों से ही आप प्रेम अथवा विवाह संबंध स्थापित कर सकते हैं जो आपके लिए शुभ फलदायी रहेगा।

अनुकूल रंग

आपके लिए अनुकूल रंग गुलाबी, गहरा लाल होने के कारण आपको चाहिए की अपने घर में दीवारें, खिड़कियां, पर्दे आदि का चुनाव करते समय इन रंगों को ध्यान में रखें तथा यदि आपका स्वास्थ्य साथ नहीं दे रहा है तब आप इन रंगों का रुमाल बना कर अपने पास हमेशा रखें तथा कोई भी रोजगार-व्यापार संबंधी कार्य करते समय इन रंगों के वस्त्र धारण करना न भूलें, जो आपके उज्ज्वल भविष्य के लिए अच्छा रहेगा।

वास्तु एवं निवास

आपके लिए दक्षिण दिशा उत्तमकारी है। अतः आपके लिए मकान या कॉम्पलेक्स वही शुभ रहेगा जो दक्षिण में स्थित हो। अतः आप शहर की दक्षिण दिशा या भवन की दक्षिण दिशा का चुनाव कर सकते हैं एवं रोजगार-व्यापार की बैठक भी दक्षिण दिशा में रख सकते हैं, जो आपके उज्ज्वल भविष्य के लिए अच्छा रहेगा। भवन के फ्लैट का क्रमांक का योग 3, 6 या 9 रखना लाभप्रद रहेगा।

शुभ वाहन नं

नये वाहन का पंजीकरण क्रमांक आपके मूलांक 9 या मूलांक के मित्र अंक 6 तथा 3 में से कोई एक लेना हितकर रहेगा, जैसे वाहन पंजीकरण क्रमांक 5238 = 9 इत्यादि होना चाहिए। यदि आप होटल में कमरा आदि बुक करते हैं, तो उसके लिए अंक 108 = 9 होना आपके लिए हितकर रहेगा। अथवा आप वाहन द्वारा यात्रा करते हैं, तो सीट इत्यादि क्रमांक आपके मूलांक या मित्र अंक भाग्यशाली अंक साबित होंगे। इन्हीं शुभ अंकों के प्रभाव से ही आपकी यात्रा सफल हो सकती है।

स्वास्थ्य तथा रोग

जब भी आपके जीवन में रोग की स्थिति आएगी तब आपको क्रोध, झल्लाहट, दुर्घटना, चोट, अंग शैथिल्य, हृदय रोग, रक्तचाप इत्यादि पीड़ा देंगे। रोग होने, अशुभ समय आने, कष्ट और विपत्ति के समय आप हनुमान की उपासना तथा आराधना करें, मंगलवार का व्रत करें और एक समय भोजन करें।

व्यवसाय

संगठन, संघ संचालक, नियंत्रक, चिकित्सा, ज्योतिष, धर्मोपदेशक, सैन्य विभाग, गोला-बारूद, आतिशबाजी का व्यवसाय, वकालत, औषधि विक्रेता, लौह तथा अन्य धातु संबंधी कार्य अथवा प्रभुता के कार्य। इन सबको अंक 9 में समाविष्ट कर सकते हैं।

व्रतोपवास

मंगलवार को भौम अरिष्ट दोष निवारण हेतु व्रत करें। यह व्रत पैंतालीस मंगलवार या कम से कम इक्कीस मंगलवारों को करें। लाल वस्त्र धारण करें एवं लाल वस्तुओं का दान करें। यथाशक्ति मंगल के मंत्र का मूंगे की माला पर जप करें।

अनुकूल रत्न या उपरत्न

आप मूंगा धारण करें। इसके न मिलने पर संगसितारा, लाल हकीक, लाल मून स्टोन धारण कर सकते हैं। इसे आप मंगलवार के दिन, शुक्ल पक्ष में, शुभ चौघड़िया मुहूर्त में, तांबा, सोना, मिश्रित धातु या चांदी में छह से नौ रत्ती का मूंगा बनवा कर, दाहिने हाथ की अनामिका उंगली में त्वचा को स्पर्श करते हुए धारण करें।

अनुकूल देवता

आप मंगल ग्रह की उपासना करें अथवा हनुमान जी की उपासना करने से आपके सभी प्रकार के अरिष्ट दूर होंगे। आप प्रति मंगलवार एवं शनिवार को सुंदर कांड का पाठ किया करें। साथ में हनुमान जी के मंत्र का नित्य एक सौ आठ बार मूंगे की माला पर जप किया करें। हनुमान जी का मंत्र इस प्रकार है : 'हं हनुमत रुद्रात्मकाय हुं फट्'। मंगलवार को एक समय भोजन करें तथा चने एवं मिष्ठान का प्रसाद हनुमान जी को अर्पण करने से आपके सभी कार्य बनेंगे।

ग्रह गायत्री मंत्र

आपके लिए मंगल के शुभ प्रभावों की वृद्धि हेतु, मंगल गायत्री मंत्र का प्रातः स्नान के बाद, ग्यारह, इक्कीस या एक सौ आठ बार जप करना लाभप्रद रहेगा।

भौम गायत्री मंत्र - ऊँ अंगारकाय विद्महे शक्तिहस्ताय धीमहि तन्नो भौमः प्रचोदयात्।।

ग्रह ध्यान मंत्र

प्रातःकाल उठ कर आप मंगल का ध्यान करें, मन में मंगल की मूर्ति प्रतिष्ठित करें और तत्पश्चात् निम्न मंत्र का पाठ करें :

धरणीगर्भसंभूतं विद्युत्कांतिसमप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं तं मंगलं प्रणमाम्यहम्।।

ग्रह जप मंत्र

अशुभ मंगल को अनुकूल बनाने हेतु मंगल के मंत्र का जप करना चाहिए। नित्य कम से कम एक माला एक सौ आठ जप करने से वांछित लाभ मिल जाते हैं। पूरा अनुष्ठान सौ माला का है। मंत्र जप का प्रत्यक्ष फल स्वयं देख सकेंगे।

ऊँ क्रौं क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः।। जप संख्या 10000।।

वनस्पति धारण

आप मंगलवार के दिन एक इंच लंबी अनंतमूल की जड़ ला कर, लाल धागे में लपेट कर, दाहिने हाथ में बांधें या स्वर्ण या तांबे के ताबीज में भर कर गले में धारण करें। इससे

मंगल के अशुभ प्रभाव कम होंगे तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी।

वनस्पति स्नान

आपके लिए प्रत्येक मंगलवार को एक बाल्टी या बर्तन में सौंठ, सौंफ, लाल चंदन, सिंगरफ, माल कांगनी और मौलसरी के फूल आदि औषधियों का चूर्ण कर, पानी में डाल कर स्नान करना सभी प्रकार के रोगों से मुक्तिदायक रहेगा। हर्बल स्नान से आपकी त्वचा की कांति में वृद्धि होगी। अशुभ मंगल के प्रभाव क्षीण हो कर आपके तेज एवं प्रभाव में वांछित लाभ प्राप्त होगा। सभी ग्रहों की शांति के लिए आपको कूठ, खिल्ला, कांगनी, सरसों, देवदारू, हल्दी, सर्वौषधि तथा लोध, को मिला कर, चूर्ण कर किसी तीर्थ के पानी में मिला कर, भगवान का स्मरण करते हुए, स्नान करें तो ग्रहों की शांति और सुख-समृद्धि प्राप्त होगी।

दान पदार्थ

मंगल की शांति के लिए योग्य व्यक्ति को मंगल के पदार्थ-तांबा, सोना, गेहूं, लाल वस्त्र, गुड़, लाल चंदन, लाल पुष्प, केसर, कस्तूरी, लाल वृषभ, मसूर की दाल, पृथ्वी, विद्रुम आदि का दान करना लाभप्रद रहेगा।

यंत्र

मंगल को अनुकूल बनाए रखने हेतु मंगल यंत्र को भोज पत्र पर अष्टगंध (केशर, कपूर, अगर, तगर, कस्तूरी, अंबर, गोरोचन एवं रक्त चंदन या श्वेत चंदन) स्याही से लिख कर, सोने या तांबे के ताबीज में, धूप-दीप से पूजन कर, सोने की जंजीर या पीले धागे में, शनिवार को शुक्ल पक्ष में प्रातःकाल धारण करें।

लग्न फल

आपका जन्म हस्त नक्षत्र के तृतीय चरण में कन्या लग्नोदय काल हुआ था। उस समय मेदिनीय क्षितिज पर मिथुन राशि का नवमांश एवं मकर राशि का द्रेष्काण भी साथ-साथ उदित था। आपके जन्मकाल के समन्वित ग्रह प्रभाव से यह परिलक्षित हो रहा है कि आप अध्ययनप्रिय है तथा आप सृजनात्मक लक्ष्य के प्रति सतत प्रयत्नशील तथा समर्पित प्राणी हैं। आपको इस प्रवृति को लाभजनक स्थिति में परिवर्तित करना चाहिए।

आप बुद्धिजीवी व्यक्ति है। परन्तु आपका चारित्रिक बल का महत्त्व प्रदर्शन आपके लिए व्यवधान कारक हो सकता है। आपकी सर्वत्र आलोचना होती है तथा आप जन्म सामन्य के दृष्टिकोण से पथभ्रष्ट होने के नाते आप इनकी श्रेणी में नहीं आते परिणाम स्वरूप अच्छी जामात के लोग आपको अपना प्रतिपक्षी (विरोधी) समझते है। आपके कुछ मित्रगण एवं आपके नौकर अधिक विरुद्ध एक जुट होकर आपको जन सामन्य की नजरों से पतित प्रमाणित करने का प्रयास कर सकते हैं। अतः आपको धैर्यपूर्वक एवं शान्त चित्त से अन्य के साथ अपना उत्तम व्यवहार बनाना होगा।

आपमें अन्य दुर्बलता यह है कि आप मध्यपान करने एवं संभोगात्मक प्रवृति से आकर्षित एवं वशीभूत हैं। आपको उत्तम स्वस्थ जीवन व्यतीत करने के लिए इन आदतों को नियंत्रित करना होगा तथा सुव्यवस्थित पारिवारिक वातावरण को सुनिश्चित करना होगा। क्योंकि मुख्यतः आपकों इस बात का गर्व होगा कि आपकी पत्नी बुद्धिमति है तथा आपको अच्छी सन्तान का संयोग प्राप्त है।

आपको अपने उत्तम स्वास्थ्य हेतु अनावश्यक सम्बन्ध की कोई आवश्यकता नहीं है। आपके उत्तम जीवन हेतु अच्छा वातावरण एवं कार्य कलाप अपनाना चाहिए। परन्तु वर्त्तमान काल आपको उदर विकार एवं मूर्च्छा जनित रोगों के प्रति अति संवेदनशील रहना होगा। आपको कतिपय संभावित रोगादि के प्रति रक्षात्मक प्रवृति रखनी चाहिए। यथा टायफायड, पेचीश एवं बेहोशी मूर्छा जनित आदि रोग आपको स्तम्भित कर सकता है। आपको सतर्कता पूर्वक अतिरिक्त भोजनादि में शाकाहार ग्रहण करना चाहिए। यह आहार-विहार आपके लिए लाभप्रद सिद्ध है।

आप निश्चय ही धनी होकर सुखमय जीवन यापन कर सकते हों परन्तु आपको प्रयत्नशील रहना होगा। आपको नियमितता बरतनी होगी। सम्प्रति आपकी बुद्धि अस्थिर है। प्रायः आपका अस्थिर बुद्धि से अपनी ढुलमुल नीति के अनुसार कोई निर्णय नहीं लेना चाहिए। आपको सर्वप्रथम गम्भीरता पूर्वक अपनी योजना एवं कार्यकलाप के प्रति विचार कर एकाग्रता पूर्वक निर्णयानुसार कार्याम्भ करें।

आपको शीघ्रतापूर्वक धन उपार्जन हेतु अतिरिक्त शक्ति सम्पन्न होना होगा। आप अनुकूल व्यवसायिक कार्यकलाप में धन का विनियोग कर सकते हैं। बहुधा आप ठोस व्यवसाय अपना सकते हैं। आप अपनी उत्तेजनात्मक प्रवृति के प्रति उपेक्षात्मक आचरण का निर्माण करें। आपको अपनी लागत की वापसी हेतु किसी प्रकार की उद्घोषणा करने की आवश्यकता है।

आप भ्रमणशील प्रवृति के प्राणी है तथा बहुधा आप अपने निवास को परिवर्तित करते रहते हैं। कुछ भी हो आप अपनी परिवर्त्तनशील प्रवृति को अटल करें। यह आपके स्वभाव के लिए एक चाभी प्रमाणित होगा। आप अपने अस्थिर रहन-सहन की आदतों को अपूर्ण नहीं रखें अन्यथा यह आपको अति संचालित करता रहेगा। यदि आप अपने जीवन स्तर को उच्चता प्रदान करना चाहते हैं तो आप इस प्रकार की विशेषता का समावेश अपने जीवन में करे।

आपके लिए अंको में सर्वोत्तम अंक 2, 3, 5, 6 एवं 7 अंक है। जीवन के लिए स्वाभाविक है। अंक 1 एवं 8 अंक त्याज्यनीय हैं।

आपके लिए रंग नीला, काला एवं लाल रंग अनुकूल नहीं है। आपको रंगों में पीला, सफेद, हरा एवं सूआपंखी रंग पूर्णतः अनुकूल एवं प्रसन्नतादायक है।

आपके लिए साप्ताहिक वारों में भाग्यशाली दिन बुधवार तथा शुक्रवार है। परन्तु आपको रविवार, गुरूवार, मंगलवार एवं सोमवार के दिनों का परित्याग करना चाहिए क्योंकि ये चारों दिन आपके लिए अनुकूल नही है। शनिवार आप के लिए मध्य फलदायक है।

ग्रह फल

सूर्य

चतुर्थभाव में सूर्य हो तो जातक परमसुन्दर, कठोर, पितृधननाशक, चिन्तास्त, भाईयों से वैर करने वाला, गुप्तविद्या प्रिय एवं वाहन सुखहीन होता है।

धनु राशि में रवि हो तो जातक विवेकी, योगमार्गरत, बुद्धिमान्, धनी, आस्तिक, व्यवहार कुशल, दयालु, शान्त, लोकप्रिय एवं शीघ्र क्रोधित होने वाला होता है।

आपके जन्म काल में सूर्य चतुर्थ भाव में स्थित है। अतः पिता के आप प्रिय होंगे उनका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। धनैश्वर्य से वे सर्वदा युक्त रहेंगे एवं जीवन के समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपका यत्नपूर्वक सहयोग करते रहेंगे। पिता से आपको धन, वाहन तथा अन्य प्रकार से सम्पत्ति अर्जित करते रहेंगे। इसके साथ ही नौकरी तथा व्यापार में भी आप उनसे सहयोग प्राप्त करते रहेंगे तथा उन्हीं के सहयोग से उन्नति भी करेंगे।

आप के मन में उनके प्रति सम्मान एवं आदर का भाव विद्यमान रहेगा एवं उनकी आज्ञा पालन में भी रूचि रहेगी। आपके परस्पर मतभेदों के कारण संबंधों में तनाव उत्पन्न होगा परन्तु वह क्षणिक रहेगा। इसके अतिरिक्त जीवन में आप हमेशा उनके सुख दुःख का भी ध्यान रखेंगे तथा अवसरानुकूल वांछित सहायता भी प्रदान करेंगे।

चन्द्र

बारहवें भाव में चन्द्रमा हो तो जातक मृदुभाषी, चिन्ताशील, एकान्तप्रिय, क्रोधी, कफरोगी, चंचल, नेत्ररोगी एवं अधिक व्यय करने वाला होता है।,

सिंह राशि में चन्द्रमा हो तो जातक दृढ़देही, दाँत तथा पेट का रोगी, मातृभक्त, अल्पसन्ततिवान्, गम्भीर, दानी, साहसी, शान दिखाने वाला अभिमानी, महत्वाकांक्षी एवं पुराने विचारों वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति द्वादश भाव में है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य अच्छा रहेगा तथा यदा कदा कष्टों का भी सामना करना पडेगा। लेकिन आपके प्रति उनके मन में वात्सल्य का भाव रहेगा तथा जीवन में आपको प्रायः यथाशक्ति अपना सहयोग प्रदान करती रहेंगी। आप उनसे अच्छे तथा पुण्य के कार्यों के प्रति प्रवृत होंगे तथा समयानुसार दानादि को भी उन्हीं के कथनानुसार सम्पन्न करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति आदर का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा का पालन आप कुछ अवसरों को छोडकर करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध विशेष मधुर नहीं होंगे क्योंकि आप में काफी मतभेद रहेंगे तथापि सांसारिक संबंधों में कोई तनाव नहीं रहेगा एवं सामंजस्य पूर्वक आप के परस्पर व्यवहार चलते रहेंगे। साथ ही उन्हें कष्ट के समय आप अपनी ओर से पूर्ण सहयोग तथा सहायता अवश्य प्रदान करेंगे।

मंगल

तृतीयभाव में मंगल हो तो जातक कटुभाष, भ्रतृकष्टकारक, प्रदीप्त जठराग्निवाला, बलवान्, बन्धुहीन, सर्वगुणी, साहसी, धैर्यवान् प्रसिद्ध एवं शूरवीर होता है।

वृश्चिक राशि में मंगल हो तो जातक नीति-दक्ष, अच्छी स्मरण शक्ति ईर्ष्यालु स्वभाववाला, बहुतहठी, अभिमानी, चोरों का नेता, पातकी एवं दुराचारी होता है।

आपके जन्म समय में मंगल तृतीय भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा यदा कदा वे शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। शक्ति, साहस तथा पराकम से वे युक्त रहेंगे। साथ ही जीवन में सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको यथायोग्य सहयोग प्रदान करते रहेंगे। धन धान्य से भी वे युक्त रहेंगे एवं समयानुसार आपकी आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे। साथ ही सुख दुःख में आपकी पूरी सहायता करेंगे।

आपके हृदय में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह की भावना रहेगी एवं सर्वदा विषम परिस्थितियों में भी उनका पूर्ण सहयोग करेंगे। आप के परस्पर संबंध मधुर होंगे परन्तु यदा कदा मतवैमिन्यता के कारण उनमें कटुता या तनाव भी उत्पन्न होगा परन्तु वह अल्प समय के लिए रहेगा कुछ समय बाद सब कुछ ठीक हो जाएगा। साथ ही आप सुख दुःख में भी उनको अपनी ओर से पूर्ण सहायता प्रदान करेंगे। इस प्रकार आप भाई बहिनों के सुख मध्यम रूप से ही अर्जित कर सकेंगे।

बुध

पंचमभाव में बुध हो तो जातक उद्यमी, विद्वान्, कवि, प्रसन्न कुशाग्रबुद्धि, गण्य-मान्य, सुखी, वाद्यप्रिय एवं सदाचारी होता है।

मकर राशि में बुध हो तो जातक कुलहीन, दुश्शील, मिथ्याभाषी, ऋणी, मूर्ख, डरपोक, व्यापार में रुचि लेने वाला, किफायतसार, चतुर एवं परिश्रमी होता है।

गुरु

सप्तमभाव में गुरु हो तो जातक सुन्दर, धैर्यवान्, भाग्यवान्, प्रवासी, सन्तोषी, स्त्रीप्रेमी, परस्त्रीरत, ज्योतिषी, नम्र, विद्वान् वक्ता एवं प्रधान होता है।

मीन राशि में गुरु हो तो जातक लेखक, शास्त्रज्ञ, गर्वहीन, राजमान्य, शान्त, व्यवहार कुशल, दयालु, साहित्य प्रेमी, विरासत में धन सम्पत्ति प्राप्त करने वाला, साहसी एवं उच्चपद पर आसीन होता है।

शुक्र

पंचम भाव में शुक्र हो तो जातक विद्वान्, प्रतिभाशाली, वक्ता, कवि, पुत्रवान्,

लाभयुक्त, व्यवसायी, शत्रुनाशक, उदार, दानी, सद्गुणी, न्यायवान् एवं आस्तिक होता है।

मकर राशि में शुक्र हो तो जातक बलहीन, कृपण, ध्दयरोगी, दुखी, मानी, नीच जाति की स्त्रियों में रुचि, सिद्धान्तहीन एवं अनैतिक चरित्र होता है।

शनि

चतुर्थभाव में शनि हो तो जातक अपयशी, बलहीन, धूर्त, कपटी, शीघ्रकोपी, कृशदेही, उदासीन,वातपित्तयुक्त एवं भाग्यवान् होता है।

धनु राशि में शनि हो तो जातक व्यवहारज्ञ, पुत्र की कीर्ति से प्रसिद्ध सदाचारी, वृद्धावस्था में सुखी, सक्रिय, चतुर शान्तिप्रिय, दुःखी विवाहित जीवन एवं धनी होता है।

राहु

सप्तम भाव में राहु हो तो चतुर, लोभी, दुराचारी, दुष्कर्मी वातरोगजनक, भ्रमणशील, व्यापार से हानिदायक एवं स्त्रीनाशक होता है।

मीन राशि में राहु हो तो जातक आस्तिक, कुलीन, शान्त, कलाप्रिय और दक्ष होता है।

केतु

लग्न (प्रथम) में केतु हो तो जातक चंचल मूर्ख दुराचारी, भीरु तथा वृश्चिक राशि में हो तो सुखकारक, धनी एवं परिश्रमी होता है।

कन्या राशि में केतु हो तो जातक सदारोगी, मूर्ख, मन्दाग्निरोग एवं व्यर्थवादी होता है।

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। सामान्यतया कन्या लग्न में उत्पन्न जातक अध्ययनशील प्रवृति के होते हैं । तथा विभिन्न विषयों के ज्ञानार्जन में रूचिशील रहते हैं। अतः समाज में एक विद्वान के रूप में इनकी प्रतिष्ठा रहती है। सदगुणों से ये युक्त रहते हैं परन्तु स्त्रियों के प्रति इनके मन में विशेष आकर्षण रहता है। भाग्य इनका प्रबल रहता है एवं सौभाग्य से इनके सभी सांसारिक महत्व के कार्य सिद्ध होते हैं फलतः इच्छित धनैश्वर्य एवं भौतिक सुखों का उपभोग करने में समर्थ रहते हैं। ये बुद्धिमान व्यक्ति होते हैं तथा अपनी तीव्र बुद्धि के द्वारा कठिन से कठिन समस्या का समाधान करने में समर्थ रहते हैं। अतः सरकारी कार्यों या प्रशासनिक क्षेत्रों में इनका महत्वपूर्ण योगदान रहता है इनमें भावुकता की न्यूनता रहती है तथा सभी महत्वपूर्ण कार्य ये बुद्धिबल से सम्पन्न करते हैं।

अतः इसके प्रभाव से आपका व्यक्तित्व आकर्षक होगा तथा अन्य जनों को प्रभावित करने में समर्थ होंगे। अध्ययन के प्रति आप रूचिशील रहेंगे तथा लेखन मनोविज्ञान या आलोचना के क्षेत्र में सफलता अर्जित करेंगे। आपकी बुद्धि भी तीव्र होगी तथा विषम समस्याओं को समझने तथा समाधान करने में समर्थ होंगे। अतः सरकारी या प्रशासनिक क्षेत्रों में आप कार्यरत हो सकते हैं।

आप एक गुणवान व्यक्ति होंगे तथा समाज में सम्मानित एवं प्रतिष्ठित रहेंगे। स्वभाव से आप शांत एवं उदार होंगे तथा सभी कार्य बुद्धिमतापूर्ण ढंग से सम्पन्न होंगे। जीवन में धनैश्वर्य एवं सुख संसाधनों का उपयोग करते हुए सुख एवं शांति की अनुभूति करेंगे।

लग्न में केतु की स्थिति के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा मानसिक उद्विग्नता से आपको परेशानी की अनुभूति हो सकती है। आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया अच्छा रहेगा तथा सुख पूर्वक समय व्यतीत करेंगे। बचपन में आपका समय संघर्षपूर्ण रहेगा परन्तु युवावस्था के बाद आप सुख एवं समृद्धि प्राप्त करने में समर्थ होंगे। संतति से आप युक्त रहेंगे तथा उनसे आपको सुख एवं सहयोग प्राप्त होता रहेगा। आप एक पराक्रमी पुरूष होंगे तथा स्वपराक्रम परिश्रम एवं योग्यता से सांसारिक कार्यों में सफलता प्राप्त करेंगे। साथ ही कार्यक्षेत्र में भी उन्नति एवं प्रतिष्ठा अर्जित करेंगे।

आप में तेजस्विता का भाव भी विद्यमान रहेगा। अतः यदा कदा आप उग्रता के भाव का भी प्रदर्शन करेंगे। अन्य सामाजिक जनों के प्रति आपके मन में उदारता का भाव होगा तथा समयानुसार परोपकार सम्बन्धी कार्यों में भी इच्छा रहेगी। कार्यक्षेत्र में आप प्रभावशाली व्यक्ति होंगे तथा सभी लोग आपको यथोचित आदर प्रदान करेंगे।

धर्म के प्रति आपकी सामान्य श्रद्धा रहेगी तथा अल्प मात्रा में ही धार्मिक कार्यकलापों को सम्पन्न करेंगे। मित्र वर्ग में आपकी लोकप्रियता रहेगी तथा उनसे आपको अनुकूल लाभ एवं सहयोग मिलता रहेगा। इसके साथ ही आप अपने पराक्रम तेजस्विता, बुद्धिमता तथा योग्यता से इच्छित सम्मान प्राप्त करेंगे सुखपूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म काल में द्वितीय भाव में तुलाराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है । अतः इसके प्रभाव से आपका पारिवारिक जीवन सुख शान्ति एवं समृद्धि से युक्त रहेगा तथा समस्त पारिवारिक जन परस्पर प्रेम पूर्वक रहेंगे तथा एक दूसरे को अपना पूर्ण सुख एवं सहयोग प्रदान करेंगे। आपकी वाणी अत्यंत ही मृदु एवं प्रभावशाली रहेगी तथा अन्य जनों को अपनी वाणी से प्रभावित करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही वाक्चातुर्य से कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को सिद्ध करने में भी सफल होंगे। रहेंगे। प्रौढ़वास्था में आपको अल्प मात्रा में नेत्र संबंधी कष्ट प्राप्त हो सकते है।

धर्म के प्रति आपके मन में पूर्ण आस्था रहेगी तथा समय समय पर धार्मिक एवं अन्य शुभ मांगलिक कार्यो को सम्पन्न करते रहेंगे। साथ ही अन्य उत्सवों का आयोजन करने में भी आपकी रूचि रहेगी। जीवन में आपको पैतृक सम्पति की प्राप्ति होगी तथा अपने प्रयत्न एवं परिश्रम से भी आप वांछित धनऐश्वर्य तथा वैभव अर्जित करेंगे। पारिवारिक जनों को प्रसन्नता तथा सुविधा प्रदान करने के लिए आप हमेशा यत्नशील रहेंगे। इसके अतिरिक्त समाज में आप एक आदरणीय पुरूष होंगे तथा सौभाग्य बल से आपका जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा। साथ ही व्यापार संबंधी लाभ भी समय समय पर होता रहेगा।

पराक्रम, सहोदर, प्रकाशन एवं लघुयात्राएं

आपके जन्म समय में तृतीय भाव में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आपकी स्मरण शाक्ति प्रबल रहेगी तथा किसी भी वस्तु या विषय को याद करने में दीर्घकाल तक समर्थ रहेंगे। आप एक आत्म विश्वासी, साहसी तथा पराक्रमी पुरूष होंगे तथा अपने इन्हीं गुणों से युक्त होकर समस्त सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को सम्पन्न करेंगे तथा इनमें आपको इच्छित सफलता भी प्राप्त होगी। मंगल के प्रभाव से आपकी निर्णय लेने की शक्ति दृढ़ रहेगी तथा मस्तिष्क भी हमेशा सक्रिय एवं सजग रहेगा।

चूंकि मंगल भाई बहिनों तथा भूमि संबंधी जायदाद का कारक है। अतः भाई बहिनों से युक्त रहकर उनका पूर्ण सुख, सहयोग प्राप्त करेंगे तथा वे भी आपको पूर्ण सहयोग तथा सम्मान प्रदान करेंगे एवं आपके प्रति हमेशा कर्तव्य परायण तथा विश्वसनीय रहेंगे। अतः उनकी गलतियों को आप समय समय पर क्षमा करते रहेंगे। साथ ही भूमि एवं जायदाद आदि से युक्त रहेंगे तथा इससे आपको प्रचुर लाभ तथा सुख प्राप्त होगा। आप एक साहसी तथा पराक्रमी व्यक्ति होंगे अतः परेशानियों, कोधावस्था तथा अनावश्यक वाद विवाद आदि के समय स्वयं को नियंत्रित करने में समर्थ रहेंगे। आपकी नेतृत्व.प्रतिभा तथा अन्य सामाजिक गुणों से लोगों के मध्य अपना वर्चस्व बनाएं रखने में सफल रहेंगे। साथ ही संचार संबंधी उपकरणों की भी आपको प्राप्ति होगी एवं सुख पूर्वक इनका उपभोग करेंगे। संगीत के प्रति भी समय समय पर आप अपनी रूचि का प्रदर्शन करेंगे। दूर समीप की यात्राओं से भी आप लाभ तथा मित्रों को प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे। परन्तु मित्रों से आपको सतर्क भी रहना चाहिए ।इसके अतिरिक्त आप पराक्रमी कार्यो को सम्पन्न करेंगे तथा अन्य जनों से भी यदाकदा विवाद भी हो सकता है अतः सतर्क रहें।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्मसमय में चतुर्थ भाव में धनुराशि हो रही थी जिसका स्वामी वृहस्पति है तथा सूर्य भी मित्रराशि में चतुर्थभाव में ही स्थित है। अतः इसके शुभ प्रभाव से जीवन में आप समस्त सांसारिक सुखों को प्राप्त करने में समर्थ होंगे। आधुनिक एवं भौतिक सुख-संसाधन भी आपको प्राप्त होंगे जिसका आप आनंदपूर्वक उपयोग करेंगे। आप एक बुद्धिमान एवं शिक्षित व्यक्ति होंगे फलतः इन गुणों से आप सुख-संसाधन अर्जित करने में समर्थ होंगे। समाज में आपका स्तर सम्मानीय होगा तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे।

आप एक भाग्यशाली व्यक्ति होंगे तथा चल एवं अचल सम्पत्ति का स्वामित्व भी आपको मिलेगा। पिता के द्वारा भी आपको प्रचुर मात्रा में चल एवं अचल सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। अपने परिश्रम एवं योग्यता से भी चल एवं अचल सम्पत्ति अर्जित करने में समर्थ होंगे। आपको चल सम्पत्ति से शीघ्र लाभ होगा अतः आप समय समय पर पूंजी निवेश करके इसमें वृद्धि कर सकते है।

जीवन में आप उत्तम घर से युक्त होंगे तथा यह विस्तृत एवं आधुनिक रूप से सुसज्जित होगा तथा सभी आवश्यक उपकरण इसमें विद्यमान होगा। आपका घर किसी अच्छी कालोनी में होगा तथा पड़ोसी भी शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगे तथा आपसी संबंधों में भी मधुरता बनी रहेगी। आप उत्तम वाहन से भी युक्त होंगे तथा सुखपूर्वक इसका उपयोग करेंगे। इसके अतिरिक्त पिता या सरकार के द्वारा प्रदत्त वाहन से भी युक्त होंगे।

आपकी माताजी तेजस्वी, शिक्षित एवं बुद्धिमान महिला होंगी तथा अपने उत्तम कार्य कलापों से सबको प्रभावित करेंगी। परिवार के सदस्यों का वह पूर्ण ध्यान रखेगी तथा अपनी ओर से किसी को भी कोई कष्ट नहीं होने देंगी। परिवार के सदस्य भी उन्हें यथोचित मान- सम्मान प्रदान करेंगे। आपके प्रति उनके मन में प्रबल वात्सल्य का भाव होगा तथा समय समय पर उनसे आपको नैतिक एवं आर्थिक सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी। आपकी उन्नति एवं शिक्षा के क्षेत्र में उनका प्रमुख योगदान होगा। आप भी माता का पूर्ण सम्मान करेंगे तथा सुख-दुःख में उनका पूर्ण ध्यान रखेंगे इससे परस्पर सामंजस्य बना रहेगा एवं संबंधों में भी मधुरता विद्यमान होगी।

आप प्रारंभ से ही अध्ययनशील प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा स्वपरिश्रम एवं बुद्धिमता से शिक्षा में सफलता अर्जित करेंगे। प्रारंभिक कक्षाओं से ही आप अच्छे अंको से परीक्षाएं उतीर्ण करेंगे तथा स्नातक परीक्षा भी ससम्मान उतीर्ण करेंगे। इससे आपके आत्म-विश्वास में वृद्धि होगी तथा भविष्य में उन्नति के लिए तत्पर होंगे। इसके अतिरिक्त आप किसी व्यावसायिक शिक्षा में डिग्री भी अर्जित कर सकते है जिससे आपका भविष्य उज्ज्वल होगा।

चतुर्थ भाव में नैसर्गिक, तेजस्वी ग्रह सूर्य के प्रभाव से मध्यावस्था के बाद आपको न्यूनाधिक रूप से रक्त चाप या हृदय संबंधी परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। अतः पथ्यापथ्य का यदि आप उचित ध्यान रखें तो इन परेशानियों से आप मुक्त हो सकते है।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्मसमय में पंचमभाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। तथा शुक्र भी नवमेश होकर पंचमभाव में ही स्थित है। अतः इसके प्रभाव से आप तीव्र बुद्धि के स्वामी होंगे तथा अपने समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को बुद्धिमता से सम्पन्न करेंगे जिससे सभी लोग आपसे प्रभावित होंगे। आपमें शीघ्र एवं सही निर्णय लेने की अपूर्व क्षमता होगी तथा गंभीर से गंभीर समस्या का आप चतुराई एवं आसानी से समाधान करेंगे। वैदिक साहित्य एवं दर्शन शास्त्र के प्रति भी आपकी रूचि होगी तथा यत्नपूर्वक इसके ज्ञानार्जन में तत्पर होंगे। साहित्य संगीत एवं कलात्मक क्षेत्रों में भी आप अपनी रूचि रखेंगे एवं इन क्षेत्रों में ज्ञानार्जन करके अपनी विद्वता प्रतिष्ठा एवं सम्मान में वृद्धि करेंगे। इसके अतिरिक्त पाश्चात्य साहित्य का आपको प्रचुर मात्रा में ज्ञान होगा।

पंचमभाव में शुक्र की स्थिति के प्रभाव से प्रेम-प्रसंगों में आप की काफी रूचि होगी तथा अपने मनोरंजन के लिए आप ऐसे संबंधों को स्थापित करते रहेंगे। ऐसे संबंधों से आपके मन में नवीन स्फूर्ति का संचार होगा तथा पूर्ण सन्तुष्टि की प्राप्ति करेंगे। लेकिन यदि आप प्रेम-प्रसंगों में मर्यादा या नैतिकता की उपेक्षा करेंगे तो इससे आपको अनावश्यक समस्या एवं परेशानी हो सकती है।

शुक्र की पंचमभाव की स्थिति के प्रभाव से आपको यथोचित समय पर सन्तति की प्राप्ति होगी परन्तु कन्या सन्तति अधिक हो सकती है। आपके सभी बच्चे विनम्र, परिश्रमी, बुद्धिमान एवं योग्य होंगे तथा अपने इन्हीं गुणों से जीवन में वांछित उन्नति एवं सफलताएं अर्जित करेंगे। माता-पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण सम्मान होगा तथा उनके आज्ञापालन में वे सर्वदा तत्पर होंगे। वे समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को माता-पिता की आज्ञा एवं सलाह से सम्पन्न करेंगे। इससे परस्पर विश्वास एवं सदभाव बना रहेगा। इसके अतिरिक्त वृद्धावस्था में बच्चे आपकी तन-मन-धन से पूर्ण सेवा करेंगे तथा आपको अपनी ओर से किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे। इस प्रकार बच्चों के संदर्भ में आप भाग्यशाली समझे जायेंगे।

शिक्षा के क्षेत्र में आपकी सन्तति बुद्धिमान एवं प्रतिभाशाली सिद्ध होगी तथा वे प्रारंभ से ही अच्छी उन्नति एवं सफलता का प्रदर्शन करेंगे। आप भी उनकी शिक्षा का उत्तम प्रबन्ध करेंगे एवं अपनी ओर से किसी भी प्रकार की कमी नहीं होने देंगे तथा उन्हें आधुनिक परिवेश में शिक्षा प्रदान करेंगे। आपके बच्चे बुद्धिमान, चतुर एवं व्यवहार कुशल होंगे तथा अन्य सामाजिक जनों को अपने विनम्र व्यवहार एवं उत्तम कार्य-कलापों से प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रखेंगे तथा सामाजिक लोग भी बच्चों को यथोचित स्नेह एवं प्रोत्साहन देंगे जिससे आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

रोग, शत्रु, सेवक एवं मामा

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में कुम्भराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आपका स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा तथा आयु भी दीर्घ होगी। आप एक दयालु तथा सद्प्रवृत्ति के व्यक्ति होंगे परन्तु कभी कभी अपने वार्तालाप में कठोर शब्दों का भी प्रयोग कर सकते हैं। इससे कई लोग आपसे विरोध की भावना रखेंगे। साथ ही लोग आपकी खुशहाली तथा वैभव से ईर्ष्या के कारण भी आपसे शत्रुता का भाव रखेंगे। यद्यपि आप उच्च मान सम्मान प्राप्त करेंगे परन्तु आपका विरोध भी प्रबल रहेगा। आप अपने पारिवारिक सदस्यों पर अत्यधिक व्यय करेंगे तथा इसी परिपेक्ष्य में आपको ऋण आदि भी लेना पड़ सकता है। इससे यदा कदा ऋण मुक्ति में विलम्ब के कारण सम्बन्धित व्यक्ति से आपकी शत्रुता होने की संभावना रहेगी लेकिन अपनी प्रतिभा तथा अधिकार के बल पर आप इन समस्याओं पर विजय प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे।

आपके नौकर आज्ञाकारी होंगे तथा ईमानदारी से आपकी सेवा करते रहेंगे तथा अपने कार्य से आपको वे सन्तुष्ट रखेंगे लेकिन यदा कदा इनसे सामान्य हानि की संभावना रहेगी अतः सतर्क रहना चाहिए। मुकद्दमे आदि के कार्यो में आप लापरवाह रहेंगे। अतः आपको ऐसे मामलों का सावधानी पूर्वक अवलोकन करना चाहिए तथा अपने हिसाब को सही रखना चाहिए। इस प्रकार यदि आप सावधानी पूर्वक अपने इन कार्यो को सम्पन्न करेंगे तो आपको किंचित इसमें विजय प्राप्त होगी। साथ ही फौजदारी मामलों में आप सफलता अर्जित करेंगे।

आपके मामा मामियों से संबंध विशेष अच्छे नहीं रहेंगे प्रत्यक्ष रूप से वे आपके प्रति अपनत्व की भावना का प्रदर्शन करेंगे परन्तु अप्रत्यक्ष रूप से उनकी आपके लाभ या सहयोग में कोई रूचि नहीं रहेगी अतः संबंधों में मधुरता रखने के लिए बुद्धिमता का प्रयोग करें इसके अतिरिक्त आप वृद्धावस्था में उदर या गुर्दे संबन्धी परेशानी से भी पीड़ित हो सकते हैं। अतः खान पान संबंधी परहेज भी रखना चाहिये।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है तथा बृहस्पति भी सप्तम भाव में ही स्थित है। सामान्यतया मीन राशि की सप्तम भाव में स्थिति जातक का सहयोगी सुशील आस्तिक एवं धनवान होता है एवं बृहस्पति के प्रभाव से वह शिक्षित बुद्धिमान विद्वान एवं सांसारिक कार्यो में दक्ष रहता है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी शिक्षित बुद्धिमान तथा सुशील स्वभाव की विदुषी महिला होंगी तथा धर्म के प्रति उनके मन में पूर्ण श्रद्धा का भाव रहेगा। सांसारिक कार्य कलापों को करने में वह पूर्ण निपुण होंगी तथा अपने उत्कृष्ट कार्यो से सभी जनों को प्रभावित करेंगी। बृहस्पति के प्रभाव से उनमें कर्तव्य परायणता का भाव भी विद्यमान होगा तथा समाज एवं परिवार के प्रति ईमानदारी से अपने कर्तव्यों का पालन करेंगी।

आपकी पत्नी सुंदर आकर्षक एवं गौरवर्ण की महिला होंगी तथा उनका कद भी मध्यम रहेगा। शारीरिक संरचना उनकी दर्शनीय होगी तथा शारीरिक अंग प्रत्यंग भी सुडौल तथा पुष्ट रहेंगे जिससे उनके सौन्दर्य में वृद्धि होगी तथा शरीर में भी निखार आएगा। स्वगृही बृहस्पति के प्रभाव से वह आकर्षक शारीरिक संरचना से युक्त रहेंगी परन्तु आयु के साथ साथ स्थूलता आ सकती है इसके अतिरिक्त उच्च कोटि के साहित्य के अध्ययन में रूचिशील होंगी तथा संगीत एवं कला के प्रति भी आकर्षण रहेगा।

आपका विवाह परिवार के श्रेष्ठ व्यक्ति या प्रभावशाली संबंधी के माध्यम से होगा। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन पूर्ण रूप से सुखी रहेगा तथा एक दूसरे के प्रति पूर्ण सम्मान सद्भाव तथा प्रेम का व्यवहार रहेगा साथ ही सांसारिक महत्व के कार्यो का आपसी सहयोग तथा सहमति से सम्पन्न करेंगे क्योंकि आप दोनों विद्वान एवं शिक्षित होंगे तथा जीवन के मूल्यों एवं सिद्धांतों में समानता रहेगी जिससे संबंधों में भी मधुरता होगी।

आपका विवाह किसी शिक्षित एवं प्रभावशाली परिवार में होगा तथा सामाजिक रूप से वे प्रतिष्ठित होंगे। विवाह के बाद आपके सास ससुर से मधुर संबंध रहेंगे एवं उनको यथोचित मान सम्मान प्रदान करेंगे साथ ही वे भी आपको पुत्रवत स्नेह देंगे एवं अपना नैतिक सहयोग हमेशा प्रदान करेंगे।

सास ससुर के प्रति आपकी पत्नी का पूर्ण सेवा भाव रहेगा तथा सुख दुख में उनका पूर्ण ध्यान रखेंगी। साथ ही देवर एवं ननदों को भी वे अपने सद्व्यवहार मधुरवाणी तथा विद्वता से प्रभावित रखेंगी तथा वे भी उन्हें वांछित सम्मान एवं सहयोग प्रदान करेंगे। इससे परिवार में सुख शांति बनी रहेगी।

व्यापार या अन्य महत्वपूर्ण कार्यो में साझेदारी के लिए स्थिति शुभ रहेगी तथा इससे आपको वांछित लाभ होगा। यदि अपनी आयु से अधिक आयु के व्यक्ति के साथ साझेदारी की जाए तो उसमें विशिष्ट उन्नति होगी एवं आपस में विश्वास का भाव भी बना रहेगा ।

आयु, दुर्घटना एवं बीमा

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में मेष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आपका ज्यौतिष या तंत्र मंत्र अथवा आध्यात्मिकता के प्रति विशेष रूचि या श्रद्धा नहीं रहेगी। इसका मुख्य कारण यह होगा कि आप अपने कार्य क्षेत्र में व्यस्त रहेंगे तथा परिश्रम एवं पराक्रम से अपने कार्यो को सम्पन्न करेंगे। साथ ही अन्यत्र भी अपने कार्य कलापों में संलग्न रहेंगे जिससे आपके पास समयाभाव रहेगा। यदि आपके पास समय बचा तो आप इसको खेल आदि में व्यतीत करना अधिक उचित समझेंगे। लेकिन यदा कदा आध्यत्म संबन्धी प्रवचनों का श्रवण कर सकते हैं। आप पैतृक सम्पत्ति से जीवन में लाभ अवश्य अर्जित करेंगे। आप एक भाग्यवान पुरूष होंगे तथा विस्तृत जमीन जायदाद के स्वामी बनेंगे। यदि आप इसे बेचना भी चाहेंगे तो इसमें आपको मनोवांछित लाभ की प्राप्ति होगी। साथ ही दिन पर दिन इसकी कीमत में वृद्धि होगी। अतः आप इच्छित कीमत पर इसे बेचकर प्रचुर मात्रा में लाभ अर्जित करने में समर्थ रहेंगे ।

आप शादी के समय दहेज या अन्य प्रकार के उपहारों को इच्छित मात्रा में प्राप्त करेंगे। यद्यपि आपके स्तर के अनुसार इसमें प्रचुरता नहीं होगी फिर भी इसके द्वारा आप अपने रहन सहन आदि के स्तर में वृद्धि करने में समर्थ सिद्ध होंगे। बीमा आदि से भी आपको लाभ होगा तथा समय समय पर स्वयं का तथा अन्य वस्तुओं यथा वाहन मकान आदि का भी बीमा करवाएंगे। आपकी कुडंली में घर में चोरी या डकैती के कोई योग नहीं बनते है। यदि ऐसी घटनाएं हो जाएं तो वह सामान्य होगी तथा तथा इसमें चिन्ता करने की कोई बात नहीं होगी क्योंकि आप बहुमूल्य वस्तुओं को पहले ही सुरक्षित स्थान पर रख देंगे। आपकी आयु लम्बी रहेगी तथा सामान्यतया आनन्द पूर्वक समय व्यतीत करेंगे।

प्रसिद्धि, पूजा, उच्चशिक्षा एवं लम्बी यात्राएं

आपके जन्म समय में नवम भाव में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से आप धार्मिक प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा यह धार्मिकता आपको पैतृक एवं पारिवारिक संस्कारों के रूप में प्राप्त होगी। धार्मिक कार्य कलापों को आप श्रद्धा पूर्वक सम्पन्न करेंगे तथा दैनिक पूजा के प्रति भी रूचिशील रहेंगे। यद्यपि युवावस्था में आप दैनिक पूजा अल्प मात्रा में ही सम्पन्न कर पाएंगे। लेकिन ईश्वर के प्रति आपके मन में पूर्ण आस्था विद्यमान रहेगी। आप आध्यात्म तथा ध्यान योग के प्रति पूर्ण इच्छुक रहेंगे तथा उपरोक्त विषयों के ग्रंथों का रूचिपूर्वक अध्ययन करके ज्ञानार्जित करेंगे। आपकी अर्न्तप्रज्ञा शक्ति भी उत्तम रहेगी तथा ज्यौतिष तंत्र मंत्र या हस्तविज्ञान का आपको उत्तम ज्ञान रहेगा या इनके प्रति श्रद्धा रहेगी तथा आपकी अधिकाशं भविष्यवाणियां सही होंगी। अन्तर्प्रज्ञा की वृद्धि के लिए आप समय समय पर ध्यान या पूजा का विशिष्ट आयोजन करेंगे।

आप उच्च शिक्षा अर्जित करेंगे तथा इसके द्वारा आपको समाज में मान सम्मान तथा कीर्ति प्राप्त होगी। साथ ही तीर्थ स्थानों की शुभ यात्राएं करने में भी इच्छुक रहेंगे तथा इन यात्राओं से लाभ ज्ञान तथा सम्मान अर्जित होगा। वैदिक साहित्य में भी आपकी रूचि रहेगी तथा वृद्धावस्था में अपना अधिकांश समय भजन कीर्तन में व्यतीत करेंगे। आपको वैभव शाली तथा विश्राम पूर्ण जीवन व्यतीत करना अच्छा लगेगा। साथ ही अपने परिश्रम एवं सौभाग्य से ऐश्वर्य पूर्ण जीवन व्यतीत करने में समर्थ रहेंगे। आपको अपने पौत्रों के द्वारा सुख सहयोग एवं आनंद की प्राप्ति होगी। वास्तव में आप ने पूर्व जन्म में कई पुण्य के कार्य किए जिससे आपका यह जीवन सर्व सम्पति से युक्त होकर व्यतीत होगा। इसके अतिरिक्त आप दीनों की सहायता करने वाले दानी, सर्व अलंकारों से युक्त तथा अतिथि सेवा में तत्पर रहकर धार्मिक प्रवृति के व्यक्ति होंगे।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशम भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। मिथुन राशि वायु तत्व प्रधान है। अतः इनके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया प्रधान होगा तथा श्रमसाध्य के भाव की इसमें न्यूनता होगी। साथ ही आप किसी स्वतंत्र कार्य करने के इच्छुक होंगे तथा इसमें सामयिक परिवर्तन भी करेंगे जिससे वांछित लाभ के प्रबल योग बनेंगे।

आपके लिए आजीविका संबंधी क्षेत्र शिक्षक या व्यख्याता, अनुष्ठान कार्य, धर्मोपदेशक प्रोफेसर, वकील, न्यायधीश, बैंक अधिकारी, शेयर ब्रोकर, सरकारी विभाग में सचिव, सलाहकार तथा प्रशासानिक क्षेत्र उत्तम एवं अनुकूल रहेंगे। इन क्षेत्रों में कार्य करने से आपको वांछित उन्नति एवं सफलता की प्राप्ति होगी तथा अनावश्यक समस्याओं एवं व्यवधानों से सुरक्षित रहेंगे। अतः यदि आप आजीविका क्षेत्र में वांछित सफलता तथा प्रसिद्धि प्राप्त करना चाहते है तो उपरोक्त क्षेत्रों में ही अपनी आजीविका का चयन करना चाहिए।

व्यापारिक क्षेत्र में आपके लिए सुवर्ण आदि धातु व्यापार, शेयर क्रय विक्रय का कार्य, वित्तीय संस्था द्वारा, ब्याज द्वारा आप वांछित लाभ एवं धन अर्जित करने में समर्थ होंगे। इसके साथ ही कम्पनी के स्वामित्व, वकील का स्वतंत्र व्यवसाय तथा किसी संस्था के स्वामित्व से भी आपको इच्छित लाभ एवं धन की प्राप्ति होगी। अतः यदि आप व्यापारिक क्षेत्र में उन्नति एवं सफलता बिना किसी समस्याओं एवं व्यवधानों के प्राप्त करना चाहते है तो उपरोक्त क्षेत्रों में ही व्यापार का प्रारंभ करना चाहिए।

जीवन में आपको इच्छित मान प्रतिष्ठा एवं सम्मान की प्राप्ति होगी तथा किसी उच्चाधिकार प्राप्त पद को अर्जित करने में भी सफल होंगे। समाज में आप एक प्रभावशाली व्यक्ति होंगे तथा सभी लोग आपको वांछित आदर प्रदान करेंगे। साथ ही समाज में आपकी प्रसिद्धि भी दूर दूर तक व्याप्त होगी। इसके अतिरिक्त आप किसी सामाजिक या शैक्षणिक संस्था में किसी सम्मानित पदाधिकारी के रूप में भी कार्य कर सकते हैं। इससे आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा मानसिक सन्तुष्टि मिलेगी।

आपके पिता जी शिक्षित विद्वान एवं प्रभावशाली व्यक्ति होंगे तथा सामाजिक जनों के मध्य उनका पूर्ण आदर रहेगा एवं लोगों को वे अपना सहयोग प्रदान करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके प्रति उनका पूर्ण वात्सल्य का भाव होगा तथा शिक्षा का उच्चस्तर पर समुचित प्रबंध करेंगे। साथ ही कार्यक्षेत्र में उन्नति तथा सफलता में उनका प्रमुख योगदान होगा तथा इससे आपके प्रभाव में वृद्धि होगी। आप भी अपने बुद्धिमतापूर्ण उत्तम कार्य कलापों से पिता के मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि करेंगे। आपके आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी तथा समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य एक दूसरे की सलाह एवं सहयोग से सम्पन्न करेंगे साथ ही सैद्धान्तिक तथा वैचारिक समानता भी विद्यमान होगी जिससे आप सुख पूर्वक अपना जीवन यापन करेंगे।

लाभ, मित्र, समाज एवं ज्येष्ठ भ्राता

आपके जन्म समय में एकादश भाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्रमा है। अतः इसके प्रभाव से आप अपने परिश्रम एवं पराक्रम के द्वारा उचित मात्रा में धनार्जन करने में समर्थ रहेंगे तथा आर्थिक क्षेत्र में भी सौभाग्यशाली रहेंगे। माता के द्वारा या सहयोग से आपके आय स्रोतों में वृद्धि होगी जिससे आप प्रचुर मात्रा में लाभ प्राप्त करेंगे। साथ ही समुद्र से उत्पन्न पदार्थो या रत्न आदि के अतिरिक्त कार्य से भी आप प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगे। आप एक महत्वाकांक्षी व्यक्ति होंगे तथा मन में कई प्रकार की इच्छाएं विद्यमान रहेंगी जिसको जीवन में पूर्ण करने में भी समर्थ रहेंगे।

आपकी कुंडली के अनुसार ज्येष्ठ भाइयों की अपेक्षा बहिनों से आपके मधुर संबंध रहेंगे तथा उनसे आपको पूर्ण सुख सहयोग एवं स्नेह की प्राप्ति होगी। माता की ओर से भी आपको उचित स्नेह मिलेगा तथा उनकी कृपा दृष्टि हमेशा आपके ऊपर बनी रहेगी। आपकी मित्रता का क्षेत्र भी अच्छा रहेगा तथा मित्रों के मध्य आप सम्मानीय प्रतिष्ठित तथा ख्याति प्राप्त रहेंगे। साथ ही आपके सभी मित्र गुणवान शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगे अवस्था के साथ साथ समाज, मित्र मंडल एवं अन्य जनों के लिए आपके मन में अपनत्व की भावना उत्पन्न होगी तथा अपनी ओर से उन्हें आप पूर्ण स्नेह देंगे। साथ ही अवसरानुकूल उनकी सहायता के लिए भी तत्पर रहेंगे। आप पारिवारिक व्यक्ति होंगे तथा घर में परिवार के साथ अतिरिक्त समय व्यतीत करना आपको अच्छा लगेगा। साथ ही सामाजिक सम्मान एवं ख्याति के भी योग बनते है जीवन में यदा कदा कार्य क्षेत्र में आपको परेशानी हो सकती है परन्तु सामान्य जीवन सुख एवं आनन्द पूर्वक व्यतीत होगा।

विदेश यात्रा, हानि, बन्धन एवं कर्ज

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है। अतः इसके प्रभाव से आपका व्यापार सुदृढ़ रहेगा तथा भूमि से संबंधित उत्पादों से आपको आर्थिक लाभ होता रहेगा। आप शीघ्रातशीघ्र धनवान होने की मन में इच्छा करेंगे अतः उद्देश्य की पूर्ति के लिए अत्यंत ही परिश्रम करेंगे। आर्थिक क्षेत्र में आप अत्यधिक सतर्क रहेंगे तथा पैसा कहां से आकर कहां जा रहा है इसका पूर्ण ध्यान रखेंगे। अतः प्रायः शुभ व्यय ही करेंगे एवं वह भी अत्यधिक सोच विचार के बाद। इस प्रवृति से आप पूंजीनिवेश में अधिक धन लगाएंगे तथा बचत भी बनी रहेगी। इस प्रकार आप मध्यमवस्था तक एक धनवान पुरूष के रूप में समाज के मध्य अपने आपको स्थापित करने में समर्थ हो सकेंगे।

आपके पास धन हमेशा रहेगा तथा बैंक में आपकी स्थिति सम्माननीय रहेगी। आपके पास व्यसन अल्प मात्रा में ही होंगे जिससे अनावश्यक व्यय से हमेशा सुरक्षित रहेंगे परिवार के प्रति आप अपनी पूर्ण जिम्मेदारी समझेंगे तथा उनकी सुख सुविधाओं के लिए समय समय पर आवश्यक व्यय करेंगे। साथ ही बच्चों का रहन सहन, खान पान एवं पठन पाठन पर भी विशेष व्यय करेंगे।

आपको यात्रा करना रूचिकर लगेगा वैसे भी आपकी भ्रमण प्रिय प्रवृति रहेगी। आपकी यात्राएं व्यवसाय से ही सम्बन्धित होंगी। साथ ही यदाकदा धूमने के लिए या दर्शनीय स्थानों की सैर के लिए भी आप सपरिवार यात्राएं सम्पन्न कर सकते है। इसके अतिरिक्त जीवन में एक बार आप विदेश भ्रमण पर जाएंगे यात्राओं से आपको लाभ एवं सफलता प्राप्त होगी। इस प्रकार प्रसन्नता पूर्वक आप अपना समय व्यतीत करेंगे।

नक्षत्रफल

आपका जन्म पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र के प्रथम चरण में हुआ हैं। अतः आपकी जन्म राशि सिंह तथा राशि स्वामी सूर्य होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका गण मनुष्य, योनि मूषक, वर्ग मूषक, नाड़ी मध्य तथा वर्ण क्षत्रिय होगा। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "मो" अक्षर से होगा। यथा- मोहनलाल।

आप अपने जीवन में विद्यार्जन करने में पूर्ण रूपेण सफल रहेंगे। आपकी प्रकृति गम्भीर होगी तथा कार्यों को गम्भीरता से सम्पन्न करेंगे। स्त्री वर्ग के आप अत्यन्त प्रिय होंगे। साथ ही अपने जीवन में समस्त सुखों के उपभोग करने में आप सफल रहेंगे तथा श्रेष्ठ विद्वान भी आपको सम्मान तथा आदर प्रदान करेंगे।

विद्या गोधन संयुक्तो गम्भीरः प्रमदाप्रियः।
पूर्वाफाल्गुनिकां जातः सुखी पंडित पूजितः।।
मानसागरी

अर्थात् पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र में उत्पन्न जातक विद्या, गौ एवं धन से सम्पन्न, गम्भीर प्रकृति वाला, स्त्रियों का प्रिय, सुखी तथा विद्वानों द्वारा पूजनीय होता है।

आपकी वाणी अत्यन्त ही प्रिय लगने वाली होगी जो दूसरों को प्रसन्नता प्रदान करेंगी। आप एक व्यवहार कुशल पुरूष होंगे तथा अपने व्यवहार से अन्य जनों को प्रभावित करने में सफलता प्राप्त करेंगे। आपके मन में दानशीलता की प्रवृति भी विद्यमान रहेगी तथा अवसरानुकूल आप इस प्रवृति का प्रदर्शन करते रहेंगे। साथ ही आपका शरीर भी कान्ति से युक्त रहेगा। आप यात्रा तथा भ्रमण करने के लिए अत्यन्त उत्सुक तथा रूचिशील रहेंगे। इसके अतिरिक्त राजकीय सेवा में भी आप सदैव तत्पर रहेंगे।

प्रियवाग्दाता द्युतिमानटनो नृपसेवको भाग्ये।
बृहज्जातकम्

अर्थात पूर्वाफाल्गुनी में उत्पन्न जातक प्रिय वक्ता, व्यवहारज्ञ, दानप्रिय, कान्तियुक्त शरीर वाला, यात्रा प्रिय तथा राज्य में राजसेवक होता है।

आपकी प्रकृति चंचलता से युक्त रहेगी तथा कठोर कर्मों की ओर आपकी प्रवृति अधिक मात्रा में विद्यमान रहेगी। साथ ही आप त्याग की भावना से भी ओत प्रोत रहेंगे। आप दृढ़ संकल्प के व्यक्ति होंगे तथा जिस किसी भी कार्य के बारे में एक बार मन में सोच लेंगे उसे पूर्ण यत्न तथा परिश्रम से पूर्ण करके ही छोड़ेंगे। आप में काम भावना की भी अधिकता रहेगी।

फल्गुन्यां चपलः कुकर्मस्त्यागी दृढ़ कामुको।
जातकपरिजातः

अर्थात् पूर्वा फाल्गुनी में उत्पन्न जातक चंचल, कुकर्म करने वाला, त्यागी, दृढ़ तथा कामवासना प्रधान व्यक्ति होता है।

आप वीरता के समस्त गुणों से सुसम्पन्न रहेंगे तथा साहस का आप में अभाव नहीं रहेगा। आप बहुत से लोगों को आश्रय प्रदान करने वाले तथा उनका पोषण करने वाले व्यक्ति रहेंगे। आपकी आखें भी छोटी छोटी होंगी। कार्यों को दक्षता से सम्पन्न करने में आप सफल रहेंगे। इसके साथ ही यदा कदा अभिमान का भी अन्य जनों के समक्ष प्रदर्शन करते रहेंगे। स्वभाव के भी होंगे।

शूरस्त्यागी साहसी भूरिभर्ता कामार्तोऽपिस्याच्छिरालोऽतिदक्षः।
धूर्तः क्रूरोऽत्यन्त सञ्जातगर्वः पूर्वाफाल्गुनयास्ति चेज्जन्मकाले।।
जातकाभरणम्

अर्थात् पूर्वाफाल्गुनी में उत्पन्न जातक शूरवीर, दानी, बहुतों का पोषक, चतुर, धूर्त, कामातुर, कठोर हृदय और अतिघमण्डी होता है।

आपका जन्म लौहपाद में हुआ है यद्यपि लौहपाद में उत्पन्न जातक जीवन में विभिन्न प्रकार से रोगी दुःखी, धन एवं सुख संसाधनों से हीन रहकर जीवन यापन करते है। परन्तु आपकी जन्म कुण्डली में चन्द्रमा की स्थिति शुभ राशि में है। अतः आपको अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फलों की प्राप्ति ही अधिक मात्रा में होगी। आपका शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा सामान्य जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होगा। आप एक दानशील व्यक्ति होंगे तथा दान देने के लिए सदैव उद्यत रहेंगे। आप एक गुणवान पुरूष होंगे तथा अपने सद्गुणों से अन्य जनों को प्रभावित करेंगे। आप शुभ कार्यों पर अधिक व्यय करेंगे। अनावश्यक या अन्य अशुभ कार्यों पर व्यय करना आपको अच्छा नहीं लगेगा। इसके अतिरिक्त जीवन में सर्वप्रकार के भौतिक एवं विलासमय सुखसंसाधनों से आप सुसम्पन्न रहेंगे तथा सुखपूर्वक इनका उपभोग भी करेंगे। इन्ही विलासमय वस्तुओं पर आपका व्ययाधिक होता रहेगा।

सिंह राशि में उत्पन्न होने के कारण आप स्वभाव से उग्र तथा तेजस्वी होंगे। आपकी पीतवर्ण से युक्त छोटी आखें, कपोल स्थूल तथा मुखाकृति भी विस्तृत होगी। जंगलों तथा पहाडों में घूमने के आप विशेष शौकीन रहेंगे।

कभी कभी आप अकारण ही शीघ्र क्रोधित भी हो जाएंगे। आप अपने जीवन काल में तृष्णाओं, मानसिक चिन्ताओं से चिन्तित रहेंगे। दानशीलता की भावना भी आपके मन में विद्य मान रहेगी तथा जीवन में अवसरानुकूल अपनी इस सुप्रवृति का आप समाज में प्रदर्शन करते रहेंगे। अभिमान का प्रदर्शन भी यदा कदा आपके द्वारा किया जाएगा। स्त्री वर्ग में आप विशेष प्रिय रहेंगे तथा संतति सख्यां अल्प मात्रा में रहेगी। आपकी बुद्धि स्थिर होगी अतः आपके अधिकांश कार्यकलाप धैर्यपूर्वक सम्पन्न होंगे।

तीक्ष्णः स्थूलहनुविशालवदनः पिङ्गेक्षणोऽल्पात्मजः।
स्त्रीद्वेषी प्रियमासकाननग कुप्यत्यकार्ये चिरम्।।

क्षुतृष्णोदरदन्तमानसरुजा सम्पीडितस्त्यागवान।
विक्रान्तः स्थिरधीः सुगर्वितमनामातुर्विधेयो योळर्कभे।।
बृहज्जातकम्

आपके शरीर की अस्थियां अत्यन्त ही मजबूत होंगी तथा उग्रता के भाव से भी आप युक्त रहेंगे। कार्यारम्भ से पूर्व आप अपने गले से एक विशिष्ट प्रकार की ध्वनि को निकालेंगे। आपका वक्षस्थल विस्तृत तथा दर्शनीय होगा। आप एक पराक्रमी पुरूष होंगे तथा सभी सामाजिक जन आपके पराक्रम को स्वीकार करेंगे। इसके अतिरिक्त आप हमेशा सावधान तथा चौकन्ने रहेंगे तथा किसी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व उसके लिए चारों ओर परिस्थितियों का निरीक्षण करेंगे उसके बाद उसे प्रारम्भ करेंगे।

स्थूलास्थिर्मन्दरोमा पृथुवदनगलो ह्रस्वपिङ्गाक्षियुग्मः।
स्त्रीद्वेषी क्षुत्पिपासा जठररुदरजपीडितो मांसभक्षः।।
दाताती क्ष्णोळल्पपुत्रो विपिननगरतिमातृवश्य सुवक्षा।
विक्रान्तः कार्यालापी शशभृतिरविभे सर्वगम्भीर दृष्टिः।।
सारावली

आपका मुख मंडल विशाल तथा ठोड़ी का भाग स्थूल रहेगा साथ ही आप का स्वभाव अभिमानी भी रहेगा जिसका आप यदा कदा प्रदर्शन करते रहेंगे। माता के आप अत्यन्त प्रिय रहेंगे।

पिङ्गेक्षणः स्थूलहनुर्विशालवक्त्रोळभिमानी सपराक्रमः।
कुप्यत्कार्ये वनशैलगामी मातुर्विधेयः स्थिरधीः मृगेन्द्रेण।।
फलदीपिका

आप उदरपूर्ति योग्य जीविकार्जन से ही सन्तोष एवं शान्ति का अनुभव करेंगे। मांस के प्रति आपकी लोलुपता अधिक मात्रा में रहेगी तथा गहन गुफाओं तथा वनों में जाने के लिए आप हमेशा उत्सुक रहेंगे। सेवक तथा बन्धुवर्ग से भी आप युक्त रहेंगे तथा आपका वक्षस्थल विशाल रहेगा।

उदरभरणतुष्टः क्रोधनो मांसलुब्धो।
गहनगुरुगुहानां सेवको बंधुहीनः।।
कपिलनयन भग्नस्तुङ्गवक्षाः क्षुधार्तो।
विपुल सुरतसेवी सिंह राशि भे मनुष्यः।।
जातकदीपिका

क्षमाशीलता का भाव आपके अर्न्तमन में प्रारम्भ से ही विद्यमान रहेगा तथा दण्ड की अपेक्षा क्षमादान करना आप श्रेष्ठ समझेंगे। आप कुछ न कुछ कार्य करने को हमेशा तत्पर रहेंगे तथा निष्क्रिय होकर बैठना आपको रुचिकर प्रतीत नहीं होगा। साथ ही आप समयानुसार मांस तथा मदिरा का भी प्रयोग निश्चल भाव से करेंगे। आप भ्रमणप्रिय होंगे तथा अधिकांश समय देश या विदेश की यात्राओं में व्यस्त रहेंगे। शीत से आपको अत्याधिक व्याकुलता प्राप्त होगी।

आपके सभी मित्र अच्छे गुणों से युक्त रहेंगे तथा समाज में अन्य जनों के प्रति आपका व्यवहार भी विनम्र रहेगा। जिससे सभी लोग आपसे प्रसन्न रहेंगे। माता पिता के आप विशेष प्रिय रहेंगे तथा आप भी उनके प्रति अपने कर्तव्यों का पूर्ण रूप से पालन करेंगे। साथ ही आप कई प्रकार के व्यसनों से भी युक्त रहेंगे तथापि समाज में आपको पूर्ण यश तथा कीर्ति प्राप्त होगी।

अचल काननयानमनोरथं गृहकलित्रच गलोदरपीडनम्।
द्विजपतिमृर्गराजगतो नृणांवितनुते तनुतेजविहीनताम्।।
जातकाभरणम्

आपकी आखें तथा शारीरिक संरचना अत्यन्त ही सुन्दर तथा आकर्षक होगी। साथ ही गम्भीर दृष्टि से भी आप युक्त रहेंगे। आप आजीवन नाना प्रकार के सुखोपभोग करने में भी व्यस्त रहेंगे।

सिंहस्थे पृथुलोचनः सुबदनो गम्भीरदृष्टिः सुखी।।
जातक परिजातः

आपका जन्म मनुष्य गण में हुआ हैं। अतः आप हमेशा धार्मिक प्रवृति से युक्त रहेंगे। ब्राहमण तथा देवताओं के प्रति आपकी पूर्ण श्रद्धा होगी तथा नियमित रूप से आप इनका सम्मान तथा पूजन करेंगे। अभिमानी प्रवृति से भी आप युक्त होंगे। आप अपने जीवन में धनार्जन पूर्ण रूप से करते रहेंगे तथा कभी भी इसका अभाव महसूस नहीं करेंगे। आपके मन में दया तथा करूणा का भाव सदैव जागृत रहेगा फलतः आप प्रयत्पूर्वक दीन दुःखियों की सेवा तथा सहायता करने में तत्पर रहेंगे। आप एक से अधिक कार्यों तथा कलाओं को भी जानने वाले होंगे। ज्ञानार्जन में आपकी पूर्ण रूचि रहेगी तथा शरीर भी कान्तिमय रहेगा। साथ ही आपके द्वारा अन्य बहुत से लोग भी सुख की प्राप्ति करेंगे।

आप समाज के एक सम्मानित पुरूष होंगे तथा हमेशा अपार धन दौलत से युक्त रहेंगे साथ ही आप एक अच्छे निशानेबाज भी हो सकते हैं। आप गौरवर्ण से युक्त होकर नगरवासियों को वश में करने वाले होंगे। साथ ही नेत्र भी आपके बड़े होंगे।

देवद्विजार्चाभिरतोभिमानी दयालुर्बलवान कलाज्ञः।
प्राज्ञः सुकान्ति सुखदो बहूनां मर्त्याभवे मर्त्यगणे प्रसूतः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् मनुष्य गण में उत्पन्न जातक ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, अभिमानी, दयालु, बलवान, कला का ज्ञाता, विद्वान, कान्तियुक्त तथा बहुत से मनुष्यों को सुख तथा आश्रय प्रदान करने वाला होता है।

मूषक योनि में जन्म होने के कारण आप एक बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा सदैव अपने कार्यों को सम्पन्न करने में तत्पर रहेंगे। धनधान्य, वैभव एवं ऐश्वर्य का आपके पास अभाव नहीं रहेगा तथा सदैव इससे युक्त रहेंगे। आलस्य करना आपको रूचिकर नहीं लगेगा अतः हमेशा सक्रिय रहेंगे। आपके अन्दर अभिमान के भाव का भी अभाव रहेगा फलतः समाज से

पूर्ण आदर तथा सम्मान मिलेगा। परन्तु आप अन्य जनों पर कभी भी विश्वास नही करेंगे जो भी कार्य करवाएंगे उसे अपने ही समक्ष सम्पन्न करवाएंगे।

बुद्धिमान् वित्तसम्पूर्णः स्वकार्यकरणोद्यतः।
अप्रमतोळप्यविश्वासी नरो मूषक योनिजः।।
मानसागरी

अर्थात मूषक योनि का जातक बुद्धिमान, धनवान, स्वकार्य में तत्पर, गर्वहीन तथा किसी पर भी विश्वास न करने वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति द्वादश भाव में है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य अच्छा रहेगा तथा यदा कदा कष्टों का भी सामना करना पडेगा। लेकिन आपके प्रति उनके मन में वात्सल्य का भाव रहेगा तथा जीवन में आपको प्रायः यथाशक्ति अपना सहयोग प्रदान करती रहेंगी। आप उनसे अच्छे तथा पुण्य के कार्यों के प्रति प्रवृत होंगे तथा समयानुसार दानादि को भी उन्हीं के कथनानुसार सम्पन्न करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति आदर का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा का पालन आप कुछ अवसरों को छोडकर करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध विशेष मधुर नहीं होंगे क्योंकि आप में काफी मतभेद रहेंगे तथापि सांसारिक संबंधों में कोई तनाव नहीं रहेगा एवं सामंजस्य पूर्वक आप के परस्पर व्यवहार चलते रहेंगे। साथ ही उन्हें कष्ट के समय आप अपनी ओर से पूर्ण सहयोग तथा सहायता अवश्य प्रदान करेंगे।

आपके जन्म काल में सूर्य चतुर्थ भाव में स्थित है। अतः पिता के आप प्रिय होंगे उनका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। धनैश्वर्य से वे सर्वदा युक्त रहेंगे एवं जीवन के समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपका यत्नपूर्वक सहयोग करते रहेंगे। पिता से आपको धन, वाहन तथा अन्य प्रकार से सम्पत्ति अर्जित करते रहेंगे। इसके साथ ही नौकरी तथा व्यापार में भी आप उनसे सहयोग प्राप्त करते रहेंगे तथा उन्हीं के सहयोग से उन्नति भी करेंगे।

आप के मन में उनके प्रति सम्मान एवं आदर का भाव विद्यमान रहेगा एवं उनकी आज्ञा पालन में भी रूचि रहेगी। आपके परस्पर मतभेदों के कारण संबंधों में तनाव उत्पन्न होगा परन्तु वह क्षणिक रहेगा। इसके अतिरिक्त जीवन में आप हमेशा उनके सुख दुःख का भी ध्यान रखेंगे तथा अवसरानुकूल वांछित सहायता भी प्रदान करेंगे।

आपके जन्म समय में मंगल तृतीय भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा यदा कदा वे शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। शक्ति, साहस तथा पराक्रम से वे युक्त रहेंगे। साथ ही जीवन में सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको यथायोग्य सहयोग प्रदान करते रहेंगे। धन धान्य से भी वे युक्त रहेंगे एवं समयानुसार आपकी आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे। साथ ही सुख दुःख में आपकी पूरी सहायता करेंगे।

आपके हृदय में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह की भावना रहेगी एवं सर्वदा विषम

परिस्थितियों में भी उनका पूर्ण सहयोग करेंगे। आप के परस्पर संबंध मधुर होंगे परन्तु यदा कदा मतवैमिन्यता के कारण उनमें कटुता या तनाव भी उत्पन्न होगा परन्तु वह अल्प समय के लिए रहेगा कुछ समय बाद सब कुछ ठीक हो जाएगा। साथ ही आप सुख दुःख में भी उनको अपनी ओर से पूर्ण सहायता प्रदान करेंगे। इस प्रकार आप भाई बहिनों के सुख मध्यम रूप से ही अर्जित कर सकेंगे।

आपके लिए ज्येष्ठ मास, तृतीया, अष्टमी तथा त्रयोदशी तिथियां, मूल नक्षत्र, धृतियोग, बवकरण, शनिवार प्रथम प्रहर तथा मकर राशि में स्थित चन्द्रमा अशुभ फलदायक हैं। अतः आप 15 मई से 14 जून के मध्य 3,8,13 तिथियों, मूल नक्षत्र, धृतियोग तथा बवकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रयादि महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही शनिवार प्रथम प्रहर तथा मकर राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शरीर की सुरक्षा तथा स्वास्थ्य के प्रति भी सावधान रहें।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक या शारीरिक कष्ट हो रहे हों, व्यापार नौकरी पदोन्नति या अन्य कार्यों में बाधा उत्पन्न हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव सूर्य की आराधना करनी चाहिए तथा प्रातः काल अर्ध्य भी देना चाहिए। साथ ही रविवार का उपवास भी करना चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा कार्य में भी सफलता प्राप्त होगी। आप के लिए सोना, माणिक्य, रक्त पुष्प, रक्त वस्त्र तथा गेहूं, गुड़ इत्यादि पदार्थो का श्रद्धापूर्वक दान करना भी शुभ प्रभावों की वृद्धि करेगा तथा अशुभ फलों में न्यूनता करेगा। इसके अतिरिक्त सूर्य के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 7000 जप सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे आपको मानसिक शांति प्राप्त होगी तथा लाभ मार्ग भी प्रशस्त होंगे।

ऊँ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं ह्रीं ह्रीं सूर्याय नमः।

लाल किताब के अनुसार ऋण भार

कुँडली में दूषित ग्रहों के कारण जातक कई प्रकार से ऋणी होता है अर्थात् कई प्रकार के ऋण भार जातक के ऊपर रहते हैं, जिसके कारण जातक के जीवन का विकास अवरुद्ध हो जाता है। क्योंकि दूषित ग्रहों के दोषयुक्त प्रभाव से शुभ ग्रह भी अनुकूल फल देना बंद कर देते हैं। अस्तु ऋण भार से जातक को मुक्त होना चाहिए ताकि शेष जीवन पर शुभ या अच्छे ग्रहों के अच्छे प्रभाव पड़कर कुँडली के अनुसार शुभता प्राप्त हो सके। नीचे ऋण के प्रकार किस परिस्थिति में जातक पर अदृश्य ऋण पर पड़ता है तथा उसके निराकरण उधृत किए जाते हैं।

स्वऋण

ग्रहचाल :

जब जन्मकुंडली में खाना नंबर 5 में शुक्र या शनि या राहु या तीनों में दो या तीनों स्थित हो तो स्वऋण होता है।

निशानिया :

आपको राजभय, निर्दोष होने पर भी मुकदमें में दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। हृदय रोग, बाजुओं में दर्द, शारीरिक कमजोरी, आंखों में कष्ट, जिगर की खराबी होती है।

घटनाएं :

जातक नास्तिक हो जाता है, धर्म की उपेक्षा करता है स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहता, पूर्वजों के रीति-रिवाज के अनुसार नहीं चलता।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री स्वऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन (एक-एक या पांच-पांच या अधिक से अधिक दस-दस रुपये जितने भी रुपये सभी दे सकें) इकट्ठा कर के धर्म स्थान पर सामूहिक यज्ञ करें।

मातृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली के चौथे खाने में केतु पड़ा हो तो मातृ ऋण का बोझ होता है।

निशानिया :

जातक का कोई सहायक नहीं होता, उसके सभी प्रयास निष्फल होते है। सरकारी दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। जीवन अशांत व्यतीत होता है, दूसरों की इज्जत को उछालना खेलवार करना या जूता चुराना, विद्या का लाभ न मिलना। रिश्तेदारों की बिमारियों पर धन का

अपव्यय आदि अशुभ फल होते है।

घटनाएं :

मातृ ऋण से प्रभावित जातक माता से दुर्व्यवहार करता है। माता के सुख-दुःख का ख्याल नहीं रखता। माता से दूर रहे या माता को घर से निकाल देता हैं। मातृ ऋण वाले जातक के घर के पास या घर में कुआं होगा। घर के पास जलाशय होगा। उस कुएं में गंदगी डाली जाती होगी या जलाशय को गंदा करता होगा। हो सकता है कि जातक के घर के पास नदी-नहर बहती हो। जातक उस में गंदगी डालता होगा।

निष्कर्ष

आपकी पत्री मातृऋण से मुक्त है।

पारिवारिक ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली पहले या आठवें खाने में बुध या केतु या दोनों बैठे हो तो रिश्तेदार का ऋण होता है।

निशानिया :

किसी की भैंस बच्चा देने को हो तो उसे मार देना या मरवा देना। किसी का मकान बनने या नीव खोदते समय जादू-टोना कर देना या रिश्तेदारों से मिलने-जुलने बालों से नफरत करना या बच्चों के जन्म दिन और परिवार में त्यौहार या खुशी के समय दूर रहना।

घटनाएं :

जातक मित्रों से धोखा करता है। किसी के बने-बनाए काम को बिगाड़ देता है या किसी की पकी हुई खेती को आग लगा देना।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री पारिवारिक ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध है (जैसे जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) सबसे बराबर-बराबर धन लेकर आपके शहर/गांव के चौक में बैठे कारीगर, हकीम/डाक्टर को उसका काम बढ़ाने के लिये वह धन दान स्वरूप दे दें।

कन्या/बहन का ऋण

ग्रहचाल :

जातक की कुंडली में तीसरे या छठे खाने में चंद्रमा पड़ा हो तो बहन/लड़की का ऋण होता है।

निशानिया :

जवानी में धोखा देना, बहन/बेटी की हत्या या उस पर जुल्म करना। मासुम बच्चों को बेचना या लालच से बदल लेना/देना जिसका भेद दुनिया में कभी न खुले ऐसे रहस्मय आदि काम करना।

घटनाएं :

जातक का किसी के साथ अपनी जुबान से बुरा शब्द बोलना तलवार से अधिक गहरा घाव कर सकता है, बेटा पैदा हुआ पिता को उसके धन-दौलत, आयु पर अशुभ फल होगा या माता को पता था कि वह जान से हाथ धो बैठेगी। खुशी के साथ मातम ससुराल-ननिहाल पर अशुभ फल, वर्ष भर की कमाई का वर्षात में घाटा हो जाना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री कन्या बहन के ऋण से मुक्त है।

पितृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में 2 या 5 या 9 या 12 खानों में शुक्र या बुध या राहु या तीनों में दो या तीनों ही बैठे हो तो जातक पर पितृ ऋण होता है।

निशानिया :

कुल पुरोहित बदलना या कुल पुरोहित से नाता तोड़ लेना, घर के साथ बने मंदिर को तोड़ देना। पीपल का पेड़ काटना। पीपल का पेड़ होना आदि।

घटनाएं :

परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद हो जाए। बाल सफेद होने के बाद बालों में पीलापन होना शुरू हो जाए, काली खांसी की शिकायत, हो अथवा माथे पर दुनिया की गंदी करतुतो का कलंक लगना आदि घटनाएं होती है।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री पितृऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन (एक-एक या पांच-पांच या दस-दस रुपये अधिक से अधिक जितने भी रुपये दे सकें) लेकर उसी दिन मंदिर में दान कर देना आदि।

स्त्री ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में सातवें खाने में सूर्य या चंद्रमा या राहु या तीनों में दो या

तीनों ही इकट्ठे बैठे हों तो स्त्री ऋण होता है।

निशानिया :

परिवारिक पेट पर लात मारना, स्त्री को बच्चा पैदा होने या बच्चा जनने की हालत में किसी लालच में आकर मार देना। दाँतो वाले जानवरों की पालने से परिवार में नफरत का उसूल चलता होगा। मकान का गेट दरवाजा दक्षिण दिशा में होना, जीव हत्या करना, मकान या मशीनरी धोखे से ले लेना, किसी की चीज हड़प लेना उसे मुंहताज कर देना आदि।

घटनाएं :

नर संतान का फल मंदा हो जाता है, चमडड़ी में कोढ़, फलवहरी, गुप्तांग में रोग हो जाना, किसी का विवाह होना किसी मुर्दे को जलाना। एक स्त्री के साथ वैवाहिक संबंध टूटने लगे दूसरी स्त्री के साथ संबंध जुड़ने लगना अर्थात दूसरा विवाह होना आदि।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री स्त्री ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन लेकर गऊ शाला में 100 गायों को चारा खिलाएं (उसमें कोई भी गाए अंगहीन न हो) आदि।

निर्दयी ऋण

ग्रहचाल :

जन्मकुंडली में खाना नंबर 10 या 11 में सूर्य या चंद्र या मंगल या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हो तो निर्दयी ऋण होता है।

निशानिया :

मशीन या मकान की पेशगी देकर न खरीदना, परीक्षा हाल से अकारण बाहर निकाला जाना, बड़े लोगों से अकारण झगड़े या मुकदमें लड़ना आदि।

घटनाएं :

संतान और ससुराल की असमय मृत्यु, तेल या नारियल या लकड़ी या बारदाना के गोदाम में आग लग जाना। मकान खरीदा उसमें रहना नसीब नहीं, मकान खरीदे तो उसकी सिढ़ियां मुरम्मत करानी पड़े या तोड़ कर दुबारा बनानी पड़े, सांप और जहर पान की घटनाएं, हथियार से मौत होना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री निर्दयी ऋण से मुक्त है।

आजन्मकृत ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में खाना नंबर 12 में सूर्य या शुक्र या दोनों इकट्ठे बैठे हो तो आजन्मकृत ऋण होता है।

निशानिया :

बिजली की तार लीक कर जाना, घर जल जाए, लाखों-करोड़ों पति कुछ ही समय में किसी भी तरह से तबाह हो जाये, सोना गुम या चोरी-ठगी-गबन की घटनाएं, सिर पर जख्म या सिर की बीमारियां, बचपन से बुढ़ापे तक नालायक साबित होना, सोच समझ कर काम करने के बावजूद गरीबी और बेसहारा, दमा-मिरगी, काली खांसी, सांस की तकलीफ, अचानक मौत, मकान की दहलीज के नीचे से गंदा पानी बहना अथवा आवासीय मकान के आगे पीछे कूड़े का ढ़ेर या गन्दगी हो।

घटनाएं :

मुकदमें में फैसले पर नहक जुर्माना/कैद, ससुराल या दुनिया वालो की ठगी करना, या ऐसी ठगी करना जिससे दूसरे का परिवार या नौकरी-व्यापार नष्ट हो जाना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री आजन्मकृत ऋण से मुक्त है।

ईश्वरीय ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में छठे खाने में चंद्रमा हो तो ईश्वरीय ऋण होता है।

निशानिया :

कुत्ते का काटना, छत से बच्चों का गिरना या बच्चा को गाड़ी के नीचे आ जाना, कानों से बहरापन, रीढ़ की हड्डी में कष्ट, संतान पैदा न होना या होकर मर जाना, संतान सुख में बाधा, पेशाब की बिमारियां अधरंग, ननिहाल नष्ट हो जाना, यात्रा में हानि अथवा दुर्घटना हो जाना आदि।

घटनाएं :

किसी पर इतबार किया उसने धोखा दिया, कुत्तों को मारना या मरवाना, गरीब या फकीर की बददुआ लेना, बदचलनी, किसी के लड़कों को गुमराह करके बरबाद करना या करवाना, बुरी नीयत, लालच में आकर किसी का नुकसान करना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री ईश्वरीय ऋण से मुक्त है।

लाल किताब ग्रह फल

सूर्य

आपकी जन्मकुंडली के चौथे खाने में सूर्य है। इसकी वजह से आप धन एकत्र करते रहेंगे। उस धन का लाभ दूसरे को मिलेगा मगर आपकी संतान करोड़पति होगी। आप नये अविष्कार से लाभ प्राप्त करेंगे। नये कार्यों में सफलता मिलेगी। आप अपना पैतृक कार्य छोड़ कर नया काम करेंगे तो खूब लाभ होगा। आप विदेश में निवास करेंगे। पिता के साथ आपके संबंध अच्छे रहेंगे। पैतृक संपत्ति का लाभ मिलेगा। आप घर में हैंडपंप, कुंआ आदि लगावएं तो शुभ फल होगा और आपके मन में शांति रहेगी। आप 25 से 50 वर्ष की आयु तक खूब लाभ कमाएंगे। आप कपड़े, पानी और दूध के व्यवसाय से खूब लाभ प्राप्त करेंगे। आपको कपड़े के व्यवसाय से अधिक लाभ मिलेगा। आप काफी धन संग्रह कर सकेंगे। आप फलों वाले पेड़-पौधे लगाएंगे। आपका भाग्य अच्छा है। आप अपने काम रात में करें तो अधिक लाभ होगा। आपके घर पर कोई मुसीबत नहीं आएगी। सरकारी विभाग या समुद्र की यात्रा से लाभ मिलेगा, वाहनों से संबंधित कामों में लाभ होगा। पत्नी से लाभ होगा या पत्नी की नौकरी में तरक्की होगी।

यदि आपको चोरी की आदत होगी, दूसरे लोगों के बनते काम बिगाड़े, परस्त्री से अनैतिक संबंध रखें या किसी स्त्री से बदतमीजी की तो आपका सूर्य मंदा हो सकता है या किसी कारण वश सूर्य मंदा हो गया हो तो सूर्य के मंदे असर से औलाद पर बुरा असर पड़ेगा। माता एवं बहन के सुख में हानि हो सकती है। समस्या न होने पर भी आप उदास रहेंगे। माता का मन अशांत एवं स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा। जीवन में कई कठिनाइयां आ सकती हैं। अगर आप दूसरों के बने बनाये काम बिगाड़ेगे तो रक्तचाप का भय और आपके कार्यों में रुकावटें पैदा होंगी और माता-पिता का सुख कम हो जायेगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. चोरी की आदत से बचें।
2. स्त्रियों के झगड़े में न पड़ें।

उपाय :

1. अंधों को भोजन देवें।
2. शरीर पर शुद्ध सोना पहनें।

चन्द्र

आपकी जन्मकुंडली में चंद्रमा बारहवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आपके मन की बहुत बातें पूरी नहीं हो सकती हैं या तरस-तरस कर सभी काम बनेंगे। आपकी पढ़ाई-लिखाई बहुत अच्छी होगी और आप बहुत होशियार रहेंगे। एक बात पर कायम नहीं रहेंगे या आपको बात करते-करते बात बदलने की आदत होगी। आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़

नहीं रहेगी। पढ़ाई-लिखाई का उपयोग आपके जीवन में कम होगा। वर्तमान समय अच्छा गुजरता रहेगा। भविष्य की बातें स्वप्न में देखेंगे। लोग आप पर विश्वास करके अपना भेद भी बता देंगे। आप उनकी बातों को गुप्त रखेंगे। आपके आश्वासन से लोगों को राहत मिलेगी। आप अपने पूर्वजों के हालात बढ़ा-चढ़ा कर बताएंगे। अपनी कमाई का धन जमा रहेगा। 48 वर्ष आयु के बाद बहुत सुखी रहेंगे।

यदि आपने घर में हैंड पंप या पानी का साधन छत के नीचे रख, नीम का वृक्ष काटा, चाल-चलन ठीक न रखा, बुजुर्गों के काम को नष्ट किया तो आपका चंद्रमा मंदा हो सकता है या किसी कारण वश चंद्रमा मंदा हो गया हो तो चंद्रमा के मंदे असर से आप बीते समय को याद करके अपना समय खराब करेंगे। जीवन में ऐसे काम भी हो सकते हैं जो अपने पैर पर कुल्हाड़ी मारने जैसे होंगे। जमीन-जायदाद आदि का कोर्ट में झगड़ा होगा, फैसला बहुत देर बाद होगा और आपके हक में होगा। आपकी संतान निकम्मी हो सकती है। आपकी पैतृक संपत्ति नष्ट हो सकती है और आप मुसीबत पर मुसीबत उठायेंगे। खुशी के बाद की घटना खुशी को समाप्त कर देगी। आपकी आंखों पर बुरा असर पड़ सकता है। दिमागी परेशानियों के कारण नींद हराम हो सकती है। मातृ सुख का अभाव हो सकता है। आपको पानी से भय है आप अपनी और ससुराल की संपत्ति पर भारी पड़ेंगे। धन का नाश कर देंगे। आपके जीवन में दुःख का कारण परस्त्री हो सकती है। इस मामले में आप दुर्बल हैं। आप आलसी, धनहीन एवं अस्वस्थ्य रहेंगे आपको हर प्रसन्नता के बाद कोई न कोई दुःख भोगना पड़ सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. छत के नीचे हैंड पंप आदि न लगायें।
2. बीता हुआ समय याद न करें।

उपाय :

1. नीम के वृक्ष का पानी घर पर रखें।
2. 16 लीटर वर्षा के पानी में चांदी के चार चौरस टुकड़े को डाल कर रखें।
3. आसमानी बर्फ (ओले) शीशे के बर्तन में रखें।

मंगल

आपकी जन्मकुंडली के तीसरे खाने में मंगल पड़ा है। इसकी वजह से लाल किताब के अनुसार मंगल तीसरे खाने में हो तो व्यक्ति मांगलिक होता है। अतः आप मंगलीक पुरुष हैं। इस वजह से आप अपने लिए ख्याली पुलाव पकाएंगे और सब्ज बाग देखेंगे। दूसरों की सहायता करेंगे, नर्म स्वभाव रहेंगे। चक्रव्यूह भेदन की कला में चतुर होंगे। आपको ससुराल पक्ष से सहायता मिलेगी। आपको परिवार से अच्छा सहयोग प्राप्त होगा। आप अपनी शारीरिक और मानसिक योग्यता के द्वारा जाने जायेंगे तथा आपको योग्यता प्रदर्शन करने का अच्छा मौका मिलेगा। आपको भाई-बहन का सुख मिलेगा। आपके दोस्त हमेशा मदद करेंगे। आपका विवाह

अच्छे घर में होगा। माता-पिता का पूरा सुख मिलेगा।

यदि आपने परस्त्री से अनैतिक संबंध रखे, अकड़ा हुआ मिजाज रखा अधिक गुस्सा करने की आदत रखी, मांस-मदिरा के सेवन करने की आदत हुई, अय्याशी की तरफ आपका झुकाव रहा तो आपका मंगल मंदा हो सकता है या किसी कारण वश मंगल मंदा हो गया हो तो मंगल के मंदे असर से आप अपने जीवन में चालबाजी और धोखेबाजी से काम निकालेंगे और आप बेकार की फोकी उम्मीदें भी रखेंगे। आपकी बर्बादी का कारण आपकी अय्याशी हो सकती है। आप पर कर्ज का बोझ भी चढ़ सकता है। आपके घर में अचानक किसी की मौत भी हो सकती है। आपकी संतान की हालत मंदी हो सकती है। आपकी पत्नी को मृत बच्चा पैदा हो या गर्भपात भी हो सकता है। घर में चोरी और नुकसान से होशियार रहें। आपके चाचा या भाई औलाद से दुःखी हो सकते हैं। आपके भाई-बन्धु, मित्र आपके विनाश का कारण बनेंगे। लड़ाई-झगड़े से दूर रहें। लड़ाई-झगड़ा आपकी मौत का कारण बन सकता है। आपकी नेकी कोई भी याद नहीं रखेगा। खून खराब या पेट में रोग हो ऐसी आशंका है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. हाथी दांत न रखें।
2. दक्षिण दिशा के मुख्य द्वार वाले घर में रिहाईश न करें।

उपाय :

1. चांदी की बेजोड़ अंगूठी बायें हाथ में पहनें।
2. चांदी के बेजोड़ कड़े में तांबे की कील लगा कर दायें हाथ में पहनें।

बुध

आपकी जन्मकुंडली में बुध पांचवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आपका जीवन खुशहाल रहेगा। आपकी ज्योतिष विद्या तथा आयुर्वेद शास्त्र में रुचि रहेगी। आपका वाक्य ब्रह्मा जी के मुंह से निकली बात के समान होगा। आपको अपने भाई से सुख मिलेगा और लाभ होता रहेगा। आपको जीवन में औलाद सुख मिलेगा। आप बिना सोचे-समझे भी कुछ बात कह दें, तो वह सच हो जाएगा। आपका चरित्र अच्छा होगा। आपकी जद्दी जायदाद, गृहस्थी और औलाद पर अच्छा प्रभाव पड़ेगा। 34 वर्ष की उम्र के बाद आपका भाग्य पूरी बुलंदी पर आ जाएगा। आप पूर्ण ज्ञानी और तेजस्वी प्रभाव के व्यक्ति होंगे। आपके सगे संबंधियों या किसी भी व्यक्ति पर आपका अच्छा असर रहेगा। आप अच्छे प्रबंधकर्त्ता हैं। अकस्मात् धन की प्राप्ति के भी योग है। आपको अपने जीवन में बहुत अच्छे दिन देखने का सौभाग्य प्राप्त होगा। आपको पराविद्या, तंत्र-मंत्र पर पूर्ण भरोसा रहेगा। धर्म, आध्यात्म और ईश्वर भक्ति के प्रति आपकी रुचि अच्छी रहेगी। आपकी बुद्धि तेज है। आपको बुद्धि के खजाने और विद्या का पूर्ण लाभ मिलेगा।

यदि आपने संतान का विरोध किया सरकारी अधिकारियों से झगड़ा किया, परस्त्री से अनैतिक संबंध रखे, आपके घर में बांस का वृक्ष हुआ तो आपका बुध मंदा हो सकता है या

किसी कारण वश बुध मंदा हो गया हो तो बुध के मंदे असर से आप कभी-कभी बहुत कड़की बातें करने लगेंगे। इस बात का परहेज रखें। संतान पर कष्ट के दिनों में आप अधिक ही चिंतित हो जाया करेंगे। आप कल्पना लोक में भ्रमण करेंगे या काल्पनिक डर से भयभीत रहेंगे।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. गऊ मुख घर में रिहाइश न करें।
2. चाल-चलन ठीक रखें।

उपाय :

1. चांदी की बेजोड़ अंगूठी बायें हाथ में पहनें।
2. तांबे का पैसा सफेद धागे में डाल कर गले में धारण करें।

गुरु

आपकी जन्मकुंडली में वृहस्पति सातवें खाने में पड़ा है। जिसकी वजह से अधिक उम्र में या विवाह के बाद देर से संतान सुख प्राप्त होगा। पुत्र प्राप्ति के बाद पिछले कष्ट दूर हो जाएंगे। आप पूर्ण सुखी हो जाएंगे। पत्नी नौकरी करेगी उसकी कमाई से धन में वृद्धि होती रहेगी। आप स्वस्थ एवं पत्नी से सुखी रहेंगे। आप पिता से अलग होकर, साझेदारी का व्यवसाय चलाएंगे। संतान का भी सामान्य सुख ही मिलेगा। आप 40 वर्ष की उम्र तक ऐय्याशी करेंगे। ससुराल से मिली चीजों में बरकत होगी। आप धार्मिक कामों में हमेशा रुचि रखेंगे। आप ज्योतिष विद्या के जानकार और माहिर होंगे और ज्योतिष के द्वारा धन की प्राप्ति भी होगी। आपको दलाली या व्यापार के कामों से लाभ होगा। आपके धन से दूर के रिश्तेदार लोग सुख पायेंगे परंतु आपके जीवन में आराम नही मिलेगा। आपको लोहे, मशीनरी, काली चीजों का व्यापार, मकान बनाने की चीजें (लोहा, ईट, पत्थर सीमेंट, लकड़ी आदि) का व्यापार शुभ फल देगा। आप जीवन में अपनी जवानी में खूब ऐशो-आराम करेंगे। पिता और ससुर से लाभ और सुख मिलेगा।

यदि आपके घर के मंदिर में मूर्तियां होंगी (तस्वीरों का वहम नहीं), चांदी आदि धातु की मूर्तियों वाले सिक्के होंगे या धार्मिक ग्रंथ बंद पड़े होंगे, रत्तियां (जिससे पहले समय में सुनार सोना आदि तोलते थे) पड़ी होंगी तो आपका वृहस्पति मंदा हो सकता है या किसी कारण वश वृहस्पति मंदा हो गया हो तो वृहस्पति के मंदे असर से आप भाई से दुःखी रहेंगे। घूमने-फिरने वाले साधू की संगति से भाग्य मंदा हो जाएगा। आपको आमदनी होने के बावजूद आप पर कर्ज का बोझ भी पड़ेगा। आपके जीवन में काफी उतार-चढ़ाव आयेंगे। पत्नी के अतिरिक्त दूसरी औरत से हानि होगी। पिता का सुख कम मिलेगा। आप संगति के प्रभाव से चोर या डाकू भी हो सकते हैं।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. घूमने-फिरने वाले पीले वस्त्र धारी साधू से दूर रहें।
2. घर में तुलसी, घंटी, ठाकुर न रखें।

उपाय :
1. सोना और रत्तियां पीले कपड़े में बांध कर रखें।
2. आपके ससुराल वाले आपको कुछ न कुछ देते रहेंगे तो इससे दोनों परिवारों का कल्याण होगा।

शुक्र

आपकी जन्मकुंडली में पांचवें खाने में शुक्र पड़ा है। जिसकी वजह से आप विद्वान, शत्रुहंता, सफेद चीजों से लाभ प्राप्त करने वाले, बच्चों और पूरे परिवार से युक्त एवं स्त्री सुख से परिपूर्ण रहेंगे। आप अपनी जाति से प्रेम करने वाले होंगे। आप दुनिया में रह कर भी दुनियादारी की बातों से अपने को मुक्त प्रमाणित करेंगे। विवाह के पांच वर्ष के बाद धन-संपत्ति और नौकर-चाकरों का सुख अधिक प्राप्त होगा। पदोन्नति भी होगी। आपकी पत्नी वफादार होगी। आपकी पत्नी के जिंदा रहने तक आपको किसी चीज़ का अभाव नहीं होगा। कोई बहुत बड़ी रुकावट नहीं आएगी। आपकी दौलत-माया बढ़ेगी। आप अपने खानदान वालों को प्यार करेंगे तो इसका असर आप पर अच्छा ही पड़ेगा। भाई के लिए भी आप अनुकूल रहेंगे। आपके परिवार में हर तरह की बरकत होगी जैसे-धन, परिवार एवं सुख शांति। आपको अपने देश से प्रेम रहेगा।

यदि आप चरित्रहीन हुए तो वृक्ष में फंसे पतंग की तरह का हाल होगा, माता-पिता की मर्जी के खिलाफ शादी या लड़की देख कर शादी की तो आपका शुक्र मंदा हो सकता है या किसी कारण वश शुक्र मंदा हो गया हो तो शुक्र के मंदे असर से आप आशिक मिजाज और कामांध होंगे। जिस वजह से आपका सुख बाधित हो सकता है। गंदी सोहबत और प्रेम संबंधों में फंस कर आपकी किस्मत भी कांटों में फंस जाएगी। आप साथियों पर कई प्रकार के झंझट पैदा करेंगे। आप दिन में ज्ञान एवं रात में इश्क स्नान करने वाले होंगे। गर्भपात का भय या संतान देर से होगी, बहन-बुआ का धन नाश होगा, प्रेम-विवाह किया तो पुत्र सुख से वंचित रहेंगे, ऐसी शंका है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. स्त्रियों के रसिया न बनें।
2. प्रेम विवाह या अंतर्जातीय या माता-पिता की इच्छा के विरुद्ध विवाह न करें।

उपाय :
1. शरीर पर दूध/दही से मलकर नहाएं।
2. गाय की सेवा करें।

शनि

आपकी जन्मकुंडली के चौथे खाने में शनि पड़ा है, जिसकी वजह से आपका जीवन सुखी रहेगा। आप स्त्री और प्रेम संबंधों से घिरे रहेंगे, परंतु जवानी के बाद कामवासना से परहेज और धार्मिक विचारों की प्रवृत्ति हो जाएगी। सेहत खराब के समय शराब दवा के रूप में काम करेगी। आपके रिश्तेदार आपकी सहायता करेंगे। माता या पिता में से एक का सुख बहुत लंबे समय तक मिलेगा। दूसरी औरतों के आगे-पीछे भागना, आपकी अपनी पत्नी के लिए बुरा असर करेगा। घर से दूर विद्या पढ़े तो अधिक लाभ होगा।

यदि आपने किराये के मकान में रिहाईश की, मकान में काले कीड़े निकले, सांप का तेल बेचना शुरु किया, मादक चीजें बेचीं तो आपका शनि मंदा हो सकता है या किसी कारण वश शनि मंदा हो गया हो तो शनि के मंदे असर से आप क्रोधी, धूर्त, पानी के सांप जैसे स्वभाव के होंगे, आपको मकान-जायदाद का सुख कम ही मिलेगा। कभी बीमारी के चक्कर में पड़ जाएं तो शनि की चीजों का प्रयोग करें। माता दुःखी रहेंगी या माता के लिए कष्टकारक समय होगा। विधवा स्त्री से अनैतिक संबंध रखने पर या खर्च करने से कंगाल हो जाएंगे। शराब पीने से शुभ प्रभाव नष्ट हो जाएगा। पेट में खराबी, विकार रहेंगे। आपकी जायदाद पर दूसरों का कब्जा हो सकता है और आप पर लांछन लगेगा। आपकी पत्नी आपके कारण दुःखी रह सकती है या आपको पत्नी सुख में कमी रहेगी।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. हरा रंग हानिकारक है।
2. काला कपड़ा न पहनें।

उपाय :

1. कुएं में दूध डालें।
2. मछली-भैंस-कौवे को भोजन का हिस्सा खिलायें।

राहु

आपकी जन्मकुंडली के सातवें खाने में राहु पड़ा है। इसकी वजह से 21 वर्ष के पहले या 29वें वर्ष विवाह हो जाए तो बुरे फल की आशंका बनती है। आपका संबंध राजनीतिज्ञों से रहेगा। अगर आप सरकारी विभाग में सेवारत हैं तो सरकारी विभाग में पदोन्नति एवं पुरस्कार मिलने की आशा है। धन और मान-प्रतिष्ठा प्राप्त होगी। आप बिजली के काम, पुलिस या जेल विभाग की नौकरी से आजीविका चला सकेंगे। शेयर/लाटरी में दिवालिया हो सकते हैं। आपको कन्या संतान का सुख विवाह के बाद जल्द ही परंतु पुत्र सुख में विलंब हो सकता है। विदेश की यात्रा भी हो सकती है। आप जन्म स्थान से बाहर रह कर ही सुखी रह सकेंगे। यदि आप अपने धन पर नियंत्रण नहीं रख सके तो सगे-संबंधी निश्चित रूप से धन की क्षति करने में पीछे नहीं रहेंगे।

यदि आपने अपने पास दोहता रखा या कुत्ता पाला, समाज में बदनामी के कार्य किये, पत्नी से मार-पीट की तो आपका राहु मंदा हो सकता है या किसी कारण वश राहु मंदा हो गया हो तो राहु के मंदे असर से भाई-बन्धु आपकी संपत्ति खा जाएंगे। भाई द्वारा भी आपके धन का दुरुपयोग हो सकता है। आपको साझेदारी के व्यवसाय, बिजली के सामान की दुकानदारी या व्यवसाय से हानि की आशंका है। पुलिस, जेल विभाग की नौकरी में धोखा-धड़ी की तो आपकी आयु क्षीण होगी। पत्नी से मन-मुटाव रह सकता हैं इसका कारण आपका शंकाग्रस्त रहना बताता है। पत्नी से जुदाई मुकद्दमेबाजी हो ऐसी शंका है। आपको राजदरबार से परेशानी या काम काज में रुकावट नहीं आएगी। आपके जीवन में आपकी बदनामी भी हो सकती है। जीवन में संघर्ष रहेगा। पारिवारिक दशा बहुत अच्छी नहीं रहेगी। धन-संपत्ति एवं पत्नी के सुख में अभाव रह सकता है। कोई गर्भपात संभव है। पत्नी को सिरदर्द की बीमारी रहेगी।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. घर में कुत्ता न पालें।
2. बिजली, पुलिस व जेल विभाग में काम न करें।

उपाय :

1. घर में 2 चांदी की ईंटें कायम करें।
2. नारियल का दान करें।
3. चांदी की डिब्बी में चांदी का चौरस टुकड़ा रख कर गंगा जल भर कर रखें।

केतु

आपकी जन्मकुंडली में केतु पहले खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आप सुखी, धनी, मेहनती होंगे। आपकी तरक्की अधिक तबदीली कम रहेगी। आप अपने पिता के लिए वरदान सिद्ध होंगे। आप पिता की सेवा करेंगे। आप सरकारी विभाग में सेवारत होंगे तो एक अच्छे सरकारी आफिसर हो सकते हैं। यात्रा का आदेश पत्र प्राप्ति के बावजूद यात्रा न होगी। आपकी आजीविका निरंतर चलती रहेगी। आपका जन्म ननिहाल या अस्पताल में भी हो सकता है। आपको शक्ति मिलेगी। आपके भाग्य में शुभ फल प्राप्त होगा। पत्नी का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। माता पर भी अच्छा प्रभाव ही रहना चाहिए। परंतु यह कोई जरूरी नहीं है कि माता पर शुभ प्रभाव ही पड़े। आप लाखों का लेन-देन करेंगे परंतु धन जमा होने में आशंका है। आप गुरु-पिता के सेवक होंगे।

यदि आप अपने पिता से दूर रहे, रिश्तेदारों को बर्बाद करने की कोशिश की या मकान को बिना कारण बेचा तो आपका केतु मंदा हो सकता है या किसी कारण वश केतु मंदा हो गया हो तो केतु के मंदे असर से जहां आपका जन्म होगा रिश्तेदार तबाह हो जाएंगे। आपके मन में काल्पनिक फिक्र पैदा हो सकती है। पुत्र को कोई कष्ट उत्पन्न होगा। आप पर बुरा असर

पड़ सकता है। आपकी गृहस्थी पर कुछ बुरा प्रभाव पड़े ऐसी आशंका है। नाभि के नीचे की बीमारियां होंगी या आपको गुप्तांग में बीमारी हो सकती है। आपको लंबी या विदेश की यात्रा बीच में छोड़ कर वापिस आना पड़ सकता है। आपको संतानोत्पत्ति की चिंता बनी रहेगी। पोते के जन्म के बाद सेहत खराब हो सकती है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. बकरी न पालें या बकरी की सेवा न करें।
2. गली के आखिरी मकान में रिहाईश न करें।

उपाय :

1. लाल रुमाल पास रखें।
2. काले-सफेद कुत्ते की सेवा करें।

लाल किताब के उपाय

लाल किताब के उपाय कब और कैसे करें !

1. उपाय सूर्य निकलने के बाद सूर्य छिपने तक दिन के समय करें, रात के समय उपाय करना कई बार अशुभ फल दे सकता है। केवल चन्द्र ग्रहण का उपाय रात को किया जा सकता है।

2. उपाय शुरू करने के लिए किसी खास दिन सोमवार या मंगलवार आदि, सक्रांति, अमावस्या या पूर्णिमा आदि का कोई विचार नहीं होगा।

3. आप का कोई खून का संबंधी रिश्तेदार जैसे भाई-बहन, माता-पिता, दादा-दादी, पुत्र-पुत्री आदि में से उपाय कर सकता है जो फलदाई होगा।

4. एक दिन में केवल एक ही उपाय करें, एक दिन में दो उपाय करने से शुभ फल नहीं मिलता या किया हुआ उपाय निष्फल हो सकता है।

5. जो परहेज बताए जाये जैसे मांस-मछली न खावें, मदिरा का सेवन न करें, चाल-चलन ठीक रखें, झूठ न बोलें, जूठन न खावें न खिलावें, नियत में खोट न रखें, परस्त्री-परपुरुष से संबंध न करें, आदि का विशेष ध्यान रखें।

6. जो उपाय जिस समय के लिये लिखा है उसी समय तक करें, आगे यह उपाय बंद कर देवें।

7. यदि किसी कारण उपाय बीच में बंद करना पड़ जाय तो जिस दिन उपाय बन्द करना है उससे एक दिन पहले थोड़े से चावल दूध से धोकर सफेद कपड़े में बांध कर पास रख लें और जब दुवारा उपाय शुरू करना हो वह चावल धर्म स्थान में या चलते पानी में या किसी बाग-बगीचे आदि में गिरा कर उपाय फिर शुरू कर दें। ऐसा करने से उपाय अधूरा नहीं माना जाएगा और पूरा फल मिलेगा।

8. हर उपाय 43 दिन या 43 सप्ताह या 43 मास या 43 वर्ष तक करना होता है, उपाय चलते समय बीच में टूट जाए चाहे 39वां दिन क्यों न हो सब निष्फल हो सकता है या शुभ फल में कमी रह सकती है।

9. जन्म कुण्डली में अशुभ ग्रहों का वर्षफल कुण्डली में उपाय अपने जन्मदिन से लेकर 40-43 दिन के भीतर ही करें ।

10. घर में कोई सूतक (बच्चा जन्म हो) या पातक (कोई मर जाय) हो जाय तो 40 दिन उपाय नहीं करने चाहिये ।

11. बुजुर्गों के रीति -रिवाजों को न तोडें और संस्कार पूरें करें ।

इस वर्ष मीन राशि के शनि सप्तम भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु षष्ठ भाव में रहेंगे और उसके बाद मकर राशिमें पंचम भाव में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि केगुरु दशम भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशि मेंएकादश भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशिमें द्वादश भाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा परिणाम देने वाला रहेगा। इस वर्ष आप अपने कार्यक्षेत्र में सफलता प्राप्त करेंगे। किसी अनुभवी व्यक्ति से मिलकर व्यापार में उन्नति के लिए कोई नई योजना बनाएंगे। दशमस्थ गुरु के प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नतिहो सकती है या इच्छित स्थान पर स्थानान्तरण भी हो सकता है।

02 जून के बाद सप्तम स्थान पर शनि एवं गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपको कार्य व्यवसाय में बहुत अच्छा लाभ प्राप्त होगा। उच्च अधिकारियों व वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा, जिससे आप अपने व्यापार में अधिक सफलता प्राप्त करेंगे। आपकोजीवनसाथी का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। यदि आप साझेदारी में कोई कार्य कर रहे हैं, तो उसमें इच्छित लाभ प्राप्त होगा और अपने साझेदार से संतुष्ट रहेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से भूमि, भवन, वाहन, रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। धनागम तो होता रहेगा। आप अपने भौतिक सुख सुबिधाओं पर अधिक खर्च करेंगे।

02 जून के बाद एकादश स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपकारुका हुआ धन मिल सकता है साथ ही आपके धनागम में वृद्धि होगी जिससे आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। आप अपनी संचित पूंजी बढ़ाने के लिए निवेश भी करेंगे। भाई-बहन या पुत्र के विवाह के अवसर पर धन खर्च हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। चतुर्थ स्थान पर गुरु एवं शनिग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। आपको माता पिता सहित पूरे परिवार का सहयोग प्राप्त होगा।

02 जून के बाद आपको प्रेम प्रसंगो में भी सफलता प्राप्त होगी। यदि आप अविवाहित हैं तो विवाह हो जाएगा। यदि आप विवाहित हैं तो आपके जीवनसाथी के साथ सम्बन्ध मधुर होंगे। तृतीय स्थान में गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आप सामाजिक कल्याण के

लिए कुछ विशेष कार्य संपन्न करेंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेगे। वे अपनी बौद्धिक शक्ति एवं कर्म के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।02 जूनके बाद पंचम स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है।

प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति होने के शुभ योग बने है। यदि आपका बच्चा विवाह योग्य है तो उसका विवाह भी हो सकता है। यदि आप दूसरे बच्चे की इच्छा रखते हैं तो गर्भधान के लिए उत्तम समय है। 31 अक्टूबर के बाद समय कुछ प्रभावित हो सकता है। उस समय उनके स्वास्थ्य पर ध्यान देने की जरूरत होगी।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। मानसिक रूप से आप सन्तुष्ट नहींरहेंगे। वर्ष के पुर्वार्द्ध में लग्न स्थान पर शनि के दृष्टि प्रभाव से मौसमजनित बीमारियों से परेशानी हो सकती है। आलस्य, मानसिक चिंता इत्यादि छोटी-मोटी परेशानियां होती रहेंगीपरन्तु गुरु के गोचरोपरान्त सब कुछ अनुकूल हो जाएगा।

02 जून के बाद गुरु का गोचर शुभ स्थान में होने से आपके स्वास्थ्य में सुधार होना शुरू हो जाएगा। आप अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए शुद्ध एवं शाकाहारी भोजन ही करेंगे। संतुलित आहार के साथ साथ नियमित व्यायाम भी करते रहेंगे। 31 अक्टूबर के बाद आपको अपने स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष बहुत अच्छा रहेगा। छठे स्थान के राहु आपको प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता दिलाएंगे। जो व्यक्ति नौकरी की तालाश में हैं उनको इस वर्ष नौकरी मिल जाएगी।

02 जून के बाद पंचम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से विद्यार्थियों की शिक्षा के प्रति रूचि बढ़ेगी और वे अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्य ार्थियो के लिए समय अच्छा है। तकनीकि शिक्षा के लिए भी वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। नवम स्थान पर शनि ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आप लम्बी यात्राएं करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में आपकी जन्म स्थल की यात्रा होगी। परिजनों साथ दर्शनीय स्थलों की यात्रा का भी आनन्द प्राप्त करेंगे।

मई के बाद छोटी-मोटी यात्राएंहोती रहेंगी। द्वादश स्थान पर राहु एवं केतु ग्रह के प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा भी होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यो के लिए यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में अधिक व्यस्तता के कारण आप पूजा पाठ के लिए अधिक समय नहीं निकाल पाएंगे। 02 जून के बाद पंचम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपके अंदर ईश्वर के प्रति श्राद्धा एवं विश्वास बढ़ेगा। आप निःस्वार्थभाव से भगवान की पूजा व सत्कर्म करेंगे। 31 अक्टूबर के बाद दान पुण्य अधिक करेंगे।

- श्रीयन्त्र घर में स्थापित करें और नित्य उसके सामने देशी घी का दीपक जलाएं। जिससे आपकी आर्थिक उन्नति व समाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।
- सूर्योदय के समय सूर्य को अर्घ्य दें।
- प्रत्येक दिन प्राणायाम करें।

मासिक फलादेश

जनवरी 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्य रूप से शुभाशुभ फल प्रदान करेगा। इस समय आपका स्वास्थ्य विशेष अच्छा नहीं रहेगा एवं शरीर में आप दुर्बलता की अनुभूति करेंगे। साथ ही शत्रु वर्ग से भी आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे जिससे मानसिक स्थिति भी अच्छी नहीं रहेगी एवं इसमें अशान्ति रहेगी।पारिवारिक जनों से भी आपके संबधों में मधुरता नहीं रहेगी तथा आपस में अनबन रहेगी। आपके कार्य क्षेत्र में इस समय शिथिलता आएगी तथा स्थान परिर्वतन का योग भी बन सकता है। आप इस समय अपने किसी कार्य को छोड़ भी सकते है। सामाजिक जनों से भी आपके संबध विशेष मधुर नहीं रहेंगे तथा परस्पर विवाद आदि भी होते रहेंगे फलतः आपके सम्मान में न्यूनता का भाव आएगा। इसके अतिरिक्त शरीर में रोग तथा धन हानि की भी संभावना रहेगी।

साथ ही इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी होंगे।अतः आप स्त्री से पूर्ण सुख अर्जित करेंगे तथा अपनी बुद्धिमता से कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को सम्पन्न करेंगे। धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा उत्पन्न होगी तथा यत्न पूर्वक आप धार्मिक कार्य करने के लिए प्रवृत रहेंगे। साथ ही अन्य कई प्रकार के शुभ फल भी इस समय घटित हो सकेंगे।अतः मास शुभाशुभ फलों से युक्त होकर मध्यम रहेगा।

फरवरी 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया शुभ फल प्रद ही रहेगा तथापि अल्प मात्रा में अशुभ फल भी होंगे। इस समय आपकी बुद्धि में निर्मलता बनी रहेगी तथा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को आप बुद्धि बल से ही सम्पन्न करेंगे। इस मास आप पुत्र से सुख प्राप्त करेंगे एवं अन्य प्रकार से द्रव्य लाभ भी होगा। आपके प्रभुत्व की इस समय वृद्धि होगी तथा सभी लोग हृदय से आपके प्रभुत्व को स्वीकार करेंगे। इसके अतिरिक्त आपके कई शुभ कार्य इस मास में सम्पन्न होंगे तथा कहीं से कोई शुभ एवं महत्वपूर्ण समाचार की प्राप्ति भी होगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना पैदा होगी एवं आप श्रद्धा पूर्वक इनकी पूजा तथा सेवा करने के लिए तत्पर रहेंगे। इसके अतिरिक्त सरकार या उच्च अधिकारी वर्ग से भी आप अनुकूल एवं वांछित लाभ प्राप्त करने में सफल रहेंगे। इस समय समाज में आपकी मान प्रतिष्ठा में पूर्ण वृद्धि होगी तथा मानसिक चिन्ताओं से भी मुक्ति मिलेगी।

साथ ही इस मास में शुभ फलों के साथ साथ अशुभ फल भी होंगे जिसके प्रभाव से आप गर्मी या पितादि दोषों से उत्पन्न रोगों से शारीरिक कष्ट प्राप्त करेंगे एवं रक्त विकार होने की भी संभावना रहेगी। अतः इस मास में आपको शारीरिक सुरक्षा के प्रति भी सजग रहना चाहिए।

मार्च 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए शुभाशुभ फलों से युक्त रहेगा इस समय आप शारीरिक रूप से कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे जिससे शरीर में दुर्बलता रहेगी। इस मास आपका शत्रुपक्ष बलवान रहेगा अतः उनसे आप चिन्तित तथा भयभीत रहेंगे फलतः मानसिक रूप से आप उद्विग्न तथा अशान्त रहेंगे। इस समय आपके घर में चोरी होने की भी सम्भावना रहेगी। साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग की उपेक्षा न करें एवं उन्हें उचित सहयोग प्रदान करें अन्यथा आप किसी प्रकार से दंडित हो सकते हैं। आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस समय अल्प मात्रा में ही सफल होंगे अन्यथा आपको असफलता ही अधिक मात्रा में प्राप्त होगी। साथ ही धन का व्यय भी अनावश्यक रूप से अधिक होगा जिससे आर्थिक संकट भी न्यूनाधिक मात्रा में रहेगा। आपके द्वारा इस मास कोई ऐसा भी कार्य हो सकता है जिसके लिए आपको बाद में पश्चाताप करना पड़ेगा। इस मास आपके सम्बन्धियों तथा मित्रों से तनावपूर्ण संबध रहेंगे एवं मधुरता का अभाव रहेगा। इसके अतिरिक्त समाज से भी आपको उपेक्षा मिलेगी तथा आशाएं भी अल्पमात्रा में पूर्ण होंगी।

साथ ही अशुभ फलों के साथ साथ इस मास में शुभ फल भी घटित होंगे।जिसके प्रभाव से आप स्त्री तथा पुत्र से पूर्ण सहयोग एवं सुख प्राप्त करने में सफल रहेंगे। साथ ही इस समय आप नवीन वस्त्र या द्रव्य आदि भी प्राप्त करने में सफल हो सकेंगे जिससे मानसिक प्रसन्नता तथा शान्ति की अनुभूति होगी।

अप्रैल 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए विशेष अच्छा नहीं रहेगा तथा अशुभ फल अधिक मात्रा में प्राप्त होंगे। इस समय आप स्त्री एवं बन्धुवर्ग से कष्ट की प्राप्ति करेंगे तथा शत्रुपक्ष से भी आपको भय तथा चिन्ता बनी रहेगी जिससे आप मानसिक रूप से भी आप अशान्त रहेंगे ।साथ ही आप में उत्साह के भाव की भी अल्पता रहेगी तथा धन व्यय भी अधिक मात्रा में होगा जिससे आर्थिक संकट भी बना रहेगा। शारीरिक रूप से भी आप अस्वस्थ रहेंगे एवं मन में लोभ के भाव की प्रबलता रहेगी। अपने मित्र एवं बन्धुजनों से भी आपका परस्पर मनमुटाव रहेगा तथा ऐसे समय पर मित्र भी शत्रु की तरह व्यवहार करेंगे जिससे आप आन्तरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त अन्य समाजिक या बन्धुजनों से भी वादविवाद आदि की भी सम्भावना बनी रहेगी। अतः आपका यह समय कष्टपूर्वक ही व्यतीत होगा।

साथ ही इस समय आप वायु से उत्पन्न होने वाले रोगों से अस्वस्थ रहेंगे तथा जाने या अनजाने में किसी ऐसे कार्य को सम्पन्न कर सकते हैं जिसके लिए बाद में आपको पश्चाताप करना पड़े। इससे आपकी समाजिक अवमानना भी होगी। इसके अतिरिक्त इस समय आप अग्नि के द्वारा न्यूनाधिक मात्रा में धन हानि भी प्राप्त करेंगे। अतः सावधानी पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करें।

मई 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए समान्यता अशुभ रहेगा। इस समय आपको शत्रुओं से भय बना रहेगा तथा मन में चिन्ता व्याप्त रहेगी साथ ही आपके घर में किसी प्रकार से चोरी आदि भी

हो सकती है। इस समय आप अनावश्यक रूप से धन व्यय करेंगे एवं धर्म के प्रति भी आपके मन की श्रद्धा में अल्पता आएगी। आपका स्वास्थ्य भी इस मास में अच्छा नहीं रहेगा तथा समय समय पर आप शारीरिक व्याकुलता प्राप्त करेंगे परिणामतः आपके शारीरिक बल में भी न्यूनता आएगी तथा आपको दुर्बलता का आभास होगा। इसके साथ ही इस मास आप दूर की यात्रा भी कर सकते हैं। अपने सांसारिक कार्यों को सिद्ध करने में आप प्रायः असफल ही रहेंगे तथा मुकद्दमे आदि में भी आपका धन व्यय होगा जिससे आप आर्थिक रूप से भी शिथिल होंगे।

साथ ही इस मास में आप वायु से उत्पन्न होने वाले रोगों से पीड़ित रहेंगे तथा किसी ऐसे कार्य को भी जाने अनजाने सम्पन्न करेंगे जिससे आपकी समाज में मान हानि हो सकती है। इसके साथ ही आग के द्वारा भी आपको किसी प्रकार से हानि हो सकती है। अतः सावधानीपूर्वक अपने कार्यकलापों को सम्पन्न करना चाहिए।

जून 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए पूर्ण रूपेण शुभ फल दायक रहेगा। इस समय आपके उच्चाधिकारी वर्ग आपसे सन्तुष्ट एवं प्रसन्न रहेंगे।फलतः आप किसी सम्माननीय पद को प्राप्त करने में सफल हो सकेंगे। धनार्जन इस समय प्रचुर मात्रा में होगा तथा सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आपको धन लाभ हो सकेगा। इस मास आपके घर में कोई धार्मिक कार्यक्रम भी सम्पन्न होने की सम्भावना रहेगी। साथ ही स्त्री एवं पुत्र से भी पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करने में भी सफल रहेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा उत्पन्न होगी तथा यत्नपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करेंगे। समाज में इस समय आपकी यश तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा अधिकांश रूप से भाग्योदय सम्बन्धी कार्य सम्पन्न होंगे। इस मास आपकी बुद्धि में निर्मलता की वृद्धि होगी तथा लाभदायक यात्राओं का भी योग बनेगा। साथ ही मित्र एवं बन्धुवर्ग से आपके मधुर सम्बन्ध रहेंगे। इस प्रकार आप सर्वत्र मानप्रतिष्ठा अर्जित करेंगे तथा सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक समय व्यतीत करेंगे।

साथ ही इस समय गृहस्थ सुख उत्तम रहेगा एवं नवीन वस्त्रों या अन्य द्रव्यों को प्राप्त करन में भी सफल रहेंगे एवं आनंदपूर्वक अपने सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करेंगे।

जुलाई 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फल ही अधिक मात्रा में अर्जित करेंगे। इस समय आपके कार्य क्षेत्र, नौकरी या व्यापार में उन्नति होगी तथा समाजिक क्षेत्र में यश तथा सम्मान भी प्राप्त होगा। साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप पूर्ण सहयोग प्राप्त करेंगे तथा वे सभी आपसे प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे। मित्रों एवं बन्धु जनों से आपके मधुर सम्बन्ध रहेंगे तथा परस्पर आपको उचित सहयोग मिलता रहेगा। आपके कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी इस मास में सम्पन्न होंगे जो काफी समय से रुके हुए थे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा उत्पन्न होगी तथा इनकी पूजा तथा सेवा करने में भी आप तत्पर रहेंगे। सन्तति पक्ष से आप सुखी रहेंगे तथा बन्धुबान्धवों में भी आदर एवं प्रतिष्ठा की वृद्धि होगी। साथ

ही आप अपनी असफल आशाओं में भी इस समय सफलता अर्जित करने में सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त मानसिक रूप से भी आप पूर्ण शान्त एवं प्रसन्न रहेंगे।

साथ ही शुभ फलों के साथ साथ इस मास में अशुभ फल भी होंगे अतः आप गर्मी या पित्त दोष से शारीरिक अस्वस्थता प्राप्त करेंगे तथा किसी प्रकार से रक्त विकार भी हो सकता है। अतः सावधानी पूर्वक अपने समय को व्यतीत करें एवं शारीरिक सुरक्षा का विशेष ध्यान रखें।

अगस्त 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए पूर्ण शुभ तथा प्रसन्नता प्रदान करने वाला रहेगा। इस समय स्त्री वर्ग से आप लाभार्जन करेंगे तथा सौभाग्य से युक्त रहेंगे। सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप लाभ अर्जित करने में सफल रहेंगे। इस मास में आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा ज्ञानार्जन में भी आपकी रूचि रहेगी जिसमें आप सफलता अर्जित करेंगे। आप मन से भी इस समय शान्त एवं प्रसन्न रहेंगे। मित्र एवं बन्धुवर्ग से आप पूर्ण सहयोग तथा लाभ प्राप्त करेंगे तथा अन्य वांछित पदार्थों की भी आपको प्राप्ति होगी। संतति पक्ष से भी आप सुखार्जन करेंगे एवं सम्बन्धियों के मध्य मानप्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त आपके कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी इस समय में सम्पन्न होंगे तथा आप प्रसन्न रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री तथा अन्य पारिवारिक जनों से पूर्ण सुख एवं सहयोग अर्जित करेंगे। इस समय आपकी बुद्धि में निर्मलता का भाव रहेगा तथा धन लाभ प्रचुर मात्रा में होता रहेगा। धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा रहेगी तथा सुख पूर्वक समय व्यतीत करके समाज में पूर्ण यश तथा सम्मान प्राप्त करेंगे।

सितम्बर 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपका मध्यम रूप से व्यतीत होगा तथा आप शुभाशुभ दोनों प्रकार के फलों को प्राप्त करेंगे। इस समय आपका व्ययाधिक्य रहेगा तथा दुष्ट मनुष्यों की संगति भी करेंगे फलतः समाज में आपके सम्मान में न्यूनता आएगी। इस समय आप शारीरिक रूप से अस्वस्थ रहेंगे एवं मन में अशान्ति का भाव भी विद्यमान रहेगा। अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करने के लिए आपको अत्यधिक परिश्रम एवं पराक्रम प्रदर्शित करना पड़ेगा फिर भी सफलता अल्प मात्रा में ही मिलेगी। धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा की अपेक्षा उपेक्षा का भाव ही अधिक रहेगा साथ ही मित्रों एवं सम्बधियों के साथ परस्पर संबन्धों में तनाव रहेगा आपके कार्यक्षेत्र में भी इस समय व्यवधान उत्पन्न होगा एवं शत्रुपक्ष से भी चिन्ता तथा भय नित्य बना रहेगा। इसके अतिरिक्त मानसिक रूप से भी आप उद्विग्न रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी अर्जित करेंगे। इससे आप स्त्री से पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे तथा आपकी बुद्धि में निर्मलता के भाव की भी वृद्धि होगी तथा अन्य प्रकार से भी आप सुखानुभूति प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा की भावना उत्पन्न होगी तथा किसी धार्मिक उत्सव का आयोजन

करेंगे।

अक्तूबर 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही सुख एवं प्रसन्नता प्रदान करने वाला सिद्ध होगा। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मन से भी आप शान्त एवं सन्तुष्ट रहेंगे।साथ ही आपके पराक्रम में अभिवृद्धि होगी तथा शत्रु वर्ग आपसे चिन्तित, भयभीत एवं पराजित होंगे। आपके लाभमार्ग इस समय प्रशस्त रहेंगे अतः आर्थिक स्थिति में सुदृढता होगी। नौकरी या व्यापार के अतिरिक्त अन्य स्त्रोतों से भी आप लाभ अर्जित करने में सफल रहेंगे। इस मास आपके भाग्योदय सम्बन्धी कार्य सम्पन्न होंगे साथ ही कोई ऐसा महत्वपूर्ण कार्य भी सिद्ध होगा जिसकी आप काफी समय से प्रतीक्षा कर रहे थे। बन्धु एवं मित्र वर्ग से आपके मधुर सम्बन्ध रहेंगे तथा उनसे सुख भी प्राप्त करेंगे। सांसारिक कार्यो को सिद्ध करने में आप पूर्ण समर्थ रहेंगे तथा अपने उच्चाधिकारियों को प्रसन्न तथा सन्तुष्ट करने में भी आप सफल रहेंगे जिससे आपके सम्मान में वृद्धि होगी।

साथ ही इस मास में आप स्त्री तथा महिला सहयोगियों से वांछित सहयोग एवं लाभ भी अर्जित करेंगे। इस समय आपकी बुद्धि में निर्मलता के भाव में वृद्धि होगी तथा उचित लाभ एवं सुख प्राप्त करने में आप समर्थ रहेंगे। इस मास में धर्मानुपालन में भी आप प्रवृत रहेंगे तथा समाज में पूर्ण मान प्रतिष्ठा अर्जित करके प्रसन्नतापूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

नवम्बर 2026 के लिए फलादेश

इस मास को आप सुख एवं शान्ति पूर्वक व्यतीत करने में सफल रहेंगे इस समय आप अपने उत्साह एवं परिश्रम से धनार्जन करके अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ता प्रदान करेंगे। साथ ही समाज में आपका यश भी दूर दूर तक व्याप्त होगा। मित्र एवं बन्धु वर्ग से आप यथोचित आदर तथा सम्मान प्राप्त करेंगे तथा स्वयं भी उनको अपना वांछित सहयोग प्रदान करेंगे। उच्चाधिकार प्राप्त वर्ग का आपको पूर्ण संरक्षण तथा आश्रय प्राप्त होगा जिससे आप उचित लाभ एवं सहायता प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही इस महीने में आप मिष्ठान का भक्षण अधिक मात्रा में करेंगे। आपका शारीरिक स्वास्थ भी अच्छा रहेगा तथा मानसिक रूप से भी आप प्रसन्न एवं शान्त रहेंगे। साथ ही शत्रु वर्ग को पराजित करने में आप समर्थ रहेंगे तथा वे आपसे चिन्तित एवं भय की अनुभूति करेंगे। इसके अतिरिक्त व्यापार आदि कार्य के द्वारा भी आप धनार्जन करने में सफल रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप अपने श्रेष्ठ जनों या उच्चाधिकारियों से सहयोग प्राप्त करेंगे जिससे आपके कार्यक्षेत्र में उन्नति या विस्तार होने की सम्भवाना बढ़ेगी। इस समय आप दूर समीप की यात्रा भी कर सकते हैं तथा नवीन वस्तुओं या वस्त्रों आदि की भी आपको प्राप्ति हो सकेगी।

दिसम्बर 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए उत्तम तथा शुभ फल प्रदान करने वाला रहेगा। इस समय आप अपने पराक्रम से धनार्जन करेंगे तथा नाना प्रकार से सुखों का उपभोग करने में सफल रहेंगे। साथ ही समाज एवं समाजिक जनों से आप यथोचित आदर तथा सम्मान प्राप्त करने में सफल सिद्ध होंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूजा एवं सम्मान का भाव विद्य मान रहेगा तथा धर्मानुपालन में भी आपकी रूचि उत्पन्न होगी। साथ ही अन्य लोगों के परोपकार संबधी कार्यो को भी आप सम्पन्न करेंगे। शारीरिक रूप से आप स्वस्थ रहेंगे तथा उच्चाधिकारी वर्ग से आश्रय प्राप्त करके समाज में यश एवं प्रतिष्ठा अर्जित करेंगे। इस महीने में बन्धु तथा मित्र वर्ग से आपको पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा तथा आप भी उनको सहयोग तथा सुख प्रदान करेंगे इसके अतिरिक्त अपने मानसिक विचारों तथा संकल्पों को पूर्ण करने में भी आप सफलता अर्जित करेंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से भी सुख प्राप्त करेंगे तथा आपकी बुद्धि में भी सद्विचारों की वृद्धि होगी। विविध प्रकार के सुखों का आप इस समय उपभोग कर सकेंगे। इसके अलावा धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा उत्पन्न होगी तथा किसी धार्मिक उत्सव का आयोजन करने में भी आप सफल हो सकेंगे। इस प्रकार यह मास आपका शान्ति एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि सप्तम भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं सप्तम भाव में आजाएंगे। मकर राशि के राहु इस वर्ष पंचम भाव में रहेंगे। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं द्वादश भाव में गोचर करेंगे, और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्यतः उत्तम रहेगा। आप कार्य व्यवसाय में उन्नति करेंगे। एकादशस्थ गुरु आपको सफलता के लक्ष्य तक अवश्य पहुचाएंगे। बड़े अधिकारियों या अनुभवी लोगों का सहयोग मिलेगा, जिसका लाभ उठा कर आप व्यापार में उन्नति करेंगे। यदि आप किसी के साथ मिलकर कार्य कर रहे हैं, तो बहुत ज्यादा सफलता नहीं मिलेगी। चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वालों का स्थान परिवर्तन हो सकता है।

जून के बाद आपका समय प्रभावित हो रहा है। उस समय आपको धोखा या व्यापार में हानि हो सकती है। गुप्त शत्रु व विरोधी आपके कार्यों में रुकावटें उत्पन्नकरेंगे। सकारात्मक सोच व आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़े क्योंकि वर्षान्त में शनि एवं गुरु ग्रह का गोचर एक साथ अनुकूल हो रहा है। उस समय आपको अपने व्यापार व कार्यक्षेत्र में बहुत अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। एकादशस्थ गुरु के प्रभाव से धनागम में निरंतरता बनी रहेगी। आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में आपके भाइयों का मुख्य योगदान होगा। कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। फंसा हुआ या रूका हुआ धन मिलने की सम्भावना है, परन्तु गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय प्रभावित हो सकता है।

जून के बाद समय काफी प्रतिकूल हो रहा है। आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। अतः किसी प्रकार के जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। लेन देन के मामले में हमेशा सावधान रहें। 26 नवम्बर के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में अधिक व्यस्तता के कारण आप अपने परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे परन्तु परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। भाईयों का सहयोग मिलता रहेगा। सामाजिक पद व प्रतिष्ठा में वृद्धि

होगी। सप्तमस्थ शनि आपकी पत्नी का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकते हैं।

जून के बाद गूरु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। उस समय परिवार में किसी व्यक्ति के साथ वैचारिक मतभेद हो सकता है। एक दूसरे के प्रति वैमनस्य की भावना उत्पन्न होगी। सहन शक्ति को बढ़ाएं और अपने वौद्धिक शक्ति के अनुसार निर्णय लें।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान परगुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके बच्चों कोस्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है तथा बच्चों की उन्नति में अवरोध पैदा होगा।

जून के बाद पंचमस्थ राहु के प्रभाव से संतान संबंधित चिंताएं बढ़ सकती है। आपके बच्चे को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है, जिससे फलस्वरूप उसकी शिक्षा-दीक्षा भी प्रभावित हो सकती है। इस समयान्तराल में गर्भवती स्त्रियों का गर्भपात हो सकता है। 26 नवम्बर के बाद आपके दूसरी संतान के लिए समय शुभ हो रहा है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। लग्न स्थान पर शनि एवं राहु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपको स्वास्थ्य संबंधित परेशानी उत्पन्न हो सकती है। अचानक स्वास्थ्य खराब हो सकता है, परन्तु एकादशस्थ गुरु के प्रभाव से आप जल्दी ही स्वस्थ भी हो जाएंगे।

26 जून के बाद समय काफी प्रतिकूल हो रहा है। उस समय मौसम जनित बीमारी, दुर्घटना या किसी प्रकार के शारीरिक कष्ट का सामना करना पड़ सकता है। द्वादशस्थ गुरु के जल तत्व राशि में होने के कारण कफ रोग या मौसम सम्बन्धित बीमारियां घेर सकती हैं। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरुरी होगा। सुबह-सुबह व्यायाम करना या योगा करना आपके लिए लाभप्रद सिद्ध होगा। 21 नवम्बर के बाद स्वास्थ्य अनुकूल होना शुरु हो जाएगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का पूर्वार्द्ध विद्यार्थियों के लिए अनुकूल नहीं रहेगा। पंचमस्थ राहु के प्रभाव से आपकी शिक्षा में रूकावट आ सकती है। आलस्य की भावना आपकी शिक्षा में व्यवधान डाल सकती है। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है।

26 जून के बाद समय प्रतिकूल हो रहा है। उस समय प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्त करने के लिए लगातार अथक प्रयास करना पड़ेगा। बेरोजगार जातकों को अभी और इंतजार करना पड़ सकता है। 26 नवम्बर के बाद विद्यार्थियों के लिए समय काफी अच्छा हो जाएगा।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध मे छोटी यात्राएं तो होती रहेंगी, परन्तु 26 जून के बाद द्वादश स्थान के गुरु आप को विदेश यात्रा भी करा सकते है।

चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपनी जन्मभूमि की यात्रा होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा रहेगा। एकादशस्थ गुरु ग्रह के प्रभाव से आपका मन पूजा-पाठ के प्रति ज्यादा आकर्षित रहेगा। परमात्मा के भक्ति या मन्त्र पाठ में रूचि लेंगे। सप्तमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप धर्मपत्नी के साथ कोई विशेष पूजा-पाठ करेंगे। 26 जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर द्वादश स्थान में होने से दान-पुण्य की मनोभावना उत्पन्न होगी।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा, सुश्रूषा करें।
- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु या काला कम्बल दान करें।
- गरीबों को भोजन कराएं।

मासिक फलादेश

जनवरी 2027 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा तथा अशुभ फल अधिक मात्रा में होंगे। इस समय आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा कई प्रकार से आपको शारीरिक कष्टानुभूति होगी। साथ ही शत्रु वर्ग से भी आप भयभीत एवं चिन्तित रहेंगे जिससे आप मानसिक रूप से भी अशान्त रहेंगे। पारिवारिक जनों से भी इस समय आपके मधुर संबध नहीं रहेंगे तथा अनावश्यक रूप से संबधों में तनाव विद्यमान रहेगा। आपके व्यापार या कार्यक्षेत्र में भी हानि या मंदी के योग बनेंगे। साथ ही स्थान या कार्य क्षेत्र में परिर्वतन भी कर सकते है। समाज में भी अधिकाशं लोगों से आपके विवाद होते रहेंगे जिसके कारण उनसे कटुता का व्यवहार रहेगा फलतः आपके समाजिक सम्मान में अल्पता आएगी। इसके अतिरिक्त शरीर में रोग तथा धन हानि भी हो सकती है।

साथ ही इस मास गर्मी या पित्तादि दोषों से भी अस्वस्थ रहेंगे। इस समय किसी कारण से रक्त विकार होने की भी संभावना रहेगी इसके अतिरिक्त अग्नि के द्वारा भी किसी प्रकार से धन हानि हो सकती है। अतः इस समय आप सावधानी एवं बुद्धिमता पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करें।

फरवरी 2027 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ फलदायक रहेगा। आपकी बुद्धि में इस समय निर्मलता की वृद्धि होगी तथा अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य बुद्धिबल से ही सम्पन्न करेंगे। इस मास आप संतति पक्ष से पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे तथा अन्य प्रकार से द्रव्य लाभ अर्जित करने में भी सफल रहेंगे। इस समय आपके प्रभुत्व में भी वृद्धि होगी तथा अन्य लोग आपके प्रभुत्व को हृदय से स्वीकार करेंगे एवं आपका हार्दिक सम्मान भी करेंगे। आपके अधिकाशं शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस मास में सम्पन्न होंगे तथा किसी शुभ समाचार को भी प्राप्त करेंगे। देवता एवं ब्राहमणों की भी आप श्रद्धा पूर्वक पूजन एवं सम्मान करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त राज्य या उच्चाधिकारी वर्ग से लाभार्जन करने में भी आप सफल रहेंगे।साथ ही समाज में आपकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी तथा आपकी मनोकामनाएं पूर्ण होगी फलतः मानसिक रूप से आप सन्तुष्ट रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप पुत्र तथा स्त्री से भी वांछित सुख एवं सहयोग प्राप्त करने में भी सफल रहेंगे तथा नवीन वस्त्र या द्रव्यों की भी आप प्राप्ति कर सकते है। इस प्रकार आपका यह मास सुख एवं शान्ति पूर्वक व्यतीत होगा।

मार्च 2027 के लिए फलादेश

यह महीना आपके लिए सामान्यतया अशुभ फलदायक रहेगा। इस समय आपका

स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा फलतः आप शारीरिक रूप से दुर्बलता की अनुभूति करेंगे। साथ ही शत्रु पक्ष के प्रबल होने से उनकी तरफ से भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे अतः मन में भी अशान्ति रहेगी। आपके घर में इस मास चोरी भी हो सकती है अतः चोरों से सावधान रहें। साथ ही अपने उच्चाधिकारी वर्ग से पूर्ण सहयोग रखें एवं उनकी आज्ञा का पालन करें अन्यथा आपको दण्डित भी किया जा सकता है। आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस मास अल्प मात्रा में ही सम्पन्न होंगे तथा धन का व्यय भी अनावश्यक तथा अधिक होगा।साथ ही आप किसी ऐसे कार्य को भी सम्पन्न करेंगे जिसके लिए आपको बाद में पश्चाताप करना पड़ेगा।संबधियों एवं मित्रों से आपके संबधों में तनाव रहेगा एवं समाज से भी आप अपने को उपेक्षित महसूस करेंगे। इसके अतिरिक्त आपकी मनोकामनाएं भी इस समय अल्प मात्रा में ही पूर्ण होंगी ।

साथ ही इस समय आप वातोत्पन्न रोगों से भी पीड़ित रहेंगे। अग्नि के द्वारा भी आप न्यूनाधिक धन हानि प्राप्त करेंगे अतः सोच समझकर अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करें जिससे अनावश्यक कष्ट न हों।

अप्रैल 2027 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए काफी अशुभ तथा परेशानियां उत्पन्न करने वाला रहेगा। इस समय आप स्त्री तथा बन्धु जनों से कष्ट प्राप्त करेंगे एवं शत्रुओं से भी चिन्तित तथा भयभीत रहेंगे जिससे मानसिक रूप से आप उद्विग्न रहेंगे। इस मास में आपके उत्साह में भी न्यूनता आएगी तथा धन का व्यय भी अधिक मात्रा में होगा फलतः आपकी आर्थिक स्थिति भी कमजोर होगी। आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं रहेगा एवं मन में लोलुपता के भाव की प्रधानता रहेगी। अपने बन्धु एवं मित्रों से भी आपके मधुर संबध नहीं रहेंगे तथा अनावश्यक तनाव तथा वैमनस्य का भाव बना रहेगा। साथ ही इस समय आपके मित्र भी शत्रु के समान व्यवहार करेंगे इसके अतिरिक्त समाजिक जनों से भी विवाद होते रहेंगे जिससे आप काफी दुःखी एवं अशान्त रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप वायु द्वारा उत्पन्न रोगों से शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे तथा जाने अनजाने किसी ऐसे कार्य को सम्पन्न करेंगे जिससे आपकी समाज में अवमानना होगी एवं बाद में पश्चाताप भी करना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त आग के द्वारा भी आपको धन हानि का योग बनता है अतः सोच समझकर अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करें।

मई 2027 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए मध्यम रहेगा तथा शुभाशुभ दोनों प्रकार के फलों को आप प्राप्त करेंगे। इस समय शत्रु पक्ष प्रबल होने से आप उनसे चिन्तित तथा भयभीत रहेंगे साथ ही घर में चोरी होने की भी संभावना रहेगी। इस मास में धन का व्यय अधिक मात्रा में होगा फलतः आर्थिक रूप से भी आप परेशानी की अनुभूति करेंगे। धर्म के प्रति भी आपके मन में विशेष श्रद्धा का भाव नहीं रहेगा। इस समय आप शारीरिक रूप से भी अस्वस्थ रहेंगे एवं अन्य कई प्रकार से शारीरिक एवं मानसिक कष्टों को प्राप्त करेंगे। अतः शारीरिक बल की भी आप में न्यूनता रहेगी।

इस मास में आप दूर या समीप की यात्रा भी कर सकते है। आपके सांसारिक कार्यो में कई प्रकार से विध्न बाधाएं आएंगी अतः इन्हें समय पर पूर्ण करने में आप असमर्थ रहेंगे। साथ ही मुकद्दमें आदि कार्य में भी आपके धन का अपव्यय हो सकता है। अतः सोच समझकर बुद्धिमता से अपने कार्यों को सम्पन्न करें।

परन्तु इस मास में आप अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फलों को भी प्राप्त करेंगे।अतः आप स्त्री एवं पुत्र से सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे तथा इस समय आप नवीन वस्त्र या अन्य द्रव्यों को भी अर्जित कर सकेंगे जिससे आपको मानसिक प्रसन्नता प्राप्त होगी।

जून 2027 के लिए फलादेश

इस मास में आप अधिकांश शुभ फल अर्जित करेंगे परन्तु अल्प मात्रा में अशुभ फल भी घटित होते रहेंगे। इस समय आप प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगे तथा उच्चाधिकारी वर्ग भी आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेगा। साथ ही इस महीने में आप किसी धार्मिक उत्सव या कार्यक्रम का भी आयोजन कर सकते है। संतति पक्ष से आप पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे तथा उनकी तरफ से आपको कोई चिन्ता नहीं रहेगी साथ ही धार्मिक क्षेत्र में आपकी श्रद्धा में वृद्धि होगी एवं देवता तथा ब्राहमणों का आप श्रद्धा पूर्वक पूजन तथा सेवा करेंगे। समाज में आपकी मान प्रतिष्ठा में इस समय में पूर्ण वृद्धि होगी तथा भाग्योदय संबधी कार्य में भी आपको सफलता प्राप्त होगी।

इस समय आपकी बुद्धि में निर्मलता का भाव रहेगा तथा लाभ दायक यात्रा का भी योग बनेगा। उच्चाधिकारी वर्ग से भी आपको पूर्ण आदर तथा सम्मान प्राप्त होगा ।मित्रों एवं बन्धु वर्ग से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा उनसे आपको उचित सहयोग तथा सम्मान प्राप्त होगा। इस समय आप समाज में सम्पन्न एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति समझे जाएंगे।

परन्तु इस मास में आप गर्मी या पित्तादि से शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे। साथ ही रक्त विकार का भय भी रहेगा अतः सावधानी तथा सतर्कता पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करें।

जुलाई 2027 के लिए फलादेश

इस मास को आप सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत करेंगे। इस समय आपके कार्य क्षेत्र में उन्नति होगी तथा समाज में पूर्ण मान तथा प्रतिष्ठा अर्जित करने में सफल रहेंगे। इसके साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग से आप सहयोग तथा सम्मान भी प्राप्त करेंगे तथा ये लोग आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। मित्रों एवं बन्धुओं से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा इनसे आप पूर्ण सहयोग प्राप्त करेंगे तथा उनकी भलाई के कार्यो को करने में भी तत्पर रहेंगे।आपके कई विलम्बित शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस मास सम्पन्न होंगे जिससे आपको हार्दिक प्रसन्नता प्राप्त होगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा विधि पूर्वक आप इनका पूजन तथा सम्मान करेंगे। संतति पक्ष से भी आप पूर्ण सुखी रहेंगे तथा मित्रों एवं बन्धुओं के मध्य आप की मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।साथ ही आपकी असफल आशाएं भी इस समय

सिद्ध होगी जिससे आप मानसिक रूप से प्रसन्न रहेंगे।

साथ ही इस समय आप स्त्री से पूर्ण सुख तथा सहयोग भी प्राप्त करने में सफल रहेंगे।आपकी बुद्धि भी इस समय निर्मल रहेगी एवं प्रचुर मात्रा में संपूर्ण मास धनार्जन होता रहेगा। धर्म के प्रति आपकी श्रद्धा में वृद्धि होगी तथा समाज में आप पूर्ण यश तथा प्रतिष्ठा अर्जित करने में सफल रहेंगे।

अगस्त 2027 के लिए फलादेश

इस मास को आप सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत करेंगे। इस समय आप स्त्री वर्ग से पूर्ण लाभ एवं सहयोग अर्जित करने में सफल रहेंगे। साथ ही सौभाग्य से भी आप युक्त रहेंगे जिससे आपके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथा समय सिद्ध होंगे ।सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से लाभार्जन करने में भी इस मास में सफलता प्राप्त करेंगे ।शारीरिक रूप से आप पूर्ण स्वस्थ रहेंगे तथा मन भी प्रसन्नता से युक्त रहेगा। अध्ययन या ज्ञानार्जन में भी आपकी तीव्र रूचि रहेगी। मित्रों तथा संबधियों से आपके संबध मधुर एवं घनिष्ठ रहेंगे तथा उनसे पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे। इस मास आपको वांछित द्रव्यों की प्राप्ति होगी जिसके उपभोग से आप सुखी तथा निश्चिंत रहेंगे। साथ ही बन्धु वर्ग में प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा असफल आशाओं में भी आप सफलता प्राप्त करेंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री का पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे तथा अन्य महिला सहयोगियों से भी वांछित सहयोग प्राप्त करेंगे जिससे आपके कई शुभ कार्य सिद्ध होंगे। आपकी बुद्धि में इस समय निर्मलता के भाव की वृद्धि होगी तथा उचित धन लाभ एवं सुख प्राप्त करने में भी आप सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा की भावना उत्पन्न होगी तथा समाज में आप पूर्ण यश अर्जित करने में सफल रहेंगे।

सितम्बर 2027 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए शुभाशुभ फलों से युक्त मध्यम रहेगा। इस समय आपका व्यय अधिक मात्रा में होगा तथा दुष्ट मनुष्यों के साथ में रहेंगे अतः आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर होगी। जिससे आप मानसिक रूप से अशान्त रहेंगे। साथ ही शारीरिक रूप से भी आप अस्वस्थ तथा दुर्बल रहेंगे। इस मास में अत्यधिक परिश्रम के पश्चात भी आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अल्प मात्रा में ही सफल होंगे। धर्म के प्रति आपके मन में विशेष श्रद्धा का भाव नहीं रहेगा तथा देवता एवं ब्राहमणों का आप उचित पूजन तथा सम्मान नहीं करेंगे। साथ ही अन्य प्रकार से भी हानि होती रहेगी तथा मित्रों एवं संबधियो से भी मधुर संबध नहीं रहेंगे।

परन्तु इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ आपको शुभ फल भी प्राप्त होंगे। अतः महिला सहयोगियों से आप लाभार्जन करेंगे तथा आपकी बुद्धि में भी निर्मलता के भाव की वृद्धि होगी फलतः उचित लाभ एवं सुख प्राप्त करने में आप सफल रहेंगे। इसके साथ ही समाज एवं सामाजिक जनों से भी आप यश एवं सम्मान प्राप्त करने में सफल हो सकेंगे।

अक्तूबर 2027 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत सुख एवं प्रसन्नता प्रदान करने वाला होगा। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा मन से भी आप पूर्ण प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। साथ ही आपके पराक्रम में वृद्धि होगी तथा शत्रु वर्ग निर्बल एवं आपसे पराजित रहेगा। इस समय आपके लाभ मार्ग भी उन्नति की ओर अग्रसर रहेंगे फलतः आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी एवं धनाभाव नहीं रहेगा। साथ ही व्यापार या नौकरी के अतिरिक्त अन्य स्त्रोतों से भी लाभार्जन करने में सफल रहेंगे इस मास में आपकी भाग्योन्नति भी होगी तथा तथा कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी सम्पन्न होंगे तथा काफी समय से रुके हुए कार्य भी सम्पन्न हो जाएंगे। बन्धु एवं मित्रों से आपके घनिष्ठ संबध रहेंगे एवं सम्सत सांसारिक कार्यो को आप अपने बुद्धिचातुर्य से सफल बनाएंगे। इसके अतिरिक्त उच्चाधिकारी वर्ग भी आपसे प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे तथा उनसे आप उचित सहयोग तथा लाभ भी अर्जित करेंगे।

साथ ही इस मास में आप श्रेष्ठ जनों एवं उच्चाधिकार प्राप्त लोगों से सम्मान अर्जित करेंगे। इस समय आपके आजिविका संबधी कार्य में भी उन्नति एवं दृढ़ता का आभास होगा तथा दूर समीप की कोई लाभदायक यात्रा भी कर सकते है। साथ ही नवीन वस्त्रों या द्रव्यों की भी आप प्राप्ति करने में सफल रहेंगे। अतः आपके लिए यह मास शुभ रहेगा।

नवम्बर 2027 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए शुभ एवं शान्ति प्रदान करने वाला सिद्ध होगा। इस समय आप अपने उत्साह से धनार्जन करेंगे तथा आर्थिक स्थिति को सुधारने में सफल रहेंगे। इस मास आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा बन्धु एवं मित्रों से आपके मधुर संबध होंगे। साथ ही इनसे आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग की प्राप्ति होगी। उच्चाधिकार प्राप्त वर्ग से आप आश्रय प्राप्त करेंगे एवं उनसे आपको वांछित सहयोग तथा लाभ प्राप्त होगा। इस समय आप मिष्ठान का उपभोग भी अधिक मात्रा में कर सकेंगे। इस मास आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा फलतः शारीरिक बल में पूर्ण वृद्धि होगी। शत्रु वर्ग को पराजित करने में भी आप सफलता प्राप्त करेंगे तथा वे आपसे भयभीत रहेंगे। इसके अतिरिक्त व्यापार आदि कार्यो से भी आप धन अर्जित करने में सफल रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे एवं अन्य महिला सहयोगियों से भी वांछित सहयोग एवं लाभ प्राप्त होगा। आपकी बुद्धि भी इस समय निर्मल रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धनार्जन होता रहेगा। धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा रहेगी तथा समाज में आपका यश व्याप्त रहेगा।

दिसम्बर 2027 के लिए फलादेश

इस मास में आप उत्तम फल प्राप्त करने में सफल रहेंगे। इस समय आप अपने पराक्रम से प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगे तथा विविध प्रकार के सुखों का उपभोग करने में सफल रहेंगे। साथ ही समाज से भी आपको यथोचित मान सम्मान एवं यश प्राप्त होगा। देवता एवं

ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा रहेगी तथा विधि पूर्वक आप इनका पूजन तथा सत्कार करेंगे। दूसरे लोगों की भलाई के लिए भी आप इस मास तत्पर रहेंगे। आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी उत्तम रहेगा तथा मान प्रतिष्ठा में पूर्ण वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त भाइयों से आपको इस समय पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा तथा आपके मानसिक विचार एवं संकल्प भी पूर्ण होंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से सुख प्राप्त करेंगे एवं अपनी बुद्धिमता से कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो में सफलता भी अर्जित करेंगे। धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा भाव उत्पन्न होता रहेगा। इस प्रकार यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ फलदायक रहेगा।

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि सप्तम भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरुआत में मकर राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु लग्न स्थान में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष के प्रारम्भ में सप्तम स्थान पर गुरु एवं शनि के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से आपको व्यापार में बहुत लाभ मिलेगा। वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा। फरवरी के बाद आपके कार्य व्यवसाय में व्यवधान आ सकता है। अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से आपके कार्यों में गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं। कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का समय सामान्य रहेगा।

24 जुलाई के बाद समय कुछ अच्छा हो रहा है। व्यापार व कार्य क्षेत्र में सफलता मिलनी शुरु हो जाएगी। भाग्य अनुकूल होने के कारण आपको कार्यों में सफलता मिल सकती है। चतुर्थस्थ राहु के कारण नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण हो सकता है। यह स्थानान्तरण आपके मनोनुकूल स्थान पर नहीं होगा।

धन संपत्ति

फरवरी के बाद आर्थिक उन्नति के लिए समय उत्तम नहीं रहेगा। कुछ ऐसे खर्च आ सकते हैं जिससे आपको आर्थिक हानि हो सकती है। आय के सारे मार्ग प्रभावित हो सकते हैं। इन सब के बावजूद आपका पैसा भी खो सकता है। किसी को उधान पैसा न दें। बच्चों के स्वास्थ्य पर भी व्यय हो सकता है।

24 जुलाई के बाद समय कुछ अच्छा हो रहा है। रुका हुआ धन वापस मिल सकता है जिससे आर्थिक स्थिति में कुछ सुधार होना शुरु होगा। सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से पत्नी या मित्रों से धन लाभ होगा। अपने व्यापार को और आगे बढ़ाने में भी धन व्यय करेंगे। चतुर्थस्थ राहु के कारण भौतिक सुख-सुविधाओं पर भी आपका खर्च होगा।

घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ में पारिवारिक माहौल उत्तम रहेगा परन्तु फरवरी के बाद गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से पारिवारिक अनुकूलता भंग हो सकती है। ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपके वैचारिक मतभेद होंगे। परिवार में एक-दूसरे के प्रति वैमनस्य की भावना उत्पन्न हो सकती है।

24 जुलाई के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। आपके परिवार में पुत्रादि का

विवाह या कोई मांगलिक कार्य संपन्न होगा जिसमें आपकी अहम भूमिका होगी। सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से पत्नी के साथ आपके सम्बन्ध मधुर होंगे। सामाजिक पद-प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष उत्तम रहेगा।

संतान

पंचमस्थ राहु के प्रभाव से वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए अच्छा नहीं है। वर्ष के प्रारम्भ से ही संतान संबंधित चिन्ताएं बनी रहेंगी। आपके बच्चों का स्वास्थ्य प्रभावित रहेगा जिससे उनकी शिक्षा भी प्रभावित हो सकती है। स्वास्थ्य संबंधित कोई लापरवाही न करें। गर्भवती स्त्रियों का गर्भपात हो सकता है।

24 जुलाई के बाद लग्न स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से समय काफी अनुकूल हो रहा है। आपके बच्चे की शिक्षा के क्षेत्र में रूचि बढ़ेगी। अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उसका प्रवेश हो जाएगा। आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय बहुत अच्छा है। यदि विवाह योग्य है तो विवाह भी हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। लग्नस्थ गुरु पर शनि की दृष्टि प्रभाव से शारीरिक आरोग्यता में वृद्धि होगी जिससे रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ेगी। फरवरी के बाद समय प्रतिकूल हो रहा है। द्वादशस्थ गुरु एवं अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से स्वास्थ्य में अचानक उतार चढ़ाव की स्थिति बन सकती है। कफ, मधुमेह, पेट संबंधित एवं मौसमजनित बीमारियों के कारण ज्यादा परेशान हो सकते हैं। कभी कभी बीमारी नहीं होने के बावजूद बीमार जैसा अनुभव होगा।

24 जुलाई के बाद गुरु ग्रह का गोचरीय प्रभाव लग्न स्थान में होने से स्वास्थ्य में सुधार आना शुरु हो जाएगा। अच्छे स्वास्थ्य के लिए खान-पान एवं दिनचर्या को सुधारें। आपकी धर्मपत्नी आपकी सेहत का पूरा ध्यान रखेगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। तकनीकी शिक्षा या व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को सफलता मिलेगी। फरवरी के बाद प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को सफलता प्राप्ति के लिए अथक प्रयास करना पड़ेगा।

24 जुलाई के बाद विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा हो रहा है। आप पढाई लिखाई में आगे रहेंगे। यदि आप उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में आपका प्रवेश हो सकता है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष काफी अच्छा है। फरवरी के बाद द्वादशस्थ गुरु विदेश यात्रा के अच्छे योग बना रहे हैं। जलीय क्षेत्र की यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं।

24 जुलाई के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। यात्रा के दौरान या वाहन चलाते समय सावधानी बहुत जरूरी है क्योंकि अष्टम स्थान में शनि का गोचर यात्रा में व्यवधान उत्पन्न करता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारंभ में लग्न, पंचम व नवम इन तीनों त्रिकोण भावों पर गुरु के गोचरीय प्रभाव के चलते आप ईश्वर भक्ति, योग, तीर्थाटन तथा गुरु भक्ति या गुरु दीक्षा लेने जैसी गतिविधियों में रुचि लेने के अतिरिक्त पूजा-पाठ, मंत्र जाप तथा यज्ञ आदि कर्म अधिक करेंगे। अष्टम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से तन्त्र के प्रति आपका आकर्षण ज्यादा रहेगा।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें।

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि अष्टम भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं अष्टम भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु चतुर्थ भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु द्वितीय भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं लग्न भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं द्वितीय भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं लग्न भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष की शुरुआत कार्य व्यवसाय के लिए सामान्य रहेगी। अष्टम स्थान के शनि व्यवसाय में उतार-चढ़ाव की स्थिति बना रहे हैं। आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचान में कठिनाईयों का अनुभव करेंगे। आपके कार्यों में गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं इसलिए अपनी बौद्धिक क्षमता के अनुसार कार्य करते रहें।

25 अगस्त से समय काफी अनुकूल हो रहा है। कार्य व्यवसाय में आपका भाग्य साथ देगा। लोगों का सहयोग प्राप्त होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक उन्नति के साथ होगा। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। संचित धन में भी वृद्धि होगी। आय के स्रोतों में निरंतरता बनी रहेगी। मांगलिक कार्यों में भी आप व्यय करेंगे । चतुर्थस्थ राहु के कारण माता या आपके स्वास्थ्य पर भी व्यय हो सकता है। अष्टम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से पैतृक संपत्ति या स्थिर धन का लाभ हो सकता है।

25 अगस्त से 05 अक्टूबर तक समय काफी अच्छा रहेगा। इस समय के अंतराल आपके रुके हुए पैसे या फसे हुए पैसे मिलेंगे। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। सितम्बर के बाद कोई बड़ा निवेश न करें। विशेष कर जमीन जायदाद में। नहीं तो आपका पैसा फंस सकता है।

घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ में परिवार में सदस्य संख्या में वद्धि होगी। आपके परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा। परिवार में एक-दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी जिससे आपस में भावनात्मक लगाव बढ़ेगा। 29 मार्च से पारिवारिक माहौल बिगड़ सकता है। परिवार में एक-दूसरे के साथ मानसिक मतभेद उत्पन्न होता रहेगा। अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से आपके ससुराल पक्ष के लोगों के साथ वैचारिक मतभेद हो सकते है।

25 अगस्त के बाद पारिवारिक वातावरण फिर से अनुकूल हो जाएगा और आपको परिवार का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। चतुर्थ स्थान का राहु माता के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है। अतः उनके खान पान पर ध्यान दें। आप सामाजिक गतिविधियों में कम भाग लेंगे।

संतान

वर्षारम्भ से आप के बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी। 29 मार्च के बाद आपके दूसरे बच्चे के लिए समय बहुत अच्छा हो रहा है। यदि विवाह योग्य है तो उसका विवाह भी हो सकता है। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि भर्गाधान के लिए उत्तम योग बना रही है। नवविवाहित महिलाओं के लिए संतानोत्पति का सुन्दर समय चल रहा है।

25 अगस्त के बाद संतान को उन्नति के अवसर मिलेंगे। मान-सम्मान प्राप्त करेंगे। संतान के साथ प्रेम व समन्वय में वृद्धि होगी। आपके घरेलू वातावरण में भी सुधार होगा।

स्वास्थ्य

वर्षारम्भ में अष्टमस्थ शनि एवं लग्नस्थ मंगल के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहेगा। मौसमजनित बीमारियों से आपका स्वास्थ्य प्रभावित होता रहेगा। 29 मार्च के बाद लग्न स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपके स्वास्थ्य में काफी सुधार आएगा। आप मानसिक रूप से सन्तुष्ट रहेंगे। प्रत्येक कार्य को आप सकारात्मक रूप से करेंगे। रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी। मानसिक शान्ति एवं शारीरिक आरोग्यता प्राप्त होगी और आप पूर्ण रूप से स्वस्थ्य रहेंगे।

05 अक्टूबर से फिर से स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है परन्तु आप शीघ्र ही अच्छे हो जाएंगे और अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए नियमित व्यायाम करेंगे। शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे। जिससे आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। करियर में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार परिश्रम करने की आवश्यकता है। 29 मार्च के बाद व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय उत्तम रहेगा।

25 अगस्त से 05 अक्टूबर तक प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए समय अच्छा रहेगा। इस समय के अंतराल में आपको सफलता मिल सकता है। आपके लिए रोजगार के नये-नये अवसर भी मिलेंगे। जिसका उचित लाभ उठाकर आप अपने करियर में सफल होंगे।

यात्रा-तबादला

द्वादश स्थान पर राहु की दृष्टि प्रभाव से वर्षारम्भ में विदेश यात्रा हो सकते हैं। 29 मार्च के बाद नवम पर गुरु की दृष्टि के कारण आपके जन्म स्थल से दुर की लम्ब यात्रा हो सकती है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण हो सकता है।

25 अगस्त से आपकी छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। 05 अक्टूबर के बाद आप जलीय क्षेत्रों की यात्रा भी करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। 29 मार्च के बाद नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी जिसके फलस्वरूप आप पूजा, पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान अधिक करेंगे। आप गुरु मन्त्र लेकर उसकी साधना कर सकते हैं। 05 अक्टूबर के बाद नवमस्थ शनि के प्रभाव से धार्मिक यात्रा भी करेंगे। आपकी रुचि धार्मिक कार्यों के प्रति और बढ़ जाएगी।

- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें। शनि मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक मंगलवार को हनुमानजी को चोला चढ़ाएं।
- दुर्गाजी की उपासना करें या दुर्गा बीसा कवच गले में धारण करें।

वार्षिक फलादेश - 2030

वर्षारम्भ में मेष राशि के शनि अष्टम भाव में रहेंगे और 17 अप्रैल को वृष राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे धनु राशि का राहु चतुर्थ भाव में रहेंगे और 04 फरवरी को वृश्चिक राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। 25 जनवरी को गुरु वृश्चिक राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 01 मई को तुला राशि एवं द्वितीय भाव में गोचर करेंगे और फिर से मार्गी होकर 23 सितम्बर को वृश्चिक राशि एवं तृतीय भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे 27 सितम्बर से 18 नवम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे

व्यवसाय

व्यावसायिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ बहुत अच्छा नहीं रहेगा। राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण व्यावसायिक जीवन में व्यवधान आ सकता है, परन्तु 17 अप्रैल के बाद समय बहुत अच्छा हो रहा है। यह समय आपके व्यापार में कुछ बड़ी उपलब्धियां लेकर आएगा।

पूर्ण रूप से यह वर्ष आपके लिए हितकर ही रहेगा। कार्यस्थल में भी आपका प्रदर्शन अच्छा रहेगा। जो लोग रोजगार के लिए परेशान है उन्हें जल्द ही सुखद समाचार मिलेगा। 23 सितम्बर से आप अपने काम को लेकर उत्साहित रहेंगे और अपनी योजनाओं को पूरा करने के लिए अथक प्रयास व मेहनत करेंगे। इस समय के अंतराल में आपको मनचाहा परिणाम मिलेगा। आपको केवल अपनी एकाग्रता बनाए रखनी है और फिर देखिए यह साल आपके लिए कितना लाभदायक होता है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ बहुत उत्तम नहीं रहेगा। माता-पिता का स्वास्थ्य अनुकूल करने में आपका व्यय होगा परन्तु अप्रैल के बाद व्यापारिक अनुकूलता के चलते आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होना शुरु हो जाएगा। भाग्य अनुकूल होने से आप बचत करने में भी सफल रहेंगे

गुरु एवं राहु की युति प्रभाव के चलते फरवरी से अप्रैल तक आप को बड़े निवेश या खरीदारी से बचना होगा। आने वाले महीनों में आपको निश्चित ही लाभ होगा। व्यवसायियों को व्यवसाय का विस्तार करने के लिए अवसर मिलेंगे। इस साल आप जमीन-जायदाद पर भी खर्च कर सकते हैं। यदि आप पिछले कई महीनों से घर लेने की सोच रहे हैं तो आप अपनी इस योजना को पूरा कर सकते हैं। 23 सितम्बर के बाद रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति हो सकती है। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल जाएगी।

घर-परिवार, समाज

चतुर्थस्थ राहु के प्रभाव से आपका पारिवारिक वातावरण अनुकूल नहीं रहेगा। आपके माता-पिता के लिए समय शुभ नहीं है। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं रहेगा। राहु ग्रह

का गोचर आपके भाईयों के लिए भी अच्छा नहीं है। ससुराल पक्ष के लोगों के साथ भी आपके संबंध अच्छे नहीं रहेंगे।

01 मई से सामाजिक एवं पारिवारिक दोनों पक्षों के लिए समय बहुत अच्छा हो रहा है। आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। परिवार में मांगलिक कार्य भी अधिक होंगे। आपकी सामाजिक पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे। समाज उत्थान या सामाजिक कल्याण के लिए आप कोई विशेष कार्य भी संपन्न करेंगे।

संतान

वर्षारम्भ से अप्रैल तक का समय संतान के लिए अच्छा नहीं रहेगा। गुरु एवं राहु ग्रह की युति आपकी संतान के लिए अच्छी नहीं है। स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहने के कारण उनकी शिक्षा-दीक्षा या उन्नति में रुकावटें आ सकती हैं।

मई से आपके बच्चों की उन्नति होगी और उनके साथ संबंधों में मधुरता आएगी जिससे आपके घरेलू वातावरण में भी सुधार होगा। आपकी दूसरे संतान के लिए यह समय बहुत अच्छा नहीं है।

स्वास्थ्य

वर्ष की प्रारम्भिक तिमाही छोड़ दें तो पूरे वर्ष आप स्वस्थ रहेंगे। आप मानसिक और शारीरिक दोनों रूपों से स्वस्थ रहेंगे अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए आप नियमित रूप से व्यायाम या योगा करते रहेंगे जिससे आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता रहेगा।

कुछ समय ऐसा भी आएगा जब आप खुद को थका हुआ महसूस करेंगे किन्तु कोई बड़ी स्वास्थ्य संबंधित समस्या का सामना नहीं करना पड़ेगा। अतः आप तनाव व चिंतामुक्त रहें। 23 सितम्बर के बाद अपने खान-पान पर अधिक ध्यान दें और आलस्य न करें। यह आपके स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्षारम्भ में आपको गुप्त शत्रुओं का सामना करना पड़ सकता है। 17 अप्रैल के बाद भाग्य का सहयोग पूर्ण रूप से मिलने के फलस्वरूप प्रतियोगियों को परास्त कर आप अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।

01 मई से विद्यार्थियों का नये तकनीकी विषय की ओर रुझान होगा। मैनेजमेंट, प्रशासनिक, शिक्षण से जुड़े लोगों को रिसर्च व टेनिंग के सिलसिले में विदेश जाने का मौका मिल सकता है।

यात्रा-तबादला

वर्ष का प्रारम्भ यात्रा की दृष्टि से अनुकूल है। गुरु ग्रह के प्रभाव से छोटी यात्राओं

के साथ लम्बी यात्राएं भी होंगी। नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आप धार्मिक यात्रा भी करेंगे।

नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा यह परिवर्तन आपके प्रतिकूल स्थान पर भी सकता है। विदेश यात्रा के भी योग हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारम्भ में घरेलू परेशानी के कारण धार्मिक कार्य कम ही करेंगे राहु एवं गुरु ग्रह की युति आपके दैनिक पूजा पाठ को भी प्रभावित कर सकती है। अष्टमस्थ शनि के कारण तन्त्र, मन्त्र, यन्त्र इत्यादि पर ज्यादा विश्वास करेंगे। तान्त्रिक क्रियाओं की सिद्ध के लिए आप साधना भी कर सकते हैं।

- मंगलवार के दिन हनुमान जी को लड्डू का भोग लगाकर गरीब लोगों को बांट दें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- दुर्गा जी की उपासना करें या राहु मन्त्र का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2031

इस वर्ष वृष राशि के शनि नवम भाव में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में वृश्चिक राशि के राहु तृतीय भाव में रहेंगे और 9 अगस्त को तुला राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में वृश्चिक राशि के गुरु तृतीय भाव में रहेंगे और 17 फरवरी को धनु राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 14 जून को वृश्चिक राशि एवं तृतीय भाव में गोचर करेंगे और फिर मार्गी होकर 15 अक्टूबर को धनु राशि एवं चतुर्थ भाव में आ जाएंगे। 4 जनवरी से 15 अगस्त तक मंगल वक्री होकर तुला राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे। 2 अगस्त से 15 अगस्त तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

यह वर्ष आपके लिए कई लाभकारी अवसर लेकर आ रहा है। आप अपने व्यावसायिक जीवन में कुछ विशेष करेंगे जिससे आपके सहयोगी और अधिकारी भी प्रभावित होंगे। अपने दायित्वों का पूर्ण रूप से निर्वहन करेंगे। आप अपने लक्ष्यों को योजनानुसार प्राप्त कर सकेंगे। इस दौरान आपको अपने भविष्य को ध्यान में रखते हुए अपनी योजना निर्धारित करनी होगी।

बेरोजगार युवकों को अड़चनों के बाद सफलता प्राप्त होगी। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। 15 अक्टूबर के बाद आपको रोजगार सम्बंधित सुखद समाचार मिलने शुरु हो जाएंगे और आप अपने सपनों को साकार करने के लिए अपने लक्ष्य की तरफ पूर्ण विश्वास के साथ आगे बढ़ेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक तौर पर यह साल आपके लिए चुनौतियों के साथ अनेक लाभ भी लाएगा। हालाँकि जिस तरह के चपल और बुद्धिजीवी व्यक्ति आप है, इन चनौतियों को लाभकारी अवसरों में बदलना आपके लिए बड़ी बात नहीं होगी। 18 फरवरी के बाद आप भूमि, भवन एवं वाहनादि पर भी अच्छा निवेश करेंगे। इस समय के अंतराल में आप इस बात पर ध्यान दे सकते हैं कि भविष्य में किए जाने वाले निवेशों से लाभ किस प्रकार पाया जाए। एक सही योजना बना कर आप निवेश से लाभान्वित हो सकते हैं।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में कोई खोया हुआ जरूरी दस्तावेज भी मिल सकता है। यदि ऋण के लिए आवेदन किया है तो वह भी बिना देरी के मंजूर हो जाएगा। हर प्रकार की आर्थिक परेशानियां तुरंत ही दूर हो जाएंगी। परिवार में मांगलिक कार्य होंगे जिसमें आप खुले हाथों से व्यय करेंगे। द्वितीयस्थ राहु के प्रभाव से परिजनों के स्वास्थ्य के ऊपर भी आपके पैसे खर्च होंगे।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों के लिए यह वर्ष कम अनुकूल है। द्वितीय स्थान के मंगल पारिवारिक वातावरण में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनाए रखेंगे जिससे परिजनों के बीच सामंजस्य

बिठाने में कठिनाई पैदा होगी। परिवार के कुछ लोगों का बर्ताव ठीक नहीं रहेगा। आपके पिता के लिए समय अनुकूल नहीं है।

गुरु ग्रह का गोचर पारिवारिक वातावरण के लिए बहुत अच्छा रहेगा। परिवार में एक दूसरे के साथ भावनात्मक लगााव में वृद्धि होगी। आपकी माता के लिए समय काफी शुभ है। तृतीयस्थ राहु के प्रभाव से आपका सामाजिक स्तर बढ़ेगा। मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

संतान

वर्ष के शुरु में संतान के लिए समय अच्छा है। आप अपने बच्चों के मनोबल को बढ़ाते रहें तो वे अपने लक्ष्य को अवश्य प्राप्त कर लेंगे।

9 अगस्त के बाद आपकी दूसरी संतान के लिए समय अच्छा हो रहा है। उस समय बच्चों के साथ प्रेम समन्वय में बृद्धि होगी। यदि आप दूसरी संतान की इच्छा रखते हैं। तो यह समय श्रेष्ठ है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल बना रहेगा। पूरा साल आप तंदरुस्त और सेहतमंद महसूस करेंगे। क्योंकि आपके अन्दर उत्साहवर्धक ऊर्जाओं की वृद्धि होगी। आप अपनी दिनचर्या में नयी गतिविधियों को शामिल करेंगे जैसे कि जिम जाना या सुबह-सुबह टहलना एवं व्यायाम आदि।

यदि आलस्य ने आपके अन्दर घर बना लिया तो आपका स्वास्थ्य एक चिंताजनक विषय बन सकता है। इसलिए आपके लिए खास सलाह है कि आप एकाग्रता से अपने भीतर एक सशक्त भाव उत्पन्न करें और अपने स्वास्थ्य पर अधिक ध्यान दें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। 18 फरवरी के बाद माध्यमिक शिक्षा ग्रहण कर रहे शिक्षार्थियों के लिये सयम बहुत शुभ है।

विदेशी भाषा सीखने के लिए यह समय काफी शुभ है यदि आप अपने शत्रुओं को परास्त करना चाहते हैं, तो नीतियों में बदलाव करना पड़ेगा।

यात्रा-तबादला

नवमस्थ शनि के प्रभाव से छोटी-मोटी यात्राओं के साथ आप लम्बी-लम्बी यात्राएं भी करेंगे। धार्मिक स्थलों की यात्रा करने का अवसर प्राप्त होगा। 18 फरवरी के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अनुकूल स्थार पर स्थानान्तरण होगा।

अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्ति अपनी जन्म भूमि की यात्रा करेंगे या अपने परिवार के साथ दर्शनीय स्थलों की यात्रा करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

इस वर्ष आप अपने कार्य व्यवसाय पर अधिक ध्यान देंगे और कर्म ही पूजा है इस वाक्य को भी चरितार्थ करेंगे।

- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दे एवं प्रणायाम करें।
- बुधवार के दिन चींटियों को दाना डालें एवं भूखे व्यक्तियों को खाना खिलाएं।
- नित्य हनुमान चालीसा का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2032

वर्षारम्भ में शनि वृष राशि एवं नवम भाव में होंगे और 31 मई को मिथुन राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। तुला राशि के राहु द्वितीय भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में धनु राशि केगुरु चतुर्थ भाव में रहेंगे और 5 मार्च को मकर राशि एवं पंचम भाव में गोचर करेंगे और वक्री होकर 12 अगस्त को धनु राशि एवं चतुर्थ भाव में आजाएंगे और पुनः मार्गी होकर 23 अक्तूबर को मकर राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

कार्य-व्यवसाय के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। व्यापार में बदलाव या फिर नौकरी में पदोन्नति की भी संभावना बन रहीहै। 5 मार्च से कार्यस्थल में प्रशंसा और पहचान मिलेगी और यह आपकी आशावादी विचारधारा के कारण ही होगा।राहु ग्रह का गोचर अच्छा नहीं होने कारण आपके कार्यों में कुछ परेशानियां आ सकती हैं लेकिन आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा उसका भी निदान निकाल लेंगे।

12 अगस्त से व्यावसायिक स्तर आपके लिए काफी हितकारी होने वाला है। आपको आपकी पिछली व्यावसायिक सफलताओं के लिए भी पुरुस्कृत किया जाएगा। साथ ही आपकी कड़ी मेहनत को नजरअंदाज नहीं किया जाएगा। दशमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप के अन्दर गजब का आत्मविश्वास उत्पन्न होगा जिससे आप अपने क्लाइंट्स को प्रभावित करने में सफल होंगे। नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति होगी।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ बहुत बढ़िया नहीं रहेगा। द्वितीय स्थान के राहु आर्थिक उन्नति में रुकावटें डाल सकते हैं। आय की राह में रोड़ा खड़ा करसकते हैं। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। शीघ्र पैसा बनाने वाले तरीको पर अंकुश लगाएं। 5 मार्च के बाद आय भाव पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धनागम के स्रोतों में वृद्धि होगी। साथ ही फंसे हुए या रुके हुए धन की प्राप्ति हो सकती है।धार्मिक यात्रा या मांगलिक कार्यों में धन व्यय होगा।

12 अगस्त से आर्थिक स्थिति के लिए समय और बढ़िया हो रहा है। भूमि संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों को अच्छा लाभ प्राप्त होगा। चतुर्थस्थ गुरु पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपको भूमि, भवन, वाहन इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। आप के सामने कई लाभकारी सौदे आएंगे। इसका भरपूर लाभ उठाने के लिए आप सतर्क रहें।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक वातावरण के लिए उत्तम रहेगा। चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से परिवार में सुख, शान्ति का वातावरण बनेगा। इन सबके पीछे आपका ही महत्वपुर्ण योगदान

होगा क्योंकि आप भी बहुत से ऐसे कामों को अंजाम देने वाले हैं जो पारिवारिक जीवन के लिए हितकर होंगे। आपके माता पिता के लिए समय काफी शुभ है।

द्वितीयस्थ राहु के कारण आपके परिवार में किंचित परेशानी आ सकती है परन्तु आप उन नकारात्मक पस्थितियों को भी सकारात्मक रूप में परिवर्तित कर देंगे। गुरु ग्रह के गोचर के बाद आपके प्रेम संबंधो में मधुरता बढ़ेगी। बच्चों के साथ भावनात्मक लगाव में वृद्धि होगी। 23 अक्तूबर के बाद परिजनों के साथ आप किसी धार्मिक स्थल की यात्रा करेंगे या घर परिवार में शुभ कृत्य का आयोजन होगा।

संतान

वर्षारम्भ संतान के लिए सामान्य रहेगा। 5 मार्च के बाद शिक्षा के क्षेत्र में उनकी रूचि बढ़ेगी। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं, तो सबसे अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो जाएगा।

नवविवाहित व्यक्तियों के लिए गर्भाधान का शुभ समय चल रहा है।आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय अच्छा है। यदि वह विवाह के योग्य है तो उसका विवाह हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में व्यावसायिक व्यस्तता के कारण आप अपने स्वास्थ्य पर ध्यान नहीं देंगे परन्तु 5 मार्च से लग्न स्थान पर शुभ ग्रह की दृष्टि आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा का विकास करेगी। आप अपने दैनिक कार्यो में स्फुर्तिवान बने रहेंगे।

12 अगस्त से आप प्रियजनों और परिजनों के साथ अधिक से अधिक समय बिताएंगे। शारीरिक आरोग्यता प्राप्ति के लिए घर में कोई विशेष धार्मिक आयोजन करेंगे। 23 अक्तूबर से आप अपनी दिनचर्या बहुत सशक्त रखेंगे और व्यायाम भी करेंगे जिससे अपने आपको आरोग्य व तंदरूस्त महसूस करेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

इस वर्ष विद्यार्थियों को शिक्षा के क्षेत्र में विशेष उपलब्धी प्राप्त होगी। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए भी ये समय बहुत शुभ है। प्रतियोगिता परीक्षार्थी परीक्षा में सफल होंगे। जो व्यक्ति अपना व्यापार शुरू करना चाहते हैं। उनके लिए यह समय अनुकूल है।

शनि के गोचर के बाद बेरोजगार लोगों को नौकरी मिलेगी। रोजगार के नये अवसर भी पैदा होंगे। व्यापार में सफलता और समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे।

यात्रा-तबादला

द्वादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से वर्षारम्भ में आपकी विदेश यात्रा के योग बन रहे हैं। तृतीयस्थ राहु के प्रभाव से छोटी-मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी। 5 मार्च के

बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के चलते आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी।

23 अक्तूबर के बाद नौकरी वाले व्यक्तियों का मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपनी जन्म भूमि की यात्रा होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से आपके घर में धार्मिक व मांगलिक कार्य अधिक होते रहेंगे। गुरु ग्रह के गोचर के बाद पूजा-पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान व मन्त्र जाप के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी।

- तांबे के लोटे से प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें।
- प्रत्येक दिन दुर्गा कवच का पाठ करें।
- बुधवार के दिन गणेश जी को दुर्वा चढ़ाएं एवं गणेश अथर्वशीर्ष का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2033

इस वर्ष शनि मिथुन राशि एवं दशम भाव में रहेंगे। 30 जनवरी तक राहु तुला राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे उसके बाद कन्या राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। 18 मार्च तक गुरु मकर राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे उसके बाद कुम्भ राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। 24 मार्च से 8 अक्टूबर तक मंगल वक्री होकर धनु राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय के लिए वर्ष के प्रारम्भ के तीन माह श्रेष्ठ रहेंगे। आप अपने व्यावसायिक जीवन में उन्नति करेंगे। अपने बौद्धिक बल के द्वारा व्यापार को एक अलग ही मुकाम पर ले जाएंगे। बड़ी-बड़ी योजनाएं और अवसर आपके द्वार पर दस्तक देंगे। आपको पूर्ण विश्वास के साथ आगे की ओर कदम बढ़ाना है। 18 मार्च के बाद दशमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण होगा। परन्तु व्यापारिक व्यक्तियों के लिए यह समय बहुत अच्छा नहीं रहेगा।

व्यावसायिक जीवन में उतार-चढ़ाव का सामना करना पड़ सकता है। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो आपका साझेदार धोखा दे सकता है। उसके साथ संबंध खराब हो सकते हैं। आप अपने अनुभवों से खुद का विकास करेंगे। आपका धैर्य ही आपको प्रगतिशील रहने के लिए प्रेरित करता रहेगा और आप हर समस्या का समाधान सूझ-बूझ से निकाल लेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ आपके लिए उत्तम रहेगा। संचित धन में वृद्धि होगी। धनागम के स्रोत बढ़ेंगे। नवीन संपत्ति खरीदने की दिशा में प्रयासरत रहेंगे। इसमें आपको सफलता भी मिलेगा। 18 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। अतः इस समय के अंतराल में आपको क्रय-विक्रय के मामले में सावधान रहना चाहिए। किसी को उधार पैसा न दें नहीं तो वापसी की उम्मीद कम है। अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं नहीं तो द्वादश स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि आपका अनावश्यक खर्च बढ़ा सकती है।

8 अक्टूबर से मंगल ग्रह का गोचर आपके आय के स्रोत में बढोत्तरी करेगा। रुके हुए या फंसे हुए पैसे मिलेंगे। कार्य व्यवसाय में भी आपको अच्छा लाभ मिलेगा। जिससे पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपका घरेलू माहौल अनुकूल नहीं रहेगा। परिवार में एक-दूसरे के साथ वैचारिक मतभेद होते रहेंगे। जिससे आप मानसिक रूप से अशान्त रह सकते हैं। आपके माता पिता का स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं रहेगा। धर्मपत्नी के साथ वैचारिक मतभेद बना रहेगा। 18 मार्च के बाद द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह दृष्टि प्रभाव से परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी।

परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न होंगे। मातुल व ससुराल पक्ष के लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा।

8 अक्टूबर के बाद आपके छोटे भाई-बहनों के लिए यह समय काफी शुभ हो रहा है। सामाजिक प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे। लोग आपका सम्मान करेंगे।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ काफी शुभ रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। वे कुछ ऐसे काम करेंगे, जिससे आप उन पर अभिमान करेंगे। नव विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। यदि आपके बच्चे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान मे उनका प्रवेश हो जाएगा।

18 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से संतान संबंधित चिंताएं हो सकती हैं। पंचम स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि आपके बच्चों का स्वास्थ्य प्रतिकूल कर सकती है। जिससे कारण उनकी शिक्षा-दीक्षा में रुकावटें आ सकती हैं। अतः उस समय अपने बच्चों के स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें। शारीरिक आरोग्यता प्राप्ति के लिए आप उनका तुला दान भी करा सकते हैं।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। शारीरिक अनुकूलता बनाए रखने के लिए आप संतुलित आहार एवं नियमित व्यायाम करते रहेंगे। लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे। आपके अंदर अच्छे विचार आएंगे और आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे। परन्तु 18 मार्च के बाद आप छोटी-मोटी बीमारियों के कारण परेशान हो सकते हैं। लग्नस्थ राहु के कारण मानसिक अशान्ति व आलस्य की भावना उत्पन्न होती रहेगी। अपने खान-पान एवं दिनचर्या को सुदृढ़ रखें।

सारे ग्रह प्रतिकूल होने से आप अत्यधिक उद्वेग व मानसिक चिंता से ग्रस्त रहेंगे। शत्रुओं से सावधानी भी हितकारी रहेगी। मुख रोग, नेत्र विकार आपका शारीरिक कष्ट बढ़ा सकते हैं। अपने क्रोध, हठ, जिद व अहं भाव का त्याग करें। कार्य को स्वास्थ्य से अधिक अहमियत न दें। सुबह सुबह व्यायाम के साथ योगाभ्यास करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। समय का सदुपयोग कर अपनी जीवनशैली को और उत्तम बनाने की कोशिश करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत उत्तम रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने लक्ष्य में सफलता मिलने के प्रबल योग बन रहे हैं। व्यापारिक व्यक्ति इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे तो अच्छा लाभ मिलेगा।

यदि आप विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो 18 मार्च से समय आपके लिए काफी शुभ हो रहा है। विदेशी भाषा सीखने के लिए यह समय बहुत ही शुभ है।

यात्रा-तबादला

नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण आपकी लम्बी यात्रा का भी प्रबल योग बन रहा है। चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण प्रतिकूल स्थान पर भी हो सकता है।

18 मार्च के बाद आपकी विदेश यात्रा होगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ मिलेगा। यात्रा के अंतराल में किसी से मित्रता भी हो सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। आप अधिक से अधिक धार्मिक कार्य करेंगे। जैसे मन्दिर निर्माण में दान देना, धार्मिक स्थलों पर भण्डारा करना, गरीबों की सहायता इत्यादि। तीर्थ स्थलों की यात्रा कर पुण्यार्जन करेंगे। गुरु ग्रह के गोचर के बाद आप पूजा-पाठ कम ही कर पाएंगे। परन्तु द्वादश स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की दृष्टि होने के कारण आप दान पुण्य अधिक करेंगे।

- माता-पिता, गुरु, साधु, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें।
- दुर्गा कवच का पाठ करें या दुर्गा बीसा यन्त्र अपने घर में स्थापित कर उसका पूजन करें।

वार्षिक फलादेश - 2034

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि मिथुन राशि एवं दशम भाव में रहेंगे और 13 जुलाई को कर्क राशि एवं एकादश स्थान में प्रवेश करेंगे। 12 अगस्त से पहले राहु कन्या राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे और उसके बाद सिंह राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कुम्भ राशि एवं छठे भाव में रहेंगे और 28 मार्च को मीन राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। परन्तु 28 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने से समय बहुत उत्तम हो रहा है। आप अपने परिश्रम की बदौलत व्यावसायिक जीवन में उन्नति करेंगे। दशमस्थ शनि आपके अंदर काम करने का जुनून उत्पन्न करेगा। यही आपके व्यवसायिक उन्नति का कारण बनेगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति होगी। आपको अधीनस्थ कर्मचारियों का अच्छा सहयोग मिलेगा और बड़े अधिकारी आपसे प्रसन्न रहेंगे।

जुलाई के बाद समय और भी ज्यादा अनुकूल हो रहा है। व्यापारियों को उम्मीद से ज्यादा मुनाफा होने वाला है। विभिन्न स्रोतों से धन का आगमन होगा। लक्ष्मी आपके द्वार पर दस्तक देगी। यदि आप ब्याज पर भी पैसे देते हैं तो भी अच्छा लाभ होने की संभावना है। इसके अतिरिक्त जो लोग शिक्षा के क्षेत्र से जुड़े हैं या इससे संबंधित क्षेत्र में उनका पैसा लगा है उनको भी बेहतर मुनाफा होगा।

धन संपत्ति

प्रारम्भ के तीन माह छोड़ दिए जाएं तो आपकी आर्थिक स्थिति बेहद ही शानदार रहने वाली है। इस सफर में आपको बहुत ही कम चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा। जिन्दगी के इस सुनहरे पल का भरपूर आनंद लें और अपने कार्यों के प्रति दृढ़ संकल्पित रहें।

जुलाई के बाद एकादश स्थान के शनि धनागम में वृद्धि करते रहेंगे। यह समय आपके लिए उपलब्धियों से भरा रहेगा। नई संपत्ति में निवेश करेंगे। पुराने कर्ज से मुक्त होंगे एवं तरक्की के द्वार खुलेंगे। व्यावसायिक उन्नति के लिए भी आप धन निवेश करेंगे। घरेलू सुख-सुविधा पर भी आप अधिक खर्च करेंगे।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों के लिए वर्ष का पूवार्द्ध मिला-जुला रहेगा। चतुर्थ स्थान पर शनि की दृष्टि पारिवारिक माहौल में विषता की स्थिति उत्पन्न कर सकती है। अतः आपको पारिवारिक मामलों में बड़ी ही समझदारी से काम लेना होगा। हालांकि द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि को दर्शाता है। मार्च के बाद मित्र व पत्नी के साथ संबंध बहुत ही मधुर होंगे। पति-पत्नी के बीच भावनात्मक लगाव में वृद्धि होगी।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आपके भाई-बहनों के लिए बहुत ही शुभ है। तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। परिवार में मांगलिक कार्य होते रहेंगे, जिससे परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए उत्तम नहीं रहेगा। छठे स्थान का गुरु आपकी संतान के लिए अच्छा नहीं है। शारीरिक कष्ट एवं मानसिक परेशानी बनी रहेगी। उनकी शिक्षा-दीक्षा में भी रूकावटें आ सकती हैं।

28 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर अच्छा हो रहा है। अतः उस के बाद आपके बच्चों की उन्नति होगी। फिर भी अपने बच्चों के स्वास्थ्य संबंधित किसी प्रकार की लापरवाही न करें। आपके दूसरे बच्चे के लिए समय काफी शुभ है। उसका चौमुखी विकास होगा।

स्वास्थ्य

साल का पूर्वार्द्ध स्वास्थ्य के लिहाज से अच्छा नहीं रहेगा। वर्षारम्भ से ही कुछ न कुछ शारीरिक परेशानी बनी रहेगी। लग्न स्थान का राहु अचानक आपको बीमार कर सकता है। यदि पहले से आप किसी बीमारी से पीड़ित हैं तो यह समय ज्यादा प्रभावित रहने वाला है। शारीरिक कष्ट के साथ मानसित चिंता भी बनी रहेगी।

28 मार्च से लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि शारीरिक व्याधियों को दूर कर आरोग्यता प्रदान करेगी। आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा का विकास होगा जिसके फलस्वरूप आप अपने को पूर्ण रूप से स्वस्थ्य महसूस करेंगे। फिर भी आपको अपने खान-पान पर संयम रखना चहिए। सूर्योदय से पहले उठ कर टहलना और व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। शारीरिक आरोग्यता को अनुकून बनाने के लिए आप तुला दान भी कर सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए उत्तम रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षार्थी अपने लक्ष्य में सफल रहेंगे। मार्च के बाद अध्ययन कार्यों में आपकी रूचि बढ़ेगी।

जो लोग नौकरी की तलाश में हैं उनको जुलाई के बाद मनोनुकूल नौकरी मिल सकती है। व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए यह समय श्रेष्ठ है।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में ही विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं। 28 मार्च से आप अपने जीवनसाथी के साथ दर्शनीय स्थलों की यात्रा का आनन्द प्राप्त करेंगे। व्यावसायिक यात्रा भी आपको लाभ देकर जाएगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में पूजा पाठ में आपका मन कम ही लगेगा। अधिक आलस्यता के कारण आपका दैनिक पूजा-पाठ भी प्रभावित हो सकता है। 28 मार्च के बाद धार्मिक कार्यों में आपकी रुचि बढ़ेगी। मन्दिर जाना, ध्यान करना, पूजा करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। ईश्वर के प्रति आपका लगाव और बढ़ेगा।

- बेसन के लड्डू वीरवार के दिन विष्णुजी के मन्दिर में वितरित करें एवं गुरु ग्रह के मन्त्र का पाठ करें।
- दुर्गा बीसा यन्त्र अपने घर में स्थापित करें एवं उसके सामने प्रत्येक दिन घी का दीपक जलाएं।
- गणेशजी के निम्न मन्त्र का पाठ करें-

  ॐ गं गणपतये नमः ।

वार्षिक फलादेश - 2035

इस वर्ष कर्क राशि का शनि एकादश भाव में और सिंह राशि का राहु द्वादश भाव में रहेंगे। 5 अप्रैल तक गुरु मीन राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे और उसके बाद मेष राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। 21 जुलाई से 9 सितम्बर तक वक्री मंगल मीन राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

इस वर्ष आप कुछ विशेष करने वाले हैं। पराक्रम के बल पर अपनी व्यापारिक स्थिति को सुदृढ़ बनाएंगे। कार्य व्यवसाय में मित्रों व परिजनों से खूब मदद मिलेगी। आप महत्वपूर्ण व्यक्तियों के संपर्क में आएंगे। यदि साझेदारी में कोई व्यापार कर रहे हैं तो वर्ष का प्रारम्भ आपके लिए श्रेष्ठ है। कानून से जुड़े लोगों अच्छा लाभ मिलेगा। 6 अप्रैल से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। अतः उस समय के बाद कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें।

अप्रैल के बाद आपके कार्यों में गुप्त एवं प्रत्यक्ष शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं। आपके विरोधी बढ़ेंगे जिससे आप मानसिक रूप से अशान्त रह सकते हैं। कार्यक्षेत्र में किसी से मतभेद हो सकता है। ऐसी स्थिति में आपको घबराना नहीं चाहिए और बड़े ही विवेक से काम लेना चाहिए, क्योंकि अन्त में सफलता आपको ही मिलने वाली है। अतः आत्मविश्वसा के साथ कार्य करते रहें।

धन संपत्ति

आर्थिक स्थिति को देखें तो वर्ष के प्रारम्भ में ही आय के स्रोत सृजित होंगे। एकादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि आर्थिक उन्नति के लिए बहुत ही श्रेष्ठ है। विभिन्न स्रोतों से धन का आगमन होगा, जिससे आप इच्छित बचत करने में सफल होंगे। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिलेगी। शेयर बाजार से जुड़े व्यक्तियों के लिए समय अच्छा रहेगा।

6 अप्रैल के बाद गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आय कम एवं व्यय ज्यादा होने का योग बन रहा है। ऐसे में आपको अनावश्यक खर्च रोकना चाहिए। निवेश के मामले में सावधान रहें एवं जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा धन हानि हो सकती है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक स्थिति में कुछ उतार-चढ़ाव होंगे। जीवनसाथी के साथ मधुर संबंध रहेंगे। भाईयों के साथ संबंध अच्छे रहेंगे, लेकिन माता के साथ वैचारिक मतभेद हो सकता है। चिंता न करें इससे आपकी माता की भावनाएं आहत नहीं होंगी। रिश्तेदारों और चाहने वालों के साथ संबंध अच्छे रहेंगे।

गुरु ग्रह का गोचर आपके ससुराल वालों के साथ संबंध खराब कर सकता है जिसके कारण आप मानसिक रूप से अशान्त रह सकते हैं। छोटी-छोटी बातों पर झगड़ा या

विवाद करना आपके लिए लाभप्रद नहीं रहेगा। एकादशस्थ शनि के प्रभाव से सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक कार्य के प्रति आप हमेशा तत्पर रहेंगे।

संतान

वर्षारम्भ संतान के लिए उत्तम रहेगा। उनके विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति होने के शुभ योग बनेंगे। उनके पराक्रम में वृद्धि होगी परंतु उसके बावजूद भी आपकी चिंताएं बनी रहेंगी। आपकी दूसरी संतान विवाह के योग्य है तो उसका विवाह हो जाएगा। यदि दूसरी संतान की इच्छा रखते हैं तो यह समय बहुत ही शुभ है।

6 अप्रैल से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपके बच्चों के लिए अच्छा नहीं रहेगा। उनको स्वास्थ्य संबंधी परेशानियां आ सकती हैं। अतः उनके स्वास्थ्य पर ध्यान देना लाभप्रद रहेगा।

स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ स्वास्थ्य की दृष्टि से उत्तम रहेगा। आप रोग मुक्त रहने वाले हैं। खान-पान पर विशेष ध्यान देंगे और अपने स्वास्थ्य को अनुकूल बनाए रखेंगे। परन्तु 6 अप्रैल के बाद कुछ न कुछ शारीरिक परेशानी उत्पन्न हो सकती है। मौसमजनित बीमारियों से भी आप परेशान होते रहेंगे। यदि पहले से किसी बीमारी से परेशान हैं तो यह समय आपके लिए ज्यादा प्रभावित रहने वाला है।

द्वादशस्थ राहु के कारण आपके अंदर रोग-प्रतिरोधक शक्ति कम होगी। आप अपने आप को कमजोर व बीमार महसूस कर सकते हैं। मसालेदार और तेल वाले आहार के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी, इसे नियंत्रित करने की कोशिश करें। नहीं तो पेट संबंधित तकलीफे बढ़ सकती हैं। तुला दान व अन्न दान करना आपके स्वास्थ्य के लिए लाभदायक रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष के प्रारम्भ में ही प्रतियोगिता परीक्षार्थी अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्त करेंगे। एकादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से शत्रुओं पर आपका प्रभाव बढ़ेगा। आपके समस्त विरोधी शान्त होंगे। व्यावसायिक शिक्षा, औषधि क्षेत्र, कम्प्यूटर साईंस, सिविल सर्विसेज से जुड़ लोगों को सफलता मिलेगी।

6 अप्रैल के बाद समय कुछ खास अच्छा नहीं रहेगा। कुछ लोग आपके विरुद्ध षड्यंत्र भी बना सकते हैं। बेवजह आपके ऊपर आरोप भी लगाया जा सकता है, जिससे आप काफी तनाव महसूस करेंगे। यदि आप विदेश में अपना करियर बनाना चाहते हैं तो यह समय आपके लिए बहुत ही शुभ है।

यात्रा-तबादला

विदेश यात्रा के लिए यह वर्ष बहुत ही शुभ है। द्वादश स्थान के राहु अचानक आपको विदेश यात्रा करा सकते हैं। ऑफिस व व्यवसाय से संबंधित छोटी-मोटी यात्राएं होती

रहेंगी। 6 अप्रैल के बाद जन्मभूमि की यात्रा करेंगे।

किसी भी प्रकार की यात्रा करते समय या वाहनादि चलाते समय सावधान रहें नहीं तसे दुर्घटना हो सकती है। क्योंकि अष्टम स्थान का गुरु एवं द्वादश स्थान का राहु चोट चपेट का प्रबल योग बना रहे हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि धार्मिक कार्यों के लिए बहुत ही शुभ है। ईश्वर की भक्ति में आपका अटूट विश्वास रहेगा। आप अपनी धर्मपत्नी के साथ सभी धार्मिक कार्यों में सम्मिलित होंगे। धर्म से जुड़े सभी पर्वों को हंसी खुशी मनाएंगे। 6 अप्रैल के बाद आप दान पुण्य अधिक करेंगे। अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से गुप्त विद्याओं या तान्त्रिक सिद्धियों के प्रति भी आपका आकर्षण बढ़ेगा।

- गुरुवार के दिन केला गरीबों में दान करें एवं केले के वृक्ष की पूजा करें।
- आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करें। ऊँ नमः शिवाय मन्त्र का प्रत्येक दिन पाठ करें।
- सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें और सूर्य नमस्कार करें आपके स्वास्थ्य के लिए लाभदायक रहेगा।

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि कर्क राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे और 27 अगस्त को सिंह राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। 13 अप्रैल तक राहु सिंह राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे और उसके बाद कर्क राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में मेषस्थ गुरु अष्टम भाव में रहेंगे और 15 अप्रैल को वृष राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे और अतिचारी होकर 9 सितम्बर को मिथुन राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः वक्री होकर 17 नवम्बर को वृष राशि एवं नवम भाव में आ जाएंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक जीवन के लिए यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। वर्षारम्भ में एकादशस्थ शनि के प्रभाव से व्यापार में अच्छी सफलता मिलेगी, परन्तु गुरु एवं राहु ग्रह का गोचन प्रतिकूल होने के कारण कुछ विरोधी उत्पन्न हो सकते हैं। जो कि आपके कार्य व्यवसाय में कुछ व्यवधान उत्पन्न कर सकते हैं। ऐसे में आपको बड़ी सावधानी से काम लेना चाहिए। जल्दबाजी में कोई निर्णय न लें, गलत-सही का चुनाव करने के बाद ही निर्णय लें।

गैरकानूनी तरीकों से धन कमाने की कोशिश न करें, वरना सकारात्मक परिणामों की जगह आपको नकारात्मक परिणाम मिल सकते हैं और आप कानून की जद में आ सकते हैं। अर्जित की हुई संपत्ति को व्यर्थ में न गवाएँ। सभी प्रकार के वित्तीय मामलों में पारदर्शिता बरतें। अप्रैल के बाद समय अच्छा हो रहा है। फिर भी बिना किसी पर विश्वास किये आप अपनी बौद्धिक शक्ति के अनुसार कार्य करते रहें। अगस्त के बाद नौकरी वाले व्यक्तियों को अच्छी सफलता मिलेगी। कार्यस्थल पर मान-संमान व अधिकारियों का अच्छा सहयोग मिलेगा।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ जितना लाभकारी होगा उतना ही चुनौतीपूर्ण भी होगा। साल की शुरुआत में निवेश से सम्बंधित योजनाओं पर ध्यान न दें और अपने दस्तावेज भी संभाल कर रखें। हड़बड़ी में कोई भी कार्य न करे नहीं तो आर्थिक हानि हो सकती है। निवेश व आर्थिक निर्णय लेते समय सतर्क रहें व जल्दबाजी न करें। जितना ज्यादा हो सके धन की बचत करने की कोशिश करें और फिजूल के खर्चो पर नियंत्रण रखें।

चतुर्थ स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि के कारण कोई करीबी ही आपको दगा दे सकता है। ऐसे लोगों से बचने के लिए किसी भी प्रकार के वित्तीय लेनदेन में पूरी सावधानी बरतें। अप्रैल के बाद आपके बंद आय के आय के मार्ग खुलेंगे। बहुत दिनो से फंसे हुए व रुके हुए धन की प्राप्ति होगी। 9 सितम्बर के बाद द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से अचल संपत्ति के साथ साथ वाहन का भी सुख प्राप्त होगा। मांगलिक कार्य या सामाजिक कार्यो में आपका धन खर्च हो सकता है। आप अपने बच्चे की उच्च शिक्षा पर भी धन खर्च कर सकते हैं।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। आपको पूरे परिवार का सहयोग प्राप्त होगा और घरेलू वातावरण भी अच्छा रहेगा। माता का पूर्ण सहयोग मिलेगा। परन्तु आपके बच्चों के स्वास्थ्य के लिए यह समय अच्छा नहीं है।

15 अप्रैल के बाद तृतीय स्थान पर गुरु की दृष्टि के कारण सामाजिक प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे, जिससे समाज में मान संमान के साथ साथ आपकी ख्याति भी बढ़ेगी। आपको भाई-बहनो का पूर्ण सहयोग मिलेगा।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए अच्छा नहीं है। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेगे। वो अपने बौद्धिक बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। अष्टमस्थ गुरु आपको स्वास्थ्य संबंधित परेशानी दे सकते हैं। ऐसे में उनके स्वास्थ्य पर ज्यादा ध्यान देना चाहिए।

अप्रैल के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। नव विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है। आपके बच्चे शिक्षा के क्षेत्र में विशेष उन्नति करेंगे। दूसरे बच्चे के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

इस वर्ष आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव कि स्थिति बनी रहेगी। अष्टमस्थ गुरु एवं द्वादशस्थ राहु के कारण मौसमजनित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं। यदि पहले से कोई लम्बी बीमारी है तो परहेज की ज्यादा आवश्यकता है नहीं तो आप बहुत ज्यादा बीमार हो सकते हैं। ऐसी स्थिति में खान-पान के साथ दिनचर्या को भी अनुशासित बनाएं और समय समय पर डॉक्टर की सलाह लेना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। किसी आर्थिक मुद्दे को लेकर या किसी विरोधी के कारण दिमागी तनाव न पालें। चिड़-चिड़े न बनें अन्यथा इस सबका आपकी सेहत पर विशेष प्रभाव पड़ेगा।

15 अप्रैल के बादे नैसर्गिक रूप से आपके स्वास्थ्य में सुधार होना शुरु हो जाएगा। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके मन में अच्छे विचार आएंगे। आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति का संचार होगा, जिससे आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। फिर भी सुबह-सुबह व्यायाम करना आपके लिए लाभदायक रहेगा। समय का सदुपयोग कर अपनी जीवनशैली बेहतर बनाने की कोशिश करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष ठीक ठाक रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में द्वादश स्थान के राहु विदेश यात्रा के प्रबल योग बना रहे हैं। 15 अप्रैल के बाद आपकी छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। नवमस्थ गुरु के प्रभाव से आपकी लम्बी यात्राओं के साथ साथ धार्मिक यात्राएं भी हो

सकती हैं।

इन यात्रा के अंतराल में किसी के साथ आपकी मित्रता भी हो सकती है। यह मित्रता आपके लिए लाभप्रद रहेगी। अगस्त के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानातरण आपके मनोनुकूल स्थान पर भी हो सकता है। अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की जन्मभूमि की यात्रा होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। अष्टम स्थान का गुरु धार्मिक कार्यों के लिए अच्छा नहीं होता। अतः पूजा, पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान में आपकी रुचि नहीं रहेगी। लग्न स्थान पर शनि की दृष्टि के कारण मानसिक द्वन्दता बनी रहेगी, जिससे पूजा पाठ में आपका मन एकाग्र नहीं हो पाएगा। 15 अप्रैल के बाद गुरु ग्रह का गोचर धर्म स्थान में होगा। उस समय आपका मन धार्मिक कार्यों की ओर आकृष्ट होगा। आप अपने गुरुजनों का सम्मान करेंगे। उनके दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे और गरीबों की सहायता करेंगे। विशेष रूप से आप भगवान शिव जी की उपासना करेंगे।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा सुश्रूषा करें।
- केला या पीली वस्तु का दान करें। वीरवार का व्रत करें एवं बेसन की लड्डू दान करें।
- दुर्गा सप्तशति का नित्य पाठ करें या दुर्गा बीसा कवच गले में धारण करें।
- तुला दान करें व महामृत्युंजय मन्त्र का नित्य पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2037

इस वर्ष शनि सिंह राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे। 19 अक्टूबर तक राहु कर्क राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे और उसके बाद मिथुन राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु वृष राशि एवं नवम भाव में रहेंगे। 26 अप्रैल को मिथुन एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे और अतिचारी होकर 16 सितम्बर को कर्क राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। 29 अगस्त से 28 नवम्बर तक वक्री मंगल वृष राशि एवं नवम भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्षारम्भ में सफलता मिलेगी। गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण वरिष्ठ व अनुभवी लोगों का सहयोग मिलेगा। एकादश स्थान का राहु अचानक सफलता का मार्ग खोल सकता है, जिससे व्यापार में उन्नति मिल सकती है। अप्रैल के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण होगा, जो आपके लिए अनुकूल रहेगा।

सितम्बर के बाद आपका समय ज्यादा प्रभावित हो रहा है। क्योंकि राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण कुछ प्रतिद्वंदी आपके कार्यों में रुकावटें डाल सकते हैं, जिससे आप परेशान हो सकते हैं। अतः इस समय के अंतराल में आप बड़े विवेक से काम लें। व्यापार में किसी पर आंख बन्द कर विश्वास न करें नहीं तो हानि हो सकती है और कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह साल सामान्यतः अच्छा रहेगा। एकादशस्थ राहु के प्रभाव से अचानक धनागम के स्रोत बढ़ेंगे। 26 अप्रैल के बाद द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से भूमि, भवन, वाहन के साथ रत्न आभूषण इत्यादि की प्राप्ति होगी। अपने परिवार के सदस्यों तथा रिश्तेदारों के मांगलिक कार्यों में धन का व्यय करेंगे। यदि कोई बड़ा निवेश करना पड़े तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी व्यक्तियों की सलाह अवश्य लें।

शनि ग्रह का गोचर शुभ नहीं होने के कारण बीमारी इत्यादि में भी धन व्यय हो सकता है। सितम्बर के बाद अनावश्यक खर्च बढ़ सकता है। अतः उस समय लेन देन के मामले में सावधान रहें। यदि पैतृक संपत्ति पर कोई वाद-विवाद चल रहा हो तो फैसला आपके हक में नहीं होगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। व्यावसायिक व्यस्तताओं के चलते घर में अधिक समय दे पाना मुश्किल हो सकता है। द्वितीय स्थान पर शनि की दृष्टि घर में कुछ विषम स्थितियां भी उत्पन्न कर सकती है। अतः अच्छा यही होगा कि विपरीत परिस्थितियों को झेलते समय आप अपने अंदर प्रतिरोधात्मक शक्ति विकसित करें। परन्तु 26

अप्रैल के बाद से गुरु ग्रह का गोचर पारिवारिक शुभता के लिए बहुत ही बढ़िया है।

आपको परिवार में बुजुर्ग सदस्यों का सहयोग मिलेगा। परिवार के प्रति आपका भी आकर्षण बढ़ेगा। माता-पिता जी के लिए यह समय काफी अच्छा रहेगा। आपके भाईयों की उन्नति होगी। सितम्बर के बाद सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। यह सब आपके अच्छे व्यक्तित्व के कारण होगा।

संतान

संतान के दृष्टि कोण से वर्ष का प्रारम्भ सामान्यतः अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि आपके बच्चों के लिए शुभ है। उन्नति के सारे मार्ग खुलेंगे और आपके बच्चों का चौमुखी विकास होगा। प्रथम संतान के बारे में शुभ समाचार प्राप्त होंगे।

अप्रैल के बाद समय अच्छा नहीं रहेगा। अतः आपके बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है, जिससे उनकी शिक्षा-दीक्षा व उन्नति में व्यवधान आ सकता है। परन्तु 16 सितम्बर के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है। यह समय गर्भाधान व संतानोत्पति के लिए श्रेष्ठ रहेगा।

स्वास्थ्य

वर्षारम्भ स्वास्थ्य के लिए अच्छा रहेगा। नवमस्थ गुरु की पंचम दृष्टि लग्न पर होगी उसके प्रभाव से शारीरिक आरोग्यता की प्राप्ति व कार्य क्षमताओं में वृद्धि के प्रबल संकेत हैं। लग्न स्थान में शुभ प्रभाव के कारण सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी। परन्तु अप्रैल के बाद संक्रामक बीमारियों की चपेट में आ सकते हैं।

शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण रक्तचाप, वायु विकार व पित्त विकार आदि रोगों की संभावना हो सकती है। अत्यधिक आलस्यता के कारण आप स्वस्थ्य रहते हुए भी बीमार जैसा अनुभव करेंगे। यदि आपने स्वास्थ्य पर ध्यान नहीं दिया तो किसी बड़ी बीमारी की चपेट में आ सकते हैं। ऐसे स्थिति में आपको दवा से ज्यादा दुआ की आवश्यकता होगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि विद्यार्थियों के लिए अच्छी रहेगी। शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति करेंगे। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए अच्छे शैक्षणिक संस्थान में आपको प्रवेश मिल सकता है।

अप्रैल के बाद अत्यधिक भोजन एवं आलस्यता से बचें। विद्याध्ययन में एकाग्रता बढ़ाने के लिए गुरुवार के दिन उपवास करें। यदि आप व्यापारी हैं तो 19 अक्टूबर के बाद आपके व्यापार में व्यवधान आ सकता है। नौकरी वालों के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

यात्रा-तबादला

द्वादशस्थ शनि के प्रभाव से आपकी विदेश यात्राएं होंगी। छोटी-मोटी यात्राओं के

साथ साथ लम्बी यात्राएं भी होंगी। इन यात्राओं से आपको अत्यधिक लाभ मिलेगा। अप्रैल के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण भी हो सकता है।

यात्रा करते समय या वाहन चलाते समय सावधानी अत्यधिक जरूरी है। क्योंकि द्वादश स्थान का शनि यात्रा के अंतराल में दुघर्टना का भी योग बना रहा है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्षारम्भ श्रेष्ठ है। पूजा पाठ के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगा। दान पुण्य अधिक करेंगे। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से ध्यान व योग अधिक करेंगे। सितम्बर के बाद आपका आध्यात्मिक ज्ञान बढ़ेगा। आध्यात्मिक ज्ञान के कारण आपको अलौकिक आनन्द की अनुभूति होगी। सत्संग व सत्कर्म अधिक करेंगे। भागवत कथा सुनना व सत्संग में जाना आपका नैसर्गिक गुण होगा।

- शनिवार के दिन काली वस्तु दान करें एवं शनि मन्त्र का जाप करें।
- तुला दान करें। (अपने बजन के बराबर अन्न दान करें।)
- अपने घर में पारद शिवलिंग की स्थापना कर नित्य उसका दर्शन करें।

इस वर्ष राहु मिथुन राशि एवं दशम भाव में रहेंगे। 22 अक्टूबर तक शनि सिंह राशि एवं द्वादश भाव मे रहेंगे और उसके बाद कन्या राशि एवं लग्न स्थान में गोचर करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कर्क राशि एवं एकादश में रहेंगे और वक्री होकर 17 जनवरी को मिथुन राशि एवं दशम भाव में गोचर करेंगे और पुनः मार्गी होकर 11 मई को कर्क राशि एवं एकादश भाव में आ जाएंगे और अतिचारी होकर 7 अक्टूबर को सिंह राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से साल का प्रारम्भ अनुकूल नहीं रहेगा। नौकरी में परिवर्तन व व्यवसाय में व्यवधान आने की संभावना बन रही है। शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण प्रत्यक्ष व गुप्त शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। हार्डवेयर, ईधन व कानून से जुड़े लोगों के लिए यह समय अच्छा नहीं है। 11 मई के बाद समय किंचित अच्छा हो रहा है। यदि उस समय किसी के साथ मिलकर व्यापार करें तो कुछ सफलता मिल सकती है। फिर भी व्यवसाय/नौकरी व निवेश संबंधी मामलों में जल्दबाजी में जोखिम भरा निर्णय लेना घातक होगा।

अक्टूबर के बाद क्रय-विक्रय व खाद्य पदार्थ का व्यवसाय करने वाले व्यक्तियों को सावधान रहना चाहिए नहीं तो हानि हो सकती है। नौकरी करने वाले व्यक्तियां का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा।

धन संपत्ति

द्वादशस्थ शनि के प्रभाव से आर्थिक स्थिति में उतार-चढ़ाव बना रहेगा। धनागम तो होगा परन्तु व्यय अधिक होने के कारण बचत नहीं कर पाएंगे। आप अपने भौतिक सुख सुविधाओं पर अधिक खर्च करेंगे। द्वितीय स्थान पर शनि एवं गुरु ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपको अचल धन व रत्नादि वस्तुओं की प्राप्ति हो सकती है। 11 मई के बाद आय के स्रोत बढ़ेंगे। रुके हुए व फंसे हुए पैसे वापस मिलेंगे।

अक्टूबर के बाद गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आर्थिक हानि का योग बना रहा है। इस समय आपको खर्चों पर नियंत्रण और भावनाओं पर काबू रखने की जरूरत है। अचानक परिवार में कुछ ऐसे खर्चे आ सकते हैं जिससे आपको आर्थिक कमी का एहसास हो सकता है। अतः इस समय के अंतराल में आपको सावधान रहना चाहिए।

घर-परिवार, समाज

द्वादश स्थान का शनि पारिवारिक वातावरण के लिए अच्छा नहीं है। घरेलू माहौल को अनुकूल बनाए रखने के लिए आप छोटी छोटी बातों पर ध्यान दें। दशम स्थान में राहु एवं गुरु की युति आपके माता-पिता जी के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकती है। परन्तु 11 मई से

समय शुभ हो रहा है। उस समय आपके व्यक्तित्व में निखार व चमक पैदा होगी। धर्मपत्नी के साथ संबंध मधुर होंगे। आपके भाईयों की उन्नति होगी।

एकादशस्थ गुरु के प्रभाव से मान संमान तथा पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी, जिससे समाज में आपका यश सर्वत्र व्याप्त होगा। साथ ही किसी सामाजिक एवं सांस्कृतिक संस्था से भी जुडेंगे। आपका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा। फलतः सभी लोग आपसे प्रभावित होंगे तथा आपको उचित सम्मान प्रदान करेंगे। अक्टूबर के बाद समय किंचित प्रभावित हो रहा है।

संतान

राहु एवं गुरु का चण्डाल योग संतान के लिए बहुत अच्छा नही रहेंगे। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ने का प्रयास करेंगे। उनको स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। अतः उनके स्वास्थ्य पर ध्यान देना लाभप्रद रहेगा। 11 मई के बाद यह योग समाप्त हो रहा है। गुरु ग्रह के शुभ होने के कारण आपके बच्चों की उन्नति होगी।

नव विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति करेंगे। परन्तु अक्टूबर के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। अतः इस समय के अंतराल में उन पर ज्यादा ध्यान देना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

स्वास्थ्य

इस वर्ष आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव काफी देखने को मिलेंगे। खासकर जोड़ों में दर्द, सिर में दर्द, मानसिक चिंता एवं वायु संबंधी समस्या हो सकती है। अतः स्वास्थ्य को लेकर किसी प्रकार की लापरवाही न करें अन्यथा स्वास्थ्य ज्यादा प्रतिकूल हो सकता है। व्यापारिक कारणों या अपने निजी कारणों की वजह से मानसिक तनाव बढ़ सकता है। मौसमजनित बीमारियों से आप प्रभावित रह सकते हैं। आप को ऐसा लगेगा कि धीरे धीरे कमजोर होते जा रहे हैं।

11 मई के बाद आपके स्वास्थ्य में कुछ सुधार होगा। आप अपने को पूर्ण रूप से स्वस्थ समझेंगे। खान पान पर ज्यादा ध्यान दें नहीं तो आपका मोटापा बढ़ सकता है। मसालेदार और तेल वाले आहार के प्रति आपकी रुची बढ़ेगी। इसे नियंत्रित करने की कोशिश करें। आलस्य का त्याग कर स्फूर्तिवान बनें। आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

द्वादश स्थान में शनि का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आलस्यता व दीर्घसूत्रता आपके उन्नति में बाधक बन सकती है। अतः समय का सदुपयोग के साथ मन को एकाग्र कर अपने लक्ष्य के प्रति केन्द्रित करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

11 मई के बाद विद्यार्थियों के लिए समय अनुकूल रहेगा। जो विद्यार्थी किसी नये कॉलेज में प्रवेश परीक्षा की तैयारी कर रहे हों उन्हें मनोनुकूल कॉलेज में दाखिला मिल

जाएगा। यदि गूढ़ विज्ञान और मनोविज्ञान में आपकी रुचि है तो उनके लिए समय अनुकूल है। अक्टूबर के बाद यदि शिक्षा के संदर्भ में कोई लुभावना प्रस्ताव मिल रहा है तो सावधान रहिए क्योंकि शनि एवं गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने कारण आपको धोखा मिल सकता है।

यात्रा-तबादला

द्वादश स्थान के शनि विदेश यात्रा के प्रबल योग बना रहे हैं। अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की जन्मभूमि की यात्रा होगी।

मई के बाद छोटी-मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होंगी। व्यवसाय संबंधित यात्राएं भी होंगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ होगा। पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है। अक्टूबर के बाद समय प्रभावित हो रहा है। अतः यात्रा करते समय व वाहन चलाते समय सावधान रहें।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। कर्म को ही अपना धर्म मानेंगे और कर्म पर ज्यादा विश्वास करेंगे। गरीबों की सहायता करेंगे और उसके दुखों को दूर करने का पूर्ण प्रयास करेंगे। मई के बाद आपके अंदर ईश्वर के प्रति विश्वास बढ़ेगा, जिससे आप निःस्वार्थ भाव से भगवान की पूजा करेंगे। सुबह शाम मन्दिर जाना व पूजा पाठ करना आपका नैसर्गिक गुण होगा।

- अमावस्या तिथि को विद्वान ब्राह्मण को भोजन कराएं।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें व मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं।
- अपने घर में पारद शिवलिंग की स्थापना करें और सुबह सुबह उसका दर्शन करें।
- वीरवार के दिन पीली वस्तु का दान करें।

वर्षारम्भ में शनि कन्या राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे तथा वक्री होकर 5 अप्रैल को सिंह राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः मार्गी होकर 13 जुलाई को कन्या राशि एवं लग्न स्थान में आ जाएंगे। 7 अप्रैल को राहु वृष राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु सिंह राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे तथा 3 मार्च को वक्री होकर कर्क राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 2 जून को सिंह राशि एवं द्वादश भाव में आ जाएंगे और अतिचारी होकर 4 नवम्बर को कन्या राशि एवं लग्न स्थान में गोचर करेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ व्यावसायिक उन्नति के लिए अच्छा नहीं है। गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपके प्रतिद्वंदी बढ़ेंगे तथा आपको किसी षड्यन्त्र में भी फंसा सकते हैं। परन्तु 2 मार्च के बाद गुरु ग्रह का गोचर शुभ होने के कारण आप सभी शत्रुओं को पीछे छोड़ कर सफलता के मार्ग पर अग्रसर होंगे। यदि आप साझेदारी में व्यापार कर रहे हैं तो अपने साझेदार से संतुष्ट रहेंगे। अनुभवी व वरिष्ठ अधिकारियों का सहयोग मिलेगा। जिसके प्रभाव से कार्यक्षेत्र में उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे।

यदि आप नौकरी कर रहे हैं तो 13 जुलाई के बाद समय प्रभावित हो रहा है। आपके बड़े अधिकारियों से वैचारिक मतभेद होने के कारण उन्नति रुक सकती है अथवा प्रतिकूल स्थान पर परिवर्तन भी हो सकता है। ऐसे प्रतिकूल समय में आपको बड़े ही विवेक से काम लेना चाहिए। 4 नवम्बर के बाद लोहा, तेल, कच्चे माल के कारखानों आदि से जुड़े लोगों के लिए समय विशेष लाभकरी रहेगा। व्यापार में उन्नति व आशा से अधिक लाभ की संभावना बढ़ेगी। आर्थिक लाभ होगा एवं कार्यों में वृद्धि होगी।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम नहीं रहेगा। गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण अनावश्यक खर्चे बढ़ेंगे, जिससे संचित धन में कमी आ सकती है। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। शीघ्र पैसा कमाने वाले तरीकों पर अंकुश लगाएं। धन के मामले में किसी पर बहुत जल्दी विश्वास न करें। घर में रोग की अधिकता होगी जिसके निवारण में धन का व्यय होगा। रिश्तेदार व मित्रों के साथ पैसे का लेन देन न करें नहीं तो उनके साथ आपके संबंध खराब हो सकते हैं। 3 मार्च से 2 जून तक समय कुछ अच्छा हो रहा है। फिर निवेश के मामले में सावधान रहें क्योंकि द्वितीय स्थान में शनि ग्रह का गोचर शुभ नहीं है।

परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे उसमें भी आपका पैसा खर्च हो सकता है। आप व्यापारिक उन्नति के लिए बैंक से लोन भी ले सकते हैं । नई संपत्ति क्रय करने के लिए यह समय शुभ नहीं है। धन संपत्ति से जुड़े मामलों को कोर्ट कचहरी में ले जाने से बचें। नहीं तो आपका ज्यादा नुकसान होगा। 4 नवम्बर से समय आपके पक्ष में आ रहा है। उस समय आपके धनागम के स्रोत खुलेंगे और शेयर बाजार लॉटरी इत्यादि क्षेत्रों से धन लाभ हो

सकता है।

घर-परिवार, समाज

दाम्पत्य जीवन के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम नहीं है। जीवानसाथी के रूखे व्यवहार का सामना करना पड़ सकता है। अपने दाम्पत्य जीवन को सुखमय बनाये रखने के लिए अपने जीवनसाथी के साथ विशेष स्नेह व सहनशीलता से काम लेना होगा। 5 अप्रैल के बाद समय और ज्यादा प्रभावित हो रहा है। द्वितीय स्थान का शनि पारिवारिक वातावरण के लिए अच्छा नहीं होता। अतः परिवार के लोगों के सुझावों पर अमल करना आपके लिए फायदे का सौदा हो सकता है और उनके विरुद्ध जाना घातक भी हो सकता है। माँ के साथ कुछ नाराजगी हो सकती है तथा उन्हें स्वास्थ्य संबंधी भी कुछ परेशानियाँ हो सकती हैं।

समाजिक पद प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष समान्य रहेगा। 13 जुलाई के बाद भाईयों के लिए समय अच्छा नहीं रहेगा। परन्तु आपके मातुल पक्ष के लोगों की उन्नति होगी। सप्तम स्थान पर शनि की दृष्टि आपकी धर्म पत्नी के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकती है। 4 नवम्बर से समय बहुत ही शुभ हो रहा है। सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा पारिवारिक अनुकूलता प्राप्त होगा।

संतान

गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण बच्चों के लिए समय शुभ नहीं है। आपके बच्चे कुसंगति का शिकार हो सकते हैं। उनका रहन सहन व दिनचर्या भी खराब हो सकती है, जिससे उन्नति में व्यवधान आ सकती है। 3 मार्च को गुरु ग्रह का गोचर संतान के लिए अच्छा योग बना रहा है।

पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि संतान के लिए शुभ है। आपके बच्चे अपने योग्यता के बल पर उन्नति करेंगे तथा उनके बारे में शुभ सामाचार प्राप्त होंगे। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। 2 जून से समय प्रभावित हो रहा है। परन्तु चिंता न करें क्योंकि 4 नवम्बर के बाद समय फिर से अनुकूल हो जाएगा। उसके बाद आपके बच्चे निर्विघ्नता पूर्वक उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। स्वास्थ्य संबंधित परेशानी बनी रहेगी। चोट चपेट व वाहनादि से दुर्घटना इत्यादि का योग बन रहा है। स्वास्थ्य संबंधी कोई बड़ी समस्या भी हो सकती है। पेट संबंधी समस्या जैसे अचानक पेट दर्द, गैस, अपच या बदहजमी आदि हो सकती है। सर्जरी आदि होने की भी संभावनाएं बनी हुई हैं। 3 मार्च से 2 जून तक का समय अच्छा रहेगा। आपके स्वास्थ्य में कुछ सुधार होगा। परन्तु उसके बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है।

अतः आपको समय-समय पर डॉक्टर की सलाह लेते रहना चाहिए। इसके अतिरिक्त आपको अपनी रोग प्रतिरोधक क्षमताओं को बढ़ाने के लिए अपने खान पान का

विशेष ध्यान रखना होगा। जहां तक हो सके शुद्ध शाकाहारी भोजन ही करें। दाल, सब्जी, फल आदि का ही अधिक सेवन करें। 4 नवम्बर के बाद आपका स्वास्थ्य बिल्कुल अच्छा हो जाएगा तथा आप निरोगी काया के स्वामी होंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। 3 मार्च से पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि विद्यार्थियों के लिए अच्छी है। यदि आप उच्च शिक्षा हेतु अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो 3 मार्च से 2 जून तक का समय बहुत ही शुभ है क्योंकि सफलता के सारे मार्ग आपके पक्ष में है। उसके बाद समय प्रभावित हो रहा है।

साल के उत्तरार्द्ध में उन्नति के मार्ग प्रभावित हो रहे हैं। आप अपने करियर में सफलता पाना चाहते हैं तो अथक परिश्रम करना पड़ेगा। जो लोग नौकरी की तलाश में हैं। उनको कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है। जो लोग विदेश में अपना करियर बनाना चाह रहे हैं। उनके लिए यह समय शुभ है।

यात्रा-तबादला

द्वादश स्थान के गुरु वर्षारम्भ में ही विदेश यात्रा के प्रबल योग बना रहे हैं। 3 मार्च के बाद आपकी छोटी-मोटी यात्राएं होंगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ भी मिलेगा।

5 अप्रैल के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। जिससे आप मानसिक अशान्त रहेंगे। नवमस्थ राहु के कारण ज्यादातर यात्राएं आपकी अचानक ही होंगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष मिला जुला रहेगा। लग्न स्थान का शनि आपके सारे धार्मिक कार्यों में व्यवधान उत्पन्न कर सकता है। आलस्यता के कारण आपका दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित होगा। परन्तु आप दान पुण्य अधिक करेंगे। गरीबों की सहायता करना, भूखे को खाना खिलाना इत्यादि कर्मों को ही आप अपना धर्म समझेंगे। 4 नवम्बर के बाद आपका मन पूजा-पाठ के प्रति आकर्षित होगा। दैनिक पूजा-पाठ में सुधार होगा। परमात्मा की भक्ति व मन्त्र पाठ में ज्यादा रुचि लेंगे।

- वीरवार के दिन पीली वस्तु, केला या बेसन के लड्डू दान करें।
- महामृत्युंजय यन्त्र अपने घर में स्थापित करें और नित्य उसका पूजन करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें।
- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें।

वार्षिक फलादेश - 2040

इस वर्ष शनि कन्या राशि एवं प्रथम भाव में रहेंगे। पूरे वर्ष राहु वृष राशि एवं नवम भाव में रहेंगे तथा 11 दिसम्बर को मेष राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कन्या राशि एवं प्रथम भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 6 अप्रैल को सिंह राशि एवं द्वादश भाव में गोचर करेंगे तथा मार्गी होकर पुनः 28 जून को कन्या राशि एवं प्रथम भाव में आ जाएंगे तथा अतिचारी होकर 3 दिसम्बर को तुला राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

वर्ष के प्रारम्भ में व्यापार में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाई का अनुभव करेंगे। आपके प्रतिद्वंदी व्यवसाय में बाधा डालने की काशिश करेंगे, जिससे आपको मानसिक परेशानी का सामना करना पड़ेगा। 6 अप्रैल से समय और ज्यादा प्रभावित हो रहा है। आपकी सृजनात्मक क्षमता छुपी रहेगी और बुद्धि विवेक का भी ह्रास होगा। फलस्वरूप आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाई का अनुभव करेंगे। आपको दूसरों के लिये भी काम करना पड़ सकता है। किसी भी व्यासायिक यात्रा को करने से पहले भली भांति जांच लें कि वह यात्रा आपके लिए लाभकारी है या नहीं।

वर्ष का उत्तरार्द्ध खनिज, खाद्य विभाग व रासायनिक विभागों में कार्य करने वाले व्यक्तियों के लिए शुभ है। नौकरी या व्यवसाय में अच्छा सुधार होगा। प्रभावशाली व्यक्तियों से आपके सम्पर्क बढेंगे। लेकिन कुछ कामों में आप अनुभवी लोगों की सलाह को भी नजरअंदाज कर सकते हैं और गलत निर्णय लेकर चिंताग्रस्त हो सकते हैं। सरकारी व्यक्ति की सहायता से भी आपके काम बनेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक स्थिति के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं है। आपके अनावश्यक खर्चे बढें .गे, जिससे संचित धन में कमी आ सकती है। 6 अप्रैल के बाद घर परिवार में रोग व्याधियों की अधिकता होने से धन का अपव्यय अधिक होगा। पैसे का लेन देन करते समय कागजी कार्यवाही अवश्य करें। इस समय के अंतराल में अपने अनावश्यक खर्चों पर अंकुश लगाएं तथा जोखिम भरे कार्यो में निवेश न करें।

किसी नए काम को शुरु करने के लिए बडा निवेश करने से बचें अन्यथा धन हानि हो सकती है। लेकिन उत्तरार्द्ध में अचानक धन प्राप्ति के योग बन रहे हैं। इस अवधि में वसीयत प्राप्त होने की सम्भावना बन रही है। यदि आप जुआ, लॉटरी आदि के माध्यम से कमाई करते हैं तो इनमें बडा निवेश करने से बचें। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे उसमें भी आपके पैसे खर्च होंगे। वर्षान्त आपके लिए काफी श्रेष्ठ है। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से चल एवं अचल संपत्ति की प्राप्ति होगी।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों में यह वर्ष मिले जुले परिणाम देने वाला रहेगा। वर्ष के प्रथम पक्ष में परिवार का वातावरण भी उत्तम व मेल-जोल वाला रहेगा। परिवार के लोगों की इच्छाओं और आकांक्षाओं की पूर्ति होगी। परिवार के सभी लोग आपका सम्मान और आदर करेंगे। 6 अप्रैल से समय किंचित प्रभावित होगा। नवम स्थान का राहु अचानक आपके पिताजी का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है, जिसकी वजह से आप चिंतित रह सकते हैं। परिवार के कुछ सदस्यों का वर्ताव आपके प्रति रूखा या असहयोगात्मक रह सकता है।

वर्ष का उत्तरार्द्ध परिवारिक वातावरण के लिए अनुकूल रहेगा। परिवार में सुख और शान्ति का माहौल बनेगा। आप पारिवारिक सुख प्राप्त करेंगे। आपके अन्दर अहंकार युक्त भावनाएं पनप सकती हैं जिससे घर-परिवार में आपकी जनप्रियता घट सकती है। बेहतर होगा आप अपनी अन्तर्दृष्टि से स्वयं को परखें। जरूरत से ज्यादा तर्क-वितर्क करने से बचें अन्यथा परिवारीजनों को आपकी निष्ठा और आपके पारिवारिक स्नेह पर संदेह होने लगेगा।

संतान

नव विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होने के प्रबल योग बन रहे है। पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि बच्चों की उन्नति के सारे मार्ग खोल रही है। आपके बच्चों का चौमुखी विकास होगा। संतान की उन्नति के सारे मार्ग प्रशस्त होंगे।

6 अप्रैल से 28 जून तक समय किंचित प्रभावित रहेगा, परन्तु उसके बाद समय फिर से उत्तम हो जाएगा तथा पूरा वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्षान्त में आपके बच्चों के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे तथा वे आपकी उम्मीदों से बढ़-चढ़ कर कार्य करेंगे, जिससे आपको उन पर गर्व होगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा, परन्तु 6 अप्रैल के बाद द्वादश स्थान का गुरु छोटी-मोटी बीमारियों से स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है। मौसमजनित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरूरी होगा। यदि पहले से कोई लम्बी बीमारी से गुजर रहे हैं तो परहेज की ज्यादा आवश्यकता है नहीं तो आपका स्वास्थ्य ज्यादा प्रभावित हो सकता है। हांलाकि 28 जून के बाद स्वास्थ्य में कुछ सुधार होना शुरु हो जाएगा।

लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा मानसिक सन्तुष्टि बनी रहेगी। सभी महत्वपूर्ण कार्यों को आप सकारात्मक रूप से करेंगे। अपने स्वास्थ्य को अनुकूल बनाए रखने के लिए शुद्ध साकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर में सफलता प्राप्ति के लिए आप को अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता

है। जो विद्यार्थी विदेश या घर से दूर जाकर पढ़ाई करना चाहते हैं उनके लिए समय शुभ है। आधुनिक शिक्षा प्राप्त करने वाले व्यक्तियों को सफलता मिलेगी।

अप्रैल से जून तक का समय नौकरी करने वालों के लिए अच्छा नहीं है। जून के बाद आपके मान-सम्मान में वृद्धि होगी। इजीनियरिंग व हार्डवेयर की तैयारी करने वाले विद्यार्थियों को अधिक सफलता नहीं मिलेगी।

यात्रा-तबादला

6 अप्रैल के बाद द्वादशस्थ गुरु के कारण आपकी विदेश यात्रा होगी। सामुद्रिक यात्रा का भी प्रबल योग बन रहा है। सपरिवार किसी दर्शनीय स्थल की यात्रा कर आनन्द प्राप्त करेंगे।

28 जून के बाद आपकी लम्बी यात्रा होगी। यह यात्रा आपके लिए बहुत ही सुखद व मनोरंजात्मक होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से पूजा पाठ के प्रति आपकी विशेष रुचि बढ़ेगी। ईश्वर के प्रति आप का अटुट विश्वास होगा। 6 अप्रैल के बाद दान पुण्य करने में आप सबसे आगे रहेंगे। मन्दिर निमार्ण, गोशाला, अनाथाश्रम, वृद्धाश्रम इत्यादि स्थानों पर खुले हाथों से दान देंगे। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप अपनी पत्नी के साथ पारिवारिक कल्याण के लिए कोई विशेष पूजा संपन्न करेंगे, जिससे परिवार की सुख, शान्ति, समृद्धि इत्यादि में वृद्धि होगी। धार्मिक कार्य कर आप मानसिक रूप से प्रसन्न रहेंगे। तीर्थ यात्रा व धार्मिक यात्रा भी अधिक होंगी।

- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें तथा मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं।
- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को अर्घ्य दें।
- अपने घर में पारद शिवलिंग स्थापित करें एवं नित्य उसका दर्शन करें।
- अपने बजन के बराबर अन्न दान करें।

वार्षिक फलादेश - 2041

इस वर्ष राहु मेष राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु तुला राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 6 मई से 30 जुलाई तक कन्या राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे तथा उसके बाद पुनः मार्गी होकर तुला राशि एवं द्वितीय भाव में आ जाएंगे। 25 सितम्बर तक शनि कन्या राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे तथा उसके बाद तुला राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

इस वर्ष राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से व्यावसायिक जीवन में थोड़े बहुत झटके लगेंगे। आपके कार्यों में गुप्त शत्रुओं या विरोधियों द्वारा रूकावटें डाली जा सकती हैं जिससे आप मानसिक रूप से परेशान रहेंगे तथा चाह कर भी अपने शत्रुओं का मुकाबला नहीं कर पाएंगे। व्यापार में कोई बड़ा निर्णय लेने के लिए यह आवश्यक है कि आप पूरी जांच परख करके ही ऐसा करें, क्योंकि यह साल आपके के लिए अच्छा नहीं है। झूठी आशाओं पर निर्भर न रहें अधिक आत्मविश्वास आपको आपदग्रस्त कर सकता है।

6 मई से समय कुछ अच्छा हो रहा है। आपकी मान-मर्यादा में बढ़ोत्तरी होगी तथा सभी सहकर्मियों का अच्छा सहयोग भी मिलेगा। साझेदारी में कार्य करने वाले लोगों को इच्छित लाभ होगा। नौकरी करने वालों के लिए समय ज्यादा प्रभावित रहने वाला है। वर्षान्त अधिक प्रतिकूल रहने वाला है, अतः कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें तथा किसी पर भी आंख बन्द कर विश्वास न करें।

धन संपत्ति

द्वितीयस्थ गुरु के कारण धनागम के स्रोत बढ़ेंगे, परन्तु राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने कारण कुछ ऐसे खर्च आ जाएंगे, जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। अष्टमस्थ राहु एवं लग्नस्थ शनि के कारण धोखा या धन हानि के योग बन रहे हैं। आपको शीघ्र पैसा कमाने वाले तरीकों पर अंकुश लगाना होगा। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा हानि हो सकती है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में वसीयत प्राप्ति से आपको धन लाभ हो सकता है अथवा किसी अप्रत्याशित जगह से अचानक धन की प्राप्ति हो सकती है। आप किसी धार्मिक कार्य में धन खर्च कर सकते हैं। परिवार के सदस्यों और अन्य लोगों के हित में भी आप खर्च करेंगे। 26 सितम्बर के बाद किसी प्रकार का निवेश न करें।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ श्रेष्ठ रहने वाला है। परिवार के सभी सदस्य आपको यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। आप अपने परिवार पर पूर्ण नियंत्रण रखेंगे तथा सभी परिवारीजनों का विशेष ख्याल भी रखेंगे। तृतीय स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि आपके छोटे भाई

बहनों के लिए अच्छी नहीं है। 6 मई के बाद ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपसी मतभेद व तनाव हो सकता है।

26 सितम्बर के बाद पारिवारिक क्लेश होने की संभावना बन रही है। द्वितीय स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि परिवार में वैचारिक मतभेद उत्पन्न कर सकती है। इस समय के अंतराल में आपको बड़े विवेक से काम लेना होगा तथा अपनी धैर्यशक्ति बनाए रखनी होगी। समाजिक स्तर में कुछ कमी आ सकती है। अतः सामाजिक गतिविधियों में कम ही भाग लेंगे।

संतान

संतान के लिए यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करेंगे। माता पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण आदर एवं सम्मान का भाव होगा। संतान आज्ञापालक भी होगी।

आप अपनी ओर से उनकी उन्नति हेतु यथोचित प्रबन्ध करेंगे और वे आपकी महत्वकांक्षाओं की पूर्ति करेंगे। यदि आपकी संतान विवाह के योग्य है तो विवाह के प्रबल योग बन रहे हैं।

स्वास्थ्य

लग्नस्थ शनि के कारण स्वास्थ्य में उतार चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। यदि पहले से किसी बीमारी से पीड़ित हैं तो अपने स्वास्थ्य पर ज्यादा ध्यान देने की आवश्यकता है। चिकित्सकीय परामर्श लेते रहें एवं अपने खान-पान पर भी विशेष ध्यान दें। नहीं तो स्वास्थ्य ज्यादा प्रतिकूल हो सकता है।

6 मई के बाद आपके स्वास्थ्य में सुधार होगा क्योंकि लग्न स्थान में गुरु ग्रह का गोचर सकारात्मक ऊर्जाओं की वृद्धि कर रहा है। जो आपके स्वास्थ्य के लिए बहुत ही शुभ है। वर्षान्त में आपका स्वास्थ्य फिर से खराब सकता है। अतः खान-पान पर संयम रखना बहुत जरूरी होगा क्योंकि आपके स्वास्थ्य को सबसे ज्यादा खतरा फूड पॉइजनिंग के कारण होगा। घुटनों में दर्द व पैर में चोट लगने की पूर्ण संभावना बन रही है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। यदि उच्च शिक्षा हेतु उच्च शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो 6 मई के बाद समय अनुकूल हो रहा है।

इंजीनीयर, वकील, व कानून से जुड़े लोगों के लिए यह वर्ष मिला जुला रहेगा। वर्ष के उत्तरार्द्ध में नौकरी में अचानक पदोन्नति हो सकती है।

यात्रा-तबादला

वर्ष में छोटी-मोटी यात्राएं होंगी परन्तु 6 मई के बाद आप बड़ी यात्राओं का आनन्द

लेंगे, जिसमें व्यवसाय से संबंधित अधिक यात्राएं होंगी। धार्मिक यात्राओं का भी योग बन रहा है।

नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके घर से दूर भी हो सकता है। विदेश यात्रा के लिए यह वर्ष अनुकूल नहीं है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

लग्न स्थान के शनि धार्मिक कार्यों में व्यवधान उत्पन्न करेंगे जिससे आप चाह कर भी कोई शुभ कार्य नहीं कर पायेंगे। आलस्य के कारण दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित होगा। 6 मई के बाद लग्न स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से समय अनुकूल हो रहा है। उस समय ईश्वर के प्रति आपकी निष्ठा एवं विश्वास बढ़ेगा। दैनिक पूजा-पाठ में भी सुधार होगा। वर्षान्त में आप दान पुण्य अधिक करेंगे। तन्त्र, मन्त्र व यन्त्र के प्रति भी आपकी रुचि बढ़ेगी। साधना व योग के लिए आप अधिक से अधिक समय निकालेंगे। सत्संग में जाना व गुरु वाणी सुनना आपका नैसर्गिक गुण होगा।

- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं एवं काली वस्तु का दान करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें तथा मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं।
- श्रावण मास में शिवजी का रुद्राभिषेक व पूजन करें।

वार्षिक फलादेश - 2042

इस वर्ष शनि तुला राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे। 22 जून तक राहु मेष राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद मीन राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु वृश्चिक राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 10 जून से 27 अगस्त तक तुला राशि एवं द्वितीय भाव में गोचर करेंगे और पुनः मर्गी होकर फिर से वृश्चिक राशि एवं तृतीय भाव में आ जाएंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं है। शनि एवं राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण व्यापार में कुछ न कुछ परेशानियां आती रहेंगी। विरोधी तथा शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। ऐसे में आपको बड़ी सावधानी से काम लेना होगा। गलत-सही का चुनाव करने के बाद ही निर्णय लें। हालांकि गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आपको कुछ सकारात्मक परिणाम मिलेंगे। अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा। फिर भी व्यावसायिक मामलों में आपको बहुत सावधान रहना होगा।

यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो वर्ष का उत्तरार्द्ध ज्यादा प्रभावित रहने वाला है। आपका साझेदार धोखा दे सकता है। अतः उसके साथ सभी कार्यों में पारदर्शिता रखने की कोशिश करें। राजनीति से जुड़े लोगों के लिए यह समय ज्यादा प्रतिकूल है। वर्षान्त में कोई नया कार्य व्यवसाय प्रारम्भ न करें। पहले से चले आ रहे कार्यों को ही सुचारु रूप से चलाते रहें।

धन संपत्ति

शनि एवं राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आर्थिक मामलों में अधिक सतर्कता बरतने की जरूरत है। जितना ज्यादा हो सके धन की बचत करने की कोशिश करें और फिजूल के खर्चों पर नियंत्रण रखें। आपका कोई करीबी ही आपको दगा दे सकता है। ऐसे लोगों से बचने से के लिए वित्तीय लेनदेन में पूरी सावधानी बरतें। जोखिम भरा निवेश करने से बचें।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में राजनीति एवं भूमि से संबंधित काम करने वालों को वांछित लाभ मिल सकता है। अकस्मात् व गुप्त धन मिलने की संभावना बन रही है। बैंकिंग संस्थानों से कर्ज लेना चाहते हैं तो शीघ्र ही आपको लोन मिल जाएगा। सप्तमस्थ राहु के कारण पत्नी के स्वास्थ्य पर आपका अधिक व्यय होगा।

घर-परिवार, समाज

द्वितीय स्थान में शनि ग्रह का गोचर पारिवारिक मामलों के लिए अनुकूल नहीं है। परिवार से जुड़े हर मामलों में बहुत सावधानी बरतने की आवश्यकता है। पारिवारिक सदस्यों के साथ कुछ तर्क-वितर्क होने की संभावना नजर आ रही है। हालांकि समझदारी से इसे टाला जा सकता है। ससुराल पक्ष के लोगों के लिए यह समय अच्छा नहीं है। तृतीयस्थ गुरु के प्रभाव से

आपके छोटे भाई-बहनो के साथ संबंध अच्छा रहेगा। परिवार में मांगलिक कार्य होंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में पारिवारिक समस्याएं कुछ कम होंगी। फिर आप पारिवारिक स्थिति को लेकर चिंचित रहेंगे। सप्तमस्थ राहु के कारण पत्नी के साथ वैचारिक मतभेद होने की प्रबल संभावना है। तृतीयस्थ गुरु के प्रभाव से सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा आप सामाजिक गतिविधियों में बढ़-चढ़ के भाग लेंगे।

संतान

संतान के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। पंचम स्थान पर शनि की दृष्टि आपके बच्चे को आलसी व बीमार बना सकती है, जिसके चलते उनको वांछित सफलता नहीं मिलेगी। परन्तु आपकी दूसरी संतान के लिए यह समय बहुत ही शुभ है। उनके विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे तथा उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में संतान के लिए उच्च शिक्षा प्राप्ति के योग बने हुए हैं। उनका भाग्योदय होगा तथा व्यावसायिक उन्नति भी होगी तथा वे अपने प्रतिद्वंदियों से बेहतर कर सकने में सफल होंगे।

स्वास्थ्य

द्वितीयस्थ शनि के कारण आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव काफी देखने को मिलेगा। खासकर जोड़ों में दर्द, सिर में दर्द, मानसिक चिंता एवं वायु संबंधी समस्या हो सकती है। कमर के निचले हिस्से में कोई रोग बढ़ सकती है अतः किसी भी छोटी समस्या को छोटी ना समझते हुए और तुरंत चिकित्सक से परामर्श लें। ऋतुजनित बीमारियों के कारण स्वास्थ्य प्रतिकूल हो सकता है विशेष कर सर्दी-जुकाम इत्यादि का प्रकोप झेलना पड़ सकता है। अतः स्वास्थ्य को लेकर किसी प्रकार की लापरवाही न करें अन्यथा स्वास्थ्य ज्यादा प्रतिकूल हो सकता है।

यदि कोई बीमारी पहले से चली आ रही है तो वह इस समय बढ़ सकती है, अतः पहले से ही सावधानी बरतें। वर्ष के उत्तरार्द्ध में राहु ग्रह के गोचर के बाद समय ज्यादा प्रभावित हो रहा है। उस समय कोई लम्बी बीमारी हो सकती है। व्यापारिक कारणों या अपने निजी कारणों की वजह से मानसिक तनाव बढ़ सकता है। अतः स्वयं को संतुलित एवं नियमित रखें। तुला दान व महामृत्यंजय जाप आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परिक्षार्थियों के लिए यह वर्ष सामान्य रहने वाला है। आप कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे तो उसमें सफलता मिल सकती है। मैकेनिकल इंजीनियर व हार्डवेयर से संबंधित कार्य करने वाले जातकों के लिए यह समय अच्छा रहेगा।

वर्ष का उत्तरार्द्ध व्यावसायिक व्यक्तियों के लिए अच्छा नहीं रहेगा। नौकरी करने वालों के लिए यह वर्ष सामान्य रहने वाला है। मैनेजमेंट, प्रशासनिक शिक्षण से जुड़े लोगों को रिसर्च व ट्रेनिंग के सिलसिले में विदेश जाने का मौका मिल सकता है।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में छोटी-मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी अधिक होंगी। सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि व्यावसायिक यात्राएं भी कराती रहेगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ मिलेगा। धार्मिक यात्रा का सुन्दर योग बन रहा है।

चतुर्थ स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण हो सकता है। विदेश यात्रा होने के प्रबल योग बन रहे हैं। यात्रा करते समय व वाहन चलाते समय सावधान रहें क्योंकि राहु एवं शनि दोनो ग्रहों का गोचर प्रतिकूल है। चोरी व दुर्घटना का योग बन रहा है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

इस वर्ष आपका मन धार्मिक कार्यों के प्रति विशेष आकर्षित रहेगा। घर में कोई मांगलिक या धार्मिक कार्य संपन्न होंगे। किसी तीर्थस्थान की यात्रा होगी। गुरु का आशीर्वाद व गुरु दीक्षा प्राप्त होगी।

शिवजी की उपासना करें एवं मृत्युंजय मंत्र का पाठ करें। मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं। आपके लिए अपने बड़े बुजुर्गों का आशीर्वाद प्राप्त करना एवं माता-पिता की सेवा करना लाभदायक रहेगा।

- मंगलवार का व्रत करें या हनुमान जी को चोला चढ़ाएं।
- प्रत्येक शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें।
- दुर्गा सप्तशति का पाठ करें।
- आठ मुखी रुद्राक्ष सोमवार के दिन गले में धारण करें।

वार्षिक फलादेश - 2043

वर्षारम्भ में गुरु वृश्चिक राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे तथा 27 जनवरी को धनु राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः वक्री होकर 30 जुलाई को वृश्चिक राशि एवं तृतीय भाव में गोचर करेंगे तथा अतिचारी होकर फिर से 11 सितम्बर को धनु राशि एवं चतुर्थ भाव में आ जाएंगे। पूरे साल शनि तुला राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे तथा 12 दिसम्बर को वृश्चिक राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। 19 सितम्बर तक राहु मीन राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद कुम्भ राशि एवं छठे भाव में गोचर करेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। सभी व्यावसायिक मामलों में निर्णय सोच विचार ही लें। हालांकि आप कारोबार के मामले में काफी होशियार हैं फिर भी अपने स्तर पर पूरी एहतियात बरतें। किसी गैरकानूनी क्रिया-कलापो में शामिल न हों तथा कोई ऐसा कार्य न करें जिससे आपकी मानहानि हो। साझेदारी में कार्य करने वाले लोगों के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। यदि आप अपनी पत्नी के साथ कार्य कर रहे हैं तो वांछित उन्नति नहीं मिलेगी।

नौकरीपेशा लोगों के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा। आपको खास मुनाफा होगा। यह मुनाफा आपको सैलरी में वृद्धि तथा नई नौकरी के मौके के रूप में मिल सकता है। आपके बड़े अधिकारी आपकी काफी मदद करेंगे। आपके काम की सराहना होगी। अनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण भी हो सकता है। अगस्त से सितम्बर तक का समय किंचित प्रभावित रहेगा। अतः उस समय सावधान रहने की आवश्यकता है। ऐसा कोई कार्य न करें जिससे आपकी छवि खराब हो जाए तथा वरिष्ठजनों और सहकर्मियो के साथ आपके संबंध खराब हो जाएं।

धन संपत्ति

इस वर्ष आपकी आर्थिक स्थिति थोड़ी कमजोर रह सकती है। इसके लिए आपको थोड़ी सावधानी बरतनी होगी। आपकी जमापूंजी में कमी आ सकती है। इसलिए समझदारी के साथ पैसे खर्च करें तथा वित्तीय जोखिम उठाने से बचें। बिना लिखित प्रक्रिया पूरी किए बिना किसी को पैसे न दें और किसी पर भी आंख बन्द करके विश्वास न करें, अन्यथा बहुत सारी दिक्कतें हो सकती हैं।

सितम्बर के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है। चतुर्थस्थ गुरु के कारण अचल संपत्ति की प्राप्ति हो सकती है। अष्टम स्थान पर गुरु की दृष्टि पैतृक संपत्ति प्राप्त करा सकती है। यदि कोर्ट कचहरी में कोई मुकद्दमा चल रहा है तो उसमें भी अनुकूलता प्राप्त होगी। मांगलिक कार्यों में तथा धार्मिक कार्यों में आपके पैसे अधिक खर्च होंगे।

घर-परिवार, समाज

चतुर्थस्थ गुरु पर शनि की दृष्टि प्रभाव से आपका घरेलू वातावरण अनुकूल रहेगा।

माता के साथ आपके संबंध बेहतर रहेंगे तथा वे हर मोड़ पर आपकी मदद करेंगी। भाई-बहनों सहित पूरे परिवार का सहयोग मिलेगा। आपके परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न होंगे, जिससे में आपकी अहम भुमिका होगी। सप्तम स्थान का राहु आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है। अतः उनके स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखना होगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में तृतीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके पराक्रम तथा कार्य क्षमताओं का विकास होगा, जिससे समाज में आपका मान सम्मान बढ़ेगा। सामाजिक उन्नति या समाज कल्याण के लिए आप कोई संस्था बना सकते हैं, जिससे आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा और बढ़ेगी।

संतान

संतान के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। अपने जीवन में उन्नति के लिए अथक मेहनत करेंगे। देर से ही सही लेकिन उनको परिश्रम का फल अवश्य मिलेगा। आपकी दूसरी संतान के लिए समय अच्छा नहीं है। अचानक उनको स्वास्थ्य संबंधित परेशानी आ सकती है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में स्वास्थ्य में सुधार व कार्यक्षमताओं की वृद्धि होगी। आपकी सन्तान इस वर्ष कोई नई सम्पत्ति या वाहन के क्रय में धन का निवेश कर सकती है। आपका दूसरी सन्तान से टकराव या वैचारिक मतभेद भी हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की बात करें तो यह वर्ष सामान्य रहेगा। द्वितीय स्थान का शनि आपके स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है। आर्थिक स्थिति को लेकर आवश्कता से ज्यादा चिंता न करें नहीं तो इसका नकारात्मक प्रभाव आपके शरीर पर पड़ेगा। मौसमजनित बीमारियों से आप ज्यादा परेशान हो सकते हैं। लग्न स्थान पर राहु की दृष्टि सरदर्द, मांसपेशियों, रक्त और लीवर से संबंधित दिक्कतें दे सकती है। आंखों का विशेष ध्यान रखें। समय समय पर शिकायत होने पर जांच कराते रहें। आपके आत्मविश्वास में कमी आ सकती है।

19 सितम्बर के बाद आपके स्वास्थ्य में कुछ सुधार होगा। फिर भी अपनी सेहत का विशेष ख्याल रखें। अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए शुद्ध शाकाहारी भोजन ग्रहण करें तथा योगासन के साथ-साथ व्यायाम भी करते रहें। सुबह सुबह टहलना आपके लिए ज्यादा लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। यदि आप किसी प्रतियोगिता परीक्षा में बैठने जा रहे हैं तो सफलता प्राप्ति के लिए आपको अधिक परिश्रम की आवश्यकता होगी। अंततः आपको संघर्षात्मक परिस्थितियों में सफलता मिलेगी अध्ययन के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी परन्तु आलस्य की भावना सफलता में बाधक साबित हो सकती है।

वष के उत्तरार्द्ध में छात्रों को सफलता मिलने के पूर्ण आसार है। इसलिए दी गई

परीक्षाओं का परिणाम हितकारी होगा। दोस्तों का सहयोग मिलेगा। कला और सामाजिक कार्यों से जुड़े लोगों को अवश्य लाभ मिलेगा। यदि आप नौकरी की तलाश में हैं तो 19 सितम्बर के बाद आपको इच्छित नौकरी मिल जाएगी।

यात्रा-तबादला

द्वादश पर गुरु की दृष्टि आपको विदेश यात्रा करा सकती है। जलीय मार्ग से दर्शनीय स्थल की यात्रा अधिक करेंगे। यदि आप अपनी जन्मभूमि से दूर रहते हैं तो परिवार सहित अपनी जन्मभूमि की यात्रा भी कर सकते हैं।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में उच्चपद प्राप्ति व स्थानांतरण के योग बन रहे हैं। नौकरी व व्यापार के मामलों को लेकर अधिक यात्राएं होंगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारम्भ में पारिवारिक सुख शान्ति एवं समृद्धि प्राप्ति के लिए अपने घर में हवन, पूजा इत्यादि शुभ कर्म करेंगे, जिसमें परिवार के सभी सदस्य शामिल होंगे।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आपके धर्म कार्यों तथा आध्यात्मिक उन्नति व योग साधना के लिए उत्तम रहेगा। आपकी ईश्वर के प्रति श्रद्धा, आस्था व भक्ति बढ़ती जाएगी। द्विज, देव, ब्राह्मण व ईष्ट देव की कृपा प्राप्त होगी। इस समय के अंतराल में आप कोई विशेष पूजा, अनुष्ठान, यज्ञ, हवन आदि संपन्न कराने में सफल होंगे।

- मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं तथा प्रतिदिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- शनिवार के दिन पीपल के वृक्ष के नीचे चौमुखी दीपक जलाएं।
- प्रतिदिन चिड़ियों तथा चींटियों को दाना डालें।
- आठ मुखी रुद्राक्ष अभिमन्त्रित कर सोमवार के दिन गले में धारण करें।

वार्षिक फलादेश - 2044

इस वर्ष शनि वृश्चिक राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे तथा राहु कुम्भ राशि एवं छठे भाव में रहेंगे। 16 फरवरी तक गुरु धनु राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे तथा उसके बाद मकर राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल वक्री होकर 4 मार्च से 13 जून तक सिंह राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक दृष्टिकोण से यह वर्ष उत्तम रहने वाला है। व्यापारिक व्यक्तियों को इस वर्ष अच्छा लाभ मिलने वाला है। कुछ नए व्यापारिक भागीदार मिलेंगे, कारोबार का विस्तार होगा। व्यापार में पूंजी लगाने वाले कुछ नए लोग मिलेंगे। आमदनी के नये स्रोत मिलने की उम्मीद है। इस अवधी मे कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे, तो उसमें सफलता मिलने की उमीद ज्यादा है। आपको अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा।

यदि आप नौकरी में हैं तो अच्छे परिणाम मिलेंगे तथा कार्यस्थल पर आपकी तारीफ होगी और मान सम्मान भी बढ़ेगा। नई और बेहतर नौकरी मिलने की प्रबल संभावना है। पदोन्नति के साथ-साथ अनुकूल स्थान पर परिवर्तन भी हो सकता है। षष्ठस्थ राहु के कारण नौकरी से संबंधित इच्छाएं पूर्ण होंगी।

धन संपत्ति

आर्थिक उन्नति के लिए यह वर्ष अनुकूल रहने वाला है। वर्ष के प्रारम्भ में ही आपको भूमि, भवन व वाहन सुख की प्राप्ति हो सकती है। 16 फरवरी के बाद एकादश स्थान पर गुरु की दृष्टि आपकी आर्थिक स्थिति में मददगार साबित होगी। आय के मार्ग प्रशस्त होंगे। आप अपने कार्यों के प्रति सजग रहेंगे। पैसे का आगमन निर्विवाद रूप से होता रहेगा। जमापूंजी में तेजी मे वृद्धि होगी।

छोटे भाई या मातुल पक्ष के लोगों से आपको ज्यादा लाभ होगा। संतान की शिक्षा पर व मांगलिक कार्यों में आप ज्याद खर्च करेंगे। पंचमस्थ गुरु के कारण शेयर बाजार से जुड़े लोगों को अच्छा मुनाफा होगा।

घर-परिवार, समाज

इस वर्ष आपका पारिवारिक जीवन उत्तम रहने वाला है। मित्रों के साथ किसी सामाजिक कार्यक्रम में शामिल हो सकते हैं। आपके भाईयों के लिए यह वर्ष बहुत ही श्रेष्ठ है। तृतीयस्थ शनि के प्रभाव से आपके पराक्रम तथा कार्य क्षमताओं का विकास होगा। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे। सामाजिक कल्याण के लिए आप कोई विशेष कार्य संपन्न करेंगे।

माता-पिता सहित पूरे परिवार का सहयोग प्राप्त होगा। ससुराल तथा मातुल पक्ष के लोगों के लिए यह समय बहुत ही शुभ है।

संतान

16 फरवरी के बाद समय आपके बच्चों के लिए अनुकूल हो रहा है। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो जाएगा। यदि वे विवाह के योग्य हैं तो विवाह होने के प्रबल योग बन रहे हैं। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है।

पंचमस्थ गुरु पर शनि ग्रह की दृष्टि के कारण आपके बच्चों का चौमुखी विकास होगा। सफलता के मार्ग पर आगे बढेंगे। आपके बच्चे आपकी उम्मीदों से बढ़ कर उन्नति करेंगे और आप गर्व का अनुभव करेंगे। आपके प्रति उनके दिल में सम्मान का भाव बढ़ेगा तथा वे आपकी सभी आज्ञाओं का पालन करेंगे।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के लिए यह वर्ष उत्तम रहेगा। 16 फरवरी के बाद लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके मन में अच्छे विचार आएंगे जिसके फलस्वरूप प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आप का खान-पान एवं दिनचर्या भी सुधरेगी। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह का प्रभाव होने से आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे जिससे आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। यदि मौसमजनित कोई बीमारी होती भी है तो आप शीघ्र ही अच्छे हो जाएंगे। यदि पहले से कोई लम्बी बीमारी से ग्रस्त हैं तो इस वर्ष उससे भी छुटकारा मिल सकता है।

यदि आपने खाने पीने पर ध्यान नहीं दिया तो आपका मोटापा बढ़ सकता है। क्योंकि वर्ष के उत्तरार्द्ध में मसालेदार और तेल वाले आहार के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी, इसे नियंत्रित करने की कोशिश करें। आलस्य का त्याग करें और स्फूर्ति के लिए व्यायाम करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

16 फरवरी के बाद छात्र वर्ग के लिए समय अनुकूल रहेगा। उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे विद्यार्थियों को मनचाहे परिणाम मिलने की संभावना है। आपकी एकाग्रता में बढ़ोत्तरी होगी। आप विषयों को ज्यादा से ज्यादा पढ़ेंगे। इससे आपका अभ्यास पहले से बहुत अच्छा होगा एवं नतीजों में सकारात्मक परिणाम देखने को मिलेंगे। जो छात्र विदेश में जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं, उनको नए अवसर मिलने की उम्मीद है। प्रतियोगिता परीक्षा में भाग लेने वालों के लिए समय अनुकूल है।

षष्ठस्थ राहु के कारण अचानक प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करेंगे। जो व्यक्ति इलेक्ट्रॉनिक या हार्डवेयर से संबंधित कार्य कर रहे हैं। उनको करियर में सफलता मिलेगी। जो लोग नौकरी की तलाश में हैं उनको वांछित नौकरी की प्राप्ति होगी।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में विदेश यात्राओं का प्रबल योग बन रहा है। नौकरी करने वाले

व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण भी होगा। तृतीयस्थ शनि के कारण आप छोटी -मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी करेंगे।

व्यावसायिक यात्राओं के साथ आपकी मनोरंजनात्मक यात्राएं अधिक होंगी। इन यात्राओं से आपको लाभ भी मिलेगा। इस वर्ष आप धार्मिक यात्रा कर अत्यधिक पुण्यार्जन करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अनुकूल है। घरेलू सुख, शान्ति एवं समृद्धि प्राप्ति के लिए हवन, ग्रह शान्ति या अन्य कोई पूजा संपन्न करेंगे, जिसमें आपको धर्मपत्नी का पूर्ण सहयोग मिलेगा। 16 फरवरी के बाद आप पूजा पाठ में विशेष रूचि लेंगे। नियमित रूप से आप अपना दैनिक पूजा करते रहेंगे। आप दान पुण्य भण्डारा इत्यादि अच्छे कर्मों पर अधिक पैसा खर्च करेंगे, जिससे आपको आत्मिक सुख का अनुभव होगा। अनाथालय अथवा गरीब बच्चे की पढ़ाई लिखाई पर भी आपका पैसा खर्च हो सकता है।

- साधू, संन्यासी एवं गरीबों को भोजन कराएं।
- श्वेतार्क गणपति अपने पूजा घर में स्थापित करें।
- प्रतिदिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- नौ मुखी रुद्राक्ष सोमवार के दिन गले में धारण करें।

वार्षिक फलादेश - 2045

इस वर्ष शनि वृश्चिक राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे। 15 जून तक राहु कुम्भ राशि एवं छठे भाव में रहेंगे तथा उसके बाद मकर राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। 2 मार्च को गुरू कुम्भ राशि एंव छठे भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत ही उत्तम रहने वाला है। कारोबारियों को इस समय अप्रत्याशित मुनाफा प्राप्त हो सकता है। आपके प्रतिद्वंदी आपकी नकल करने की कोशिश करेंगे, लेकिन वे पूरी तरह से विफल रहेंगे। छठे स्थान का राहु आपको शत्रुओं से भी लाभ प्राप्त करा सकता है। आपका मन उत्साह से पूर्ण रहेगा और कठिन से कठिन समस्या का सामना करने के लिए आप तत्पर रहेंगे। किसी भी काम को आप मन लगाकर करेंगे जिससे आपके बड़े अधिकारी आपसे प्रसन्न करेंगे।

वर्ष का उत्तरार्द्ध किंचित प्रभावित रहने वाला है। आप अपने परिश्रम के बल पर कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्त करेंगे। षष्ठस्थ गुरु के प्रभाव से आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाईओं का अनुभव करेंगे। कुछ कारणों को लेकर आपसे बड़े अधिकारी आपके लिए समस्या पैदा कर सकते हैं। लापरवाह और अति आत्मविश्वासी बिल्कुल न बनें। कार्य की अधिकता के कारण आपका स्वास्थ्य खराब हो सकता है। अपने कार्यों को तेजी से करें।

धन संपत्ति

वर्ष के पूर्वार्द्ध में आपकी आर्थिक स्थिति उत्तम रहने वाली है। आमदनी के कई नये स्रोत मिलेंगे जिससे आपके संचित धन में तेजी से वृद्धि होगी। वर्षारम्भ में छठे स्थान का राहु अचानक कोई बड़ा लाभ करा सकता है। पिता एवं आपके बड़े भाईयों से भी धन लाभ होगा। शेयर बाजार, सट्टा व लॉटरी इत्यादि के माध्यम से आपको अच्छा लाभ मिलेगा, जिसके फलस्वरूप आप वांछित बचत करने में सफल रहेंगे।

वर्ष का उत्तरार्द्ध किंचित प्रभावित रहने वाला है। उस समय आपकी आर्थिक स्थिति थोड़ी कमजोर रह सकती है। अतः वित्तीय जोखिम उठाने से बचें। बिना लिखित प्रक्रिया के किसी को पैसे न दें और किसी पर भी आंख बन्दकर विश्वास न करें। जोखिम भरे कार्यों मे धन निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहने वाला है। परिवार के सभी सदस्यों के साथ आपके संबंध मधुर रहेंगे तथा वे लोग हर मोड़ पर आपकी मदद करेंगे। आपके परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न होंगे, जिसमें आपकी अहम भूमिका होगी। यह समय आपके जीवनसाथी के लिए उत्तम रहेगा तथा भावनात्मक लगाव में वृद्धि होगी। वर्ष के उत्तरार्द्ध में पंचम स्थान का राहु आपकी संतान के लिए अच्छा नहीं है।

सामाजिक रूप से यह वर्ष उत्तम रहने वाला है। आपके पराक्रम तथा कार्य क्षमताओं का विकास होगा। समाज में आपका मान-सम्मान बढ़ेगा। सामाजिक उन्नति या समाज कल्याण के लिए आप कोई संस्था बना सकते हैं। इस संस्था से बहुत सारे लोगों का कल्याण होगा, जिसका पूरा श्रेय आपको मिलेगा।

संतान

वर्ष का पूर्वार्द्ध संतान के लिए बहुत ही शुभ है। नव विवाहित व्यक्तियों को संतान की प्राप्ति होगी। बच्चों के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में वे अच्छी प्रगति करेंगे तथा पराक्रम में वृद्धि होगी।

15 जून के बाद आप संतान को लेकर चिंतित रहेंगे आपकी प्रथम संतान को स्वास्थ्य संबंधी परेशानियां हो सकती हैं। गर्भवती स्त्रियां सावधान रहें, गर्भपात की सम्भावना है।

स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ स्वास्थ्य के लिए उत्तम रहने वाला है। आपका मन प्रसन्नचित्त बना रहेगा। धार्मिक कार्यों में मन लगेगा। प्रत्येक कार्य को आप सकारात्मक रूप से करेंगे। मानसिक प्रसन्नता के साथ आपका समय व्यतित होगा तथा आप शारीरिक रूप से पूर्ण आरोग्य रहेंगे। 2 मार्च को गुरु ग्रह के गोचर के साथ आपका समय किंचित प्रभावित होगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में कुछ न कुछ शारीरिक कष्ट होता रहेगा। लग्न स्थान पर राहु की दृष्टि अचानक छोटी-मोटी बीमारियों से आपको परेशान कर सकती है। आंख, पेट, पाचन और नसों में परेशानी हो सकती है। इलाज के लिए आयुर्वेदिक दवा का सेवन करना फायदेमन्द हो सकता है। उचित आहार और नियमित व्यायाम करने से इन बीमरियों से बचा जा सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए यह वर्ष बहुत ही श्रेष्ठ रहने वाला है। प्रतियोगिता परीक्षा में आपको वांछित सफलता मिलेगी। वर्ष के प्रारम्भ में विद्यार्थियों की अध्ययन के प्रति रुचि बढ़ेगी तथा शिक्षा के क्षेत्र में कुछ विशेष उपलब्धी प्राप्त करेंगे। जो लोग नौकरी की तलाश में हैं उनको इच्छित नौकरी की प्राप्ति होगी।

वर्ष का उत्तरार्द्ध विद्यार्थियों के लिए अच्छा नहीं रहेगा। पंचम स्थान का राहु आपकी शिक्षा-दीक्षा में रुकावट उत्पन्न कर सकता है तथा गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से आपके करियर में एकाग्रता नहीं रहेगी और आपका मन भी अशान्त रहा सकता है।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में आप छोटी-मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राओं का भी आनन्द लेंगे। धार्मिक यात्रा होने के प्रबल योग बन रहे हैं।

2 मार्च के बाद आपकी विदेश यात्रा होगी। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपकी व्यावसायिक यात्राएं अधिक होंगी। इन यात्राओं के दौरान आपके छोटी मोटी परेशानियां भी हो सकती हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष का पूर्वार्द्ध आपके धर्म कार्यों तथा आध्यात्मिक उन्नति व योग साधना के लिए उत्तम रहेगा। आपकी ईश्वर के प्रति श्रद्धा, आस्था व भक्ति बढ़ती जाएगी। द्विज, देव, ब्राह्मण व ईष्ट देव की कृपा प्राप्त होगी। आप कोई विशेष पूजा, अनुष्ठान, यज्ञ, हवन आदि संपन्न कराने में सफल होंगे। 15 जून के बाद समय कुछ प्रभावित हो रहा है। पंचम स्थान में राहु ग्रह का गोचर धार्मिक कार्यों के लिए अच्छा नहीं है। इस समय आप मानसिक द्वंदता के कारण पूजा-पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान नहीं कर पाएंगे। आपके दैनिक पूजा पाठ में भी कमी आएगी तथा आपके श्रद्धा व विश्वास में कमी आएंगी।

- प्रतिदिन दुर्गा चालीसा का पाठ करें।
- अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- अपने पूजा घर में लड्डू गोपाल की स्थापना कर उनका पूजन करें।
- पांचमुखी रुद्राक्ष सोमवार के दिन गले में धारण करें।

दशा विश्लेषण

महादशा :- मंगल
(21/02/2021 - 22/02/2028)

मंगल की महादशा 21/02/2021 को आरम्भ होगी और 22/02/2028 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 7 वर्षों की होगी। आपकी जन्मकुण्डली में मंगल तृतीय भाव में स्थित है। नवम, दशम तथा षष्ठम भावों पर मंगल की दृष्टि हैं। इसके पूर्व चन्द्र की 10 वर्ष की दशा चल रही थी। आपको शत्रुओं पर विजय, स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं, मातृ-पक्ष से लाभ आदि की संभावना है। मंगल की इस दशा के दौरान आपको शक्ति तथा ओज और भाइयों से सुख मिलेगा और जीवन में उन्नति होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आप का स्वास्थ्य अति उत्तम रहेगा। आप में जीवन-शक्ति तथा ऊर्जा प्रचुर मात्रा में होगी और आप अत्यन्त उत्साही होंगे। आपमें पहल-शक्ति तथा साहस भी पर्याप्त होगा और आपको अपने लक्ष्य की प्राप्ति होगी। आपको सरदर्द, ज्वर, संक्रामण, पित्त-दोष अथवा गले से सम्बद्ध मौसमी बीमारियाँ हो सकती हैं। किन्तु, ये मामूली बीमारियाँ हैं। आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

अर्थ तथा व्यवसाय :

आप कठिन परिश्रम से अपने भविष्य का निर्माण स्वयं करेंगे। आप प्रगति करेंगे और आपकी कमाई अच्छी होगी। आपके प्रतिद्वन्दी आपके मार्ग में बाधाएँ खड़ी कर सकते हैं और आपके मातृ-पक्ष के सम्बन्धियों के लिए समय कष्टकर हो सकता है। आपके लिए अदालत के मामलों और मुकदमों का निपटारा करा लेना उचित होगा। अपनी जीविका के लिये यान्त्रिकी अभियंत्रण, सैन्य सेवाओं, चिकित्सा-कार्य, दन्तचिकित्सा-कार्य औद्योगिक-प्रतिष्ठानों में रोजगार आदि का चयन कर सकते हैं। लौह-इस्पात, खेल के सामान, ताम्बे, खनिज पदार्थों तथा दवाओं का व्यापार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों को लाभ होगा, उनकी पदोन्नति होगी, उच्चाधिकारियों का अनुग्रह प्राप्त होगा और कार्य स्थान में वातावरण अनुकूल रहेगा। व्यवसाय व्यापार से जुड़े लोगों के व्यवसाय में उन्नति तथा आय और लाभ में वृद्धि होगी। आप अपने ही प्रयासों से बहुत प्रगति करेंगे।

वाहन, यात्राएँ, सम्पत्ति :

शुक्र की अन्तर्दशा के कारण आपको सुखों की प्राप्ति होगी। इस अन्तर्दशा के फलस्वरूप, सुख-आराम तथा वाहनों की प्राप्ति की सम्भावना है।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा उत्तम होगी। आपको कुछ आर्थिक पुरस्कार प्राप्त होगा। गणित, विज्ञान, संचार-माध्यमों से सम्बद्ध विषय आदि में आपकी रुचि होगी। आप खेलों, वाद-विवादों (चर्चा-परिचर्चाओं) तथा बाहरी गतिविधियों में भाग लेंगे। आपको परीक्षाओं में सफलता मिलेगी। आपके प्रतिद्वंद्वी आपको कड़ी टक्कर देंगे।

परिवार :

अपने बच्चों के साथ आपका संबंध उत्तम रहेगा। वे अपने कार्यों में बहुत अच्छा करेंगे, आपको उनसे सुख मिलेगा तथा आप गौरवान्वित महसूस करेंगे। आपके जीवन साथी को समृद्धि तथा सम्बन्धियों से सहायता की प्राप्ति और जीवन में उन्नति होगी। आपके साझेदार के साथ आपका सम्बन्ध अच्छा रहेगा। आपकी माता की यात्रा होगी और आध्यात्मिक कार्यों में व्यय होगा। आपके पिता को साझेदारी और यात्रा में लाभ होगी। आपके छोटे भाई-बहनों को ख्याति, शक्ति तथा अधिकार की प्राप्ति होगी जबकि बड़े भाई-बहनों को सफलता तथा सुख मिलेगा और निवेश में लाभ होगा। आपका उनके साथ सम्बन्ध अच्छा रहेगा। आपके मित्र बहुत अच्छे स्वभाव के होंगे जो आपकी बड़ी सहायता करेंगे और आपका उनके साथ समय सुखद बीतेगा।

अन्तर्दशा :

मंगल की मुख्य दशा में मंगल की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको यश, ख्याति और भाई से सुख की प्राप्ति होगी और आपकी यात्राएँ होंगी। राहु के कारण कुछ समस्याएँ आएंगी। बृहस्पति की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको लाभ मिलेगा। लग्नेश शनि की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको शक्ति, अधिकार, यश, ख्याति और समृद्धि की प्राप्ति होगी और आप यात्रा पर जाएंगे। बुध के कारण आपकी शिक्षा उत्तम होगी और जीवन में कुछ परिवर्तन होंगे। केतु की अन्तर्दशा कुछ समस्याएँ उत्पन्न करेगी। शुक्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप समृद्धि और सम्पत्ति की प्राप्ति होगी और सूर्य की अन्तर्दशा के के कारण साझेदारी में लाभ होगा। चन्द्र की अन्तर्दशा के कारण स्वास्थ्य कुछ खराब हो सकता है।

अंर्तदशा :- मंगल - केतु
(19/08/2025 - 16/01/2026)

आपके लिए मंगल की महादशा 21/02/2021 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में छठी अंतर्दशा केतु की है जिसकी अवधि 4 मास 27 दिन रहेगी। आपके लिए यह 19/08/2025 को प्रारंभ होकर 16/01/2026 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु नाना और मोक्ष का कारक है।

इस अवधि में आप उच्चपद प्राप्त कर सकते हैं। मानसिक शांति, प्रसिद्धि और धनलाभ का योग है। अध्यात्म में रुचि हो सकती है। घरेलू सुख मिलेगा, संतान से खुशी मिलेगी। आप स्वभाव से मददगार हैं। किसी फैसले को करने से पहले गहन विश्लेषण करते हैं। आप साहस का परिचय देंगे। लाभकारी यात्राएं हो सकती हैं। व्यापार में लाभ होगा।

आपके जीवनसाथी को कार्यों में सफलता मिलेगी। आपकी माता की तीर्थयात्रा हो सकती है; उन्हें कार्यों में सफलता मिलेगी। आपके भाई-बहनों के सम्मान में वृद्धि होगी। उन्हें सफलता और समृद्धि मिलेंगी, बाधाओं को पार करेंगे।

आपकी संतान के पिता के साथ मधुर संबंध रहेंगे। अगर वे सेवारत हैं तो यात्रा हो सकती है; भाग्यशाली रहेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो कुछ परिवर्तन हो सकते हैं; अप्रत्याशित धन मिल सकता है। परामर्शदाता स्पर्धियों पर विजयी होंगे; सुख-सुविधाएं उपलब्ध रहेंगी। व्यापारी धन कमाएंगे।

उदर रोगों से बचाव करें। अरिष्ट से बचाव के लिए शनिवार और मंगलवार को उपवास करें।

अंर्तदशा :- मंगल - शुक्र
(16/01/2026 - 18/03/2027)

आपके लिए मंगल की महादशा 21/02/2021 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अन्तर्दशा शुक्र की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 2 मास होगी। आपके लिए यह 16/01/2026 को प्रारंभ होकर 18/03/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शुक्र सौंदर्य, कला और नफासत का कारक है।

इस अवधि में आप प्रसन्न रहेंगे, संतान का जन्म हो सकता है। धन का लाभ और संचय होगा। जीवन में खुशियां मिलेंगी। शत्रुओं पर जीत होगी। निवेश से लाभ होगा। घरेलू सुख मिलेगा। सुख के साधन उपलब्ध होंगे; सेवक भी मिल सकते हैं। आय अच्छी होगी। ललित कलाओं में रुचि होगी, शिक्षा उत्तम होगी, आकांक्षाओं की पूर्ति होगी।

आपके जीवनसाथी की इच्छाओं की पूर्ति होगी, वे भूमि और वाहन क्रय कर सकते हैं। आपके पिता की अध्यात्म में रुचि होगी। वे प्रसन्न रहेंगे। माता को विभिन्न माध्यमों से धन मिल सकता है; दान-धर्म में रुचि लेंगी। आपके भाई-बहन धनी बनेंगे; उनकी इच्छाएं पूरी

होंगी, साझेदारी से लाभ हो सकता है, विवाह हो सकता है।

आपकी संतान अगर शिक्षारत है तो परीक्षा में सफल होगी। अगर वे सेवारत हैं तो धन कमाएंगे; घरेलू जीवन सुखी होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो अप्रत्याशित घटनाएं हो सकती हैं; तबादला हो सकता है। परामर्शदाताओं को भागीदारों से लाभ होगा। व्यापारी धन कमाएंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा, मगर जरुरत से अधिक परिश्रम से बचें। शुभत्व में वृद्धि के लिए लक्ष्मीजी की आराधना करें।

अंर्तदशा :- मंगल - सूर्य
(18/03/2027 - 24/07/2027)

आपकी मंगल की महादशा 21/02/2021 को प्रारंभ हो रही है । मंगल महादशा के अंतर्गत सूर्य की अंतर्दशा की अवधि 4 मास 6 दिन है। आपके लिए सूर्य की अंतर्दशा 18/03/2027 को प्रारंभ होकर 24/07/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य आत्मा, स्वास्थ्य और ऊर्जा का कारक है।

इस अवधि में आपकी शिक्षा उत्तम रहेगी। कार्यक्षेत्र में सफलता मिलेगी। प्रशासन से लाभ मिलेगा। जायदाद और वाहन क्रय कर सकते हैं। विरासत में संपत्ति मिल सकती है, शत्रु परास्त होंगे। निवास उत्तम रहेगा। माता धनी होंगी, उनका आत्मविश्वास बढ़ेगा। आपके भाई-बहन धन प्राप्त करेंगे मगर उनके खर्चे भी बढ़ेंगे। उनका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

आपकी संतान को लक्ष्यप्राप्ति के लिए परिश्रम करना होगा। अगर वे सेवारत हैं तो स्थानांतरण और अधिक खर्चों की संभावना है।

अगर आप सेवारत हैं तो विभिन्न माध्यमों से धन मिलेगा। परामर्शदाताओं को साझेदार से लाभ होगा। व्यापारियों के लाभ में वृद्धि होगी।

स्वास्थ्य सामान्यतः उत्तम रहेगा। अधिक परिश्रम और उत्तेजना से बचें। शुभत्व में वृद्धि के लिए लाल गाय, तांबा, गेहूं और गुड़ का दान करें।

अंर्तदशा :- मंगल - चन्द्र
(24/07/2027 - 22/02/2028)

आपके लिए मंगल की महादशा 21/02/2021 को प्रांरभ हुई और को समाप्त होगी। इस महादशा में चंद्र अंतर्दशा 7 मास की होगी और 24/07/2027 को प्रारंभ होकर 22/02/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र माता, प्रसन्नता और मस्तिष्क के रुझान का कारक है।

इस अवधि में आप विदेश जा सकते हैं। खर्चे बढ़ेंगे। कल्याणकार्य में शरीक हो सकते हैं। शांत रहकर किये गये कार्य लाभकारी होंगे। व्यर्थ की चिंताओं और उत्तेजना से बचें।

महादशा :- राहु
(22/02/2028 - 21/02/2046)

राहु की महादशा 22/02/2028 को आरम्भ और 21/02/2046 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 18 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में राहु सप्तम भाव में स्थित है। राहु की दृष्टि लग्न पर है। इसके पूर्व आपकी 7 वर्ष की मंगल दशा चल रही थी। मंगल के कारण आपको सम्पत्ति तथा वाहन की प्राप्ति, साझेदारों से लाभ और स्वास्थ्य संबंधी मामूली समस्या हुई होगी। राहु की इस दशा में आपको यात्रा तथा वाणिज्य-व्यवसाय में लाभ तथा विदेश में सफलता मिलेगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपको पित्तरोग, उदररोग, ज्वर, सरदर्द, फोड़ा-फुन्सी, व्रण (फोड़ा), अल्सर आदि रोग हो सकते हैं। सन्तुलित भोजन तथा अन्य उपायों से इनमें से बहुतों से बचा जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

आपकी आर्थिक स्थिति अत्यन्त सुदृढ़ होगी। आपको वाणिज्य-व्यापार, यात्रा तथा विदेश से लाभ होगा। किसी भी अनुबंध या समझौते के प्रति सावधानी बरतनी चाहिए। आपको सट्टे तथा निवेश में पर्याप्त लाभ होगा। जीविका तथा व्यवसाय के लिए दवा, कम्प्यूटर, रसायन, वैमानिकी, उड्डयन तथा मशीन से संबंधित क्षेत्रों का चयन कर सकते हैं। दवा, एण्टीबायोटिक, यंत्र-उपकरण, मंशीनरी आदि का व्यापार-लाभदायक हो सकता है। सेवारत लोगों को पर्याप्त लाभ मिलेगा और पदोन्नति तथा स्थानान्तरण होगा। आपको अपने सहायकों

व सहकर्मियों का सहयोग मिलेगा। व्यवसाय से जुड़े लोगों की जीवन-चर्या में प्रगति होगी, विदेशी स्रोतों से लाभ, यश और ख्याति की प्राप्ति तथा व्यापार में विस्तार होगा। जीवन चर्या में प्रगति के लिए यह दशा अत्यन्त सुन्दर है।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

शनि की अन्तर्दशा के दौरान आपको जीवन का सारा सुख प्राप्त होगा। आपको जमीन जायदाद से लाभ तथा स्थायी सम्पत्ति में वृद्धि होगी। इस दशा के दौरान आपको भू-सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। गुरु की अन्तर्दशा के दौरान आपकी छोटी यात्रा और बुध की अन्तर्दशा में लम्बी यात्रा होगी।

शिक्षा :

आपकी शिक्षा उत्तम होगी। लक्ष्य की प्राप्ति के लिए आपको कठिन परिश्रम करना होगा। आप प्रेरित और दृढ़निश्चय होंगे और बड़ी संख्या में शिक्षा से अलग गतिविधियों में भाग लेंगे। दवा, कम्प्यूटर-विज्ञान, गणित, विज्ञान, इन्जीनियरिंग आदि विषयों में आपकी रुचि होगी। आप में नेतृत्व-गुण विद्यमान हैं जो इस दशा के दौरान सामने आएंगे।

परिवार :

परिवार के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। आपके बच्चों की छोटी यात्रा, उत्तम स्वास्थ्य और जीवन-चर्चा में उन्नति होगी। आपके जीवन साथी को सम्पत्ति, कुछ मामूली सवास्थ्य-समस्या और वाणिज्य-व्यापार में सफलता मिलेगी। आपकी माता की अचल सम्पत्ति का संग्रह और सुख की प्राप्ति होगी। जबकि पिता को समृद्धि, सम्पत्ति तथा अर्थ प्राप्ति के अनेक अवसर मिलेंगे। आपके छोटे भाई-बहनों को सट्टे में लाभ, आय में अचानक वृद्धि और शिक्षा में समस्या होगी जबकि बड़े भाई-बहनों को ख्याति, यश, पद और आराम मिलेगा।

अन्तर्दशा :

राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा में आपकी छोटी यात्रा, जीवनचर्या में उन्नति और विवाह होगा। गुरु की अन्तर्दशा के दौरान यात्रा, मामूली स्वास्थ्य समस्या और विरोधियों पर विजय मिलेगी। शनि की अन्तर्दशा में उत्तम शिक्षा, बच्चों से सुख, सफलता, यश और ख्याति मिलेगी। बुध की अन्तर्दशा के दौरान खुशहाली, लम्बी यात्रा और पिता से लाभ मिलेगा। केतु कुछ समस्या उत्पन्न करेगा। शुक्र की अन्तर्दशा में चौतरफा समृद्धि, उत्तम स्वास्थ्य, सम्पत्ति तथा सफलता मिलेगी जबकि सूर्य की अन्तर्दशा में हर प्रकार का लाभ मिलेगा। चन्द्र की अन्तर्दशा के दौरान प्रगति और जीवन में सफलता मिलेगी जबकि मंगल की अन्तर्दशा में यात्रा, व्यवसाय में प्रगति और व्यापार में लाभ होगा।

अंर्तदशा :- राहु - राहु
(22/02/2028 - 04/11/2030)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 22/02/2028 को प्रारंभ होकर 21/02/2046 को समाप्त होगी। इस महादशा में राहु अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 8 मास 12 दिन होगी जो आपके लिए 22/02/2028 को प्रारंभ होकर 04/11/2030 को समाप्त होगी।

राहु आपकी जन्मपत्री में सप्तम भाव में स्थित है। सप्तम भाव लौकिक संबंध जीवनसाथी, व्यापार में साझेदार, मुकदमे, विदेश में प्रभाव और जीवन में खतरों का परिचायक है। राहु छायाग्रह है। इसकी स्वयं की राशि नहीं होती। स्थिति के अनुसार यह शुभ या अशुभ हो सकता है। सप्तम भाव में स्थित होकर राहु आपकी कुंडली के लग्न पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपकी रुचि ऐशो-आराम और अय्याशी में हो सकती है। निम्न कोटि के या विदेश के विपरीत लिंग के व्यक्तियों से संबंध हो सकते हैं। विवाहित जीवन में तनाव हो सकता है।

अरिष्ट से बचाव के लिए 7 रत्ती का गोमेद चांदी की अंगूठी में अपने इष्टदेव की उपासना के बाद बायें हाथ की मध्यमा अंगुली में गंगाजल और कच्चे दूध से धोकर धारण करें।

अंर्तदशा :- राहु - गुरु
(04/11/2030 - 29/03/2033)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 22/02/2028 को प्रारंभ होकर 21/02/2046 को समाप्त होगी। इस महादशा में बृहस्पति अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 4 मास 24 दिन रहेगी जो आपके लिए 04/11/2030 को प्रारंभ होकर 29/03/2033 को समाप्त होगी।

बृहस्पति आपकी जन्मपत्री में सप्तम भाव में स्थित है। सप्तम भाव लौकिक संबंध, जीवनसाथी, व्यापार में साझेदार, मुकदमे, विदेश में प्रभाव और जीवन में खतरों का परिचायक है। बृहस्पति शुभ ग्रह है। पंचम भाव में स्थित होकर बृहस्पति आपकी कुंडली के 9, 11, 1 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपको जीवनसाथी या व्यापार में साझेदार के माध्यम से लाभ हो सकता है। आप नीतिकुशल, दयालु, दूसरों की भावनाओं की कद्र करने वाले होंगे। मन में दूसरों से श्रेष्ठ होने की भावना रहेगी। दूरस्थ स्थान की तीर्थयात्रा कर सकते हैं।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए बृहस्पति के वैदिक मंत्र के 19000 जाप करें।

अंर्तदशा :- राहु - शनि
(29/03/2033 - 03/02/2036)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है जो आपके लिए 22/02/2028 को प्रारंभ होकर 21/02/2046 को समाप्त होगी। इस महादशा में शनि अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 10 मास 6 दिन होगी जो आपके लिए 29/03/2033 को प्रारंभ होकर 03/02/2036 को समाप्त होगी।

शनि आपकी जन्मपत्री में चतुर्थ भाव में स्थित है। चतुर्थ भाव माता, स्वयं का मकान, घरेलू वातावरण, व्यक्तिगत संबंध, वाहन, बाग-बगीचे, पैतृक संपत्ति, शिक्षा, दूध, तालाब और झील आदि का प्रतिनिधि है। चतुर्थ भाव में स्थित होकर शनि आपकी कुंडली के 6, 10, 1 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

यह अंतर्दशा आपके लिए अशुभ हो सकती है। इस अवधि में रिश्तेदार आपसे अप्रसन्न रह सकते हैं, आप एकाकी जीवन व्यतीत कर सकते हैं, स्वयं को बीमार या अप्रसन्न महसूस कर सकते हैं। आलस्य की भावना रहेगी, क्रोध अधिक हो सकता है। वात और बलगम से संबंधित रोग हो सकता है। मन में नकारात्मक विचार आ सकते हैं। हर कदम पर सावधान रहना आवश्यक है।

अरिष्ट से बचाव के लिए चांदी में जड़ा नौमुखी रुद्राक्ष शनिवार के दिन शिवजी की पूजा और शनि वैदिक मंत्र के जाप के बाद धारण करें।

अंर्तदशा :- राहु - बुध
(03/02/2036 - 23/08/2038)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 22/02/2028 को प्रारंभ होकर 21/02/2046 को समाप्त होगी। इस महादशा में बुध अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 6 मास 18 दिन रहेगी जो आपके लिए 03/02/2036 को प्रारंभ होकर 23/08/2038 को समाप्त होगी।

बुध आपकी जन्मपत्री में पंचम भाव में स्थित है। पंचम भाव संतान, मनोरंजन, सैर-सपाटे, प्रेम संबंध, स्पर्धा, अच्छे-बुरे चरित्र, धार्मिकता, विवेक, धनाढ्यता और आत्मिक उत्थान का परिचायक है। पंचम भाव में स्थित होकर बुध कुंडली के एकादश भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसे अपने कारकत्व से प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप विद्वान होंगे, ज्ञानार्जन के लिए किसी पाठ्यक्रम में प्रवेश ले सकते हैं। बुद्धिमान होंगे; किसी वरिष्ठ व्यक्ति के सलाहकार बन सकते हैं। विषय-वासनाओं में रुचि हो सकती है जिससे शक्ति का ह्रास संभव है।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए बुध के वैदिक मंत्र के 9000 जाप करें।

अंर्तदशा :- राहु - केतु
(23/08/2038 - 10/09/2039)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 22/02/2028 को प्रारंभ होकर 21/02/2046 को समाप्त होगी। इस महादशा में केतु अंतर्दशा की अवधि 1 वर्ष 18 दिन होगी जो आपके लिए 23/08/2038 को प्रारंभ होकर 10/09/2039 को समाप्त होगी।

केतु आपकी जन्मपत्रिका में लग्न में स्थित है। लग्न शारीरिक बनावट, आकृति, स्वास्थ्य, जन्मजात स्वभाव और आदतें, सम्मान, गरिमा सामान्य शुभत्व, चेहरे का ऊपरी भाग, आयु और जीवन की रुपरेखा आदि का परिचायक है।

लग्न में स्थित होकर केतु आपकी कुंडली के छठे भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप किसी व्याधि से ग्रसित हो सकते हैं। शरीर दुर्बल हो सकता है। फोड़े-फुंसी हो सकते हैं। साख में गिरावट आ सकती है। मष्तिष्क बेचैन रह सकता है। उत्तेजना अधिक रहेगी। इस कारण विवाहित जीवन में तनाव हो सकता है। यह अंतर्दशा अशुभ हो सकती है।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए केतु के वैदिक मंत्र के 8000 जाप करें।

अंर्तदशा :- राहु - शुक्र
(10/09/2039 - 10/09/2042)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 22/02/2028 को प्रारंभ होकर 21/02/2046 को समाप्त होगी। इस महादशा में शुक्र अंतर्दशा की अवधि 3 वर्ष होगी जो आपके लिए 10/09/2039 को प्रारंभ होकर 10/09/2042 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्री में पंचम भाव में स्थित है। पंचम भाव संतान, मनोरंजन, सैर-सपाटे, प्रेम संबंध, स्पर्धा, अच्छे-बुरे चरित्र, धार्मिकता, विवेक, धनाढ्यता और आत्मिक उत्थान का परिचायक है। शुक्र शुभ ग्रह है। पंचम भाव में स्थित होकर शुक्र आपकी कुंडली के एकादश भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप रोमांटिक हो सकते हैं। राजनीति में दिलचस्पी हो सकती है। लोकप्रियता बढ़ेगी, पर्याप्त मित्र होंगे। योग्यता के बल पर धन कमाएंगे। सट्टेबाजी में भी लाभ हो सकता है। सरकार से पुरस्कार मिल सकता है।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए शुक्र के तांत्रिक मंत्र के 60,000 (साठ हजार) जाप करें।

अंर्तदशा :- राहु - सूर्य
(10/09/2042 - 05/08/2043)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 22/02/2028 को प्रारंभ होकर 21/02/2046 को समाप्त होगी। इस महादशा में सूर्य की अंतर्दशा 10 मास 24 दिन की होगी जो आपके लिए 10/09/2042 को प्रारंभ होकर 05/08/2043 को समाप्त होगी।

सूर्य आपकी जन्मपत्री में चतुर्थ भाव में स्थित है। चतुर्थ भाव मष्तिष्क का रुझान, बुद्धि, साहस, छोटे भाई-बहन, लघु यात्राएं, विचार संचार, हाथ, कंधे आदि का परिचायक है। सूर्य शक्तिशाली ग्रह है। चतुर्थ भाव में स्थित होकर सूर्य आपकी कुंडली के दशम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप चिंतित और अप्रसन्न रह सकते हैं; व्यर्थ इधर-उधर भटक सकते हैं। दर्शनशास्त्र और तंत्र-मंत्र में रुचि हो सकती है। राजनीति में सफलता मिलना कठिन होगा। जीवन से संबंधित पहेलियों को सुलझाने में और दार्शनिक चिंतन में समय बिताएंगे। विरासत में जायदाद मिल सकती है।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए :

- दूध और शहद का सेवन करें; अग्नि को दूध अर्पित करें।
- आटा, गुड़ और तांबे के सिक्के दान करें।
- बहते पानी (नदी आदि) में तांबे के सिक्के डालें।

अंर्तदशा :- राहु - चन्द्र
(05/08/2043 - 03/02/2045)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 22/02/2028 को प्रारंभ होकर 21/02/2046 को समाप्त होगी। इस महादशा में चंद्रमा की अंतर्दशा 1 वर्ष 6 मास की होगी जो आपके लिए 05/08/2043 को प्रारंभ होकर 03/02/2045 को समाप्त होगी।

चंद्रमा आपकी जन्मपत्री में द्वादश भाव में स्थित है। द्वादश भाव हानि, बाधाएं, धन के दुरुपयोग, धोखा, दान, परिवार से अलगाव, दुख, छुपे दुश्मन, कांड, गुप्त दुख, शैयासुख और विदेश में जीवनयापन का संकेतक है। चंद्रमा मन का कारक है। द्वादश भाव में स्थित होकर चंद्रमा आपकी कुंडली के छठे भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपकी मानसिक दृढ़ता में कमी आ सकती है; अत्यधिक संवेदनशील हो सकते हैं। किसी कांड या धोखाधड़ी में फंस सकते हैं, जिस कारण धन खर्च हो सकता है। आपके व्यवहार के कारण बहुत से गुप्त शत्रु हो सकते हैं।

अरिष्ट से बचाव के लिए चंद्रमा के वैदिक मंत्र के 11000 जाप करें।

शाम को चंद्रोदय के समय चंद्रमा का मंत्र पढ़ते हुए चंद्र को कच्चा दूध अर्पित करें।

अंर्तदशा :- राहु - मंगल
(03/02/2045 - 21/02/2046)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है जो आपके लिए 22/02/2028 को प्रारंभ होकर 21/02/2046 को समाप्त होगी। इस महादशा में मंगल की अंतर्दशा 1 वर्ष 18 दिन की होगी जो आपके लिए 03/02/2045 को प्रारंभ होकर 21/02/2046 को समाप्त होगी।

मंगल आपकी जन्मपत्री में तृतीय भाव में स्थित है। तृतीय भाव मष्तिष्क का रुझान, बुद्धि, साहस, छोटे भाई-बहन, लघु यात्राएं, विचार संचार, हाथ, कंधे आदि का परिचायक है। तृतीय भाव में स्थित होकर मंगल आपकी कुंडली के 6, 9, 10 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप साहसी, धैर्यवान और विविध कार्यों में दक्ष होंगे, मगर असिद्धांतवादी और जल्दबाज भी हो सकते हैं। जल्दबाजी के कारण दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं।

आपके भाई-बहनों और कुटुंबियों की वाणी कटु हो सकती है, जिससे आपको भी हानि हो सकती है।

अरिष्ट से बचाव के लिए ब्रह्माजी के गायत्री मंत्र के 108 जाप प्रतिदिन करें।

एस्ट्रोग्राफ

एस्ट्रोग्राफ, जीवन के किसी भी पहलू की ग्राफ द्वारा प्रस्तुति है। इससे स्वास्थ्य, आर्थिक, बुद्धि, प्रेम या अन्य किसी भी क्षेत्र में, एक समय के दौरान, होने वाली घटनाओं में रूचि रखने वालों को जानकारी मिलती है। एस्ट्रोग्राफ हमें सही रूप जानने और उन्हें आसानी से समझने में सहायक होते है।

अगले पृष्ठों में आपके जीवन के तीन महत्वपूर्ण पहलू - स्वास्थ्य, धन तथा मानसिक स्तर एस्ट्रोग्राफ द्वारा दिखाये गये हैं। ये एस्ट्रोग्राफ 100 मापक्रम के अनुसार हैं।। यदि आपका एस्ट्रोग्राफ 50 से अधिक अंक दिखाता है तो वह शुभ है। 65 से ऊपर बहुत अच्छा होता है और 80 से ऊपर अति उत्तम होता है। 50 से नीचे सामान्य होता है, 35 से नीचे बुरा तथा 20 से नीचे बहुत बुरा माना जाना चाहिए।

0-20	निकृष्ट	50-65	श्रेष्ठ
20-35	नेष्ट	65-80	उत्तम
35-50	सामान्य	80-100	अत्युत्तम

एस्ट्रोग्राफ - 2026

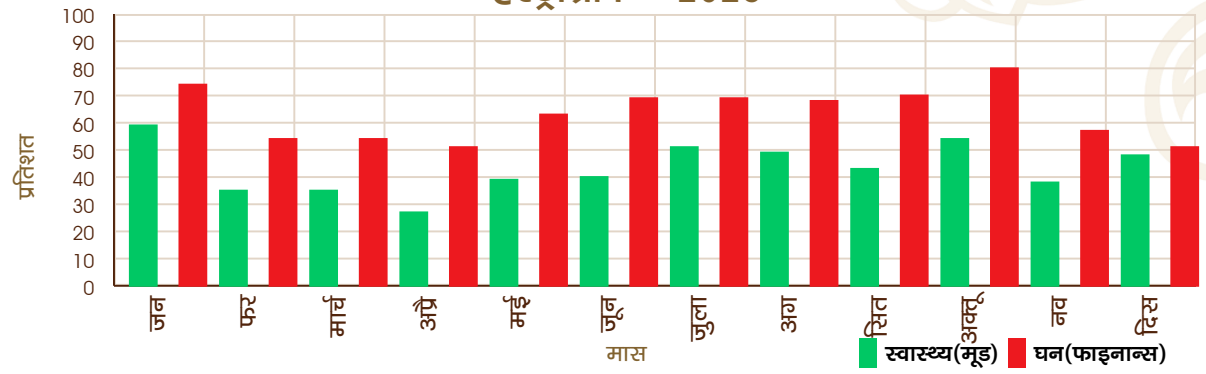

एस्ट्रोग्राफ - 2027

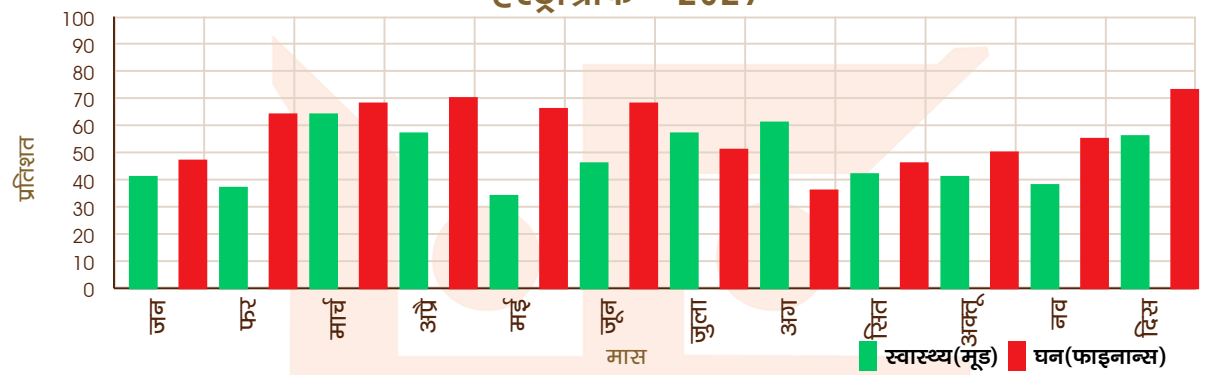

एस्ट्रोग्राफ - 2028

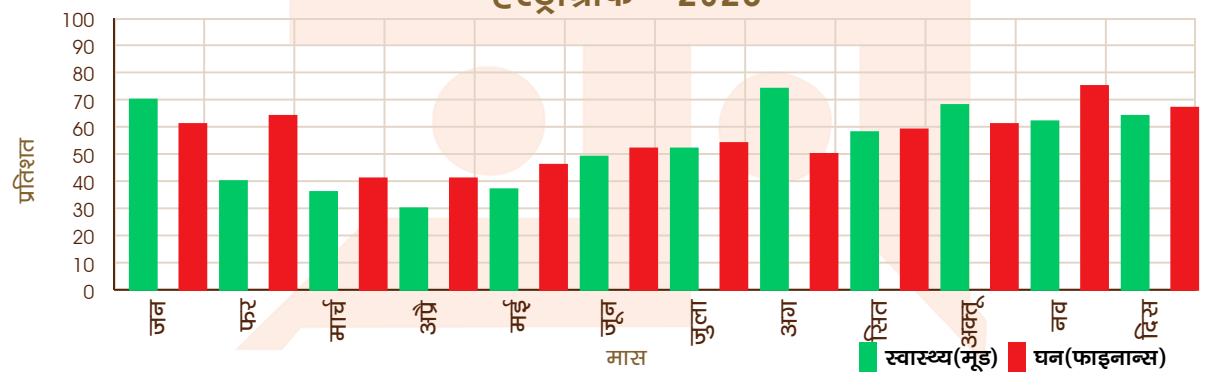

एस्ट्रोग्राफ - 2029

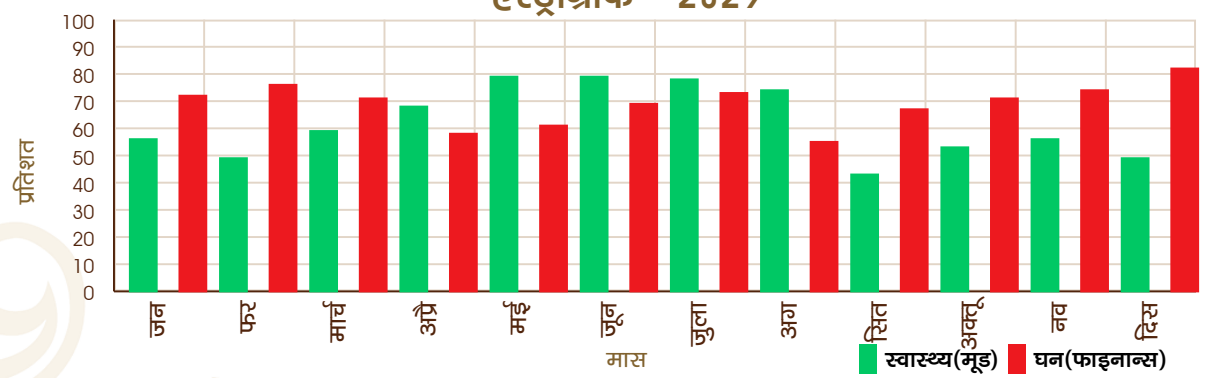

एस्ट्रोग्राफ - 2030

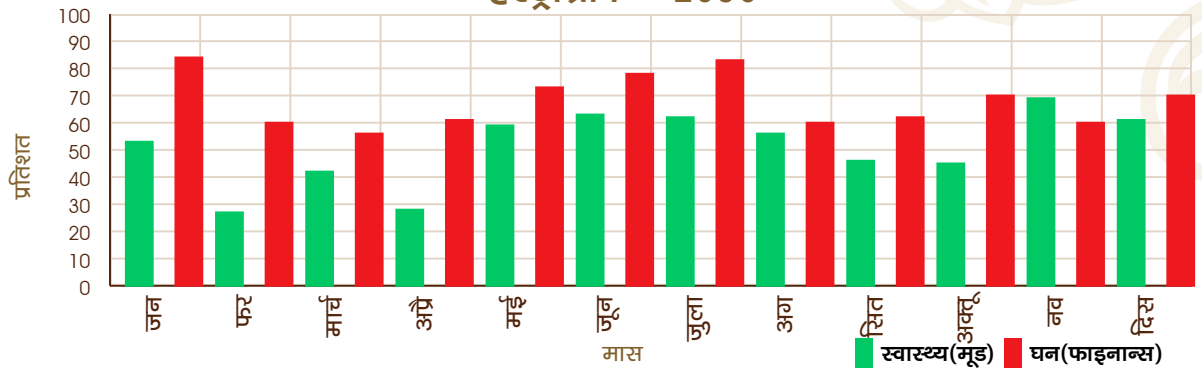

एस्ट्रोग्राफ - 2031

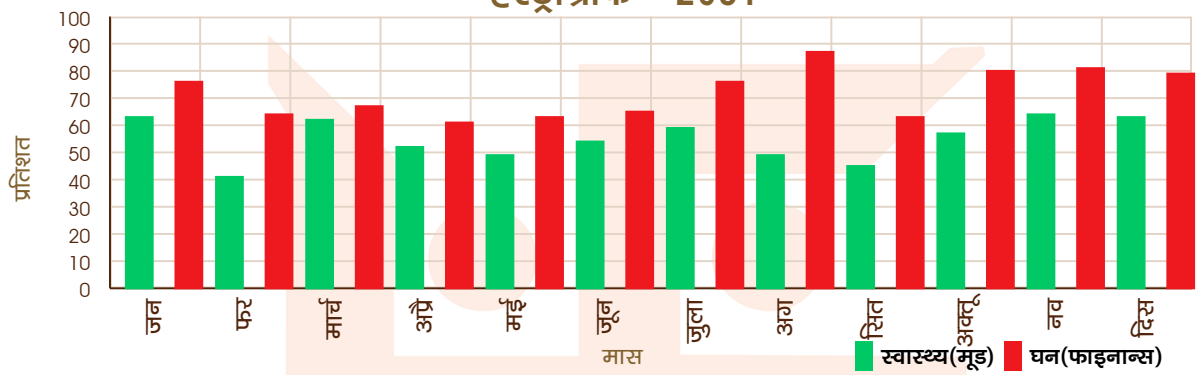

एस्ट्रोग्राफ - 2032

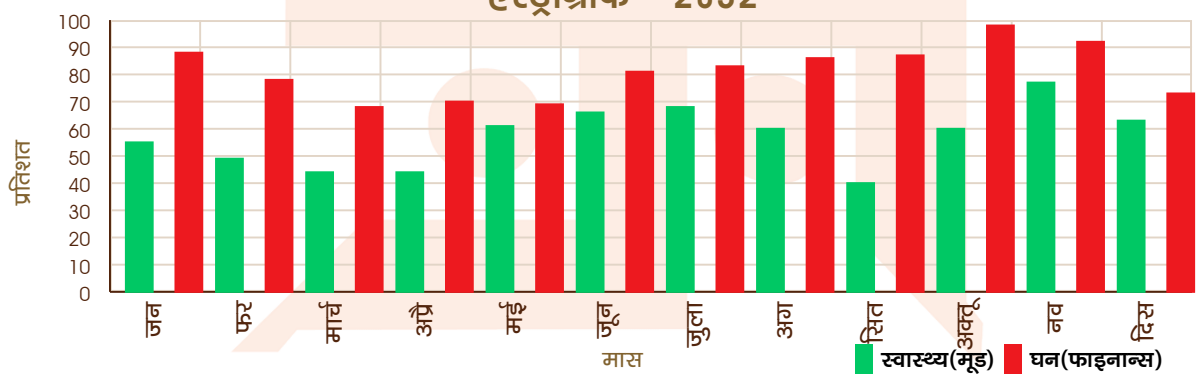

एस्ट्रोग्राफ - 2033

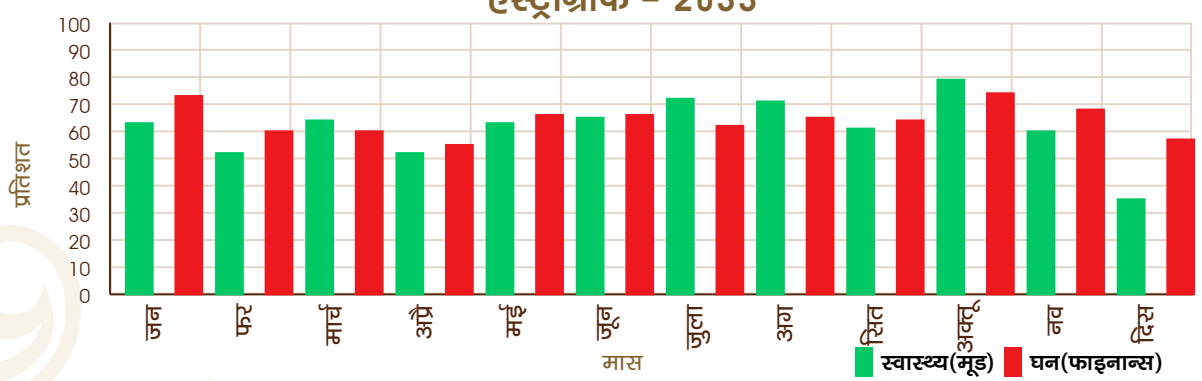

एस्ट्रोग्राफ - 2034

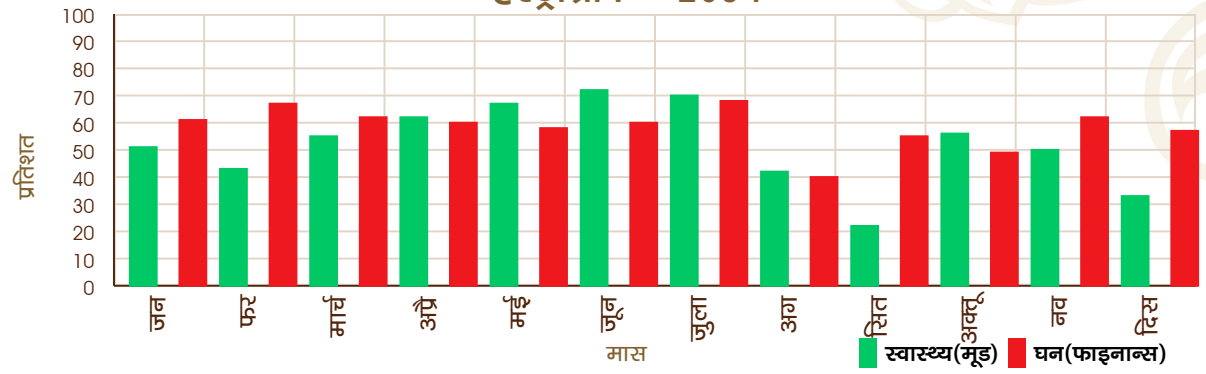

एस्ट्रोग्राफ - 2035

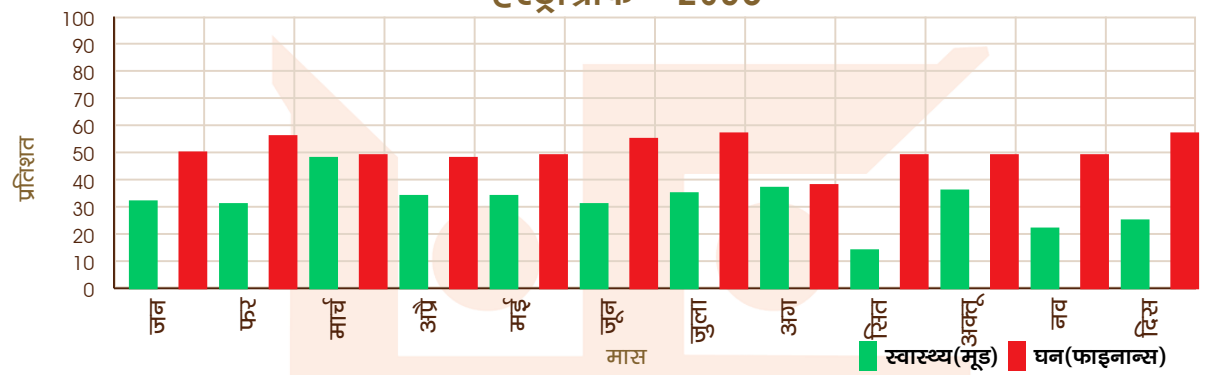

एस्ट्रोग्राफ - 2036

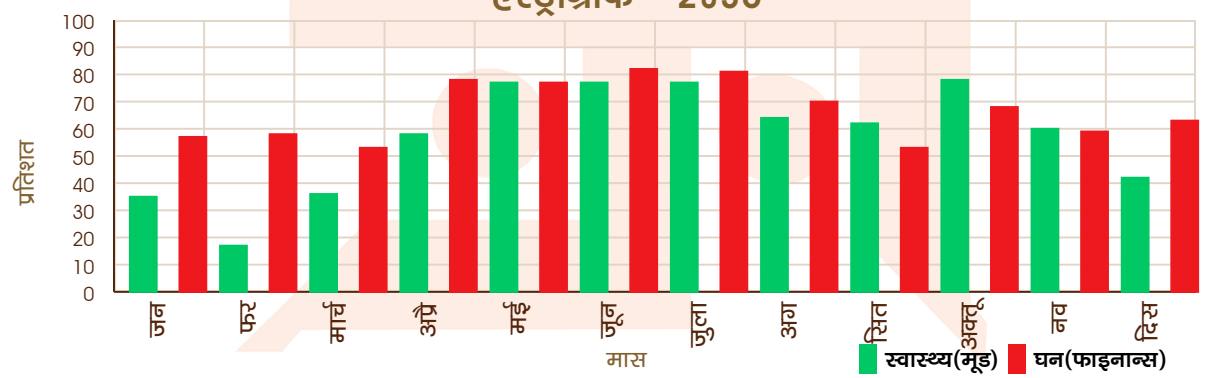

एस्ट्रोग्राफ - 2037

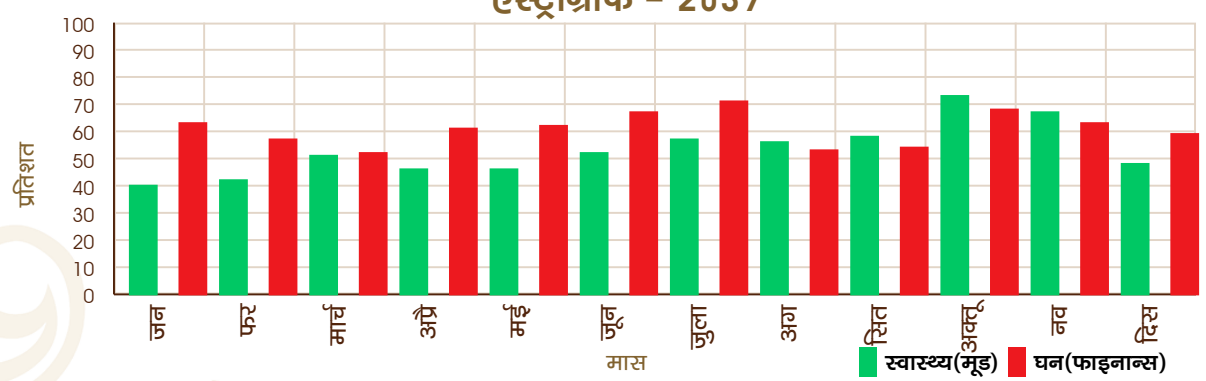

एस्ट्रोग्राफ - 2038

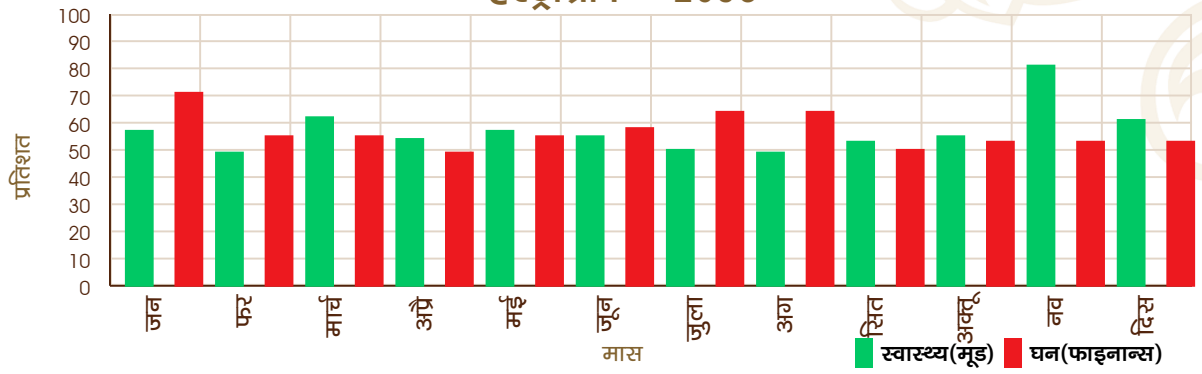

एस्ट्रोग्राफ - 2039

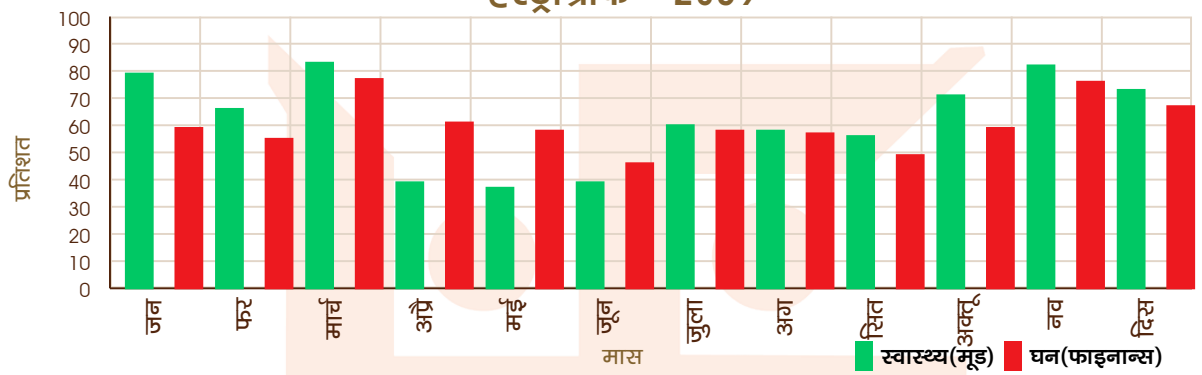

एस्ट्रोग्राफ - 2040

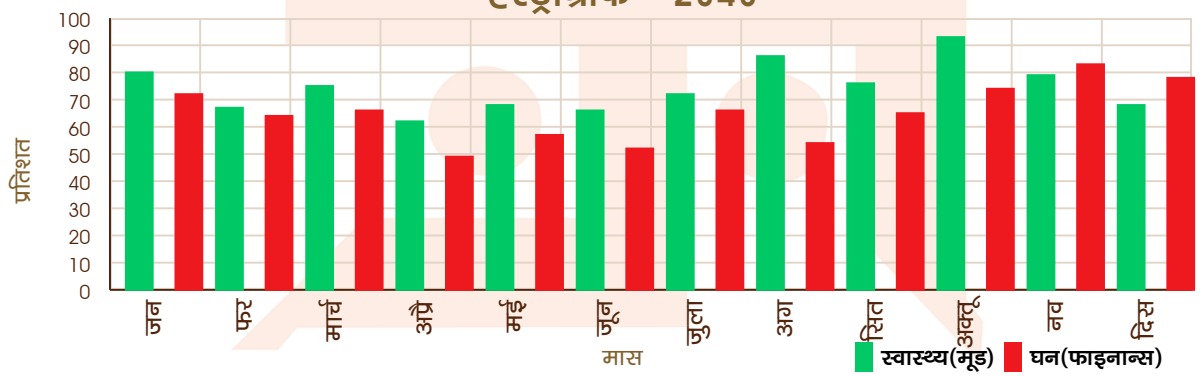

एस्ट्रोग्राफ - 2041

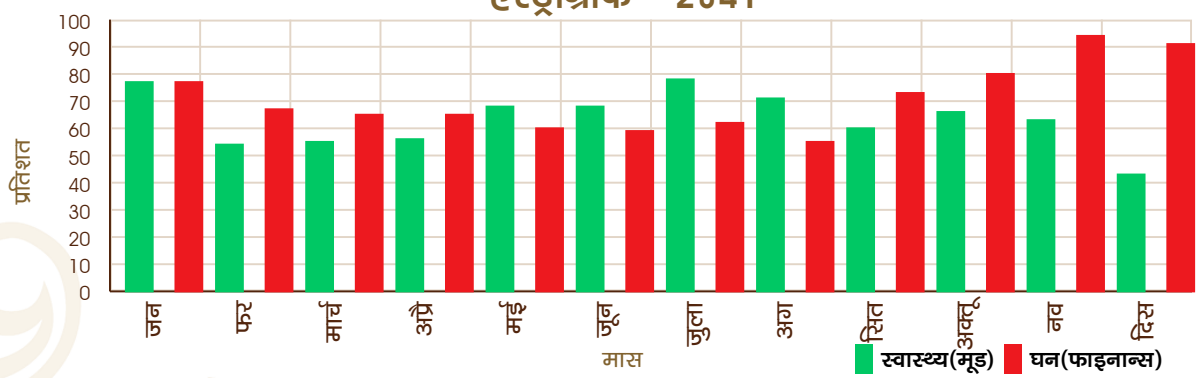

एस्ट्रोग्राफ - 2042

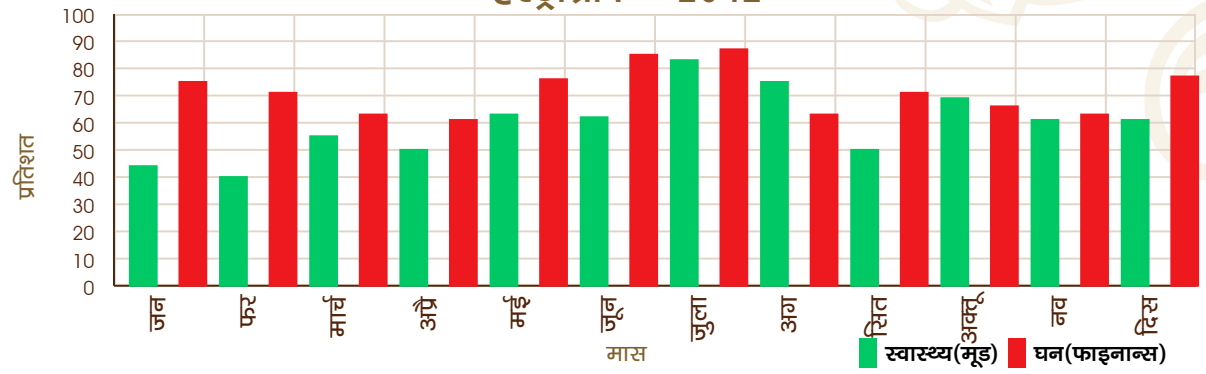

एस्ट्रोग्राफ - 2043

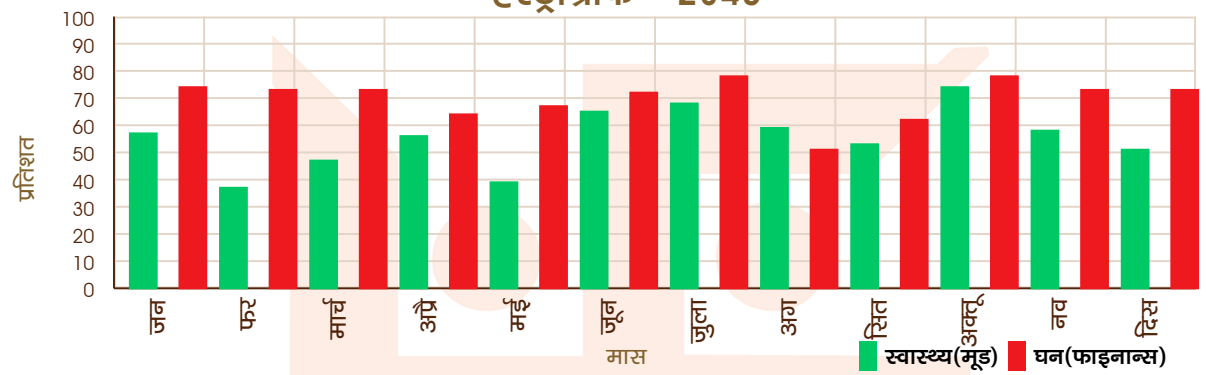

एस्ट्रोग्राफ - 2044

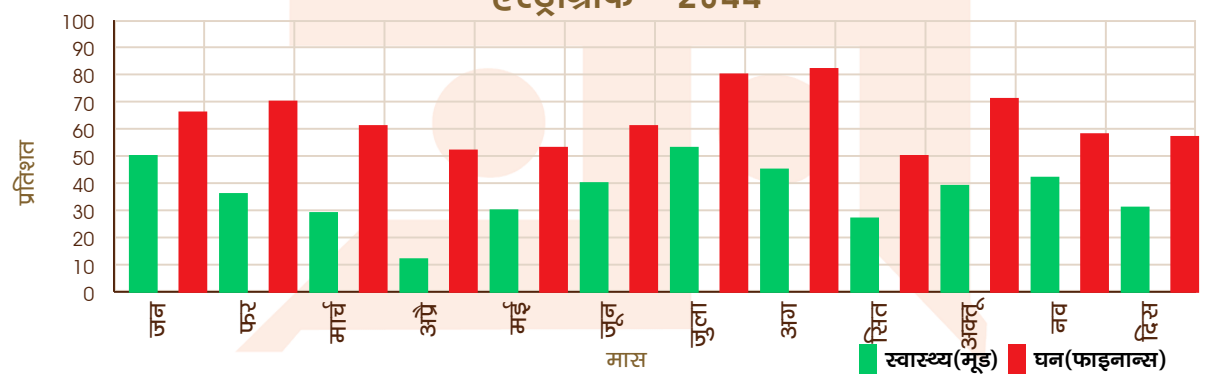

एस्ट्रोग्राफ - 2045

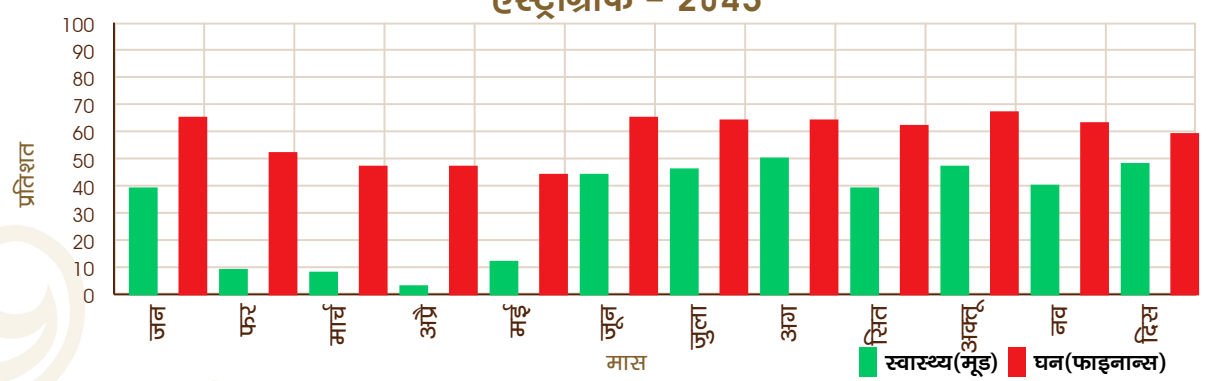

योग

हंस योग

स्वगेहतुङ्गाश्रयकेन्द्रसंस्थैरुच्चोपगैर्वाचनसूनुमुख्यैः।
क्रमेण योगा रुचकाख्यभद्रहंसाख्यमालव्यशशाभिधानाः।।
रक्तास्योन्नतनासिकासुचरणो हंसप्रसन्नेन्द्रियो
गौरः पीनकपालरक्तकरजो हंसस्वनः श्लैष्मिकः।
शङ्खाब्जाङ्कुशमत्स्यदामयुगकैः खट्वाङ्गमालाघटै-
श्चंचत्पादकरस्थलो मधुनिभे नेत्रे सुवृत्तं शिरः।।
जलाशयप्रीतिरतीव कामी न याति तृप्तिं वानितासुनूनम्।
ओच्चः रसाष्टाङ्गुलसम्मितं तत्तनोस्तथायुरिहास्ति षष्टिः।।
वाह्लीकदेशादरशूरसेनगन्धर्वगङ्गायमुनान्तरालान्।
भुक्त्वा वनान्ते निधनं प्रयाति हंसोऽयमुक्तो मुनिभिः प्रमाणैः।
।। मानसागरी।। अ. 4/श्लोक 2, 9 1-3।।

यदि जन्मपत्रिका में स्वराशि अथवा उच्चहोकर गुरु केन्द्र में हो तो हंसयोग बनता है।

इस योग वाला जातक ऊंची नासिका (नाक), सुन्दरचरण (पाँव), हंससदृश प्रसन्न इन्द्रिय वाला (जिसकी अच्ग प्रत्यच्ग हंस की तरह सुन्दर हों), गौरवर्ण, मधुरवाणी वाला, कफ प्रकृतिवाला, मछली, कमल, अच्कुश, शङ्ख, दाम, खट्वाङ्ग, माला, जुआ, घड़ा इन चिह्नों से सुशोभित हाथ पांव वाला, मधु के समान नेत्रवाला और सुन्दर गोलाकार शिर वाला होता है। जलाशय में स्नेह रखने वाला, अत्यन्त कामी, स्त्रियों से तृप्ति न पाने वाला, 86 अङ्गुल ऊँचा शरीर वाला तथा 60 वर्ष तक जीने वाला होता है। वाह्लीक सुरसेन, गन्धर्वादिदेशों में तथा गङ्गा यमुना के मध्य देशों में भोग करके वन में मृत्यु प्राप्त करता है।

योग कारक ग्रह : गुरु　　योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप- आप उच्चकोटि के विद्वान, राजनेता, मंत्री, शैक्षणिक क्षेत्र में ख्यातिप्राप्त, धार्मिक संस्था के अध्यक्ष, ज्योतिष के विद्वान या ज्योतिष विषय से सम्बंध रखने वाला, आध्यात्मिक गुरु, प्रवक्ता, संस्था के संस्थापक, शेयरब्रोकर, राजदूत, वित्तीय संस्था के स्वामी तथा विविध-क्षेत्र में ख्यातिप्राप्त करेंगे।

सेवा की दृष्टि से आप शैक्षणिक संस्थाओं के प्राचार्य, धर्मगुरु, चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट, प्रशासनिक सेवा आइ. ए. एस. में विशेष ख्याति एवं सफलता प्राप्त करने में अग्रणी होंगे। आप राज्य में मंत्री, कूटनीतिज्ञ, उच्च शास्त्रकार, तथा विधिविशेषज्ञ के रूप में विश्वविख्यात होंगे।

व्यवसाय के दृष्टिकोण आप शैक्षणिक संस्था संचालक, कम्पनी स्वामी, पीले रंग की वस्तुएं, धातुओं के उच्च व्यवसायी, चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट कन्सलटेंसी, वित्तीय संस्था के माध्यम से धन के लेन-देन से बहुत लाभ अर्जित करके धनी, ऐश्वर्यशाली, सम्मानित व्यक्ति के रूप में

अपना जीवन व्यतीत करेगें।

वाशि योग

सूर्याद्व्ययगैर्वाशिर्द्वितीयगैश्चन्द्रवर्जितैर्वेशि।
उत्कृष्टवचाः स्मृतिमानुद्योगयुतो निरीक्षते तिर्यक्।
सर्वशरीरे पृथुलो नृपतिसमः सात्त्विको वाशौ।।
।। सारावली ।। अ.14/श्लोक 1, 6।।

यदि जन्मकुंडली में सूर्य से द्वादश स्थान में चंद्रमा को छोड़कर अन्य ग्रह विद्यमान हो तो वाशि नामक योग बनता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,सूर्य योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप उत्कृष्ट वाणी वाले, स्मरण शक्ति वाले, उद्यमी, तिरछी दृष्टि वाले, स्थूल शरीर वाले, राजा के समान व्यक्तित्व वाले तथा सात्विक प्रवृत्ति वाले होंगे।

शकट योग

जीवान्त्याष्टारिसंस्थे शशिनि तु शकटः।।
क्वचित्क्वचिद्भाग्यपरिच्युतः सन् पुनः पुनः सर्वमुपैति भाग्यम्।
लोकेऽप्रसिद्धोऽपरिहार्यमन्तः शल्यं प्रपन्नः शकटेऽतिःदुखी।।
।। फलदीपिका ।। अ. 6/श्लोक 14, 17 ।।

यदि पत्रिका में चंद्रमा से 6, 8 या 12 वें स्थान में बृहस्पति हो तो शकट योग बनता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,गुरु योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण स्थापित हो रहा है। फलस्वरूप जन्मभर दुःखी रहना, जीवन व्यथित रहना, प्रसिद्धि प्राप्त करना, सामान्य जीवन व्यतीत करना, भाग्यहीनता तथा पुनः भाग्य प्राप्ति के योग बनेंगे।

शौर्ययोग

भावैः सौम्ययुतेक्षिततैस्तदधिपैः सुस्थानगैर्भास्वरैः
स्वोच्चस्वर्क्षगतैर्विलग्नभवनाद्योगाः क्रमाद्द्वादश।
कीर्तिमद्भिरनुजैरभिष्टुतो लालितो महितविक्रमयुक्तः।
शौर्यजो भवति राम इवासौ राजकार्यनिरतोऽतियशस्वी।।
।। फलदीपिका ।। अ.6/श्लोक 44, 47।।

यदि जन्मपत्रिका में सहजस्थान में शुभ ग्रह हों अथवा तीसरे भाव पर शुभ ग्रह की

दृष्टि पड़ रही हों तथा तृतीयेश अस्त न हो और अपनी राशि या उच्चराशि में स्थित होकर उत्तम स्थान में हो तो शौर्ययोग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक बहुत पराक्रमी होता है और उसके छोटे भाई यशस्वी और भ्रातृयुक्त होता है। इसके भाई लोग इसकी प्रशंसा करते हैं। तात्पर्य यह है कि तृतीय स्थान का भाई, वहन, पराक्रम संबंधी पूर्ण सुख प्राप्त होता है। ऐसे जातक स्वयं भी अत्यधिक यशस्वी होता है और राज्य कर्म में रत रहता है। मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम के समान पराक्रमी होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,मंगल योग की संभावना : 96 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप उत्तम राजयोग प्राप्त कर शौर्यशाली व्यक्ति होंगे।

काम योग

भावैः सौम्युतेक्षितैस्तदधिपैः सुस्थानगैर्भास्वरैः
स्वोच्चस्वर्क्षगतैर्विलग्नभवनाद्योगाः क्रमाद्द्वादश।
परदारपराङ्मुखो भवेद्वरदारात्मजबन्धुसंश्रितः।
जनकादधिकः शुभैर्गुणैर्महनीयां श्रियमेति कामजः।।
।। फलदीपिका।। अ. 6 / श्लोक 44, 51।।

यदि जन्मपत्रिका में सप्तम भाव में शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तथा सप्तम स्थान में शुभ ग्रह बैठे हो एवं सप्तम भाव का स्वामी स्वराशि या उच्च राशि में स्थित होकर उत्तम स्थान में बैठा हो तो कामयोग बनता है।

योग कारक ग्रह : गुरु योग की संभावना : 96 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप दूसरे के स्त्री में आसक्त नहीं होंगे और आपको उत्तम जीवनसाथी, सन्तान और बन्धुओं का सुख प्राप्त होगा। आप शुभ गुणों से युक्त लक्ष्मीवान् होंगे। आप अपने पिता से अधिक उच्च पद प्राप्त करेंगे।

महादान योग

दानाधिपेन संदृष्टे लग्ने तन्नायकेपि वा ।
तस्मिन्केन्द्रत्रिकोणस्थे महादानकरो भवेत्।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि।। अ.7/भाव-9/श्लोक-4

यदि जन्मपत्रिका में लग्नेश पर या लग्न पर नवमेश की दृष्टि हो वह नवमेश भी केन्द्र या त्रिकोण में हो तो जातक महादानी होता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,बुध योग की संभावना : 24 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप हाथी-घोड़ा दान, तुलादान तथा महादान करेंगे। आप महादानी होंगे।

भ्रातृवृद्धि योग

भ्रातृपे कारके वापि शुभयोगनिरीक्षिते ।
भावे वा बलसंपूर्णे भ्रातृणां वर्धनं भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो. -16 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीय स्थान तथा तृतीय भाव कारक शुभग्रहों से युक्त या दृष्ट हो एवं पूर्णबली हो तो भाइयों की वृद्धि होती है।

योग कारक ग्रह : गुरु,मंगल योग की संभावना : 8 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके भाइयों में वृद्धि हो, ऐसा प्रतीत होता है।

युद्ध कुशल एवं कलह प्रवीण योग

धैर्यान्वितो विक्रमराशिनाथसंयुक्तराश्यंशपतौ यदंशे ।
तदंशनाथे स्वगृहादिवर्गे युद्धे विदग्धः कलहप्रवीणः ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-33 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीयेश जिसकी राशि अंश में है, वह ग्रह अपने राश्यादि वर्ग में हो तो जातक धैर्यवान, युद्ध में चतुर और कलह करने में निपुण होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल योग की संभावना : 9 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप धैर्यधारण करने वाले, युद्ध में चतुर और कलह प्रिय प्राणी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

कंठरोग योग

पापे तृतीये गलरोगमत्र वदन्ति मांद्यादियुते विशेषात् ।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-47 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तीसरे भाव में पाप ग्रह हो विशेषतः मांद्यंशादि युक्त हो तो कंठरोग होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल योग की संभावना : 3 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको कंठ रोग होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

कर्णरोग योग

तृतीयनाथे पापान्विते पापनिरीक्षिते वा वदन्ति कर्णोद्भवरोगमत्र ।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-49 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीयेश पाप युक्त या दृष्ट हो तो कर्णरोग होता है।

योग कारक ग्रह : राहु,मंगल योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है फलस्वरूप आपको कर्णरोग होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

पुत्रनाश योग

पापमध्ये तु यद्भावे तदीशेऽपि तथा स्थिते ।
कारके पापसंयुक्ते पुत्रनाशं वदेत्तदा ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 5/श्लो.-14 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचम भाव या पंचमेश पाप ग्रहों के बीच हो, तथा संतान कारक ग्रह भी पाप युक्त हो तो पुत्रनाश योग बनता है।

योग कारक ग्रह : राहु,सूर्य,गुरु योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको संतान सुख में बाधा हो ऐसा प्रतीत होता है।

तीव्रबुद्धि योग

बुद्धिस्थानाधिपस्यांशराशीशे शुभवीक्षिते ।
वैशेषिकांशके वापि तीव्रबुद्धिं समादिशेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 5/श्लो.-35 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश जिसके नवांशक में हो वह शुभ ग्रह से दृष्ट अथवा वैशेषिकांश में हो तो तीव्र बुद्धि योग बनता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,मंगल योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप तीव्र बुद्धि के होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

त्रिकालज्ञ योग

भृगौ सौम्यसमायुक्ते दृष्टे ताभ्यां शुभांशके ।
त्रिकालज्ञो भवेज्जीवे स्वांशे मृद्वंशसंयुते ।।

।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 5/श्लो.-53 ।।

यदि जन्मपत्रिका में शुक्र बुध से युक्त हो, गुरु अपने नवांश में मृद्वंश से युक्त हो बुध शुक्र से दृष्ट हो तो त्रिकालज्ञ योग बनता है।

योग कारक ग्रह : बुध,गुरु,शुक्र योग की संभावना : 72 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप भूत-भविष्य वर्तमान के ज्ञाता होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

बहुपुत्र योग

पुत्रस्थानपतौ तु वा नवमपे पुंवर्गे पुरुषग्रहेक्षितयुते जातस्तु पुत्राधिकः।
।। जातकपारिजात ।। अ. 13/श्लो.-9 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश अथवा नवमेश पुरुष ग्रह के वर्ग में हो तथा पुरुष ग्रह से दृष्टिगत या युत हो तो बहुपुत्र योग बनता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,शनि योग की संभावना : 4 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको अनेक पुत्रों का सुख प्राप्त हागा। ऐसा प्रतीत होता है।

विना पीड़ा मृत्यु योग

सौम्यांशके सौम्यगृहेऽथ सौम्य सम्बन्धगे वा क्षयेशे।
अक्लेशजातं मरणं नराणाम्।।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-21।।

यदि जन्मकुंडली में द्वादशेश सौम्यग्रह की राशि या सौम्य ग्रह के नवांश या सौम्य ग्रह के साथ स्थित हो तो विना पीड़ा की मृत्यु होती है।

योग कारक ग्रह : सूर्य योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका मरण बिना क्लेश का होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

स्वदारा में आसक्त योग

गुरौ कलत्रे स्वदारसक्तः।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ-6/श्लो.-2।।

यदि जन्मपत्रिका में सप्तमभाव में गुरु स्थित हो तो जातक अपनी स्त्री में आसक्त होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मात्र अपने जीवनसाथी में आसक्त रहेंगे।

बहुभार्या योग

कुटुम्बकलत्रनाथाभ्यां समेतैर्ग्रहनायकैर्वा कलत्रसंख्यां प्रवदन्ति सन्तः ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-14 ।।

यदि जन्मकुण्डली में द्वितीयेश या सप्तमेश के साथ जितने ग्रह हों उतनी पत्नी होती हैं।

योग कारक ग्रह : बुध,शुक्र योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके दो या दो से अधिक जीवनसाथी हो सकते हैं। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुस्त्री योग

केन्द्रत्रिकोणे दारेशे स्वोच्चमित्रस्ववर्गगे ।
कर्माधिपेन वा युक्ते बहुस्त्रीसहितो भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-30 ।।

यदि जन्मकुण्डली में सप्तमेश केन्द्र या त्रिकोण में उच्च या मित्र राशि में या अपने अंशादि में हो अथवा दशमेश से युक्त हो तो बहुस्त्री योग बनता है।

योग कारक ग्रह : गुरु योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका अनेक से संबंध स्थापित होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

द्विभार्या योग

पापाः सप्तमे द्विभार्यः।
।। बृहद्योग रत्नाकर ।। पृ. 303 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सप्तम भाव में पाप ग्रह हो तो द्विभार्या योग बनता है।

योग कारक ग्रह : राहु योग की संभावना : 4 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके जीवन में दो जीवनसाथी आएगें, अर्थात आपके दो विवाह हो, ऐसा प्रतीत होता है।

पारिजात योग

''सपारिजातद्युचरः सुखानि ।''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिसकी पत्रिका के "पारिजात" भाग में ग्रह हों तो उसे सभी प्रकार के उत्तम सुख की प्राप्ति होती है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,शनि,राहु योग की संभावना : 2 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "पारिजात" वर्ग में स्थित है। फलस्वरूप आपको सभी प्रकार का उत्तम सुख प्राप्त होगा।

उत्तमवर्ग योग

''नीरोगतामुत्तमवर्गयातः।''

।बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिस जातक की पत्रिका के "उत्तमवर्ग" भाग में ग्रह हों तो वह प्राणी सभी प्रकार से निरोग रहता है।

योग कारक ग्रह : गुरु योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "उत्तमवर्ग" में स्थित है। फलस्वरूप आप सभी प्रकार से निरोग रहेंगे।

सिंहासनांश योग

''सिंहासनस्थः कुरुते विभूतिम् ''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिस जातक की पत्रिका में "सिंहासनांश" भाग में ग्रह स्थित हो, तो वह प्राणी ऐश्वर्य देता है।

योग कारक ग्रह : मंगल योग की संभावना : 4 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "सिंहासनांश" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप विभूति (धन-दौलत, राज-पाट) से युक्त सभी प्रकार से राजसुख से युक्त होंगे। अर्थात् आप ग्राम प्रखण्ड एवं जिला प्रधान होंगे।

वासि योग

''व्ययखेटैर्वाशि दिनेशात्।''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 51 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सूर्य से बारहवें भाव में कोई ग्रह हो तो "वासि" योग का निरूपण होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,सूर्य योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "वासि" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आपकी दृष्टि मन्द अर्थात् आपमें दृष्टिदोष रहेगा। आप परिश्रमी, नीचेदेखनेवाला एवं असत्यवादी होंगे।

वेशि योग

''धनखेटैर्वेशी दिनेशात्''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 51 ।।

यदि जातक के जन्मकाल पत्रिका में सूर्य से द्वितीय भाव में कोई ग्रह स्थित हो, तो जातक पर वेशि योग का सृजन होगा।

योग कारक ग्रह : बुध,शुक्र,सूर्य योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "वेशि" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप दयावान, स्थूल शरीर वाले, चतुरवक्ता, आलस्य से युक्त एवं वक्र दृष्टि वाले प्राणी होंगे।